

यीशु मसीह का सुसमाचार (चार सुसमाचार)

विषय-सूची

प्रस्तावना

"वचन देह बन गया" (1) (यूहन्ना 1:1-4, 9-14)

"वचन देह बन गया" (2) (यूहन्ना 1:1-4, 9-14)

"वचन देह बन गया" (3) (यूहन्ना 1:1-4, 9-14)

"वचन देह बन गया" (4) (यूहन्ना 1:1-4, 9-14)

"वचन देह बन गया" (5) (यूहन्ना 1:1-4, 9-14)

"वचन देह बन गया" (6) (यूहन्ना 1:1-4, 9-14)

"वचन देह बन गया" (7) (यूहन्ना 1:1-4, 9-14)

"वचन देह बन गया" (8) (यूहन्ना 1:1-4, 9-14)

यीशु का पीछे हटना (मत्ती 2:13-18)

उनकी मृत्यु और पुनरुत्थान की भविष्यवाणी (1) (मत्ती 16:21-23)

उनकी मृत्यु और पुनरुत्थान की भविष्यवाणी (2) (मत्ती 16:21-23)

उनकी मृत्यु और पुनरुत्थान की भविष्यवाणी (3) (मत्ती 16:21-23)

गेतसेमनी में प्रार्थना (1) (लूका 22:39-46)

गेतसेमनी में प्रार्थना (2) (लूका 22:39-46)

गेतसेमनी में प्रार्थना (3) (लूका 22:39-46)

गेतसेमनी में प्रार्थना (4) (लूका 22:39-46)

गेतसेमनी में प्रार्थना (5) (लूका 22:39-46)

गेतसेमनी में प्रार्थना (6) (लूका 22:39-46)

गेतसेमनी में प्रार्थना (7) (लूका 22:39-46)

गेतसेमनी में प्रार्थना (8) (लूका 22:39-46)

यीशु गिरफ्तार हुए (यूहन्ना 18:1-14)

यीशु पर मुकदमा (1) (यूहन्ना 18:28-19:16)

यीशु पर मुकदमा (2) (यूहन्ना 19:13-16)

यीशु गोलगोथा के मार्ग पर (1) (लूका 23:26-32)

यीशु गोलगोथा के मार्ग पर (2) (लूका 23:26-32)

यीशु गोलगोथा के मार्ग पर (3) (लूका 23:26-32)
यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया (1) (मरकुस 15:21-32)
यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया (2) (मरकुस 15:21-32)
यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया (3) (मरकुस 15:21-32)
क्रूस से कहे गए सात वचन (1) (लूका 23:34-43)
क्रूस से कहे गए सात वचन (2) (लूका 23:34-43)
क्रूस से कहे गए सात वचन (3) (यूहन्ना 19:25-27)
क्रूस से कहे गए सात वचन (4) (मत्ती 27:45-49)
"एली, एली, लामा सबक्तनी" (मरकुस 15:33-36)
क्रूस से कहे गए सात वचन (5) (यूहन्ना 19:28-30)
क्रूस से कहे गए सात वचन (6) (यूहन्ना 19:28-30)
क्रूस से कहे गए वचन: सात उक्तियाँ (7) (लूका 23:44-46)
यीशु क्रूस पर प्राण त्यागते हैं (यूहन्ना 19:30; मरकुस 15:42-46)
पुनरुत्थित यीशु (1) (यूहन्ना 20:1-10)
पुनरुत्थित यीशु (2) (मत्ती 28:1-15)
पुनरुत्थित यीशु (3) (लूका 24:1-12)

निष्कर्ष

परिचय

हमारी इच्छा है कि हम यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार करें। हम सभी—मसीही होने के नाते—को यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार करना चाहिए। हमें स्वेच्छा से यीशु मसीह के शुभ समाचार को दूसरों के साथ बाँटना चाहिए। भले ही हम इसे अपनी मर्ज़ी से न करें, फिर भी हमें सुसमाचार का प्रचार करने का कार्य सौंपा गया है। इसलिए, हमें विश्वास के साथ तुरंत आज्ञा माननी चाहिए और यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार करने के लिए पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन का पालन करना चाहिए। यदि हम सुसमाचार का प्रचार नहीं करेंगे, तो हमें दुर्भाग्य का सामना करना पड़ेगा (1 कुरिन्थियों 9:16-17)।

पिछले वर्ष, विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च की स्थापना की 42वीं वर्षगांठ के समारोह के दौरान, हमने परमेश्वर का धन्यवाद किया कि उसने हमें—पहली बार—पास्टर एमेरिटस और मिशनरी चांगसे किम द्वारा लिखी एक पुस्तक प्रकाशित करने का अवसर दिया। रोमियों की पुस्तक के अध्याय 5 से 8 पर आधारित, इस रचना में वे संदेश शामिल हैं जिनका प्रचार उन्होंने महामारी के दौरान हर बुधवार को "परमेश्वर का सुसमाचार (रोमियों 5-8)" शीर्षक के अंतर्गत किया था।

जैसे ही हम इस नए वर्ष की शुरुआत कर रहे हैं, हम पास्टर एमेरिटस चांगसे किम की दूसरी पुस्तक, जिसका शीर्षक "यीशु मसीह का सुसमाचार (चार सुसमाचार)" है, को प्रकाशित करने में सक्षम होने के लिए कृतज्ञ और आनंदित हैं। यह पुस्तक भी उन उपदेशों से संकलित की गई है जिनका प्रचार उन्होंने प्रार्थना सभाओं के दौरान हर बुधवार को किया था—ये संदेश मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना के सुसमाचारों पर केंद्रित थे—जिनके नोट्स इस अपूर्ण सेवक ने लिए और उन्हें एक पुस्तक का रूप दिया। हमारी आशा है कि प्रभु अपनी इच्छा के अनुसार इस पुस्तक का उपयोग करेंगे, ताकि यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार और भी अधिक व्यापक रूप से तथा प्रभावी ढंग से हो सके।

इस हार्दिक इच्छा के साथ कि यीशु मसीह का सुसमाचार और भी अधिक व्यापक रूप से फैले,

पास्टर जेम्स किम

(विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च के पास्टर कार्यालय से, जनवरी 2023)

“वचन देह बन गया” (1)

[यूहन्ना 1:1-4, 9-14]

हम सभी को यीशु को और भी गहराई से जानने की इच्छा रखनी चाहिए (New Hymnal 453, “I Want to Know Jesus More”)। मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम सभी अपने प्रभु यीशु मसीह के ज्ञान में बढ़ें, और हम इस सच्चाई को महसूस करें कि यीशु का ज्ञान सबसे अधिक मूल्यवान है (फिलिप्पियों 3:8)। जैसे-जैसे हम यीशु को और भी गहराई से जानते जाते हैं—विशेषकर उनकी मृत्यु और पुनरुत्थान को—मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम विश्वास और भरोसे से भर जाएँ।

यीशु कौन हैं? यूहन्ना 1:14 कहता है: “वचन देह बन गया और हमारे बीच रहा, और हमने उसकी महिमा देखी—ऐसी महिमा जैसी पिता के एकलौते पुत्र की होती है, जो अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण था।” यीशु ही वह हैं जो देह बन गए—वचन जो देह बन गया। यहाँ, “वचन” का तात्पर्य यीशु मसीह से है, जो परमेश्वर पिता के एकलौते पुत्र हैं। यूहन्ना 1:1 कहता है: “आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था।” यहाँ जिस “आदि” (शुरुआत) का ज़िक्र है, वह उत्पत्ति 1:1 में बताए गए “आदि” से अलग है। उत्पत्ति 1:1 का “आदि” समस्त सृष्टि की शुरुआत को दर्शाता है—अर्थात् “आकाश और पृथ्वी” [चीनी बाइबल इसका अनुवाद *shichu* के रूप में करती है, जिसका अर्थ है “बिल्कुल शुरुआत” या “नींव”]। चूँकि हम भी इसी सृजित व्यवस्था का हिस्सा हैं, इसलिए हमारी भी एक शुरुआत (जन्मदिन) होती है। हालाँकि, यूहन्ना 1:1 में जिस “आदि” की बात की गई है, वह सृष्टि की शुरुआत को नहीं दर्शाता। बल्कि, यह “वचन” के अस्तित्व की बात करता है। “वचन” का अस्तित्व कब था? सृष्टि में किसी भी अन्य चीज़ के अस्तित्व में आने से पहले ही उसका अस्तित्व था (पद 2-3)। यूहन्ना 17:5 कहता है: “और अब, हे पिता, तू मुझे अपने ही सान्निध्य में उस महिमा से महिमामन्वित कर, जो जगत के अस्तित्व में आने से पहले मेरे पास तेरे साथ थी” [(समकालीन कोरियाई संस्करण) “हे पिता, अब तू मुझे अपने सान्निध्य में उस महिमा से महिमामन्वित कर, जो जगत के अस्तित्व में आने से पहले मैंने तेरे साथ साझा की थी”]। यीशु, जो पुत्र हैं—और जो वचन भी हैं—जगत की सृष्टि से पहले से ही अस्तित्व में थे और परमेश्वर पिता के साथ महिमा साझा करते थे। कुलुस्सियों 1:17 कहता है: “वह सब चीज़ों से पहले है, और उसी में सब चीज़ें एक साथ टिकी हुई

हैं" [(समकालीन कोरियाई संस्करण) "और वह सब चीज़ों से पहले मौजूद था, और सब चीज़ें उसी के द्वारा कायम हैं"]। यहाँ, "वह" यीशु, यानी पुत्र को दर्शाता है। यीशु, जो पुत्र है—और जो 'वचन' है—वही वह है जो सब चीज़ों से पहले मौजूद था। इस संदर्भ में, यह कथन कि "आदि में वचन था" (यूहन्ना 1:1) का यह अर्थ नहीं है कि यीशु—यानी परमेश्वर का पुत्र—केवल उसी खास पल से अस्तित्व में आया जिसे "आदि" कहा गया है। परमेश्वर के अस्तित्व—यानी उसके होने—की कोई शुरुआत नहीं है। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर वह है जिसके अस्तित्व का कोई शुरुआती बिंदु नहीं है। इसका कारण यह है कि परमेश्वर 'स्वयं-अस्तित्ववान' (Self-Existent) है। यह अंश निर्गमन 3:13-14 में मिलता है: "मूसा ने परमेश्वर से कहा, 'मान लीजिए मैं इस्राएलियों के पास जाता हूँ और उनसे कहता हूँ, 'तुम्हारे पूर्वजों के परमेश्वर ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है,' और वे मुझसे पूछते हैं, 'उसका नाम क्या है?'—तो मैं उन्हें क्या बताऊँ?' परमेश्वर ने मूसा से कहा, 'मैं जो हूँ, सो हूँ।' और उसने कहा, 'इस्राएलियों से यह कहना: "मैं हूँ (I AM) ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है।"'

[(समकालीन कोरियाई बाइबल) "यदि मैं इस्राएलियों के पास जाऊँ और कहूँ, 'तुम्हारे पूर्वजों के परमेश्वर ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है,' और वे मुझसे पूछें, 'उसका नाम क्या है?'—तो मैं उन्हें क्या बताऊँ?" "मैं 'स्वयं-अस्तित्ववान' हूँ। इस्राएलियों से कहना: 'स्वयं-अस्तित्ववान ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है।'" यह अंश परमेश्वर द्वारा मूसा को दिए गए बुलावे—यानी उसके ईश्वरीय कार्य-भार—का विवरण प्रस्तुत करता है। अब्राहम से किए गए अपने वादों को पूरा करने के लिए, परमेश्वर ने मूसा को बुलाया और उसे मिस्र भेजा; उसे यह दायित्व सौंपा गया कि वह अब्राहम के वंशजों को दासता से बाहर निकाले और उन्हें 'वादा किए गए देश' कनान तक पहुँचाए। उस समय, मूसा ने परमेश्वर से पूछा, "मान लीजिए मैं इस्राएलियों के पास जाता हूँ और उनसे कहता हूँ, 'तुम्हारे पूर्वजों के परमेश्वर ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है,' और वे मुझसे पूछते हैं, 'उसका नाम क्या है?'—तो मैं उन्हें क्या बताऊँ?" (पद 13), और परमेश्वर का उत्तर था, "मैं वह हूँ जो स्वयं-अस्तित्ववान है।" इस्राएल के लोगों से उन्होंने घोषणा की: "मैं वह हूँ जो मैं हूँ—उन्होंने मुझे तुम्हारे पास भेजा है" (पद 14, *द कंटेम्पररी बाइबल*)। पुत्र, यीशु—वह 'वचन' जो परमेश्वर पिता के साथ एक है (यूहन्ना 10:30)—वह भी "वह है जो स्वयं से अस्तित्व में है" ["स्वयं-अस्तित्ववान" (*द कंटेम्पररी बाइबल*)]। यहाँ, वाक्यांश "था" (यूहन्ना 1:1) का अर्थ केवल यह नहीं है कि पुत्र—अर्थात् 'वचन'—किसी विशेष क्षण में अस्तित्व में आया; बल्कि, यह इस बात की पुष्टि करता है कि वह वह है जो अनादि काल से स्वयं से अस्तित्व में रहा है—वह जो सृष्टि के आरम्भ में भी उपस्थित था। इसके अतिरिक्त, यह कथन कि "वह परमेश्वर के साथ था" (पद 1), पिता—जो एकमात्र परमेश्वर है—का पुत्र के साथ सहभागिता में होना दर्शाता है (जो त्रिएक परमेश्वर की पुष्टि करता है)। अंत में, यह घोषणा कि "वचन परमेश्वर था" (पद 1), पुत्र, यीशु की परमेश्वर पिता—जो एकमात्र परमेश्वर है—के साथ समानता को स्थापित करती है। इस बात की

प्रतिध्वनि फिलिप्पियों 2:6 में भी मिलती है: "जिसने, अपने स्वभाव से ही परमेश्वर होते हुए भी, परमेश्वर के साथ समानता को ऐसी वस्तु नहीं समझा जिसे दृढ़ता से थामे रखना चाहिए।"

हमें त्रिएक परमेश्वर पर मनन करना चाहिए। मत्ती 28:19 कहता है: "इसलिए जाओ, और सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ; और उन्हें पिता, और पुत्र, और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो।" यह अंश पास्ट्रों के लिए "पिता, पुत्र, और पवित्र आत्मा के नाम से" बपतिस्मा देने का शास्त्रीय आधार है। 2

कुरिन्थियों 13:13 कहता है: "प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह, और परमेश्वर का प्रेम, और पवित्र आत्मा की संगति तुम सब के साथ होती रहे।" यह अंश पास्ट्रों के लिए आशीर्वचन (benediction) देने का शास्त्रीय आधार है। यूहन्ना 1:4 कहता है: "उसमें जीवन था, और वह जीवन मनुष्यों की ज्योति था।" "वचन" (पद 1) ही "जीवन" (पद 4) है। दूसरे शब्दों में, यीशु ही जीवन है। यूहन्ना 6:48 कहता है: "जीवन की रोटी मैं हूँ।" यूहन्ना 11:25 कहता है: "यीशु ने उससे कहा, 'पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूँ; जो कोई मुझ पर विश्वास करता है, यदि वह मर भी जाए, तौभी जीवित रहेगा।'" यूहन्ना 14:6 कहता है: "यीशु ने उससे कहा, 'मार्ग, और सत्य, और जीवन मैं ही हूँ; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता।'" यह कथन कि "वह जीवन मनुष्यों की ज्योति था" (1:4) यह दर्शाता है कि यीशु, जो पुत्र है, वही ज्योति है। परमेश्वर पिता ज्योति है। 1 यूहन्ना 1:5 कहता है: "और जो समाचार हमने उससे सुना, और तुम्हें सुनाते हैं, वह यह है कि परमेश्वर ज्योति है, और उसमें कुछ भी अन्धकार नहीं है।" परमेश्वर पिता और यीशु पुत्र ज्योति हैं (त्रिएक परमेश्वर)। आइए, हम सब यीशु को जानने के लिए स्वयं को समर्पित करें। हम सबको यीशु के ज्ञान में बढ़ना चाहिए। चूंकि पवित्र आत्मा हमारे शिक्षक के रूप में कार्य करता है और हमें सत्य की शिक्षा देता है, इसलिए हम पूरी लगन से प्रार्थना करते हैं कि वह हमें परमेश्वर के वचन के द्वारा यीशु को जानने में समर्थ करे। यीशु मसीह के उद्धारकारी प्रेम को गहराई से समझना हमारे हृदयों की जीवन भर की अभिलाषा है (New Hymnal, संख्या 453)।

यीशु ही वह है जो देहधारी हुआ—अर्थात् देहधारी वचन (यूहन्ना 1:14)। यीशु, जो यह "वचन" हैं, वह स्वयं-अस्तित्ववान हैं (निर्गमन 3:14); वह परमेश्वर पिता के साथ थे, और यह वचन स्वयं परमेश्वर हैं (यूहन्ना 1:1)।

परमेश्वर पिता और परमेश्वर पुत्र, यीशु, एक हैं (यूहन्ना 10:30)—अर्थात् त्रिएक परमेश्वर। परमेश्वर पुत्र, यीशु, ही जीवन और ज्योति हैं। हम पूरी लगन से प्रार्थना करते हैं कि पवित्र आत्मा हम सभी को इस वचन के विषय में एक दृढ़ विश्वास प्रदान करें।

“वचन देह बन गया” (2)

[यूहन्ना 1:1-4, 9-14]

यूहन्ना 1:1 में लिखा है: “आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था।” यहाँ, “वचन” का तात्पर्य यीशु मसीह, यानी परमेश्वर के पुत्र से है। यह कथन कि “वचन परमेश्वर के साथ था” (पद 1), यह दर्शाता है कि परमेश्वर का पुत्र, परमेश्वर पिता—जो एकमात्र परमेश्वर हैं—की उपस्थिति में था। यह कथन कि “वचन परमेश्वर था” (पद 1), यह घोषित करता है कि परमेश्वर का पुत्र—यीशु—स्वभाव में परमेश्वर पिता—जो एकमात्र परमेश्वर (त्रिएक परमेश्वर) हैं—के समान है।

यह त्रिएक परमेश्वर पर एक बुनियादी चिंतन है। यद्यपि “त्रिएक परमेश्वर” शब्द बाइबल में स्पष्ट रूप से नहीं मिलता, फिर भी पवित्र शास्त्र इस बात की गवाही देते हैं कि परमेश्वर वास्तव में एक त्रिएक परमेश्वर हैं। बाइबल यह घोषित करती है कि परमेश्वर केवल एक ही है: “हे इस्राएल, सुन! हमारा परमेश्वर यहोवा, एक ही यहोवा है” [(समकालीन बाइबल) “ध्यान से सुनो, सब लोग। हमारा परमेश्वर, यहोवा, एकमात्र यहोवा है”] (व्यवस्थाविवरण 6:4); “अब मध्यस्थ एक से अधिक पक्षों की ओर से होता है, परन्तु परमेश्वर तो एक ही है” [(समकालीन बाइबल) “तथापि, व्यवस्था, जिसके लिए एक मध्यस्थ की आवश्यकता थी, उसके लिए दो पक्षों की उपस्थिति अनिवार्य थी; फिर भी, किसी प्रतिज्ञा को करने के लिए, केवल परमेश्वर ही पर्याप्त हैं”] (गलातियों 3:20); और “तू विश्वास करता है कि परमेश्वर एक ही है। अच्छा! दुष्टात्माएँ भी यही विश्वास करती हैं—और काँपती हैं” (याकूब 2:19)। तथापि, दुष्टात्माएँ सही अर्थों में परमेश्वर पर विश्वास नहीं करतीं। यदि

हम सचमुच यह विश्वास करते हैं कि परमेश्वर एक है, तो हमें उसके निकट जाना चाहिए, और पुकारना चाहिए, "अब्बा, हे पिता" (मरकुस 14:36; रोमियों 8:15; गलातियों 4:6)। बाइबल में "परमेश्वर" शब्द का प्रयोग एकवचन के रूप में नहीं, बल्कि बहुवचन के रूप में किया गया है। उत्पत्ति 1:26 पर विचार करें: "तब परमेश्वर ने कहा, 'आओ, हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार, अपनी समानता में बनाएँ; और वे समुद्र की मछलियों पर, आकाश के पक्षियों पर, और पशुओं पर, और सारी पृथ्वी पर, और पृथ्वी पर रेंगने वाले हर एक रेंगने वाले जन्तु पर अधिकार रखें।'" यहाँ, यदि बाइबल का उद्देश्य परमेश्वर को एकवचन में चित्रित करना होता, तो वह "मेरा स्वरूप," "मेरी समानता," और "मैं" शब्दों का प्रयोग करती; इसके बजाय, यह बहुवचन रूपों का उपयोग करती है—"हमारा स्वरूप," "हमारी समानता," और "हम।" इसका कारण यह है कि परमेश्वर त्रिएक परमेश्वर है—त्रिएकत्व (Trinity)। यशायाह 6:8 पर विचार करें: "फिर मैंने प्रभु का शब्द सुना, 'मैं किसको भेजूँ और हमारी ओर से कौन जाएगा?' तब मैंने कहा, 'मैं यहाँ हूँ! मुझे भेज।'" इस अंश में, "मैं" एकवचन है और परमेश्वर पिता को संदर्भित करता है, जबकि "हम" बहुवचन है और त्रिएक परमेश्वर को संदर्भित करता है। बाइबल परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र, और परमेश्वर पवित्र आत्मा को सामूहिक रूप से "परमेश्वर" के रूप में पहचानती है। भजन संहिता 110:1 पर विचार करें: "यहोवा ने मेरे प्रभु से कहा, 'मेरे दाहिने हाथ बैठ, जब तक कि मैं तेरे शत्रुओं को तेरे पाँवों की चौकी न कर दूँ।'" यहाँ, "यहोवा" परमेश्वर पिता को संदर्भित करता है, और "मेरा प्रभु" परमेश्वर पुत्र को संदर्भित करता है। परमेश्वर पिता ने परमेश्वर पुत्र से कहा कि वह "मेरे दाहिने हाथ बैठे," यह कथन हमें रोमियों 8:34 में भी मिलता है: "कौन दोषी ठहराएगा? मसीह यीशु ही वह है जो मर गया—बल्कि, जो जिलाया भी गया—जो परमेश्वर के दाहिने हाथ है, और जो वास्तव में हमारे लिए मध्यस्थता कर रहा है।" जहाँ एक ओर पुराना नियम "यहोवा" का उल्लेख करता है, वहीं नया नियम इसका श्रेय "पवित्र आत्मा" को देता है: "देखो, वे दिन आते हैं, यहोवा की यह वाणी है, जब मैं इस्राएल के घराने और यहूदा के घराने के साथ एक नई वाचा बाँधूँगा" (यिर्मयाह 31:31); और "और पवित्र आत्मा भी हमारे लिए गवाही देता है; क्योंकि यह कहने के बाद, 'यह वह वाचा है जो मैं उन दिनों के बाद उनके साथ बाँधूँगा, प्रभु की यह वाणी है...' (इब्रानियों 10:15-16)। यिर्मयाह 31:31 में, पाठ "यहोवा" की बात करता है, जबकि इब्रानियों 10:15 में, यह "पवित्र आत्मा" की बात करता है। इसके अलावा, जहाँ पुराना नियम "यहोवा" का जिक्र करता है, वहीं नया नियम इसकी पहचान "परमेश्वर के पुत्र, यीशु मसीह" से करता है: "और ऐसा होगा कि जो कोई यहोवा का नाम लेगा, वह बच जाएगा। क्योंकि सिय्योन पर्वत पर और यरूशलेम में वे लोग होंगे जो बच निकलेंगे, जैसा कि यहोवा ने कहा

है, और बचे हुआ में वे लोग होंगे जिन्हें यहोवा बुलाएगा" (योएल 2:32); और "क्योंकि 'जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वह बच जाएगा'" (रोमियों 10:13)। योएल 2:32 "यहोवा के नाम" की बात करता है, जबकि रोमियों 10:13 "प्रभु के नाम" की बात करता है—और यहाँ, "प्रभु" का तात्पर्य परमेश्वर के पुत्र, यीशु मसीह से है। परमेश्वर पिता, परमेश्वर हैं। क्या परमेश्वर के पुत्र, यीशु भी परमेश्वर हैं? क्या परमेश्वर पवित्र आत्मा भी परमेश्वर हैं? आज, हम इस बात पर विचार करेंगे कि क्या परमेश्वर पवित्र आत्मा वास्तव में परमेश्वर हैं; अगले हफ्ते, हम इस बात पर विचार करेंगे कि क्या परमेश्वर के पुत्र, यीशु भी परमेश्वर हैं।

बाइबल यह घोषणा करती है कि पवित्र आत्मा ही परमेश्वर है। प्रेरितों के काम 5:3–4 में कहा गया है: "पतरस ने कहा, 'हे हनन्याह, शैतान ने तेरे मन में यह बात क्यों डाली है कि तू पवित्र आत्मा से झूठ बोले और भूमि की कीमत में से कुछ रख छोड़े? जब तक वह तेरे पास रही, क्या वह तेरी ही न थी? और जब बिक गई, तब भी क्या वह तेरे ही अधिकार में न थी? तू ने अपने मन में ऐसी बात क्यों सोची? तू ने मनुष्यों से नहीं, परन्तु परमेश्वर से झूठ बोला है।'" पद 3 में, यह पाठ "पवित्र आत्मा" का उल्लेख करता है, फिर भी पद 4 में, यह "परमेश्वर" का उल्लेख करता है। दूसरे शब्दों में, इसका अर्थ यह है कि पवित्र आत्मा ही परमेश्वर है। फिलिप्पियों 2:13 में लिखा है: "क्योंकि परमेश्वर ही है, जो अपनी प्रसन्नता के लिए तुम में इच्छा और काम, दोनों उत्पन्न करता है।" यहाँ, "वह जो तुम में काम कर रहा है" का तात्पर्य पवित्र आत्मा से है। यह पाठ इस पवित्र आत्मा को "परमेश्वर" के रूप में पहचानता है। बाइबल आगे यह भी दावा करती है कि पवित्र आत्मा में वे गुण विद्यमान हैं जो विशेष रूप से परमेश्वर पिता के हैं। परमेश्वर पिता का ऐसा ही एक गुण उनका सनातन स्वभाव है; उसी प्रकार, बाइबल पवित्र आत्मा को "सनातन आत्मा" के रूप में वर्णित करती है। इब्रानियों 9:14 में कहा गया है: "तो फिर मसीह का लहू, जिसने सनातन आत्मा के द्वारा अपने आप को परमेश्वर के सामने निर्दोष बलिदान के रूप में चढ़ाया, तुम्हारे विवेक को उन कामों से कितना अधिक शुद्ध करेगा जो मृत्यु की ओर ले जाते हैं, ताकि तुम जीवित परमेश्वर की सेवा कर सको!" परमेश्वर पिता का एक और गुण उनकी सर्वव्यापकता है—अर्थात् यह तथ्य कि वह हर जगह उपस्थित हैं; बाइबल इस बात की पुष्टि करती है कि पवित्र आत्मा भी सर्वव्यापक है। भजन संहिता 139:7–8 में लिखा है: "मैं तेरे आत्मा से बचकर कहाँ जाऊँ? मैं तेरे साम्हने से भागकर कहाँ जाऊँ? यदि मैं स्वर्ग पर चढ़ूँ, तो तू वहाँ है; यदि मैं अधोलोक में अपना बिछौना बिछाऊँ, तो तू वहाँ है।" पवित्र आत्मा भी सर्वव्यापक है। इसलिए, पवित्र

आत्मा ही परमेश्वर है। बाइबल बताती है कि पवित्र आत्मा ऐसे काम करती है जिन्हें केवल परमेश्वर ही पूरा कर सकता है:

(1) सृष्टि:

उत्पत्ति 1:1-2 में लिखा है: “आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की। पृथ्वी बेडौल और सुनसान थी; और गहरे जल के ऊपर अन्धकार था; और परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मँडराता था।” ठीक परमेश्वर की तरह ही, पवित्र आत्मा ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की। अय्यूब 33:4 में लिखा है: “परमेश्वर के आत्मा ने मुझे बनाया है, और सर्वशक्तिमान का श्वास मुझे जीवन देता है।” ठीक परमेश्वर की तरह ही, पवित्र आत्मा ने मनुष्यों की सृष्टि की।

(2) पुनरुत्थान:

रोमियों 8:11 में लिखा है: “यदि उसका आत्मा, जिसने यीशु को मरे हुआओं में से जिलाया, तुम में बसा हुआ है, तो जिसने मसीह यीशु को मरे हुआओं में से जिलाया, वह तुम्हारे मरणहार शरीरों को भी अपने आत्मा के द्वारा जो तुम में बसा हुआ है, जिलाएगा।” ठीक परमेश्वर की तरह ही, पवित्र आत्मा पुनरुत्थान करती है। पवित्र आत्मा ने यीशु को मरे हुआओं में से जिलाया। जब यीशु अपने दूसरे आगमन में लौटेंगे, तो पवित्र आत्मा हमारे मरणहार शरीरों को भी महिमामय शरीरों में जिलाएगी। यद्यपि भविष्यद्वक्ता एलियाह ने सारेपता की विधवा के बेटे की जान तब वापस ला दी थी जब वह मर गया था (1 राजा 17:17-22), लेकिन वह उसी भौतिक शरीर में जीवन की वापसी थी, न कि किसी महिमामय शरीर में पुनरुत्थान।

(3) अनन्त जीवन:

यूहन्ना 6:63 में लिखा है: “आत्मा ही जीवन देता है; शरीर से कुछ लाभ नहीं। जो बातें मैंने तुम से कही हैं, वे आत्मा और जीवन हैं।” पवित्र आत्मा अनन्त जीवन भी प्रदान करती है—एक ऐसा वरदान जिसे केवल परमेश्वर ही दे सकता है। इसलिए, पवित्र आत्मा ही परमेश्वर है!

“वचन देह बन गया” (3)

[यूहन्ना 1:1-4, 9-14]

बाइबल यह घोषणा करती है कि पुत्र, यीशु मसीह—जो “वचन” है—वह परमेश्वर भी है। यह यूहन्ना 1:1 में कहा गया है: “आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था।” बाइबल यह दावा करती है कि यीशु मसीह, जो “वचन” है, वह “स्वयं परमेश्वर” है। यशायाह 9:6 में लिखा है: “क्योंकि हमारे लिए एक बालक जन्मा है, हमें एक पुत्र दिया गया है, और शासन उसके कंधों पर होगा। और उसका नाम अद्भुत परामर्शदाता, शक्तिशाली परमेश्वर, सनातन पिता, शांति का राजकुमार रखा जाएगा।” यह अंश भविष्यवक्ता यशायाह द्वारा पुत्र, यीशु के जन्म (अवतार) के विषय में की गई एक भविष्यवाणी है; यह आने वाले यीशु को “शक्तिशाली परमेश्वर” के रूप में संदर्भित करता है। 1 यूहन्ना 5:20 कहता है: “और हम जानते हैं कि परमेश्वर का पुत्र आया है और उसने हमें समझ दी है, ताकि हम उसे जान सकें जो सत्य है; और हम उसमें हैं जो सत्य है—उसके पुत्र यीशु मसीह में। वह ही सच्चा परमेश्वर और सनातन जीवन है।” बाइबल इस बात की पुष्टि करती है कि पुत्र, “यीशु मसीह, ही सच्चा परमेश्वर और सनातन जीवन है” (पद 20, *समकालीन कोरियाई बाइबल*)।

बाइबल आगे यह घोषणा करती है कि पुत्र, यीशु मसीह—जो “वचन” है—उसमें ठीक वही विशेषताएँ (गुण) विद्यमान हैं जो अनन्य रूप से केवल परमेश्वर में ही पाई जाती हैं:

(1) यीशु मसीह अपरिवर्तनशील है:

यद्यपि सृष्टि की सभी वस्तुएँ बदल सकती हैं, परंतु परमेश्वर—जिसने सभी वस्तुओं की सृष्टि की—वह अपरिवर्तनशील बना रहता है। इब्रानियों 1:11-12 में लिखा है: “वे तो नष्ट हो जाएँगे, परन्तु तू बना रहेगा; और वे सब वस्त्र के समान पुराने हो जाएँगे; तू उन्हें चोगे के समान लपेट देगा, और वे बदल जाएँगे। परन्तु तू वही है, और तेरे वर्षों का कभी अंत न होगा।” बाइबल कहती है, “तू वही बना रहता है” [“तू अपरिवर्तनशील और स्थिर है” (मॉडर्न मैन्स बाइबल)]। इब्रानियों 13:8 में लिखा है: “यीशु मसीह कल, आज और सर्वदा एक ही है।” बाइबल घोषणा करती है, “यीशु मसीह कल, आज और सर्वदा एक ही है” (पद 8, मॉडर्न मैन्स बाइबल)। याकूब 1:17 में लिखा है: “हर एक अच्छा वरदान और हर एक उत्तम दान ऊपर से है, और ज्योतियों के पिता की ओर से मिलता है, जिसमें न तो कोई परिवर्तन होता है और न ही बदलने से पड़ने वाली कोई छाया।” बाइबल कहती है, “परमेश्वर कभी नहीं बदलता, जैसे बदलती हुई छाया बदलती है” (पद 17, मॉडर्न मैन्स बाइबल)।

(2) यीशु मसीह सनातन हैं:

यशायाह 9:6 में लिखा है: “क्योंकि हमारे लिए एक बालक जन्मा है, हमें एक पुत्र दिया गया है; और शासन उसके कंधे पर होगा। और उसका नाम अद्भुत, परामर्शदाता, शक्तिशाली परमेश्वर कहलाएगा।” बाइबल आने वाले यीशु मसीह को “सनातन पिता” कहती है (पद 6, मॉडर्न मैन्स बाइबल)।

(3) यीशु मसीह हर जगह हैं (सर्वव्यापी):

मत्ती 18:20 में लिखा है: “क्योंकि जहाँ दो या तीन मेरे नाम पर इकट्ठे होते हैं, वहाँ मैं उनके बीच में होता हूँ।” जहाँ भी दो या तीन लोग यीशु के नाम पर इकट्ठे होते हैं, वहाँ परमेश्वर उपस्थित होता है। हालाँकि, शैतान एक ही समय में हर जगह नहीं हो सकता। शैतान कभी भी सर्वव्यापी नहीं हो सकता। इसका कारण यह है कि शैतान परमेश्वर का बनाया हुआ एक प्राणी है। इसलिए, शैतान मेरे भीतर नहीं हो सकता, और न

ही वह शारीरिक रूप से मेरे चारों ओर उपस्थित हो सकता है। हमारे आस-पास के माहौल में हमें परीक्षा में डालने वाला शैतान खुद नहीं होता, बल्कि उसके चले होते हैं।

बाइबल कहती है कि पुत्र—यीशु मसीह, जो "वचन" है—ऐसे काम करता है जिन्हें करने में केवल परमेश्वर ही सक्षम है:

(1) यीशु मसीह सृजन करते हैं:

यूहन्ना 1:3 में लिखा है: "सब कुछ उसी के द्वारा बनाया गया, और उसके बिना कुछ भी नहीं बनाया गया जो बनाया गया है।" यहाँ, "उसी" का अर्थ पुत्र—यीशु मसीह—से है, जो "वचन" है और परमेश्वर है (पद 1)।

बाइबल घोषणा करती है कि सब कुछ पुत्र—यीशु मसीह—के द्वारा बनाया गया, जो "वचन" है और परमेश्वर है (पद 3)। इब्रानियों 1:2 में लिखा है: "इन अंतिम दिनों में उसने अपने पुत्र के द्वारा हमसे बात की है, जिसे उसने सब चीज़ों का वारिस नियुक्त किया है, और जिसके द्वारा उसने संसारों को भी बनाया।"

बाइबल इस बात की पुष्टि करती है कि पुत्र—यीशु मसीह, जो "वचन" है और परमेश्वर है—ने परमेश्वर पिता के साथ मिलकर सभी संसारों का सृजन किया। (2) यीशु मसीह पुनरुत्थान लाते हैं (वे जीवन लौटाते हैं):

यूहन्ना 11:25 में लिखा है: "यीशु ने उससे कहा, 'पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूँ। जो मुझ पर विश्वास करता है, यद्यपि वह मर भी जाए, तो भी जीवित रहेगा।'" पुत्र—यीशु मसीह, जो "वचन" हैं और परमेश्वर हैं—ने न केवल यह घोषणा की, "पुनरुत्थान मैं ही हूँ," बल्कि यह भी कहा, "जो मुझ पर विश्वास करता है, यद्यपि वह मर भी जाए, तो भी जीवित रहेगा"; यहाँ, वाक्यांश "यद्यपि वह मर भी जाए, तो भी जीवित रहेगा" पुनरुत्थान को संदर्भित करता है। यह अंश 1 थिस्सलोनिकियों 4:14 और 16 से लिया गया है: "क्योंकि जब हम विश्वास करते हैं कि यीशु मर गए और फिर जी उठे, तो वैसे ही, यीशु के द्वारा, परमेश्वर उन्हें भी अपने साथ ले आएगा जो सो गए हैं... क्योंकि प्रभु स्वयं आज्ञा के एक ऊँचे शब्द के साथ, प्रधान स्वर्गदूत की वाणी के साथ, और परमेश्वर की तुरही की आवाज़ के साथ स्वर्ग से उतरेगा। और जो मसीह में मरे हैं, वे पहले जी उठेंगे।" यहाँ, वाक्यांश "यीशु मर गए और फिर जी उठे" (पद 14) यीशु के पुनरुत्थान को संदर्भित करता है। इस

संदर्भ में, जिस क्रिया का अनुवाद "फिर जी उठे" के रूप में किया गया है, वह कर्मवाच्य (passive voice) में नहीं है, बल्कि कर्तरिवाच्य (active voice) और अकर्मक (intransitive) रूप में है; इसका अर्थ यह है कि यीशु मरे और फिर, अपनी स्वयं की शक्ति से, वे पुनः जीवित हो उठे।

यीशु के पास पुनरुत्थान का अधिकार है। यूहन्ना 10:18 कहता है: "कोई इसे मुझसे छीनता नहीं, बल्कि मैं इसे अपनी मर्जी से त्याग देता हूँ। मेरे पास इसे त्यागने की शक्ति है, और मेरे पास इसे फिर से ग्रहण करने की शक्ति है। यह आज्ञा मुझे मेरे पिता से मिली है।" यहाँ, वाक्यांश "जो मसीह में सो गए हैं" (1

थिस्सलोनीकियों 4:16) उन संतों (विश्वासियों) को संदर्भित करता है जो मसीह में मर चुके हैं। इसके अलावा, वाक्यांश "पहले जी उठेंगे" का अर्थ है कि वे फिर से जीवित हो जाएँगे—यानी, उनका पुनरुत्थान होगा। जब परमेश्वर और उसका पुत्र, यीशु, आते हैं (पद 14)—विशेष रूप से, जब प्रभु अपने दूसरे आगमन में लौटते हैं—तो जो संत मसीह में मरे हैं, उनका पुनरुत्थान होगा। इस संदर्भ में, वाक्यांश "प्रभु स्वयं एक ऊँची आवाज़ के साथ उतरेंगे" (पद 16) का तात्पर्य है कि मृत लोग फिर से जीवित हो जाएँगे क्योंकि प्रभु एक आज्ञाकारी पुकार लगाते हैं। यीशु लाज़र की कब्र पर गए—जो पहले ही चार दिनों से मृत था (यूहन्ना 11:39)—और "एक ऊँची आवाज़ में पुकारा (आज्ञा दी), 'लाज़र, बाहर निकल आ!'" (पद 43)। परिणामस्वरूप, वह मृत व्यक्ति बाहर निकला, उसके हाथ और पैर अभी भी कफ़न में लिपटे हुए थे (पद 44)। जब प्रभु अपने दूसरे आगमन में लौटते हैं और मृत संतों को "उठो!" की आज्ञा देते हैं, तो उनका पुनरुत्थान महिमामय शरीरों के साथ होगा। ठीक उसी क्षण, जो संत अभी भी जीवित हैं, वे भी महिमामय शरीरों में बदल जाएँगे। इस प्रकार, यीशु मसीह—जो "वचन" और स्वयं परमेश्वर दोनों हैं—मृत संतों को महिमामय शरीरों के साथ फिर से जीवित करते हैं (उनका पुनरुत्थान करते हैं)।

(3) यीशु मसीह अनंत जीवन प्रदान करते हैं:

यूहन्ना 14:6 कहता है: "यीशु ने उससे कहा, 'मार्ग, सत्य और जीवन मैं ही हूँ। मेरे द्वारा ही कोई पिता के पास पहुँच सकता है, और किसी प्रकार नहीं।'" बाइबल घोषणा करती है कि यीशु मसीह—परमेश्वर का पुत्र, जो "वचन" और स्वयं परमेश्वर दोनों हैं—ही "जीवन" हैं, यानी अनंत जीवन हैं। इसके अलावा, बाइबल

कहती है कि परमेश्वर का पुत्र—जो स्वयं अनंत जीवन है—दूसरों को भी अनंत जीवन प्रदान करता है। यह बात यूहन्ना 10:28 में मिलती है: "मैं उन्हें अनंत जीवन देता हूँ, और वे कभी नष्ट नहीं होंगे; न ही कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन पाएगा।" बाइबल इस बात की पुष्टि करती है कि परमेश्वर का पुत्र—जो "वचन" है—अनंत जीवन प्रदान करता है।

बाइबल सिखाती है कि परमेश्वर पिता, यीशु पुत्र, और पवित्र आत्मा—ये सभी परमेश्वर हैं; वे सभी समान हैं, फिर भी परमेश्वर एक ही है। दूसरे शब्दों में, बाइबल परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र, और परमेश्वर पवित्र आत्मा को एक ही परमेश्वर के रूप में वर्णित करती है, जो तीन अलग-अलग व्यक्तियों के रूप में विद्यमान है। यह बात 2 कुरिन्थियों 13:13 में कही गई है: "प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह, और परमेश्वर का प्रेम, और पवित्र आत्मा की संगति आप सभी के साथ हो।" रविवार की आराधना सेवाओं के दौरान, जब पादरी आशीर्वाद (benediction) देते हैं, तो वे इन शब्दों के साथ ऐसा करते हैं: "प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह, और परमेश्वर का प्रेम, और पवित्र आत्मा की संगति।" इसका अर्थ यह है कि प्रभु यीशु मसीह, परमेश्वर पिता, और पवित्र आत्मा—ये सभी परमेश्वर हैं, सभी समान हैं, और मिलकर एक ही परमेश्वर बनाते हैं। इस बात की और पुष्टि मत्ती 28:19 में होती है: "इसलिए जाओ और सभी जातियों के लोगों को चेला बनाओ, और उन्हें पिता, और पुत्र, और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो।" जब पादरी बपतिस्मा देते हैं, तो वे यह संस्कार "पिता, और पुत्र, और पवित्र आत्मा के नाम से" पूरा करते हैं। एक धर्मशास्त्री के अनुसार, प्रभु ने हमें बपतिस्मा देने का आदेश "पिता, और पुत्र, और पवित्र आत्मा के नाम से" दिया—न कि यह कहा कि "पिता के नाम से, और पुत्र के नाम से, और पवित्र आत्मा के नाम से"—इसका कारण यह है कि परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र, और परमेश्वर पवित्र आत्मा—ये सभी मिलकर एक ही परमेश्वर हैं। इस बात की पुष्टि फिलिप्पियों 2:6 में होती है: "जिसने, स्वभाव से परमेश्वर होते हुए भी, परमेश्वर के साथ समानता को अपने लाभ के लिए उपयोग करने योग्य वस्तु नहीं समझा।" बाइबल यह घोषणा करती है कि "वह"—अर्थात् मसीह यीशु—"स्वभाव से परमेश्वर" है और "परमेश्वर के समान" है। फिर भी, "परमेश्वर के साथ समानता को ऐसी चीज़ न मानते हुए जिसे ज़बरदस्ती हासिल किया जाए," पुत्र, यीशु मसीह—जो 'वचन' हैं और परमेश्वर भी हैं—ने मनुष्य का रूप धारण किया (पद 7; यूहन्ना 1:14)। यूहन्ना 10:30 कहता है: "मैं और

पिता एक हैं।" बाइबल ज़ोर देकर कहती है कि "मैं"—यानी पुत्र, यीशु मसीह—परमेश्वर पिता के साथ एक हूँ।

बाइबल इस बात की भी पुष्टि करती है कि पुत्र, यीशु मसीह—जो "वचन" हैं—परमेश्वर हैं (और पवित्र आत्मा भी परमेश्वर हैं)। पवित्रशास्त्र पुत्र, यीशु मसीह (वचन) को परमेश्वर के रूप में पहचान देता है; यह घोषणा करता है कि पुत्र, यीशु मसीह (वचन) में ठीक वही स्वभाव (गुण) हैं जो केवल परमेश्वर के हैं; और यह गवाही देता है कि पुत्र, यीशु मसीह (वचन) ऐसे काम करते हैं जिन्हें केवल परमेश्वर ही पूरा कर सकते हैं। बाइबल सिखाती है कि परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र (यीशु), और परमेश्वर पवित्र आत्मा—ये सभी परमेश्वर हैं; कि ये सभी समान हैं; और कि परमेश्वर केवल एक ही है। दूसरे शब्दों में, बाइबल यह प्रकट करती है कि परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र, और परमेश्वर पवित्र आत्मा मिलकर एक 'त्रिएक' (Trinity) बनाते हैं—तीन व्यक्ति जो फिर भी एक ही परमेश्वर हैं। हमें पवित्रशास्त्र में प्रकट किए गए त्रिएक परमेश्वर पर मज़बूती से टिके रहना चाहिए और 'त्रिएक' के सिद्धांत में दृढ़ता से स्थापित रहना चाहिए। इसलिए, जब विधर्मी लोग हम पर हमला करते हैं और हमें गुमराह करने की कोशिश करते हैं, तो हमें डगमगाना नहीं चाहिए; बल्कि, हमें उन्हें सही मार्ग पर लाने में मदद करनी चाहिए।

“वचन देह बन गया” (4)

[यूहन्ना 1:1-4, 9-14]

आज का हमारा पाठ यूहन्ना 1:14 के पहले भाग से लिया गया है: “वचन देह बन गया...”। इस पद पर अपने विचारों को केंद्रित करते हुए, आइए हम तीन मुख्य बिंदुओं पर मनन करें और उनके माध्यम से उस अनुग्रह को प्राप्त करने का प्रयास करें जो परमेश्वर हमें प्रदान करता है:

पहला, “देह” का क्या अर्थ है?

“वचन” ही “परमेश्वर” है (पद 1), और “देह” का तात्पर्य एक मनुष्य से है। यहाँ, हम “देह” की अवधारणा को मोटे तौर पर दो श्रेणियों में बाँट सकते हैं: (1) एक ऐसा व्यक्ति जो पाप से जुड़ा हुआ है—अर्थात्, एक ऐसा व्यक्ति जिसमें पाप विद्यमान है या जो पाप के क्षेत्र से संबंधित है; और (2) एक ऐसा व्यक्ति जो पाप से जुड़ा हुआ नहीं है—अर्थात्, एक ऐसा व्यक्ति जो पाप-रहित है या जो पाप के क्षेत्र से संबंधित नहीं है। वाक्यांश “वचन देह बन गया” में, शब्द “देह” का तात्पर्य दूसरी श्रेणी से है: एक ऐसा व्यक्ति जो पाप से जुड़ा हुआ नहीं है—विशेष रूप से, यीशु मसीह, जो पाप-रहित थे और पाप के क्षेत्र से संबंधित नहीं थे। यद्यपि शब्द “देह” के कई सूक्ष्म अर्थ हो सकते हैं, फिर भी मैं यहाँ केवल एक विशिष्ट अर्थ पर ध्यान केंद्रित करना चाहूँगा। आइए हम 2 कुरिन्थियों 10:4 की ओर देखें: “जिन हथियारों से हम लड़ते हैं, वे सांसारिक हथियार नहीं हैं। इसके विपरीत, उनमें गढ़ों को ढहा देने की ईश्वरीय सामर्थ्य है। हम कुतर्कों को ढहा देते हैं...”। यहाँ, वाक्यांश “जिन हथियारों से हम लड़ते हैं” का तात्पर्य “अच्छी लड़ाई” —अर्थात्, आत्मिक युद्ध से है।

इसके अतिरिक्त, ये "हथियार" सांसारिक या शारीरिक प्रकृति के नहीं हैं। बल्कि, ये "हथियार" परमेश्वर की सामर्थ्य हैं [जैसा कि *मॉडर्न पीपल्स बाइबल* में इसका अनुवाद किया गया है: "ऐसे हथियार जो परमेश्वर में सामर्थ्यवान हैं"]। इसलिए, उनमें किसी भी गढ़ को ढहा देने की क्षमता है, चाहे वह कितना भी सुदृढ़ क्यों न हो। पवित्रशास्त्र कहता है, "जिन हथियारों से हम लड़ते हैं, वे सांसारिक [शारीरिक] हथियार नहीं हैं"; इस विशिष्ट संदर्भ में, शब्द "देह" का तात्पर्य सामर्थ्यहीनता—अर्थात्, मानवीय दुर्बलता से है। यह तथ्य कि परमेश्वर का पुत्र—अर्थात् "वचन"—यीशु मसीह के रूप में देह बन गया, एक अर्थ में, सामर्थ्यहीनता या सुभेद्यता के एक कार्य के रूप में देखा जा सकता है। इसका मतलब है कि जब यीशु सो नहीं पाते थे, तो उन्हें थकान महसूस होती थी; जब वे खा नहीं पाते थे, तो उन्हें भूख लगती थी; और जब वे पी नहीं पाते थे, तो उन्हें प्यास लगती थी। मत्ती 4:2 में कहा गया है: "चालीस दिन और चालीस रात उपवास करने के बाद, उन्हें भूख लगी" [(समकालीन अंग्रेज़ी संस्करण) "यीशु ने 40 दिन उपवास किया और उन्हें बहुत ज़्यादा भूख लगी"]। जब यीशु भूख की इस स्थिति में थे, तभी शैतान ने उन्हें तीन बार लुभाने की कोशिश की; पहला प्रलोभन यह था: "यदि तुम परमेश्वर के पुत्र हो, तो इन पत्थरों से कहो कि वे रोटी बन जाएँ" (पद 3)। उसी क्षण, यीशु ने वचन की शक्ति से शैतान के प्रलोभन पर विजय पाई, और यह घोषणा की: "यह लिखा है: 'मनुष्य केवल रोटी से ही जीवित नहीं रहेगा, बल्कि परमेश्वर के मुख से निकलने वाले हर वचन से जीवित रहेगा'" (पद 4; व्यवस्थाविवरण 8:3 का उद्धरण)। शैतान हमें ठीक उसी समय लुभाने और परीक्षाओं में डालने की कोशिश करता है, जब हम सबसे ज़्यादा कमज़ोर होते हैं। यीशु की तरह, हमें भी परमेश्वर के वचन के द्वारा इन चुनौतियों पर विजय पानी चाहिए। यूहन्ना 4:6 में लिखा है: "वहाँ याकूब का कुआँ था, और यीशु, यात्रा से थककर, कुएँ के पास बैठ गए। यह लगभग दोपहर का समय था।" जब यीशु ने यहूदिया छोड़ा और एक बार फिर गलील की ओर प्रस्थान किया (पद 3), तो उन्हें रास्ते में सामरिया से होकर गुज़रना पड़ा (पद 4)। साइखार नामक एक सामरी गाँव में पहुँचने पर (पद 5), यीशु—अपनी यात्रा से थके हुए—याकूब के कुएँ के पास बैठ गए (पद 6)। ठीक इसी कुएँ पर यीशु की मुलाकात एक सामरी स्त्री से हुई; उन्होंने उससे बातचीत की, उसके साथ सुसमाचार साझा किया, और उसके उद्धार का मार्ग प्रशस्त किया। हमें भी लोगों से मिलना और बातचीत करना चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे यीशु ने किया था, और उनके

साथ सुसमाचार साझा करना चाहिए। यूहन्ना 19:28 में धर्मशास्त्र कहता है: “इसके बाद, यीशु ने, यह जानते हुए कि अब सब कुछ पूरा हो चुका है, कहा (धर्मशास्त्र को पूरा करने के लिए), ‘मुझे प्यास लगी है।’” यीशु प्यासे थे; उन्होंने शारीरिक प्यास का अनुभव किया। हालाँकि, यीशु उस प्यास के कारण न तो पाप के आगे झुके और न ही उन्होंने कोई अपराध किया।

मत्ती 26:41 में धर्मशास्त्र कहता है: “जागते रहो और प्रार्थना करते रहो, ताकि तुम परीक्षा में न पड़ो। आत्मा तो तैयार है, पर शरीर कमजोर है।” यीशु अपने शिष्यों के साथ गेथसेमानी के बगीचे में गए; उन्होंने उनमें से नौ को बगीचे के प्रवेश द्वार पर छोड़ दिया और केवल तीन को—पतरस और ज़ेबेदी के दो बेटों को—प्रार्थना करने के लिए बगीचे के और अंदर ले गए (पद 36–37)। यीशु ने इन तीनों शिष्यों से कहा, “मेरा मन इतना उदास है कि मानो मेरे प्राण ही निकल जाएँगे। तुम यहीं ठहरो और मेरे साथ जागते रहो” (पद 38); हालाँकि, जब वे प्रार्थना करके लौटे, तो उन्होंने पाया कि तीनों शिष्य सो गए थे (पद 39–40)। उस समय, यीशु ने उन तीनों शिष्यों से कहा, “जागते रहो और प्रार्थना करते रहो ताकि तुम परीक्षा में न पड़ो। आत्मा तो तैयार है, पर शरीर कमजोर है” (पद 41)। हालाँकि उन तीनों शिष्यों की आत्माएँ तो तैयार थीं, पर उनका शरीर कमजोर था; परिणामस्वरूप, वे जागकर प्रार्थना नहीं कर पाए, और इसके बजाय सो गए। जब यीशु दूसरी बार प्रार्थना करने गए और फिर लौटे, तो उन्होंने पाया कि तीनों शिष्य “फिर से गहरी नींद में सोए हुए थे, क्योंकि उनकी आँखें नींद से भारी हो रही थीं” (पद 43, *द कंटेम्पररी बाइबल*)। इसके

परिणामस्वरूप, पतरस ने तीन बार यीशु का इनकार किया: (1) उसने सबके सामने यीशु का इनकार किया (पद 70); (2) उसने कसम खाई और फिर से उनका इनकार किया (पद 72); और (3) उसने श्राप दिया और कसम खाई, यह कहते हुए इनकार किया कि वह यीशु को जानता भी नहीं है (पद 74)। यह पाप है। पतरस ने यह पाप अपनी कमजोरी के कारण किया। हालाँकि, पतरस ने अपने पाप का पश्चाताप किया (पद 75)। कमजोरी अपने आप में कोई पाप नहीं है; फिर भी, शैतान और उसके चेले हमारी कमजोरी का फ़ायदा उठाकर हमें परीक्षा में डालते हैं, जिससे हम परीक्षा में पड़ जाते हैं और पाप कर बैठते हैं।

इस आत्मिक लड़ाई में, हमारे पास परमेश्वर का एक शक्तिशाली हथियार है: परमेश्वर का वचन। हमें उसी वचन का उपयोग करके लड़ना चाहिए—और जीतना चाहिए। 1 यूहन्ना 2:13–14 में यही कहा गया है: “...हे

जवानों, मैं तुम्हें इसलिए लिख रहा हूँ क्योंकि तुमने उस दुष्ट पर जय पाई है... हे जवानों, मैं तुम्हें इसलिए लिख रहा हूँ क्योंकि तुम बलवान हो, और परमेश्वर का वचन तुम में बसा रहता है, और तुमने उस दुष्ट पर जय पाई है।" इसलिए, थिस्सलोनीका कलीसिया के विश्वासियों की तरह, जब हम प्रभु के सेवकों द्वारा परमेश्वर का वचन सुनाते हुए सुनते हैं, तो हमें इसे केवल इंसानी शब्दों के रूप में नहीं लेना चाहिए, बल्कि इसे परमेश्वर के ही वचन के रूप में स्वीकार करना चाहिए; ऐसा करने पर, वह वचन हम विश्वासियों के भीतर ज़ोरदार ढंग से काम करेगा (1 थिस्स. 2:13), और हमें आत्मिक रूप से मज़बूत बनने में मदद करेगा (1 यूहन्ना 2:14)। *New Hymnal* में भजन संख्या 11 के तीसरे पद के बोल—जिसका शीर्षक है "एकमात्र परमेश्वर के लिए"—इस प्रकार हैं: "अपना पूरा जीवन पवित्र आत्मा को सौंप दो, जो हमारा दिलासा देने वाला है; वह वचन के द्वारा हमारी मदद करता है और हमें पाप पर जीत पाने की ताकत देता है। वह वचन के द्वारा हमारी मदद करता है और हमें पाप पर जीत पाने की ताकत देता है।" इब्रानियों 4:15 में लिखा है: "क्योंकि हमारा महायाजक ऐसा नहीं है जो हमारी कमज़ोरियों के प्रति सहानुभूति न रख सके, बल्कि वह हर तरह से हमारी ही तरह परखा गया है—फिर भी उसने कोई पाप नहीं किया।" यीशु मसीह को हर तरह से वैसे ही परखा गया जैसे हमें परखा जाता है, फिर भी उन्होंने कोई पाप नहीं किया। हम सभी को भी इस आत्मिक लड़ाई में जीत हासिल करनी चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे यीशु ने की थी। इस आत्मिक लड़ाई को जीतने के लिए, हम सभी को परमेश्वर की शक्ति की तलाश करनी चाहिए। इसके अलावा, हमें परमेश्वर के शक्तिशाली वचन के द्वारा शैतान और उसके चले-चपाटों के प्रलोभनों के खिलाफ लड़ना चाहिए और उन पर जीत हासिल करनी चाहिए।

दूसरी बात, परमेश्वर—जो "वचन" है—कैसे "देह" (एक इंसान) बन गया?

यह अंश फिलिप्पियों 2:6–8 से लिया गया है: "जिसने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी, परमेश्वर के बराबर होने को ऐसी वस्तु न समझा जिसे थामे रहना चाहिए; बल्कि उसने अपने आप को शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण करके मनुष्यों के समानता में आ गया। और मनुष्य के रूप में पाए जाने पर, उसने अपने आप को दीन किया, और मृत्यु तक—हाँ, क्रूस की मृत्यु तक—आज्ञाकारी बना रहा!" यहाँ, "वह"

यीशु मसीह को संदर्भित करता है—वह जो "वचन" और "परमेश्वर" दोनों है (यूहन्ना 1:1)। यीशु मसीह परमेश्वर का ही स्वरूप है और परमेश्वर के बराबर है; फिर भी, उसने परमेश्वर के साथ इस समानता को ऐसी वस्तु नहीं समझा जिसे ज़बरदस्ती थामे रखना चाहिए, बल्कि इसके बजाय वह मनुष्यों जैसा बन गया (फिलिप्पियों 2:6–7)। चूँकि यीशु मसीह पूरी तरह से इंसान है, तो प्रेरित पौलुस ने यह क्यों कहा कि वह मनुष्यों *जैसा* बन गया, बजाय इसके कि वह सीधे-सीधे यह कहता कि वह एक इंसान *बन गया*? एक धर्मशास्त्री की व्याख्या के अनुसार, इसका कारण यह है कि यीशु केवल इंसान ही नहीं है, बल्कि परमेश्वर भी है। दूसरे शब्दों में, यीशु पूरी तरह से परमेश्वर है और पूरी तरह से इंसान भी है। इसीलिए यह कहा गया है कि वह मनुष्यों *जैसा* बन गया। यह पाठ आगे कहता है कि यीशु मसीह मनुष्यों के समानता में प्रकट हुआ (पद 8)। यीशु ने देहधारण किया (अर्थ: ईश्वरीय सत्ता का पृथ्वी पर अवतरण)। वह एक शिशु (एक इंसान) के रूप में इस संसार में आया। इसके अलावा, क्योंकि यीशु बड़ा हुआ और एक आम इंसान की तरह जिया, इसलिए हर किसी ने उसे एक साधारण व्यक्ति के रूप में ही देखा। ऐसा दीन-हीन जीवन जीने के बाद, यीशु ने अपने आप को परमेश्वर पिता की इच्छा के अधीन कर दिया—यहाँ तक कि मृत्यु तक भी—और इस प्रकार क्रूस पर अपनी जान दे दी। यीशु एक स्त्री के गर्भ के माध्यम से इस संसार में आया। मत्ती 1:18 में लिखा है: "यीशु मसीह का जन्म इस प्रकार हुआ: उसकी माता मरियम की सगाई यूसुफ के साथ हुई थी, परन्तु उनके एक साथ आने से पहले ही, वह पवित्र आत्मा के द्वारा गर्भवती पाई गई।" अगर हम उत्पत्ति 3:15—परमेश्वर के वाचा के वचन—को देखें, तो उसमें यह कहा गया है: "मैं तेरे और स्त्री के बीच, और तेरे वंश और उसके वंश के बीच बैर उत्पन्न करूँगा; वह तेरे सिर को कुचलेगा, और तू उसकी एड़ी को कुचलेगा।" यहाँ, "स्त्री का वंश" यीशु मसीह को दर्शाता है, जिनका जन्म कुँवारी मरियम से हुआ था (मत्ती 1:18)। मरियम—एक कुँवारी स्त्री जिसकी अभी शादी नहीं हुई थी—यीशु मसीह को जन्म कैसे दे सकती थी? यह इसलिए संभव हुआ क्योंकि पवित्र आत्मा ने गर्भधारण करवाया था। मत्ती 1:18 और 20 में लिखा है: "अब यीशु मसीह का जन्म इस प्रकार हुआ: जब उनकी माता मरियम की सगाई यूसुफ से हो गई, तो उनके एक साथ आने से पहले ही, वह पवित्र आत्मा की ओर से गर्भवती पाई गई... परन्तु जब वह इन बातों के बारे में सोच ही रहा था, तो देखो, प्रभु का एक दूत उसे स्वप्न में दिखाई दिया, और कहा, 'हे यूसुफ, दाऊद के वंशज, अपनी पत्नी मरियम को अपने यहाँ लाने से मत डर, क्योंकि जो उसके गर्भ में है, वह पवित्र आत्मा की ओर से है।'" गलतियों 4:4–5 में कहा गया है: "परन्तु जब समय पूरा हो गया, तो परमेश्वर

ने अपने पुत्र को भेजा, जो स्त्री से जन्मा, और व्यवस्था के अधीन जन्मा, ताकि जो लोग व्यवस्था के अधीन थे, उन्हें छुड़ा ले, और हम पुत्र होने का अधिकार प्राप्त करें।" जिस उद्देश्य से परमेश्वर पिता ने अपने पुत्र, यीशु मसीह को—जो स्त्री से जन्मा और व्यवस्था के अधीन जन्मा—भेजा था, वह यह था कि जो लोग व्यवस्था के अधीन थे, उन्हें छुड़ाया जाए और हमें परमेश्वर की संतान बनने के योग्य बनाया जाए (पद 5, *द कंटेम्पररी बाइबल*)। अब जब हम परमेश्वर की संतान बन गए हैं, तो उसने अपने पुत्र की आत्मा—पवित्र आत्मा—को हमारे हृदयों में भेजा है, जिससे हम परमेश्वर को पुकारते हुए कह पाते हैं, "अब्बा! पिता!" (पद 6)। हमें बचाने के लिए, परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र, यीशु मसीह को इस पृथ्वी पर भेजा; उसने पवित्र आत्मा को भी हमारे हृदयों में भेजा, जिससे हम परमेश्वर को "अब्बा, पिता" कहकर पुकार सकें और अपनी विनितियाँ उसके सामने रख सकें।

तीसरा, परमेश्वर—जो "वचन" है—के "देह" (मनुष्य) बन जाने का परिणाम क्या है? इसका परिणाम दो बातों में है: (1) यीशु पूरी तरह से परमेश्वर और पूरी तरह से मनुष्य बन गए, और (2) यीशु एक अनंत मनुष्य बन गए। यीशु इस पृथ्वी पर तैंतीस वर्षों तक रहे, क्रूस पर मरे, कब्र से जी उठे, और उसके बाद स्वर्ग चले गए, जहाँ वे अब परमेश्वर के सिंहासन के दाहिने हाथ विराजमान हैं। यीशु परमेश्वर द्वारा निर्धारित समय पर लौटेंगे। इसके अलावा, यीशु अनंत काल तक जीवित रहते हैं। इस बात की पुष्टि प्रकाशितवाक्य 1:18 में की गई है: "मैं वह जीवित हूँ; मैं मरा था, और अब देखो, मैं सदा और सर्वदा के लिए जीवित हूँ! और मृत्यु और अधोलोक की कुंजियाँ मेरे पास हैं।" [(समकालीन अंग्रेजी संस्करण) "मैं वह जीवित हूँ। मैं मरा था, लेकिन अब मैं सदा के लिए जीवित हूँ, और मृत्यु और नरक की कुंजियाँ मेरे पास हैं।"]

यह कथन कि "वचन देह बन गया" (यूहन्ना 1:14) इस बात का संकेत देता है कि मानवीय स्वभाव—अर्थात् "देह"—ठीक उसी क्षण अस्तित्व में आया, जब इस "वचन" ने वह रूप धारण करना शुरू किया।

"परमेश्वर" के अस्तित्व के संबंध में—जो कि "वचन" (पद 1) हैं—कोई आदि नहीं है, और न ही कभी हो सकता है। हालाँकि, परमेश्वर के पुत्र, यीशु मसीह के संबंध में—जो कि "वचन" हैं—एक विशिष्ट अर्थ में एक आदि *है*, और वह यह कि वे "देह" (मनुष्य) बन गए। इस बात का उल्लेख लूका 2:11 में किया गया है:

"आज दाऊद के नगर में तुम्हारे लिए एक उद्धारकर्ता का जन्म हुआ है; वह मसीह प्रभु है।" यद्यपि हम पूर्ण निश्चितता के साथ वह सटीक दिन नहीं जान सकते जिस दिन यीशु का जन्म हुआ था, फिर भी निस्संदेह समय में एक ऐसा विशिष्ट बिंदु है जो एक मनुष्य के रूप में यीशु के आदि को चिह्नित करता है। यीशु—परमेश्वर "वचन," जो बिना आदि के पूर्ण परमेश्वर हैं, और पूर्ण, अनंत मनुष्य हैं—पवित्र आत्मा द्वारा गर्भधारण किए जाने के फलस्वरूप, एक स्त्री की संतान के रूप में, कुँवारी मरियम के माध्यम से "देह" (मनुष्य) बन गए; इस प्रकार, इस पृथ्वी पर अपने समय के दौरान उन्होंने एक आदि (जन्म) और एक अंत (मृत्यु) दोनों का अनुभव किया। इसका उद्देश्य हमें—जिनका, उनकी ही तरह, इस दुनिया में एक आरंभ और एक अंत है—और इसके अलावा, हमें जो आध्यात्मिक रूप से मृत थे और जिनका भाग्य अनंत मृत्यु था, उन्हें ऐसे अनंत प्राणी बनाना था जो स्वर्ग के अनंत राज्य में सदा जीवित रहें; एक ऐसा राज्य जिसका न कोई आरंभ है और न ही कोई अंत। इसलिए, हमें इस विश्वास पर दृढ़ रहना चाहिए कि 'वचन' वास्तव में 'देह' बन गया। हमारे प्रभु यीशु मसीह में विश्वास के द्वारा—जो एक ही समय में पूर्ण परमेश्वर, पूर्ण मनुष्य और अनंत मनुष्य हैं—हमें विजय का जीवन जीना चाहिए, और परमेश्वर की सामर्थ्य से सशक्त होकर आध्यात्मिक युद्ध में लड़ना और विजयी होना चाहिए। हमें प्रार्थना में सतर्क रहना चाहिए, अपने "अब्बा पिता" से परमेश्वर की शक्ति मांगनी चाहिए, और—परमेश्वर के शक्तिशाली वचन से सुसज्जित होकर—हमें विश्वास के द्वारा शैतान और उसके गुर्गों के प्रलोभनों को दूर भगाना चाहिए। चूंकि यीशु मसीह ने क्रूस पर शैतान को पहले ही हरा दिया है, इसलिए मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम सभी, विजय के इस आश्वासन को दृढ़ता से थामे हुए, अपनी विश्वास की यात्रा को तय करते समय—स्वयं के विरुद्ध, दुनिया के विरुद्ध, पाप के विरुद्ध और शैतान के विरुद्ध—चल रहे अपने आध्यात्मिक युद्धों में विजयी हों।

“वचन देह बन गया” (5)

[यूहन्ना 1:1-4, 9-14]

परमेश्वर का पुत्र—जो “वचन” है—क्यों “देह” (एक मनुष्य) बन गया? इसके पीछे क्या उद्देश्य था? इसके तीन उद्देश्य थे: (1) हमारे बीच निवास करना; (2) परमेश्वर और हमारे बीच मध्यस्थ बनना; और (3) प्रायश्चित का बलिदान बनना।

पहला उद्देश्य जिसके लिए परमेश्वर का पुत्र—अर्थात् “वचन”—“देह” (एक मनुष्य) बन गया, वह था हमारे बीच निवास करना।

यूहन्ना 1:14 कहता है: “वचन देह बन गया और हमारे बीच निवास किया...” यहाँ, “निवास करना” शब्द का अर्थ है “तंबू गाड़ना” या “तंबू में रहना।” यदि हम पुराने नियम (Old Testament) को देखें, तो बाइबल का पहला अंश जहाँ “तंबू” शब्द आता है, वह उत्पत्ति 4:20 है: “आदाह ने याबाल को जन्म दिया; वह उन लोगों का पिता था जो तंबुओं में रहते हैं और जिनके पास पशुधन है।” बाइबल में यह दर्ज है कि याबाल नाम का एक व्यक्ति तंबुओं में रहता था। जब अब्राहम—विश्वास के पिता—को परमेश्वर का बुलावा मिला (उत्पत्ति 12:1-3) और 75 वर्ष की आयु में उन्होंने कनान देश (वह देश जो परमेश्वर उन्हें दिखाने वाला था) में प्रवेश किया, तो उन्होंने रहने के लिए कोई स्थायी घर नहीं बनाया जैसा कि उन्होंने अपने गृहनगर में बनाया था; इसके बजाय, उन्होंने तंबू गाड़े और उनमें रहे—लगभग सौ वर्षों तक तंबुओं में निवास किया (क्योंकि उनकी मृत्यु 175 वर्ष की आयु में हुई थी)। इसका कारण यह था कि परमेश्वर ने कनान देश अब्राहम को

व्यक्तिगत रूप से नहीं, बल्कि उनके वंशजों को दिया था; इस प्रकार, अब्राहम कनान देश में एक परदेशी के रूप में रहे, तंबू गाड़े और उनमें निवास किया, और लगभग सौ वर्षों तक ऐसा करने के बाद 175 वर्ष की आयु में उनका देहांत हो गया (उत्पत्ति 25:7)। निर्गमन (Exodus) के समय के दौरान, इस्राएल के लोग भी जंगल में रहते हुए तंबूओं में ही रहे थे। ये आयतें Exodus 25:8 और 26:1 से ली गई हैं: “वे मेरे लिए एक पवित्र स्थान बनाएँ, ताकि मैं उनके बीच रह सकूँ... इसके अलावा, तुम महीन बुने हुए लिनन के दस पर्दे, और नीले, बैंगनी और लाल रंग के धागों से एक तंबू बनाओगे; तुम उन पर करूबों के कलात्मक डिज़ाइन बुनोगे।” परमेश्वर ने मूसा को एक पवित्र स्थान—यानी तंबू—बनाने का निर्देश दिया, जहाँ वह इस्राएल के लोगों के बीच रहेगा। इस पवित्र स्थान (या तंबू) के अंदर एक पर्दा था, जिसका मकसद पवित्र स्थान को परम पवित्र स्थान से अलग करना था (26:33)। इस अलगाव का कारण यह था कि परमेश्वर स्वयं परम पवित्र स्थान के अंदर रहने वाला था। जहाँ पवित्र स्थान में सात शाखाओं वाला एक दीपक था जो कमरे को दिन-रात रोशन रखता था, वहीं परम पवित्र स्थान में ऐसे किसी दीपक की ज़रूरत नहीं थी। ऐसा इसलिए था क्योंकि वहाँ रहने वाले पवित्र परमेश्वर की उपस्थिति से ही वहाँ अपनी एक दिव्य रोशनी फैलती थी। राजा सुलैमान ने इस पवित्र स्थान को बनाने में सात साल लगाए (इस तरह उसने पवित्र स्थान और परम पवित्र स्थान के बीच अलगाव स्थापित किया)।

नए नियम की ओर देखें, तो हम पाते हैं कि 'वचन' देह बन गया; किसी भौतिक पवित्र स्थान, तंबू या मंदिर में रहने के बजाय, वह *हमारे* बीच रहने आया (John 1:14)। Matthew 27:51 कहता है: “तब, देखो, मंदिर का पर्दा ऊपर से नीचे तक दो टुकड़ों में फट गया; और धरती काँप उठी, और चट्टानें फट गईं।” क्योंकि वह पर्दा—जो पहले पवित्र स्थान को परम पवित्र स्थान से अलग करता था—दो टुकड़ों में फट गया था, इसलिए लोगों के लिए परम पवित्र स्थान में प्रवेश करने का मार्ग खुल गया। परिणामस्वरूप, परमेश्वर—जो पहले केवल परम पवित्र स्थान के अंदर रहता था—अब पवित्र स्थान के अंदर भी रहने लगा, और इस तरह वह अपने लोगों के बीच रहने लगा। John 1:14 का पहला भाग कहता है: “और वचन देह बन गया और हमारे बीच रहने लगा...” अंत में, Matthew 1:23 घोषणा करता है: “देखो, एक कुँवारी गर्भवती होगी, और एक पुत्र को जन्म देगी, और वे उसका नाम इममानुएल रखेंगे,” जिसका अनुवाद है, “परमेश्वर हमारे साथ है।” यह अंश भविष्यवक्ता यशायाह द्वारा यीशु के अवतार से लगभग 700 साल पहले दी गई एक

भविष्यवाणी है (Isaiah 7:14); यह घोषणा करता है कि "परमेश्वर हमारे साथ है"—यही "इममानुएल" का अर्थ है। परमेश्वर मनुष्य बन गया और हमारे बीच निवास करता है।

हमारे वर्तमान युग में मंदिर कहाँ स्थित है? इसका उत्तर हमें 1 कुरिन्थियों 6:19–20 में मिलता है: "क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारा शरीर पवित्र आत्मा का मंदिर है, जो तुम में बसा हुआ है, और जिसे तुमने परमेश्वर से पाया है? तुम अपने नहीं हो; तुम्हें मोल लिया गया है। इसलिए अपने शरीरों के द्वारा परमेश्वर का आदर करो।" बाइबल हमें बताती है कि हमारे शरीर "पवित्र आत्मा के मंदिर" हैं। दूसरे शब्दों में, पवित्र आत्मा हमारे भीतर निवास करता है, ठीक वैसे ही जैसे परमेश्वर का पुत्र—वह 'वचन' जो देहधारी हुआ—निवास करता है। वे हमारे साथ निवास करते हैं; वास्तव में, यीशु ने घोषणा की थी, "मैं सदा तुम्हारे साथ रहूँगा, इस युग के अंत तक" (मत्ती 28:20)। परमेश्वर का पुत्र—वह 'वचन'—हमारे साथ क्यों निवास करता है? इसके पीछे क्या उद्देश्य है? इसके तीन कारण हैं:

(1) इसका उद्देश्य हमें परमेश्वर को प्रकट करना है।

मूसा परमेश्वर को देखने की इच्छा रखता था और उसने उससे विनती करते हुए कहा, "कृपया मुझे अपनी महिमा दिखा।" यह बात निर्गमन 33:18 में लिखी है: "मूसा ने कहा, 'कृपया, मुझे अपनी महिमा दिखा।'" जिस प्रकार एक बच्चा अपने माता-पिता का चेहरा देखने के लिए बेसब्री से तरसता है, उसी प्रकार मूसा—जो परमेश्वर का एक बच्चा था—ने भी परमेश्वर को देखने की तीव्र इच्छा की और इसलिए यह विनती की; हालाँकि, परमेश्वर का उत्तर था, "तुम मेरा चेहरा नहीं देख सकते; क्योंकि कोई भी मनुष्य मुझे देखकर जीवित नहीं रह सकता" (पद 20)। इसलिए, यीशु—जो परमेश्वर का पुत्र है और स्वयं परमेश्वर ही है—एक मनुष्य बन गया और हमारे बीच रहने लगा, ताकि वह हमें परमेश्वर को प्रकट कर सके। फिलिप ने भी परमेश्वर को देखने की इच्छा की थी। यद्यपि यीशु ने कहा था, "मार्ग, सत्य और जीवन मैं ही हूँ। मेरे द्वारा ही कोई पिता के पास पहुँच सकता है। यदि तुम मुझे जानते, तो मेरे पिता को भी जानते; और अब से तुम उसे जानते हो और उसे देख चुके हो" (यूहन्ना 14:6–7), फिर भी फिलिप ने कहा, "हे प्रभु, हमें पिता को दिखा दे, और यह हमारे लिए पर्याप्त होगा" (पद 8)। उसी क्षण, यीशु ने फिलिप से कहा, "क्या मैं इतने लंबे समय

से तुम्हारे साथ रहा हूँ, और फिर भी तुम मुझे नहीं जान पाए, फिलिप? जिसने मुझे देखा है, उसने पिता को देखा है; तो तुम यह कैसे कह सकते हो कि 'हमें पिता को दिखा'?" (पद 9) [(समकालीन अंग्रेज़ी संस्करण) "यीशु ने उससे कहा, 'फिलिप, मैं इतने लंबे समय से तुम्हारे साथ हूँ, और फिर भी तुम मुझे नहीं जानते? जिसने भी मुझे देखा है, उसने पिता को देखा है; तो तुम मुझसे पिता को दिखाने के लिए क्यों कह रहे हो?'"] यूहन्ना 1:18 में लिखा है: "किसी ने कभी परमेश्वर को नहीं देखा; एकमात्र परमेश्वर, जो पिता की गोद में है, उसने ही उसे प्रकट किया है" [(समकालीन अंग्रेज़ी संस्करण) "किसी ने कभी परमेश्वर को नहीं देखा। परन्तु एकमात्र पुत्र, जो पिता की बाहों में है, उसने ही उसे प्रकट किया है"]। यीशु मसीह का प्रकटीकरण— वह एकमात्र परमेश्वर जो परमेश्वर पिता की गोद में निवास करता है—ठीक इसी उद्देश्य के लिए हुआ था कि वह परमेश्वर पिता को प्रकट करे। यहाँ, शब्द "प्रकट किया" का अर्थ है कि उन्होंने सब कुछ प्रकट कर दिया—स्पष्ट रूप से, विस्तार से, और बिना किसी छिपाव के। एकमात्र पुत्र, यीशु ने, परमेश्वर पिता को प्रकट किया। इसलिए, हम जितना अधिक यीशु को जानते हैं, उतना ही अधिक हम परमेश्वर पिता को जानते हैं। यीशु को जानना ही परमेश्वर पिता को जानना है; इसके विपरीत, यीशु को न जानना ही परमेश्वर पिता को न जानना है। यूहन्ना 8:19 कहता है: "तब उन्होंने उससे पूछा, 'तुम्हारा पिता कहाँ है?' यीशु ने उत्तर दिया, 'तुम न मुझे जानते हो, न मेरे पिता को। यदि तुम मुझे जानते, तो मेरे पिता को भी जानते।'" इस प्रकार, वह मुख्य उद्देश्य जिसके लिए परमेश्वर पुत्र—यानी 'वचन'—देहधारी (मनुष्य) बना और हमारे बीच रहा, वह यह था कि वह परमेश्वर पिता को हमें ज्ञात कराए और उन्हें हमारे सामने प्रकट करे।

(2) यह हमें जानने के लिए था।

चूँकि वह वही परमेश्वर है जिसने हम मनुष्यों को रचा है, तो भला वह सर्वज्ञ परमेश्वर हमें कैसे नहीं जान सकता? वह हमें बहुत अच्छी तरह जानता है। फिर भी, इसके बावजूद, परमेश्वर पुत्र मनुष्य बना ताकि वह हमें जान सके। यहाँ, "जानने" का अर्थ केवल बौद्धिक ज्ञान रखना नहीं है, बल्कि व्यक्तिगत अनुभव के द्वारा जानना है। 2 कुरिन्थियों 5:21 कहता है: "जिसने पाप नहीं जाना, उसे परमेश्वर ने हमारे लिए पाप ठहराया, ताकि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएँ।" यह कथन कि यीशु मसीह ने "पाप नहीं जाना," इसका अर्थ है कि उसने पाप को अनुभवात्मक रूप से नहीं जाना। यीशु ने कभी कोई पाप नहीं किया। यीशु निष्पाप है। संक्षेप में, यीशु ही वह धर्मी परमेश्वर है। वह उद्देश्य जिसके लिए परमेश्वर ने यीशु मसीह

को—जिसने पाप नहीं जाना था—पाप ठहराया, वह हमें धर्मी ठहराना था। इब्रानियों 2:9 कहता है: "पर हम यीशु को देखते हैं, जो थोड़े समय के लिए स्वर्गदूतों से कुछ कम किया गया था, अब मृत्यु का दुख उठाने के कारण महिमा और आदर का मुकुट पहने हुए है, ताकि परमेश्वर के अनुग्रह से वह हर एक के लिए मृत्यु का स्वाद चखे।" यीशु मसीह, जो स्वयं परमेश्वर है, ने हमारे खातिर मृत्यु की पीड़ा सही और वास्तव में, हमारे लिए मृत्यु का स्वाद चखा। बाइबल की शिक्षा यह है कि हमें इन सत्यों को केवल बौद्धिक रूप से ही नहीं जानना चाहिए, बल्कि उनका स्वाद भी चखना चाहिए। भजन संहिता 38:8 कहता है: "चखकर देखो कि यहोवा भला है..." 1 पतरस 2:3 कहता है: "यदि सचमुच तुमने चखकर देखा है कि प्रभु कृपालु है।" हमें परमेश्वर की भलाई और प्रभु की कृपा को चखकर देखना चाहिए। हम जितना ज़्यादा इसे चखेंगे, उतना ही ज़्यादा हम इसकी लालसा करने के लिए प्रेरित होंगे। जब हम—विश्वास के द्वारा—इस सत्य पर मनन करते हैं कि परमेश्वर का पुत्र, यानी 'वचन', हमें अनुभव से जानने के लिए मनुष्य बन गया, तो हमें भी यीशु को अनुभव से जानने का प्रयास करना चाहिए। दूसरा उद्देश्य जिसके लिए परमेश्वर का पुत्र—यानी 'वचन', यीशु मसीह—मनुष्य बना और हमारे बीच रहा, वह है हमें जानना।

(3) यह हमारी मदद करने के लिए है।

क्योंकि परमेश्वर का पुत्र—यानी 'वचन'—मनुष्य बन गया और उसने मृत्यु के कष्टों का भी अनुभव किया है, इसलिए वह हमारी पीड़ा को समझ सकता है और हमारे प्रति सहानुभूति रख सकता है। इब्रानियों 4:15 कहता है: "क्योंकि हमारा महायाजक ऐसा नहीं है जो हमारी कमज़ोरियों को न समझ सके, बल्कि हमारे पास एक ऐसा महायाजक है जिसकी हर तरह से परीक्षा हुई है, ठीक हमारी तरह—फिर भी वह निष्पाप रहा।" इसके अलावा, यीशु हमारी मदद करने में पूरी तरह सक्षम है। इब्रानियों 2:18 कहता है: "क्योंकि जब उसकी खुद परीक्षा हुई और उसने कष्ट सहे, तो वह उन लोगों की मदद करने में सक्षम है जिनकी परीक्षा हो रही है" [(समकालीन कोरियाई बाइबल) "चूँकि प्रभु स्वयं परीक्षा से गुज़रे और उन्होंने कष्ट सहे, इसलिए वह उन लोगों की पूरी तरह मदद कर सकते हैं जो इस समय परीक्षा से गुज़र रहे हैं"]।

परमेश्वर के पुत्र—यानी “वचन”—के “देह” (मनुष्य) बनने का मुख्य उद्देश्य हमारे बीच निवास करना था (यूहन्ना 1:14)। परमेश्वर के पुत्र के हमारे बीच निवास करने का उद्देश्य हमें परमेश्वर का परिचय देना, हमें जानना, और हमारी मदद करना है। मेरी यह आशा है कि हम सभी इममानुएल—उस परमेश्वर जो सदैव हमारे साथ है—को और भी गहराई से जान सकें; और उसे केवल बौद्धिक ज्ञान के माध्यम से ही नहीं, बल्कि व्यक्तिगत अनुभव के माध्यम से भी जानकर, हम परमेश्वर पिता को और भी बेहतर ढंग से जान सकें। इसके अलावा, इस विश्वास के साथ कि परमेश्वर का पुत्र—जो हमें सबसे अच्छी तरह जानता है—हमारी कमज़ोरियों को समझेगा और निश्चित रूप से हमारी सहायता के लिए आएगा, हम सभी इममानुएल के साथ विश्वास की राह पर चलें और इस पृथ्वी पर रहते हुए ही अनंत जीवन की वास्तविकता का अनुभव करते हुए अपना जीवन जिएँ।

“वचन देह बन गया” (6)

[यूहन्ना 1:1-4, 9-14]

दूसरा उद्देश्य जिसके लिए परमेश्वर का पुत्र—जो “वचन” है—“देह” (एक मनुष्य) बन गया, वह यह था कि वह परमेश्वर और हमारे बीच एक मध्यस्थ के रूप में कार्य करे।

मूल रूप से, परमेश्वर और हमारे बीच किसी मध्यस्थ की कोई आवश्यकता नहीं थी। शुरुआत में, परमेश्वर सीधे आदम के साथ संगति करता था। इसका वर्णन उत्पत्ति 2:7 में किया गया है: “तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को भूमि की मिट्टी से रचा, और उसके नथनों में जीवन का श्वास फूँक दिया; और आदम एक जीवित प्राणी बन गया।” परमेश्वर ने मनुष्य (आदम) को पृथ्वी की मिट्टी से रचा और उसके नथनों में जीवन का श्वास फूँक दिया, और वह एक जीवित आत्मा बन गया। दूसरे शब्दों में, आदम को विशेष रूप से इसलिए रचा गया था ताकि वह परमेश्वर के साथ संगति कर सके। इसके अलावा, परमेश्वर ने एदेन में, पूर्व की ओर एक वाटिका बनाई, आदम को वहाँ रखा, और उसके साथ संगति की (पद 8)। परमेश्वर ने आदम के साथ एक वाचा भी बाँधी। उत्पत्ति 2:16-17 कहता है: “और यहोवा परमेश्वर ने आदम को यह आज्ञा दी, ‘तू वाटिका के किसी भी वृक्ष का फल बेखटके खा सकता है, परन्तु भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल तू न खाना, क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाएगा, उसी दिन तू निश्चय मर जाएगा।’” जब परमेश्वर ने पहले मनुष्य, आदम के साथ यह वाचा बाँधी, तो उसने उसे आज्ञा दी कि वह भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल न खाए। इसका कारण यह था कि परमेश्वर आदम के साथ अपनी संगति जारी रखना चाहता था। दूसरे शब्दों में, यदि आदम ने परमेश्वर की आज्ञा का पालन किया होता और भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल खाने से परहेज़ किया होता, तो वह परमेश्वर के साथ अपनी संगति जारी रखने में समर्थ होता। इसके अतिरिक्त, परमेश्वर ने आदम को एक परिवार बसाने में भी समर्थ बनाया। यह अंश उत्पत्ति 2:18-24 से लिया गया है:

“परमेश्वर यहोवा ने कहा, ‘मनुष्य का अकेला रहना अच्छा नहीं है। मैं उसके लिए एक ऐसा सहायक बनाऊँगा जो उसके लिए उपयुक्त हो।’ अब परमेश्वर यहोवा ने ज़मीन से सभी जंगली जानवरों और आकाश के सभी पक्षियों को बनाया था। वह उन्हें मनुष्य के पास ले आया ताकि देखे कि वह उनका क्या नाम रखता है; और मनुष्य ने जिस भी जीवित प्राणी को जो नाम दिया, वही उसका नाम हो गया। इस प्रकार मनुष्य ने सभी पालतू पशुओं, आकाश के पक्षियों और सभी जंगली जानवरों के नाम रखे। लेकिन आदम के लिए कोई उपयुक्त सहायक नहीं मिला। इसलिए परमेश्वर यहोवा ने मनुष्य को गहरी नींद में सुला दिया; और जब वह सो रहा था, तो उसने मनुष्य की एक पसली निकाली और फिर उस जगह को मांस से भर दिया। तब परमेश्वर यहोवा ने उस पसली से एक स्त्री बनाई, जिसे उसने मनुष्य से निकाला था, और वह उसे मनुष्य के पास ले आया। मनुष्य ने कहा, ‘अब यह मेरी हड्डियों की हड्डी और मेरे मांस का मांस है; इसे “स्त्री” कहा जाएगा, क्योंकि इसे मनुष्य से निकाला गया था।’ इसीलिए एक पुरुष अपने माता-पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से जुड़ जाता है, और वे एक तन हो जाते हैं।” आदम के लिए एक उपयुक्त सहायक बनाकर, परमेश्वर ने उसे एक परिवार बसाने में सक्षम बनाया। इस प्रकार, जैसा कि हम उत्पत्ति अध्याय 2 में देखते हैं, परमेश्वर और आदम के बीच किसी मध्यस्थ की कोई आवश्यकता नहीं थी।

हालाँकि, जब हम उत्पत्ति अध्याय 3 तक पहुँचते हैं, तो परमेश्वर और आदम के बीच एक मध्यस्थ आवश्यक हो गया। इसका कारण यह है कि स्त्री साँप के प्रलोभन में आ गई; जब उसने भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष के फल को देखा, तो उसने पाया कि वह “खाने के लिए अच्छा और आँखों को भाने वाला, और बुद्धि प्राप्त करने के लिए भी वांछनीय” था। परिणामस्वरूप, उसने वह फल लिया और उसे खाया, और फिर उसमें से कुछ अपने पति (आदम) को दिया, जो उसके साथ था, और उसने भी उसे खा लिया (उत्पत्ति 3:6)। इसके परिणामस्वरूप, उनकी आँखें खुल गईं, और उन्हें एहसास हुआ कि वे नंगे हैं; इसलिए उन्होंने अंजीर के पत्तों को आपस में सिला और अपने लिए वस्त्र बनाए। जब उस दिन हवा चल रही थी, तो उन्होंने प्रभु परमेश्वर को बगीचे में टहलते हुए सुना, और आदम और उसकी पत्नी ने प्रभु परमेश्वर की उपस्थिति से बचने के लिए बगीचे के पेड़ों के बीच खुद को छिपा लिया (पद 7-8)। तब आदम पर एक श्राप डाला गया: “आदम से उसने कहा, ‘क्योंकि तूने अपनी पत्नी की बात सुनी और उस पेड़ का फल खाया जिसके बारे में मैंने तुझे आज्ञा दी थी, “तू उसे मत खाना,” इसलिए तेरे कारण ज़मीन श्रापित हो गई है; अपने जीवन के सभी

दिनों में तुझे कड़ी मेहनत करके ही उससे भोजन मिलेगा। वह तेरे लिए काँटे और ऊँटकटारे उगाएगी, और तू खेत के पौधे खाएगा। अपने माथे के पसीने से तू अपना भोजन करेगा, जब तक कि तू वापस ज़मीन में न मिल जाए, क्योंकि उसी से तुझे बनाया गया था; क्योंकि तू मिट्टी है और मिट्टी में ही मिल जाएगा” (पद 17-19)। इस प्रकार, आदम और परमेश्वर अंततः दुश्मन बन गए: “...जब हम परमेश्वर के दुश्मन थे...” (रोमियों 5:10)। परमेश्वर हमें दुश्मन मानता है, अपना क्रोध हमारी ओर निर्देशित करता है, और हमारे विरुद्ध खड़ा होता है। इसीलिए हमें एक मध्यस्थ की आवश्यकता पड़ी।

एक मध्यस्थ को केवल एक पक्ष की ओर से काम नहीं करना चाहिए; बल्कि, उसे दोनों पक्षों का प्रतिनिधित्व करना चाहिए और इस भूमिका के लिए उपयुक्त होना चाहिए। मध्यस्थ के रूप में, परमेश्वर के पुत्र में परमेश्वर का ही स्वभाव है और वह वह सब कुछ करने में सक्षम है जो परमेश्वर स्वयं कर सकते हैं। इसके अलावा, मध्यस्थ के रूप में, परमेश्वर का पुत्र एक मनुष्य बन गया—[“वचन देह बन गया...” (यूहन्ना 1:14)]—फिर भी वह एक पूर्ण मनुष्य है। मध्यस्थ, परमेश्वर का पुत्र, पाप रहित है। यदि उसमें पाप होता, तो वह मध्यस्थ के रूप में सेवा नहीं कर सकता था। इसका कारण यह है कि परमेश्वर पवित्र है। रोमियों 8:3 कहता है: “क्योंकि जो काम व्यवस्था पापमय स्वभाव के कारण निर्बल होकर न कर सकी, वह परमेश्वर ने किया; अर्थात् उसने अपने ही पुत्र को पापमय मनुष्य की समानता में पाप-बलि होने के लिए भेजकर, पापमय मनुष्य में पाप को दोषी ठहराया।” यदि यीशु मसीह—परमेश्वर का पुत्र—“पापमय देह” में आया होता, तो वह मध्यस्थ के रूप में सेवा नहीं कर सकता था। हालाँकि, बाइबल कहती है कि वह “पापमय मनुष्य की समानता में” आया। इसका अर्थ यह है कि यीशु मसीह—परमेश्वर का पुत्र—एक ऐसे शरीर में आया जो मानवीय दुर्बलताओं के अधीन था (भूख, प्यास और थकावट का अनुभव करता था)। ऐसी दुर्बलता, अपने आप में, पाप नहीं है। यद्यपि शैतान ने उसी समय यीशु को परखा, यीशु ने परमेश्वर के वचन का उपयोग करके उसे भगा दिया; इसलिए, कोई पाप नहीं हुआ। यीशु ने हर प्रकार की परीक्षा सहन की, फिर भी उसने उन सभी पर विजय प्राप्त की; इस प्रकार, वह पाप रहित बना रहा। परिणामस्वरूप, केवल यीशु ही वह है जो परमेश्वर और हमारे बीच मध्यस्थ के रूप में सेवा करने के लिए वास्तव में योग्य है।

परमेश्वर और मानवता के बीच एकमात्र मध्यस्थ मनुष्य मसीह यीशु है। 1 तीमोथियुस 2:5 कहता है: “क्योंकि परमेश्वर एक ही है, और परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में भी एक ही मध्यस्थ है, अर्थात् मनुष्य मसीह यीशु।”

परमेश्वर के पुत्र के रूप में, यीशु मसीह में मध्यस्थ की भूमिका को प्रभावी ढंग से पूरा करने की पूर्ण क्षमता है। यह अंश 1 तीमुथियुस 2:6 से है: "जिसने सब के छुटकारे के लिए अपने आप को बलिदान कर दिया—यह गवाही अपने उचित समय पर दी गई।" उसने हमें हमारे पापों से छुड़ाने के लिए अपने आप को बलिदान के रूप में दे दिया। वह एक महान मध्यस्थ है। यीशु मसीह ने क्रूस पर मरकर हमें परमेश्वर के साथ मिला दिया, उस समय जब हम परमेश्वर के शत्रु थे (रोमियों 5:10)। इसलिए, अब हम अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर में आनन्द मनाते हैं, जिनके द्वारा हमें यह मेल-मिलाप प्राप्त हुआ है (पद 11)। यह अंश इफिसियों 2:11-13 से लिया गया है: "इसलिए याद रखो कि एक समय तुम शारीरिक रूप से अन्यजाति थे, जिन्हें 'खतना किए हुए' लोगों द्वारा 'बिना खतने वाले' कहा जाता था—यह खतना हाथों से शरीर में किया जाता है—याद रखो कि उस समय तुम मसीह से अलग थे, इस्राएल के राष्ट्र से बाहर थे और प्रतिज्ञा की वाचाओं से अनजान थे; तुम्हारे पास कोई आशा नहीं थी और तुम संसार में परमेश्वर के बिना थे। परन्तु अब मसीह यीशु में, तुम जो कभी दूर थे, मसीह के लहू के द्वारा निकट लाए गए हो।" यहाँ, "उस समय" (पद 11, 12) उस समय को दर्शाता है जब हम परमेश्वर के शत्रु थे। "उस समय" का अर्थ है जब हम पापी थे और हमारे पाप की समस्या अनसुलझी थी। "उस समय," हम मसीह को नहीं जानते थे और मसीह से बाहर थे (पद 12)। हम परमेश्वर के बिना थे (पद 13)। हम परमेश्वर के शत्रु थे। हम आशाहीन भी थे (पद 12)। हालाँकि, "परन्तु अब" (पद 13)—जहाँ "अब" पर विशेष जोर दिया गया है—हम जो "कभी दूर थे," मसीह के लहू के द्वारा मसीह यीशु में निकट लाए गए हैं (पद 13)। दूसरे शब्दों में, क्रूस पर यीशु मसीह की मृत्यु के द्वारा, उन्होंने उस विभाजनकारी दीवार को—अर्थात् उस शत्रुता को जो परमेश्वर और हमारे बीच खड़ी थी—गिरा दिया, और इस प्रकार परमेश्वर के साथ शान्ति स्थापित की (पद 14-15)। जब पवित्रस्थान का वह पर्दा—जो पवित्र स्थान को परमपवित्र स्थान से अलग करता था—दो टुकड़ों में फट गया (मत्ती 27:51), तो लोगों को परमपवित्र स्थान में प्रवेश करने की अनुमति मिल गई। इसके अतिरिक्त, परमेश्वर, जो पहले केवल परमपवित्र स्थान में वास करते थे, अब पवित्र स्थान में भी वास करने लगे; इस प्रकार, वे लोगों के बीच रहने आए, उनके साथ संगति में प्रवेश किया और शान्ति स्थापित की। इफिसियों 2:16-19 में यह संदेश मिलता है: "और क्रूस के द्वारा, एक ही देह में, उन दोनों को परमेश्वर से मिला दिया; और उस पर उन्होंने उनकी शत्रुता को समाप्त कर दिया। उन्होंने आकर तुम दूर वालों को और उन पास वालों को भी

शांति का सुसमाचार सुनाया। क्योंकि उन्हीं के द्वारा हम दोनों की एक ही आत्मा में पिता तक पहुँच है। इसलिए, अब तुम परदेशी और अजनबी नहीं रहे, बल्कि परमेश्वर के लोगों के साथ सह-नागरिक और उनके परिवार के सदस्य बन गए हो।” क्रूस पर अपनी मृत्यु के द्वारा, यीशु मसीह ने परमेश्वर और हमारे बीच मौजूद शत्रुता को समाप्त कर दिया, और हमें परमेश्वर से मिला दिया; इसलिए, इस क्षण से, हम अब अजनबी या परदेशी नहीं रहे, बल्कि संतों के साथ सह-नागरिक और परमेश्वर के परिवार के सदस्य बन गए हैं। यहाँ, “परमेश्वर का परिवार” शब्द का अर्थ है कि हम परमेश्वर के अपने परिवार के सदस्य बन गए हैं। इस प्रकार, यीशु अब हमारे बड़े भाई हैं (रोमियों 8:29), और हमारे बड़े भाई होने के नाते, यीशु हमें अपने “भाई” कहने में लज्जित नहीं होते (इब्रानियों 2:11)। हमारा यह परिवर्तन कितना सचमुच महिमामय है: हम, जो कभी परमेश्वर के शत्रु थे—मध्यस्थ, परमेश्वर के पुत्र, यीशु मसीह के क्रूस के द्वारा—परमेश्वर से मिला दिए गए हैं, उनके परिवार में हमारा स्वागत हुआ है, और हमें यीशु हमारे बड़े भाई के रूप में मिले हैं, जबकि हम उनके छोटे भाई-बहन बन गए हैं! हमें इस असीम अनुग्रह के लिए सदैव धन्यवाद देना चाहिए और परमेश्वर पिता के पास, केवल हमारे मध्यस्थ, यीशु मसीह के क्रूस की योग्यता पर भरोसा करते हुए जाना चाहिए।

“वचन देह बन गया” (7)

[यूहन्ना 1:1-4, 9-14]

तीसरा उद्देश्य जिसके लिए परमेश्वर का पुत्र—जो “वचन” है—**“देह”** (एक मनुष्य) बन गया, वह था **मरना** (एक प्रायश्चित्त का बलिदान बनना)।

हमें बचाने के परमेश्वर के कार्य में, यह आवश्यक था कि कोई हमारी जगह मरे। हम मनुष्य किसी के बदले मरने में असमर्थ हैं, और यही बात स्वर्गदूतों पर भी लागू होती है। यह **मसीह** ही थे—जो **परमेश्वर** हैं—जो मनुष्य बने और मरे, और इस प्रकार हमें अनंत विनाश से बचाया।

परमेश्वर का पुत्र मनुष्य बना और हमारी सेवा की, यहाँ तक कि मृत्यु तक। इसका उल्लेख मत्ती 20:28 में किया गया है: “मनुष्य का पुत्र इसलिए नहीं आया कि उसकी सेवा की जाए, बल्कि इसलिए आया कि सेवा करे, और बहुतों के लिए अपनी जान छुड़ौती के रूप में दे।” यहाँ, वाक्यांश “मनुष्य का पुत्र आया” उस घटना को संदर्भित करता है जहाँ “वचन देह बन गया” (यूहन्ना 1:14)। इस आगमन के दो उद्देश्य थे: (1) पहला उद्देश्य था सेवा करना; (2) दूसरा उद्देश्य था अपनी जान छुड़ौती के रूप में देना।

आज, हम पहले उद्देश्य—अर्थात् **“सेवा करने”**—पर मनन करेंगे, और अगले सप्ताह की बुधवार की प्रार्थना सभा के दौरान, हम दूसरे उद्देश्य—अर्थात् **“अपनी जान छुड़ौती के रूप में देने”**—पर मनन करेंगे। सेवा करवाने की इच्छा रखना मानवीय सहज प्रवृत्ति है; दूसरे शब्दों में, हमें सेवा प्राप्त करने में

आनंद आता है। हालाँकि, यीशु मसीह सेवा करवाने के लिए नहीं, बल्कि सेवा करने के लिए आए थे। यदि हमें सेवा करनी है, तो हमें स्वयं को दीन बनाना होगा और दूसरे व्यक्ति को ऊँचा उठाना होगा। यह फिलिप्पियों 2:3 के उत्तरार्ध में व्यक्त किया गया है: "...परन्तु दीनता से एक दूसरे को अपने से बेहतर समझो।" यीशु ने स्वयं को दीन बनाया। यीशु का—जो परमेश्वर हैं—मनुष्य बनना ही स्वयं को दीन बनाने का एक कार्य था (एक ऐसी गहन दीनता जिसे हम कभी भी पूरी तरह से समझ नहीं सकते)। जिस हद तक यीशु, परमेश्वर के पुत्र ने स्वयं को दीन बनाया—मानव रूप धारण करके—वह एक ऐसी गहन गिरावट का प्रतिनिधित्व करता है जिसकी तुलना किसी से नहीं की जा सकती, यहाँ तक कि हमारे कुत्ते या सूअर बनने की कल्पना से भी नहीं। फिलिप्पियों 2:6-8 बताता है कि परमेश्वर के पुत्र ने खुद को कितनी गहराई तक दीन बनाया: "जिसने, परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी, परमेश्वर के बराबर होने को अपने लाभ के लिए इस्तेमाल करने की चीज़ नहीं समझा; बल्कि, उसने दास का स्वरूप धारण करके और मनुष्य की समानता में आकर खुद को शून्य बना दिया। और मनुष्य के रूप में पाए जाने पर, उसने मृत्यु तक—हाँ, क्रूस की मृत्यु तक—आज्ञाकारी बनकर खुद को दीन बनाया!" वह जो परमेश्वर के स्वरूप में है और परमेश्वर के बराबर है—स्वयं परमेश्वर ("वचन")—एक मनुष्य ("देह") बन गया; वह एक दास बन गया; और वह मृत्यु तक आज्ञाकारी बना रहा। यीशु ने खुद को मृत्यु के बिंदु तक—विशेष रूप से, क्रूस की मृत्यु तक—दीन बनाया। उस युग में, क्रूस पर चढ़ाना एक इतनी क्रूर सज़ा थी कि यह हमेशा समाज के सबसे निचले तबके के लोगों के लिए ही रखी जाती थी। यह तथ्य कि नासरत के यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया, उस समय समाज में उनकी स्थिति के बारे में बहुत कुछ कहता है। यह प्रकट करता है कि, परमेश्वर का पुत्र होने के बावजूद, वह उस समाज के सबसे निचले वर्ग से संबंधित थे जिसमें वह रहते थे। इस प्रकार, यीशु मसीह—जो परमेश्वर हैं—ने खुद को दीन बनाया और दूसरों की सेवा की।

यूहन्ना 13:3-14 की ओर मुड़ते हुए—एक ऐसा अंश जो परमेश्वर के पुत्र की दीनता की गहराई को और अधिक स्पष्ट करता है—हम देखते हैं कि यीशु ने अपने बारह शिष्यों की सेवा इस हद तक की कि उनके पैर भी धोए। विशेष रूप से पद 13-14 पर ध्यान दें: "तुम मुझे 'गुरु' और 'प्रभु' कहते हो, और सही ही कहते हो, क्योंकि मैं वही हूँ। अब जब मैंने, जो तुम्हारा प्रभु और गुरु हूँ, तुम्हारे पैर धोए हैं, तो तुम्हें भी एक-

दूसरे के पैर धोने चाहिए।" जिस तरह प्रभु यीशु मसीह—जो परमेश्वर हैं—ने अपने शिष्यों की सेवा करने के लिए उनके पैर धोने की हद तक खुद को दीन बनाया, उसी तरह हमें भी खुद को दीन बनाना चाहिए और एक-दूसरे की सेवा इतनी दीनता के साथ करनी चाहिए कि हम एक-दूसरे के पैर धोने के लिए भी तैयार रहें। फिलिप्पी की कलीसिया को एक ऐसी स्थिति का सामना करना पड़ा जहाँ उसकी महिला नेताएँ एक-दूसरे की सेवा उस विनम्र आत्म-दीनता के साथ करने में असफल रहीं, जिसका प्रदर्शन यीशु ने किया था। इस संदर्भ को समझने के लिए, हमें सबसे पहले फिलिप्पी की कलीसिया की पृष्ठभूमि को देखना होगा: इसकी शुरुआत लिदिया नाम की एक महिला के घर में हुई थी—जो बैंगनी कपड़े की एक व्यापारी थी—जिसका हृदय प्रभु ने प्रेरित पौलुस के प्रचार को सुनने के लिए खोल दिया था, जब वह फिलिप्पी में अपनी सुसमाचार प्रचार सेवा कर रहा था; जिसके परिणामस्वरूप उसने यीशु पर अपना विश्वास रखा (प्रेरितों के काम 16:14)। फलस्वरूप, फिलिप्पी की कलीसिया में लिदिया जैसी महिला अगुवे भी शामिल थीं; वास्तव में, ऐसी दो महिलाओं के नाम फिलिप्पियों 4:2 में दर्ज हैं: "मैं यूओदिया से विनती करता हूँ और मैं सुन्तुखे से विनती करता हूँ कि वे प्रभु में एक मन की हों।" यह तथ्य कि प्रेरित पौलुस ने "विनती" शब्द का दो बार प्रयोग किया, उसके मुख्य जोर को रेखांकित करता है: कि ये दोनों महिलाएँ—यूओदिया और सुन्तुखे—प्रभु के भीतर एक साझा मानसिकता विकसित करें। इस उपदेश का कारण यह प्रतीत होता है कि ये दोनों महिलाएँ प्रभु में मन की एकता बनाए रखने में असमर्थ थीं और, वास्तव में, एक-दूसरे के साथ संघर्ष में थीं। ऐसा लगता है कि ये दोनों महिलाएँ इस निर्देश का पालन करने में असफल रहीं: "कुछ भी स्वार्थी महत्वाकांक्षा या व्यर्थ घमंड से न करो, बल्कि नम्रता में दूसरों को अपने से बेहतर समझो" (2:3)। वे शांति के बंधन के माध्यम से आत्मा की एकता को बनाए रखने के लिए हर संभव प्रयास करने में असफल रहीं (इफिसियों 4:3)। परिणामस्वरूप, फिलिप्पी की कलीसिया सच्ची एकता प्राप्त करने में असमर्थ रही। इसी कारण से प्रेरित पौलुस ने इन दोनों महिलाओं को प्रभु में एक मन का होने के लिए इतनी दृढ़ता से उपदेश दिया।

क्या ऐसा हो सकता है कि आज हमारे अपने परिवार और कलीसियाएँ भी इसी तरह एकता प्राप्त करने में असफल हो रही हैं? यदि हमें अपने घरों और कलीसियाओं के भीतर एकता को प्रभावी ढंग से संरक्षित और पोषित करना है, तो हमें स्वयं को नम्र बनाना होगा—ठीक वैसे ही स्वयं को नीचा करना होगा जैसा

यीशु ने किया था—और एक-दूसरे की सेवा करनी होगी। अपने परिवारों और कलीसियाओं के भीतर अपनी सेवा करवाने की चाह रखने के बजाय, हमें वे लोग बनना चाहिए जो सेवा करते हैं। हमें स्वयं को नम्र बनाते हुए सेवा करनी चाहिए, जबकि अपने आस-पास के लोगों को ऊँचा उठाना चाहिए। यदि हम सेवा करते हैं—यहाँ तक कि मृत्यु की सीमा तक भी—ठीक वैसे ही जैसा यीशु ने किया था (फिलिप्पियों 2:8), तो हम अपने परिवारों और अपनी कलीसिया की एकता को प्रभावी ढंग से संरक्षित कर सकते हैं। हालाँकि, यदि हमने मृत्यु की सीमा तक सेवा नहीं की है, तो हम वास्तव में यह दावा नहीं कर सकते कि हमने बिल्कुल भी सेवा की है। यह यीशु के विनम्रतापूर्वक स्वयं को दीन बनाने और मृत्यु तक सेवा करने का परिणाम है: “इसलिए परमेश्वर ने उसे सबसे ऊँचे स्थान पर उठाया और उसे वह नाम दिया जो हर नाम से ऊपर है, ताकि यीशु के नाम पर हर घुटना झुके—स्वर्ग में, पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे—और हर ज़बान यह स्वीकार करे कि यीशु मसीह ही प्रभु हैं, परमेश्वर पिता की महिमा के लिए” (पद 9–11)। क्योंकि यीशु ने स्वयं को सबसे निचले स्तर तक दीन बनाकर सेवा की, इसलिए परमेश्वर ने उसे सबसे ऊँचे स्थान पर उठाया। हमें भी यीशु के उदाहरण का पालन करना चाहिए और स्वयं को सबसे निचले स्तर तक दीन बनाकर सेवा करनी चाहिए।

“वचन देह बन गया” (8)

[यूहन्ना 1:1-4, 9-14]

आइए, मैं आपसे एक प्रश्न पूछूँ: जब परमेश्वर ने आदम और हव्वा को बनाया, तो क्या उनकी इच्छा यह थी कि उनकी सेवा की जाए, या वे दूसरों की सेवा करें? इसका उत्तर यह है कि परमेश्वर ने आदम और हव्वा को सेवा करने के उद्देश्य से ही बनाया था। इस प्रकार, यद्यपि आदम और हव्वा ने शुरू में निश्चित रूप से अच्छी सेवा की, लेकिन जब हम उत्पत्ति (Genesis) के तीसरे अध्याय तक पहुँचते हैं, तो हव्वा—वह स्त्री—उस साँप द्वारा छली जाती है, जो सभी जंगली जानवरों में सबसे अधिक चालाक था (उत्पत्ति 3:1)। उस छल का मूल आधार यह वादा था कि वे “परमेश्वर के समान बन जाएँगे”: “क्योंकि परमेश्वर जानता है कि जिस दिन तुम इसका फल खाओगे, तुम्हारी आँखें खुल जाएँगी, और तुम परमेश्वर के समान बन जाओगे, जो भले और बुरे का ज्ञान रखता है” (पद 5)। उस साँप ने—जो वास्तव में शैतान था—हव्वा को इस प्रकार क्यों छला? इसका कारण यह है कि शैतान स्वयं—जो एक पतित और दुष्ट स्वर्गदूत था—सर्वोच्च परमेश्वर के समान बनना चाहता था। इस बात का वर्णन यशायाह 14:12-14 में इस प्रकार किया गया है: “हे भोर के तारे, हे प्रभात के पुत्र, तू स्वर्ग से कैसे गिर पड़ा! तू जो एक समय जातियों को नीचा दिखाता था, अब पृथ्वी पर कैसे गिरा दिया गया! तूने अपने मन में कहा, ‘मैं स्वर्ग पर चढ़ूँगा; मैं परमेश्वर के तारों से ऊपर अपना सिंहासन ऊँचा करूँगा; मैं सभा के पर्वत पर, पवित्र पर्वत की सबसे ऊँची चोटियों पर विराजमान होऊँगा। मैं बादलों के शिखरों से ऊपर चढ़ूँगा; मैं सर्वोच्च परमेश्वर के समान बनूँगा।” शैतान “अपना सिंहासन ऊँचा करना” चाहता है; वह न केवल उस ऊँचे पद को प्राप्त करना चाहता है, बल्कि सर्वोच्च परमेश्वर के समान बनने की भी लालसा रखता है। इसलिए, जब शैतान—साँप का रूप धरकर—हव्वा को ‘भले और बुरे के

ज्ञान के वृक्ष' का फल खाने के लिए छलने का प्रयास कर रहा था (उत्पत्ति 2:9), तो उसने हव्वा से कहा, "तुम... परमेश्वर के समान बन जाओगे" (3:5)। इस छल के आगे हार मानकर, हव्वा ने अंततः 'भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष' का फल तोड़ा और खा लिया—वह फल जो देखने में सुंदर था, आँखों को भाने वाला था, और जिस ज्ञान का वह वादा करता था, उसके कारण अत्यंत वांछनीय था—और उसने उस फल में से कुछ अपने पति आदम को भी दिया, जो उस समय उसके साथ ही था, और उसने भी उसे खा लिया (पद 6)। शैतान के धोखे का शिकार होकर—जो एक साँप के रूप में छिपा हुआ था—आदम और हव्वा ने परमेश्वर की वाचा वाली आज्ञा का उल्लंघन किया: "तुम भले और बुरे के ज्ञान के पेड़ का फल मत खाना" (2:17); इस पाप को करने से, इस दुनिया में पाप का प्रवेश हुआ, और पाप के द्वारा मृत्यु भी आ गई (रोम. 5:12)। अंततः, एक व्यक्ति—यानी "पहले आदम"—के अपराध के कारण दुनिया में पाप आया, जिसके परिणामस्वरूप सभी लोगों ने पाप किया; और क्योंकि पाप के द्वारा मृत्यु आई, इसलिए मृत्यु सभी लोगों तक फैल गई (पद 12)।

शैतान के धोखे का मूल तत्व हमारी उस इच्छा में छिपा है कि हम ऊँचे उठें, ऊँचे अधिकार वाले पदों पर बैठें, और स्वयं परमेश्वर के समान बन जाएँ—यानी सेवा करने के बजाय अपनी सेवा करवाएँ। इसका एक बेहतरीन उदाहरण "दियोत्रिफेस" नामक व्यक्ति में मिलता है, जिसका वर्णन 3 यूहन्ना 1:9-10 में किया गया है: "मैंने कलीसिया को कुछ शब्द लिखे थे, लेकिन दियोत्रिफेस, जिसे उनमें सबसे आगे रहना पसंद है, हमारे अधिकार को स्वीकार नहीं करता। इसलिए जब मैं आऊँगा, तो मैं उसके कामों की ओर ध्यान दिलाऊँगा—कि वह हमारे बारे में बुरी-बुरी बातें फैला रहा है। इतने से भी संतुष्ट न होकर, वह स्वयं यात्रा करने वाले प्रचारकों का स्वागत करने से मना कर देता है, जो लोग उनका स्वागत करना चाहते हैं उन्हें रोकता है, और यहाँ तक कि उन्हें कलीसिया से बाहर भी निकाल देता है" (मॉडर्न पीपल्स बाइबल)। दियोत्रिफेस एक ऐसा व्यक्ति था जिसे "सबसे आगे रहना पसंद था।" उसने "यात्रा करने वाले प्रचारकों का स्वागत करने से मना कर दिया" और यहाँ तक कि "उन लोगों को भी रोक दिया जो उनका स्वागत करना चाहते थे।" आज भी, कलीसिया के भीतर ऐसे लोग हैं जो, दियोत्रिफेस की तरह, सबसे आगे रहना पसंद करते हैं। ऐसे लोग विनम्र पदों के बजाय ऊँचे पदों पर बैठना पसंद करते हैं, और दूसरों की सेवा करने के

बजाय अपनी सेवा करवाना पसंद करते हैं। शैतान ऐसे लोगों को धोखा देता है, जिससे वे परमेश्वर के वचन की अवज्ञा करते हैं और पाप करते हैं; ऐसा करके, वह उन्हें "प्रभु में एक ही मन रखने" (फिलि. 4:2) से रोकता है और कलीसिया की एकता को बनाए रखने के प्रयास में बाधा डालता है—वह एकता जो "पवित्र आत्मा द्वारा उत्पन्न होती है" (इफि. 4:3)। हालाँकि, यीशु मसीह—जो "दूसरे" आदम और "आखिरी आदम" थे (1 कुरिन्थियों 15:45, 47)—इस दुनिया में हमें बचाने के लिए आए; हम वे लोग थे जो पहले आदम के कारण, पाप की वजह से मृत्यु के अधीन हो गए थे। हालाँकि वे अपने स्वभाव से ही परमेश्वर थे, फिर भी उन्होंने परमेश्वर के बराबर होने को ऐसी चीज़ नहीं समझा जिसे ज़बरदस्ती हासिल किया जाए; बल्कि, उन्होंने खुद को खाली कर दिया, एक सेवक का रूप धारण कर लिया, और इंसानों जैसे बन गए (फिलिप्पियों 2:6–7)। मत्ती 20:28 कहता है: "मनुष्य का पुत्र सेवा करवाने नहीं, बल्कि सेवा करने और बहुतों के लिए अपनी जान फिरोती के तौर पर देने आया।" संक्षेप में कहें तो, इस धरती पर यीशु के तैंतीस साल का जीवन "सेवा का जीवन" था। यीशु ने न केवल अपने शिष्यों के पैर धोए, बल्कि भूखों को खाना भी खिलाया, बीमारों को चंगा किया, और अनगिनत अन्य तरीकों से दूसरों की सेवा के लिए समर्पित जीवन जिया। और अपनी सेवा में, यीशु यहाँ तक चले गए कि उन्होंने अपनी जान ही दे दी—यानी, उन्होंने अपना खून बहाने और क्रूस पर मरने की हद तक सेवा की। 1 तीमुथियुस 2:6 कहता है: "उसने सभी लोगों के लिए खुद को फिरोती के तौर पर दे दिया—यह गवाही सही समय पर दी गई।" यहाँ, "वह" यीशु मसीह को संदर्भित करता है—परमेश्वर और मानवता के बीच एकमात्र मध्यस्थ, जो स्वयं पूरी तरह से इंसान हैं (पद 5)। यीशु मसीह, जो मध्यस्थ हैं, ने हमारे लिए—हमारी मुक्ति के लिए—खुद को फिरोती के तौर पर दे दिया। पुराने नियम में निर्गमन 21:28–36 के अनुसार, यदि किसी बैल के मालिक को पता था कि उसके जानवर में लोगों को सींग मारने की प्रवृत्ति है, फिर भी उसने सावधानी नहीं बरती, और उसके बाद कोई दुर्घटना हो गई, तो बैल और उसके मालिक—दोनों को मृत्युदंड दिया जाता था—विशेष रूप से, पत्थर मारकर मार डाला जाता था। यह कठोर दंड इसलिए दिया जाता था क्योंकि मालिक ने, अंतर्निहित खतरे से पूरी तरह अवगत होने के बावजूद, लापरवाही से स्थिति को बने रहने दिया था; परिणामस्वरूप, उसे अपने जानवर के कारण हुई मृत्यु के लिए जवाबदेह ठहराया गया। हालाँकि, इस पाठ में एक अपवाद भी शामिल था: बैल के मालिक को मृत्युदंड से बचाया जा सकता था यदि वह पीड़ित के परिवार को आर्थिक मुआवज़ा देता, जिसकी राशि पीठासीन न्यायाधीश द्वारा निर्धारित की जाती थी। इस प्रावधान के पीछे का तर्क जीवित

बचे परिवार की आजीविका के व्यावहारिक मामले में निहित था। [उदाहरण के लिए, यदि बैल के सींगों से घायल हुआ पीड़ित व्यक्ति अपने परिवार का मुखिया होता, तो बैल और उसके मालिक दोनों को मृत्युदंड देना शायद बदले की भावना को संतुष्ट कर देता, लेकिन साथ ही यह परिवार के जीवित सदस्यों को तत्काल आर्थिक संकट में भी डाल देता। इसके अलावा, बैल के मालिक—जो इस दुर्घटना के लिए ज़िम्मेदार पक्ष था—के दृष्टिकोण से देखें, तो उसकी अपनी जान जाने से उसके परिवार के जीवित सदस्यों के सामने भी अपनी आजीविका को लेकर एक अंधकारमय और अनिश्चित भविष्य खड़ा हो जाता (स्रोत: इंटरनेट)।] इस प्रकार, न्यायाधीश द्वारा निर्धारित क्षतिपूर्ति राशि का भुगतान करके, बैल का मालिक मृत्युदंड से छूट प्राप्त कर सकता था। पुराने नियम (Old Testament) में वर्णित "पाप-बलि" (या "प्रायश्चित") की अवधारणा को समझना हमें 1 तीमुथियुस 2:6 के महत्व को समझने में मदद करता है, जिसमें कहा गया है कि यीशु ने स्वयं को सभी के लिए एक "फिरौती" (ransom) के रूप में दे दिया। जिस प्रकार कोई स्वामी किसी दास को खरीदने के लिए बाज़ार मूल्य का भुगतान करता है—चाहे वह कोई अनुबंधित सेवक हो, युद्धबंदी हो, या कोई खरीदा हुआ दास हो—ताकि उस व्यक्ति को मुक्त किया जा सके, ठीक उसी प्रकार यीशु मसीह ने क्रूस पर बहाए गए अपने बहुमूल्य रक्त के द्वारा सर्वोच्च मूल्य चुकाया। उन्होंने ऐसा हमें मुक्त करने के लिए किया—हम जो "पहले आदम" के पाप के कारण पापी बन गए थे, पाप के दास हो गए थे, और जिनकी नियति मृत्यु थी—और हमें पाप के बंधन से सच्ची स्वतंत्रता प्रदान करने के लिए किया। इफिसियों 1:7 कहता है: "उसमें हमें उसके रक्त के द्वारा छुटकारा—अर्थात् पापों की क्षमा—उसके अनुग्रह के धन के अनुसार प्राप्त है।" यीशु मसीह के रक्त के माध्यम से, हमें छुटकारा—अर्थात् पापों की क्षमा—प्राप्त हुआ है, और इस प्रकार हम पाप के बंधन से मुक्त हो गए हैं।

इसलिए, हमें भी यीशु के उदाहरण का अनुसरण करना चाहिए और सेवा-भाव से भरा जीवन जीना चाहिए। जैसे-जैसे हम सेवा के इस जीवन को जीते हैं, हमें—ठीक वैसे ही जैसे यीशु ने किया था—सेवा करने का प्रयास करना चाहिए, यहाँ तक कि अपनी जान भी न्योछावर करने की हद तक। दूसरे शब्दों में, हमें मृत्यु तक सेवा करनी चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे यीशु ने की थी (फिलिप्पियों 2:8)। हालाँकि, हमारी मानवीय कमज़ोरियों के कारण, हम अपने बलबूते पर सेवा का ऐसा जीवन जीने में असमर्थ हैं। फिर भी, पवित्र

आत्मा—जो स्वयं यीशु की आत्मा है—हमारी सहायता के लिए आती है। दूसरे शब्दों में कहें तो, पवित्र आत्मा—यानी सेवा की आत्मा—हमारी कमज़ोरियों में हमारी सहायता करती है, जिससे हम यीशु का अनुकरण कर पाते हैं और दूसरों की सेवा के लिए समर्पित जीवन जी पाते हैं। रोमियों 8:26a कहता है: “इसी प्रकार आत्मा भी हमारी कमज़ोरियों में हमारी सहायता करती है...” पवित्र आत्मा केवल प्रार्थना में ही हमारी सहायता नहीं करती; वह हर उस प्रयास में हमारी मदद करती है जिसे हम आत्मा की शक्ति से करते हैं। परिणामस्वरूप, पवित्र आत्मा उन सभी कार्यों में सुंदरता और सामंजस्य लाती है जो हम प्रभु के अधीन रहकर करते हैं। इसलिए, हमें पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए। परमेश्वर पिता ने उन लोगों को पवित्र आत्मा देने का वादा किया है जो उससे माँगते हैं (लूका 11:13)। नशे में धुत होकर या व्यर्थ के कामों में लिप्त होकर जीवन बिताने के बजाय, हमें पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होना चाहिए (इफिसियों 5:18), ताकि हम यीशु के आदर्शों पर आधारित सेवा-भाव वाला जीवन जी सकें। जब हम यीशु के समान सेवा-भाव वाला ऐसा जीवन जीते हैं, तो हमारा जीवन न केवल व्यक्तिगत आनंद और कृतज्ञता से भर जाता है, बल्कि हम अपने घरों और अपने कलीसियाई समुदाय में ही स्वर्ग का एक पूर्वाभास भी अनुभव करने लगते हैं। आइए, हम सभी यीशु के उदाहरण का अनुसरण करें—दूसरों से सेवा करवाने की चाह रखने के बजाय दूसरों की सेवा करने का प्रयास करें—और इस प्रकार ऐसे लोग बनें जो न केवल स्वयं को, अपने परिवारों को और अपनी कलीसिया को, बल्कि स्वयं प्रभु को भी आनंद प्रदान करें।

यीशु का पलायन

[मत्ती 2:13-18]

सुसमाचार ही यीशु मसीह हैं। सुसमाचार का मूल तत्व यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान है। इसलिए, यीशु मसीह—जो स्वयं सुसमाचार हैं—और सुसमाचार के मूल तत्व—उनकी मृत्यु और पुनरुत्थान—दोनों की गहरी समझ प्राप्त करने की इच्छा से, हमने पहले 'वचन देह बना' (The Word Became Flesh) विषय के अंतर्गत, यूहन्ना 1:1-4, 9-14 पर केंद्रित ध्यान के आठ सत्रों में भाग लिया। यीशु मसीह कौन हैं? वह वह हैं जो आदि से विद्यमान थे (यूहन्ना 1:1); वह परमेश्वर के साथ थे—अर्थात् यीशु मसीह ही परमेश्वर हैं (पद 1)—और वह सृष्टिकर्ता हैं जिन्होंने समस्त वस्तुओं की रचना की (पद 3)। यीशु मसीह में जीवन है, जो मानवजाति का प्रकाश है (पद 4)। यीशु मसीह के मानव बनने का—अर्थात् 'वचन के देह बनने' (पद 14) का—क्या उद्देश्य था? इसका उद्देश्य हमारे मध्य निवास करना था। यूहन्ना 1:14 पर दृष्टि डालें: "वचन देह बना और हमारे मध्य निवास किया..." इसके अतिरिक्त, इसका उद्देश्य परमेश्वर और हमारे मध्य मध्यस्थ बनना था। 1 तीमुथियुस 2:5 कहता है: "क्योंकि एक ही परमेश्वर है, और परमेश्वर और मनुष्यों के बीच एक ही मध्यस्थ है, अर्थात् मनुष्य मसीह यीशु।" और अंततः, इसका उद्देश्य मृत्यु को अंगीकार करना था। मत्ती 20:28 में लिखा है: "मनुष्य का पुत्र सेवा करवाने नहीं, वरन् सेवा करने, और बहुतों के लिए अपनी जान छुड़ौती के रूप में देने आया।" व्यापक अर्थ में, यह अंश यीशु मसीह के दुखों की चर्चा करता है। मानव रूप धारण करने के उपरांत, यीशु मसीह ने इस पृथ्वी पर अपने तैंतीस वर्षों के जीवनकाल में निरंतर कष्ट सहे। संक्षेप में कहें तो, यीशु के तैंतीस वर्षों का जीवन कष्टों से भरा जीवन था। यीशु के कष्ट केवल तैंतीस वर्ष की आयु में क्रूस पर हुई उनकी मृत्यु तक ही सीमित नहीं थे; जैसा कि हम आज के अंश—मत्ती 2:13–18—में देखते हैं, उन्होंने अपने बाल्यकाल में भी कष्ट सहे। दूसरे शब्दों में, यीशु ने अपने प्रारंभिक वर्षों में

एक शरणार्थी के रूप में जीवन का अनुभव किया। मत्ती 2:13 में लिखा है: “उनके चले जाने के बाद, प्रभु का एक दूत यूसुफ को सपने में दिखाई दिया और कहा, ‘उठो, बच्चे और उसकी माँ को लेकर मिस्र भाग जाओ। वहीं तब तक रहो जब तक मैं तुम्हें न बताऊँ, क्योंकि हेरोदेस बच्चे को ढूँढ़कर मार डालना चाहता है।’” यहाँ, “वे” का मतलब पूरब से आए ज्योतिषियों (Magi) से है (पद 1)। यह पक्का नहीं है कि पूरब से ठीक कितने ज्ञानी पुरुष आए थे; आम तौर पर यह माना जाता है कि वे तीन थे। इस अनुमान का कारण यह है कि जब उन्होंने शिशु यीशु की आराधना की, तो उन्होंने अपने खजाने के संदूक खोले और सोना, लोबान और गन्धरस के उपहार चढ़ाए (पद 11)। जब ये ज्योतिषी—जिन्होंने एक तारे का पीछा करते हुए शिशु यीशु को ढूँढ़ा और उनकी आराधना की—जो यहूदियों के राजा के रूप में पैदा हुए थे—यरूशलेम पहुँचे, तो राजा हेरोदेस और पूरे यरूशलेम शहर को यह खबर सुनकर गहरी बेचैनी हुई (पद 1–3)। राजा हेरोदेस ने लोगों के सभी मुख्य याजकों और शास्त्रियों को बुलाया और उनसे पूछा, “मसीह का जन्म कहाँ होना है?” (पद 4)। उन्होंने जवाब दिया, “यहूदिया के बेतलेहेम में,” और अपने जवाब का आधार भविष्यवक्ताओं की लिखी बातें बताई (पद 5–6)। इसके बाद, राजा हेरोदेस ने चुपके से ज्योतिषियों को बुलाया, उनसे उस तारे के ठीक किस समय दिखाई देने के बारे में बारीकी से पूछताछ की, और उन्हें इन निर्देशों के साथ बेतलेहेम भेज दिया: “जाओ और बच्चे को ध्यान से ढूँढ़ो। जैसे ही वह तुम्हें मिल जाए, मुझे आकर बताओ ताकि मैं भी जाकर उसकी आराधना कर सकूँ” (पद 7–8)। राजा हेरोदेस की बात सुनने के बाद, ज्योतिषी वहाँ से चले गए; फिर, वही तारा जो उन्होंने पूरब में देखा था, फिर से दिखाई दिया, उनके आगे-आगे चला, और आखिर में ठीक उसी जगह के ऊपर आकर रुक गया जहाँ शिशु यीशु थे (पद 9)। जब उन्होंने उस तारे को देखा, तो वे बहुत ज़्यादा खुशी से भर गए (पद 10)। घर में घुसने पर, उन्होंने बच्चे को उसकी माँ मरियम के साथ देखा; वे घुटनों के बल गिर पड़े और उसकी आराधना की, फिर अपने खजाने के संदूक खोले और अपने उपहार चढ़ाए (पद 11)। सपने में यह चेतावनी मिलने पर कि वे हेरोदेस के पास वापस न जाएँ, वे दूसरे रास्ते से अपने देश लौट गए (पद 12)। उनके चले जाने के बाद, प्रभु का एक दूत यूसुफ को सपने में दिखाई दिया और कहा, “हेरोदेस उस बच्चे को मारने के लिए उसे ढूँढ़ने वाला है; उठो, बच्चे और उसकी माँ को लेकर मिस्र भाग जाओ, और तब तक वहीं रहो जब तक मैं तुम्हें न बताऊँ” (पद 13)। इसलिए यूसुफ उठा, रात में ही बच्चे और उसकी माँ मरियम को लेकर मिस्र चला गया, और हेरोदेस की मृत्यु तक वहीं रहा (पद 14–15)। शिशु यीशु “भागकर” मिस्र क्यों गया? इसका कारण वह बात पूरी करना था जो

प्रभु ने भविष्यवक्ता के द्वारा कही थी: “मैंने मिस्र से अपने पुत्र को बुलाया” (पद 15)। यहाँ भविष्यवक्ता के द्वारा दिया गया संदेश, भविष्यवक्ता होशे द्वारा की गई भविष्यवाणी की ओर संकेत करता है। यह होशे 11:1 में मिलता है: “जब इस्राएल बच्चा था, तब मैंने उससे प्रेम किया, और मिस्र से अपने पुत्र को बुलाया।”

यीशु मसीह इस धरती पर उन सभी वादों को पूरा करने आए थे जो उन्होंने किए थे। उदाहरण के लिए, उत्पत्ति 3:15 में पाए जाने वाले वाचा (covenant) के संबंध में—जो कहता है, “मैं तेरे और स्त्री के बीच, और तेरे वंश और उसके वंश के बीच बैर उत्पन्न करूँगा; वह तेरे सिर को कुचलेगा, और तू उसकी एड़ी को कुचलेगा”—यीशु ने क्रूस से घोषणा की, “यह पूरा हुआ,” और फिर उनकी मृत्यु हो गई (यूहन्ना 19:30)। यीशु मसीह इस धरती पर परमेश्वर द्वारा निर्धारित समय पर परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने आए थे। यीशु मसीह की मृत्यु परमेश्वर द्वारा निर्धारित समय पर हुई। रोमियों 5:6 कहता है: “क्योंकि जब हम अभी भी शक्तिहीन थे, तो सही समय पर मसीह अधर्मियों के लिए मर गए।” यीशु मसीह अधर्मियों के लिए “सही समय पर”—यानी, परमेश्वर द्वारा निर्धारित समय पर—मर गए। यीशु मसीह इस धरती पर परमेश्वर द्वारा निर्धारित समय पर आए थे (यीशु का प्रथम आगमन)। गलतियों 4:4 कहता है: “परन्तु जब समय पूरा हो गया, तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा, जो स्त्री से जन्मा, और व्यवस्था के अधीन जन्मा।” परमेश्वर ने, “जब समय पूरा हो गया”—यानी, परमेश्वर द्वारा निर्धारित समय पर—अपने पुत्र को, अपने एकलौते पुत्र यीशु मसीह को, कुँवारी मरियम से जन्म लेने के लिए भेजा। यीशु मसीह इस धरती पर परमेश्वर द्वारा निर्धारित समय पर लौटेंगे (यीशु का द्वितीय आगमन)। 1 तीमुथियुस 6:14-15 का अंश कहता है: “इस आज्ञा को हमारे प्रभु यीशु मसीह के प्रकट होने तक बिना किसी दाग या दोष के बनाए रख, जिसे परमेश्वर अपने ही समय पर पूरा करेगा...” [(समकालीन कोरियाई बाइबल) “तुम्हें इस आज्ञा का विश्वासपूर्वक पालन करना चाहिए जब तक कि हमारे प्रभु यीशु मसीह लौट न आएँ, ताकि तुम बिना किसी दाग या दोष के पाए जाओ। जब सही समय आएगा, तो परमेश्वर मसीह को प्रकट करेगा।”] यीशु मसीह मिस्र इसलिए नहीं भागे क्योंकि वे कमजोर थे या क्योंकि उन्हें राजा हेरोदेस का डर था; बल्कि, ऐसा इसलिए था क्योंकि परमेश्वर का निर्धारित समय अभी तक नहीं आया था (मत्ती 2:13-14)। यीशु मसीह केवल मिस्र ही नहीं भागे; उन्होंने बाद के अवसरों पर भी पीछे हटना और शरण लेना जारी रखा। इसका कारण यह था कि अभी परमेश्वर

का समय नहीं आया था। यूहन्ना 8:59 कहता है: “इस पर उन्होंने उस पर फेंकने के लिए पत्थर उठाए, लेकिन यीशु ने खुद को छिपा लिया और मंदिर से चुपके से बाहर निकल गए।” जब यहूदियों ने यीशु पर पत्थर फेंकने की कोशिश की, तो उन्होंने खुद को छिपा लिया और मंदिर से चले गए [उन्होंने अपना शरीर हटा लिया और मंदिर से बाहर निकल गए (समकालीन कोरियाई बाइबिल)]। संक्षेप में, यीशु मृत्यु से बच गए क्योंकि अभी परमेश्वर द्वारा नियुक्त समय नहीं आया था। यूहन्ना 10:39 कहता है: “उन्होंने फिर से उसे पकड़ने की कोशिश की, लेकिन वह उनकी पकड़ से बच निकला।” यहूदियों ने एक बार फिर यीशु को पकड़ने की कोशिश की, लेकिन वह उनके हाथों से फिसलकर बच निकले। इसका कारण यह था कि उसके मरने के लिए परमेश्वर द्वारा नियुक्त समय अभी तक नहीं आया था। यूहन्ना 11:53–54 का अंश कहता है: “इसलिए उस दिन से उन्होंने उसकी जान लेने की साज़िश रची। इसलिए यीशु अब यहूदियों के बीच खुलेआम नहीं घूमते थे, बल्कि जंगल के पास के एक इलाके में, एफ्रेम नाम के एक गाँव में चले गए, जहाँ वह अपने शिष्यों के साथ रहे।” चूंकि परमेश्वर ने उसकी मृत्यु के लिए जो समय नियुक्त किया था, वह अभी तक नहीं आया था, इसलिए यीशु अब यहूदियों के बीच खुलेआम नहीं चलते थे; इसके बजाय, वह उस जगह से चले गए और एकांत में चले गए। यूहन्ना 12:36 कहता है: “जब तक तुम्हारे पास ज्योति है, तब तक ज्योति पर विश्वास करो, ताकि तुम ज्योति की संतान बन सको।” जब यीशु यह कह चुके, तो वह चले गए और उनसे खुद को छिपा लिया। यूहन्ना 2:4 कहता है: “यीशु ने उससे कहा, ‘हे स्त्री, तुम मुझे इसमें क्यों शामिल करती हो? मेरा समय अभी तक नहीं आया है।’” और यूहन्ना 7:8 कहता है: “तुम इस उत्सव में जाओ। मैं इस उत्सव में नहीं जा रहा हूँ, क्योंकि मेरा समय अभी पूरी तरह से नहीं आया है।”

हमारे प्रभु ने खुद को इसलिए नहीं छिपाया या पीछे नहीं हटे क्योंकि वह डर से भरा हुआ कोई कमज़ोर व्यक्ति थे—बिल्कुल भी नहीं। यीशु ने पानी को दाखमधु में बदल दिया (यूहन्ना 2:1–11); उन्होंने पाँच हज़ार पुरुषों की भीड़ को—स्त्रियों और बच्चों को छोड़कर—केवल दो मछलियों और पाँच रोटियों से भोजन कराया (6:1–15); वह समुद्र पर चले (पद 16–21); और उन्होंने मरे हुएों को फिर से जीवित किया—जिनमें यार्डर की बेटी (मरकुस 5:21–24, 38–43), नाइन की विधवा का बेटा (लूका 7:11–17), और लाज़र (यूहन्ना 11:1–44) शामिल थे। यीशु निश्चित रूप से राजा हेरोदेस के डर से मिस नहीं भागे थे। वह इसलिए

हट गए क्योंकि अभी परमेश्वर द्वारा नियुक्त समय नहीं आया था—यानी, अभी परमेश्वर का समय नहीं हुआ था। पीलातुस ने भी यीशु को क्रूस पर चढ़ाने से बचने की कोशिश की। जब पूरी भीड़ उठ खड़ी हुई, यीशु को घसीटकर पीलातुस के सामने ले गई, और उन पर आरोप लगाए, तो पीलातुस ने यीशु को रिहा करने की कोशिश की (पद 20)। उसने मुख्य पुजारियों और भीड़ से घोषणा की: "मुझे इस आदमी [यीशु] के खिलाफ किसी भी आरोप का कोई आधार नहीं मिलता" (लूका 23:1-4); "तुम इस आदमी को मेरे सामने इस आरोप पर लाए हो कि यह लोगों के बीच विद्रोह भड़का रहा है। मैंने तुम्हारी उपस्थिति में इसकी जाँच की है और इसके खिलाफ तुम्हारे आरोपों का कोई आधार नहीं पाया है। न ही हेरोदेस ने, क्योंकि उसने इसे हमारे पास वापस भेज दिया; जैसा कि तुम देख सकते हो, इसने ऐसा कुछ नहीं किया है जिसके लिए इसे मृत्युदंड दिया जाए" (पद 14-15); और फिर, "तीसरी बार उसने उनसे कहा, 'क्यों? इस आदमी ने क्या अपराध किया है? मुझे इसमें मृत्युदंड का कोई आधार नहीं मिला। इसलिए मैं इसे कोड़े लगवाकर फिर रिहा कर दूँगा'" (पद 22)। हालाँकि, क्योंकि परमेश्वर का नियुक्त समय आखिरकार आ गया था, इसलिए परमेश्वर ने यीशु मसीह को क्रूस के हवाले कर दिया। हमारे उद्धार को पूरा करने के लिए, परमेश्वर ने—अपने ही नियुक्त समय पर—उस योजना को पूरा करना शुरू किया जिसे उन्होंने दुनिया की नींव रखने से पहले ही बना लिया था।

इस दुनिया में, जो कठिनाइयों से भरी हुई है, ऐसे बहुत से लोग हैं जो शरणार्थियों के रूप में रहते हैं या जो वर्तमान में कष्ट सह रहे हैं (उदाहरण के लिए, राजनीतिक शरणार्थी, बीमारी से पीड़ित लोग, और इसी तरह के अन्य लोग)। जब हम यीशु मसीह के बारे में सोचते हैं, जिन्होंने एक बार मिस्र में शरण ली थी, तो हमें धैर्यपूर्ण विश्वास के साथ प्रतीक्षा करनी चाहिए—इस दृढ़ विश्वास को थामे हुए कि परमेश्वर, अपने ही परिपूर्ण समय पर, अपने उद्धार के उद्देश्यों को पूरा करेंगे। विशेष रूप से, हमें पूरी ईमानदारी और दृढ़ता के साथ अपनी ज़िम्मेदारियों को निभाना चाहिए, इस पूर्ण विश्वास के साथ कि परमेश्वर अपने ही समय और अपने ही तरीके से, हमारे साथ किए गए अपने वाचा (वादा) को ईमानदारी से पूरा करेगा। उदाहरण के लिए—इस भरोसे को मज़बूती से थामे हुए कि प्रभु निश्चित रूप से अपने कलीसिया (चर्च) का निर्माण करेगा, जैसा कि मत्ती 16:18 में दर्ज है, उसने कलीसिया (जो उसका अपना ही शरीर है) से जो वादा किया है उसके अनुसार—हमें विनम्रता और ईमानदारी के साथ उसके कलीसिया की स्थापना के कार्य में भाग लेना

चाहिए। ऐसा करते समय, यद्यपि हमें निस्संदेह कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा, फिर भी ऐसे हर पल में हमें प्रभु की शरण लेनी चाहिए, जो हमारा आश्रय है; उसके वादे के शब्दों से लिपटे हुए और विश्वास के साथ अपनी प्रार्थनाएँ करते हुए, हमें लगातार उस विशेष बुलाहट और सेवा को पूरा करते रहना चाहिए जो हममें से प्रत्येक को सौंपी गई है—इस दृढ़ विश्वास के साथ कि प्रभु, जो वाचा का सच्चा रक्षक है, निश्चित रूप से परमेश्वर के अपने समय और अपने तरीके से अपने वादों को पूरा करेगा। जब हम इस तरह आगे बढ़ते हैं, तो प्रभु निश्चित रूप से अपनी इच्छा को पूरा करेगा—अपने ही समय और अपने ही तरीके से।

उनकी मृत्यु और पुनरुत्थान की भविष्यवाणी (1)

[मत्ती 16:21-23]

मत्ती 16:21 में लिखा है: “उस समय से यीशु ने अपने चेलों को समझाना आरम्भ किया कि उसे यरूशलेम जाना और पुरनियों, महायाजकों और व्यवस्था के शिक्षकों के हाथों बहुत दुख उठाना होगा, और कि उसे मार डाला जाएगा और तीसरे दिन फिर जिलाया जाएगा।” यह अंश यीशु की अपनी मृत्यु और तीन दिन बाद उनके पुनरुत्थान के विषय में की गई भविष्यवाणी को दर्ज करता है। पिछले सप्ताह की बुधवार की प्रार्थना सभा के दौरान—जिसका मुख्य विषय मत्ती 2:13-18 था—हमने सीखा कि यीशु, जो परमेश्वर द्वारा नियुक्त समय पर मरने के लिए इस पृथ्वी पर आए थे (गलातियों 4:4), मिस्र भाग गए थे क्योंकि उनकी मृत्यु के लिए परमेश्वर द्वारा नियुक्त विशिष्ट समय अभी तक नहीं आया था। इस पृथ्वी पर अपने तैंतीस वर्षों के जीवन के दौरान, यीशु अक्सर भाग जाते और छिप जाते थे; इसका कारण यह था कि परमेश्वर ने उनकी मृत्यु के लिए जो समय नियुक्त किया था, वह अभी तक नहीं आया था। अंततः, तथापि, यीशु परमेश्वर द्वारा नियुक्त समय पर मर गए (रोमियों 5:6)। इस प्रकार, यीशु—जो परमेश्वर द्वारा नियुक्त समय पर इस पृथ्वी पर आए थे (गलातियों 4:4) और परमेश्वर द्वारा नियुक्त समय पर मर गए थे (रोमियों 5:6)—परमेश्वर द्वारा नियुक्त समय पर इस पृथ्वी पर लौटेंगे (1 तीमुथियुस 6:14-15)। यीशु, जो परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के लिए इस पृथ्वी पर आए थे, उन्होंने वास्तव में परमेश्वर द्वारा नियुक्त समय पर परमेश्वर की इच्छा पूरी की। हमें भी यीशु के उदाहरण का अनुसरण करना चाहिए और परमेश्वर द्वारा नियुक्त समय पर परमेश्वर की इच्छा पूरी करनी चाहिए। इस प्रकार परमेश्वर द्वारा नियुक्त समय पर परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के बाद, यीशु ने घोषणा की कि वह परमेश्वर द्वारा नियुक्त विशिष्ट स्थान पर मरेंगे। वह स्थान “यरूशलेम” के अलावा और कोई नहीं है (मत्ती 16:21)। आज के शास्त्र-अंश, मत्ती 16:21 को देखने पर, हमें यह वाक्यांश मिलता है: “उस समय से... उन्होंने समझाना आरम्भ किया।” यहाँ, “उस समय से” उस क्षण को संदर्भित करता है

जब यीशु कैसरिया फिलिप्पी के क्षेत्र में पहुँचने के बाद, सबसे पहले अपने चेलों से पूछा: “लोग मनुष्य के पुत्र को कौन कहते हैं?” (पद 13), और फिर उनसे सीधे पूछा, “लेकिन तुम क्या कहते हो कि मैं कौन हूँ?” (पद 15)—जिस पर साइमन पीटर ने अपने विश्वास का इज़हार किया: “आप मसीह हैं, जीवित परमेश्वर के पुत्र” (पद 16)। इसके बाद, यीशु ने पीटर से कहा: “धन्य हो तुम, साइमन, योना के पुत्र, क्योंकि यह बात तुम्हें किसी इंसान ने नहीं, बल्कि स्वर्ग में रहने वाले मेरे पिता ने बताई है। और मैं तुमसे कहता हूँ कि तुम पीटर हो, और इस चट्टान पर मैं अपनी कलीसिया बनाऊँगा, और अधोलोक के द्वार उस पर हावी नहीं हो पाएँगे। मैं तुम्हें स्वर्ग के राज्य की कुंजियाँ दूँगा; जो कुछ तुम पृथ्वी पर बाँधोगे, वह स्वर्ग में भी बँध जाएगा, और जो कुछ तुम पृथ्वी पर खोलोगे, वह स्वर्ग में भी खुल जाएगा” (पद 17-19)। ये शब्द कहने के तुरंत बाद, उन्होंने “अपने शिष्यों को चेतावनी दी कि वे किसी को न बताएँ कि वे ही मसीह हैं” (पद 20)। ठीक इन बातों को कहने के बाद—यानी, “उस समय से”—यीशु ने इस बारे में बात करना शुरू किया कि उन्हें यरूशलेम जाकर दुख उठाना होगा और उनकी हत्या कर दी जाएगी (पद 21)। दूसरे शब्दों में, “उस समय से” वाक्यांश का अर्थ यह है कि शिष्यों के सामने अपनी घोषणा—“इस चट्टान पर मैं अपनी कलीसिया बनाऊँगा” (पद 18)—करने के बाद, यीशु ने यरूशलेम में अपनी मृत्यु की भविष्यवाणी की (पद 21)। हालाँकि यीशु ने पहले भी अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के बारे में बात की थी, लेकिन उन्होंने ऐसा स्पष्ट रूप से नहीं किया था; बल्कि, उन्होंने उनके बारे में अधिक परोक्ष रूप से बात की थी। अपनी मृत्यु के संबंध में, यीशु ने कहा, “वे दिन आएँगे जब दूल्हे को उनसे अलग कर दिया जाएगा” (मत्ती 9:15); अपने पुनरुत्थान के संबंध में, उन्होंने घोषणा की, “इस मंदिर को गिरा दो, और तीन दिन में मैं इसे फिर से खड़ा कर दूँगा” (यूहन्ना 2:19)। हालाँकि, “उस समय से” (मत्ती 16:21), यीशु ने अपनी मृत्यु और अपने पुनरुत्थान दोनों के बारे में स्पष्ट रूप से बात करना शुरू कर दिया। इसके अलावा, मत्ती 16:21 में, यीशु ने अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान दोनों का ज़िक्र एक साथ किया। जब यीशु ने “उस समय से” अपनी मृत्यु के बारे में साफ़-साफ़ बात की, तो उन्होंने “यरूशलेम” को उस खास जगह के तौर पर भी बताया जहाँ उनकी मृत्यु होगी (पद 21)। इसका ठीक-ठीक कारण यह है कि “यरूशलेम” ही वह जगह थी जिसे परमेश्वर ने यीशु की मृत्यु के लिए ठहराया था।

इसलिए, आइए हम "यरूशलेम"—परमेश्वर द्वारा ठहराई गई जगह—के बारे में तीन बातों पर विचार करें।

(1) उत्पत्ति 22 में, जब "परमेश्वर ने अब्राहम की परीक्षा ली" (पद 1), तो परमेश्वर ने उसके लिए एक खास जगह तय की जहाँ वह अपने प्यारे इकलौते बेटे, इसहाक को, होमबलि के तौर पर चढ़ा सके—वह जगह थी मोरियाह पहाड़—जो "मोरियाह देश" में स्थित था (पद 2)—ठीक उसी जगह पर जहाँ परमेश्वर ने उसे इशारा किया था (पद 3, 9)। और यह मोरियाह पहाड़, असल में, यरूशलेम ही है [तुलना करें 2 इतिहास 3:1: "तब सुलैमान ने यरूशलेम में मोरियाह पहाड़ पर यहोवा का भवन बनाना शुरू किया..."]। परमेश्वर की आज्ञा मानते हुए, अब्राहम सुबह तड़के उठा, अपने गधे पर काठी कसी, और—अपने साथ दो सेवकों, अपने बेटे इसहाक, और होमबलि के लिए काटी हुई लकड़ियों को लेकर—वह निकल पड़ा (पद 3)। तीसरे दिन (पद 4; *मॉडर्न पीपल्स बाइबल*), वह मोरियाह देश में पहुँचा; दूर से मोरियाह पहाड़ को देखते हुए (पद 4), अब्राहम ने अपने दो सेवकों से कहा, "तुम यहीं गधे के पास ठहरो, जबकि मैं और लड़का वहाँ जाएँगे। हम आराधना करेंगे और फिर तुम्हारे पास लौट आएँगे" (पद 5)। उसके बाद, उसने होमबलि के लिए लकड़ियाँ इसहाक पर लाद दीं, जबकि उसने खुद अपने हाथों में आग और छुरी ले ली; जब वे दोनों साथ-साथ चल रहे थे (पद 6), तो वे आपस में बातचीत कर रहे थे। उसके बेटे इसहाक ने अपने पिता अब्राहम से पूछा, "आग और लकड़ियाँ तो यहाँ हैं, लेकिन होमबलि के लिए मेम्रा कहाँ है?" (पद 7)। अब्राहम का जवाब था, "मेरे बेटे, परमेश्वर खुद ही होमबलि के लिए मेम्रा देगा" (पद 8)। और सचमुच, परमेश्वर ने खुद ही एक मेढ़ा दिया (पद 13); इस प्रकार, अब्राहम ने अपने प्यारे बेटे इसहाक के बदले उस मेढ़े को होमबलि के रूप में चढ़ा दिया (पद 13)। परिणामस्वरूप, उन्होंने उस जगह का नाम "यहोवा-यिरे" रखा (जिसका अर्थ है "प्रभु अपने पर्वत पर प्रबंध करेगा") (पद 14)। फिर भी, जब परमेश्वर पिता—जिनके प्यारे और प्रिय पुत्र, उनके एकलौते पुत्र यीशु मसीह (मत्ती 13:7) को यरूशलेम में मृत्युदंड दिया जा रहा था (ठीक वैसे ही जैसा यीशु ने मत्ती 23:21 में भविष्यवाणी की थी)—ने ऊँची आवाज़ में पुकारा, "हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?" (27:46), तब परमेश्वर ने अपने पुत्र के लिए होमबलि हेतु कोई मेम्रा उपलब्ध नहीं कराया, जैसा कि उन्होंने अतीत में अपने लिए किया था (उत्पत्ति 22:8)। दूसरे शब्दों में, पिता अब्राहम के लिए, मोरियाह पर्वत (यरूशलेम) "यहोवा-यिरे" था; फिर भी परमेश्वर पिता के लिए, यरूशलेम—जहाँ उनके एकलौते पुत्र, यीशु की मृत्यु हुई—"यहोवा-यिरे" नहीं था। इसका कारण यह

है कि जिस “मेमे” को परमेश्वर ने तैयार किया था (पद 8), वह कोई और नहीं बल्कि यीशु मसीह ही थे—वही “परमेश्वर का मेमा जो जगत के पाप उठा ले जाता है” (यूहन्ना 1:29)।

(2) 2 शमूएल अध्याय 24 के अनुसार, राजा दाऊद ने इस्राएल की जनगणना करवाने का आदेश दिया—यह एक ऐसा कार्य था जो परमेश्वर की दृष्टि में अप्रसन्न करने वाला था (पद 1–4)। इसके परिणामस्वरूप, तीन दिनों तक पूरे इस्राएल में एक भयानक महामारी फैल गई, जिसने 70,000 लोगों की जान ले ली (पद 15)। इस विपत्ति को समाप्त करने के लिए (पद 21), दाऊद—नबी गाद के माध्यम से दिए गए प्रभु के आदेश का पालन करते हुए—येबूसी अरौना (ओर्नान) के खलिहान में गया और वहाँ एक वेदी बनाई (पद 18–25); अरौना (ओर्नान) का यही खलिहान यरूशलेम का स्थान है।

2 इतिहास 3:1 कहता है: “तब सुलैमान ने यरूशलेम में मोरियाह पर्वत पर प्रभु का मन्दिर बनाना आरम्भ किया, जहाँ प्रभु उसके पिता दाऊद को दिखाई दिया था। यह येबूसी अरौना के खलिहान पर था, वह स्थान जिसे दाऊद ने निर्धारित किया था।” दाऊद बिना कोई कीमत चुकाए परमेश्वर को होमबलि चढ़ाना नहीं चाहता था, इसलिए उसने अरौना (ओर्नान) का खलिहान एक बड़ी रकम देकर खरीद लिया (1 इतिहास 21:24)। वहाँ उसने प्रभु के लिए एक वेदी बनाई, होमबलि और मेलबलि चढ़ाई, और प्रभु को पुकारा। प्रभु ने होमबलि की वेदी पर स्वर्ग से आग भेजकर उसे उत्तर दिया; तब प्रभु ने स्वर्गदूत को आज्ञा दी, और उसने अपनी तलवार म्यान में वापस रख ली (पद 26–27)। अंततः, जब स्वर्गदूत ने यरूशलेम को नष्ट करने के लिए अपना हाथ बढ़ाया, तो प्रभु ने उस विपत्ति के विषय में अपना मन बदल लिया और लोगों को नष्ट कर रहे स्वर्गदूत से कहा, “बस बहुत हुआ! अब अपना हाथ पीछे हटा ले।” ठीक उसी क्षण, जिस स्थान पर स्वर्गदूत खड़ा था, वह “येबूसी अरौना का खलिहान” (मोरियाह पर्वत, या यरूशलेम) था (2 शमूएल 24:16)। तथापि, जब परमेश्वर पिता ने अपना पवित्र क्रोध अपने प्रिय और अति-प्रसन्न करने वाले एकमात्र पुत्र, यीशु मसीह पर उंडेला—जो यरूशलेम में मृत्यु को प्राप्त हो रहा था—तो वह नहीं रुका; बल्कि, उसने अपना क्रोध पूरी मात्रा में उंडेल दिया। इसका कारण यह है कि परमेश्वर ने अपने पुत्र, यीशु मसीह को, हमारे पापों का प्रायश्चित्त करने के लिए एक बलिदान के रूप में इस संसार में भेजा (1 यूहन्ना 4:10)।

(3) 2 इतिहास 3:1 के अनुसार, पवित्रशास्त्र कहता है: “तब सुलैमान ने यरूशलेम में मोरियाह पर्वत पर यहोवा का मन्दिर बनाना आरम्भ किया, जहाँ यहोवा उसके पिता दाऊद को दिखाई दिया था। यह यबूसी अरौना के खलिहान पर था, वह स्थान जिसे दाऊद ने निर्धारित किया था।” इस अंश से, हम यह समझ सकते हैं कि चाहे वह “मोरीयाह पर्वत” हो—जहाँ परमेश्वर ने अब्राहम को अपने प्रिय इकलौते पुत्र, इसहाक को, होमबलि के रूप में चढ़ाने की आज्ञा दी थी—या “यबूसी अरौना का खलिहान” हो—वह स्थान जहाँ परमेश्वर ने, भविष्यद्वक्ता गाद के द्वारा, दाऊद को होमबलि और मेलबलि चढ़ाने की आज्ञा दी थी—दोनों ही उसी स्थान की ओर संकेत करते हैं जिसे परमेश्वर ने “यरूशलेम” के रूप में निर्धारित किया था।

इसी यरूशलेम में राजा सुलैमान ने यरूशलेम के मन्दिर का निर्माण किया था; फिर भी यीशु ने यहूदियों से कहा, “इस मन्दिर को ढा दो, और तीन दिन में मैं इसे फिर खड़ा कर दूँगा” (यूहन्ना 2:19)। यहाँ, यरूशलेम का मन्दिर जिसका उल्लेख यीशु ने किया था, वह उनके अपने भौतिक शरीर का संकेत था [“उनका अपना शरीर” (*Modern Man’s Bible* में जैसा अनुवाद किया गया है)]। ...पूरा होगा (पद 21)। संक्षेप में, यरूशलेम का मन्दिर एक प्रतीक के रूप में कार्य करता है जो यीशु के भौतिक शरीर की ओर संकेत करता है; इस प्रकार, आज के अंश—मत्ती 16:21—में यीशु ने भविष्यवाणी की (घोषणा की) कि वह यरूशलेम जाएँगे और उन्हें मार डाला जाएगा।

यीशु की मृत्यु न केवल परमेश्वर द्वारा निर्धारित समय पर हुई, बल्कि परमेश्वर द्वारा निर्धारित स्थान पर भी हुई—अर्थात्, “यरूशलेम” में। हमें भी, यीशु—हमारे बड़े भाई—के उदाहरण का अनुसरण करते हुए, परमेश्वर द्वारा निर्धारित समय और स्थान पर ही मृत्यु को प्राप्त होना चाहिए। दूसरे शब्दों में, हमें परमेश्वर की इच्छा के अनुसार जीना चाहिए और परमेश्वर की इच्छा के अनुसार ही मरना चाहिए। किसी संत की ऐसी मृत्यु परमेश्वर की दृष्टि में अनमोल होती है (भजन संहिता 116:15)। भले ही इंसानी नज़र में यह एक दुखद मौत लगे—शायद एक शापित मौत भी—लेकिन असल बात यह है: परमेश्वर की नज़र में, उसकी इच्छा के अनुसार जीना और उसकी इच्छा के अनुसार मरना ही सबसे कीमती जीवन और सबसे प्यारी

मौत है। भजन संहिता 116:15 का संदेश यही है: "यहोवा की दृष्टि में उसके भक्तों की मृत्यु अनमोल है"
[(समकालीन कोरियाई बाइबल) "यहोवा अपने भक्तों की मृत्यु को अनमोल मानता है"]।

उनकी मृत्यु और पुनरुत्थान की भविष्यवाणी (2)

[मत्ती 16:21-23]

मत्ती 16:21 में लिखा है: “उस समय से यीशु मसीह ने अपने चेलों को समझाना शुरू किया कि उसे यरूशलेम जाना होगा और पुरनियों, महायाजकों और व्यवस्था के शिक्षकों के हाथों बहुत कुछ सहना होगा, और यह कि उसे मार डाला जाएगा और तीसरे दिन फिर से जीवित किया जाएगा।” यह अंश पहला ऐसा मौका है जब यीशु ने भविष्यवाणी की कि वह दुख उठाएगा, मारा जाएगा, और तीसरे दिन फिर से जीवित हो जाएगा; यह भविष्यवाणी इस ग्रंथ में दो बार और आती है (17:22-23; 20:18-19)। मरकुस के सुसमाचार में ऐसा पहला अंश इस प्रकार दर्ज है: “तब उसने उन्हें सिखाना शुरू किया कि मनुष्य के पुत्र को बहुत कुछ सहना होगा और पुरनियों, महायाजकों और व्यवस्था के शिक्षकों द्वारा अस्वीकार किया जाएगा, और यह कि उसे मार डाला जाएगा और तीन दिन बाद फिर से जीवित हो जाएगा। उसने इस बारे में साफ-साफ बात की...” (मरकुस 8:31-32)। यह भविष्यवाणी मरकुस में दो बार और भी आती है (9:30-32; 10:32-34)। लूका के सुसमाचार में भी, ऐसा पहला अंश इस प्रकार दर्ज है: “और उसने कहा, ‘मनुष्य के पुत्र को बहुत कुछ सहना होगा और पुरनियों, महायाजकों और व्यवस्था के शिक्षकों द्वारा अस्वीकार किया जाएगा, और उसे मार डाला जाएगा और तीसरे दिन फिर से जीवित किया जाएगा’” (लूका 9:22)। मत्ती और मरकुस के वृत्तांतों के विपरीत, लूका के इस अंश में ऐसा कोई रिकॉर्ड नहीं है जिसमें यह कहा गया हो कि यीशु ने अपने चेलों को यह बताना *शुरू किया* था या उसने इस बारे में *साफ-साफ* (खुले तौर पर) बात की थी। इसके विपरीत, लूका के सुसमाचार में दर्ज दूसरा कथन हमें ठीक इसके विपरीत कहता हुआ प्रतीत होता है: “ये बातें तुम्हारे कानों में बैठ जाएं: मनुष्य का पुत्र मनुष्यों के हाथों में सौंपा जाने वाला है। लेकिन वे इस बात को नहीं समझें; इसका अर्थ उनसे छिपा हुआ था ताकि वे इसे समझ न सकें, और वे उससे इस बारे में पूछने से डरते थे” (लूका 9:44-45)। जबकि मत्ती और मरकुस के

सुसमाचारों में पहली बात (मत्ती 16:21; मरकुस 8:31-32) यह दर्ज करती है कि यीशु ने *पहली बार* अपने शिष्यों के सामने यह प्रकट किया—या खुलकर कहा—कि उन्हें बहुत सी बातें सहनी पड़ेंगी, उनकी हत्या की जाएगी, और तीसरे दिन वे फिर से जीवित हो उठेंगे; वहीं लूका के सुसमाचार में दूसरी बात (लूका 9:44-45) यह दर्ज करती है कि यीशु के शिष्य उनकी बातों को समझ नहीं पाए, क्योंकि उनका अर्थ "उनसे छिपा हुआ था, ताकि वे उसे ग्रहण न कर सकें।" हालाँकि मत्ती/मरकुस और लूका के ये विवरण हमें आपस में विरोधाभासी लग सकते हैं, फिर भी हम अपने विश्वास के एक मूल सिद्धांत के रूप में यह मानते हैं कि पवित्रशास्त्र के लिखित शब्द कभी भी वास्तव में एक-दूसरे का खंडन या विरोध नहीं करते; क्योंकि "संपूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है" (2 तीमुथियुस 3:16), और इसके अतिरिक्त, "कोई भी भविष्यवाणी मनुष्य की इच्छा से नहीं हुई, बल्कि भविष्यद्वक्ता—यद्यपि वे मनुष्य ही थे—पवित्र आत्मा द्वारा प्रेरित होकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे" (2 पतरस 1:21)। मेरी दृष्टि में, लूका में वर्णित दूसरे विवरण की—"ये बातें तुम्हारे कानों में अच्छी तरह बैठ जानी चाहिए: मनुष्य का पुत्र मनुष्यों के हाथों में सौंपा जाने वाला है। परन्तु वे इस बात को समझ न सके; इसका अर्थ उनसे छिपा हुआ था, ताकि वे इसे ग्रहण न कर सकें, और वे इस विषय में उनसे पूछने से डरते थे" (लूका 9:44-45)—तुलना मत्ती और मरकुस के *पहले* विवरणों से नहीं, बल्कि मत्ती और मरकुस के *दूसरे* विवरणों से की जानी चाहिए। मत्ती के सुसमाचार में वर्णित दूसरे विवरण पर विचार करें: "जब वे गलील में एकत्रित हुए, तो यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, 'मनुष्य का पुत्र मनुष्यों के हाथों में सौंपा जाने वाला है, और वे उसे मार डालेंगे, और तीसरे दिन वह फिर से जीवित किया जाएगा।' और वे बहुत दुखी हुए" (मत्ती 17:22-23)। अब, मरकुस के सुसमाचार में दिए गए दूसरे वृत्तांत पर विचार करें: "वे वहाँ से आगे बढ़े और गलील से होकर गुज़रे। और वह नहीं चाहता था कि किसी को इस बात का पता चले, क्योंकि वह अपने शिष्यों को शिक्षा दे रहा था और उनसे कह रहा था, 'मनुष्य का पुत्र मनुष्यों के हाथों में सौंपा जाने वाला है, और वे उसे मार डालेंगे। और जब उसे मार डाला जाएगा, तो तीन दिन बाद वह फिर जी उठेगा।' परन्तु वे यह बात नहीं समझे और उससे पूछने से डरते थे" (मरकुस 9:30-32)। जब इन तीनों अंशों की तुलना की जाती है, तो मरकुस और लूका के सुसमाचार यह प्रकट करते हैं कि शिष्यों की साझा प्रतिक्रिया—जब यीशु ने अपनी दूसरी भविष्यवाणी (घोषणा) की कि उसे मनुष्यों के हाथों में सौंपा जाएगा और मार डाला जाएगा—यह थी कि "वे नहीं जानते थे" या "नहीं समझे" कि उसने क्या कहा। इसलिए, लूका के सुसमाचार में दिए गए इस कथन

के संबंध में कि इसका अर्थ "उनसे छिपा हुआ था" (लूका 9:45), मेरा मानना है कि लूका ने इसे इस तरह इसलिए नहीं लिखा क्योंकि यीशु ने जान-बूझकर अपने शिष्यों से भविष्यवाणी छिपाई थी (क्योंकि वह पहले ही लूका 9:22 में उन्हें अपनी पहली भविष्यवाणी बता चुका था), बल्कि इसलिए लिखा क्योंकि शिष्यों में स्वयं ही समझ की कमी थी और उनका स्वभाव ऐसा था कि वे "भविष्यवक्ताओं की कही हुई सब बातों पर विश्वास करने में मंदबुद्धि थे" (लूका 24:25)। दूसरे शब्दों में, मैं इस कथन की व्याख्या कि भविष्यवाणी उस समय शिष्यों से "छिपी हुई थी," उनके अपनी समझ की कमी के प्रतिबिंब के रूप में करता हूँ—जो उनकी अपनी मंदबुद्धि और विश्वास करने में हृदय की सुस्ती से उत्पन्न हुई थी—न कि इस संकेत के रूप में कि यीशु ने जान-बूझकर अपने कष्टों, मृत्यु और पुनरुत्थान का विवरण उनसे छिपाया था। उस समय से आगे, यीशु ने अपनी आसन्न मृत्यु के बारे में खुलकर बात की, और विशेष रूप से "यरूशलेम" को उस स्थान के रूप में पहचाना जहाँ उसकी मृत्यु होगी; इसका कारण ठीक यही था कि "यरूशलेम" ही वह स्थान था जिसे परमेश्वर ने यीशु की मृत्यु के लिए ठहराया था (मत्ती 16:21)। यह यरूशलेम—यीशु की मृत्यु का निर्धारित स्थल—(1) मोरियाह पर्वत है, वह स्थान जहाँ परमेश्वर ने अब्राहम को उसकी आस्था की परीक्षा लेते समय इसहाक को होमबलि के रूप में चढ़ाने का निर्देश दिया था (उत्पत्ति 22:2, 3, 9; 2 इतिहास 3:1); (2) अरौना का खलिहान—वह जगह जहाँ परमेश्वर ने—दाऊद की जनगणना से नाराज़ होकर (जो उनकी नज़रों में अप्रिय थी) और उस देश पर महामारी भेजकर—नबी गाद के ज़रिए दाऊद को निर्देश दिया कि वह उन्हें होमबलि चढ़ाए (2 शमूएल 24:16); और इसके अलावा, (3) "यरूशलेम में मोरियाह पर्वत"—ठीक वही जगह जहाँ सुलैमान ने प्रभु का मंदिर बनवाया था (2 इतिहास 3:1)। यीशु ने न केवल यह घोषणा की कि यरूशलेम ही वह जगह होगी जहाँ उनकी मृत्यु होगी, बल्कि यह भी कहा कि उन्हें "तीसरे दिन फिर से जीवित होना है" (मत्ती 16:21)। ऐसा करके, उन्होंने यह भविष्यवाणी की कि अपनी मृत्यु के तीन दिन बाद वे फिर से जीवित हो उठेंगे।

यीशु के पुनरुत्थान के बारे में भविष्यवाणियाँ पुराने नियम में अक्सर देखने को मिलती हैं। उदाहरण के लिए, होशे 6:2 पर विचार करें: "दो दिनों के बाद वह हमें फिर से जीवित करेगा; तीसरे दिन वह हमें उठा खड़ा करेगा, ताकि हम उसकी उपस्थिति में जी सकें।" यहाँ, "तीसरे दिन" वाक्यांश अंततः यीशु मसीह के

पुनरुत्थान की ओर संकेत करता है। योना 1:17 और 2:10 को देखें: “अब यहोवा ने योना को निगलने के लिए एक बड़ी मछली तैयार की थी। और योना उस मछली के पेट में तीन दिन और तीन रात रहा... तब यहोवा ने उस मछली से बात की, और उसने योना को सूखी ज़मीन पर उगल दिया।” इस अंश में, यह कथन कि भविष्यवक्ता योना उस बड़ी मछली के पेट में “तीन दिन और तीन रात” रहा—और उसके बाद परमेश्वर ने मछली को योना को सूखी ज़मीन पर उगलने का आदेश दिया—यीशु की मृत्यु और उसके तीन दिन बाद होने वाले पुनरुत्थान की एक पूर्व-छाया (foreshadowing) के रूप में कार्य करता है। भजन संहिता 16:10 पर विचार करें: “क्योंकि तू मेरी आत्मा को कब्र में नहीं छोड़ेगा, न ही तू अपने पवित्र जन को सड़ने देगा।” यह पद यीशु के पुनरुत्थान की भविष्यवाणी करता है; वास्तव में, पिनत्तेकुस्त के दिन, प्रेरित पतरस—पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर—यीशु के पुनरुत्थान की घोषणा करते समय भजन संहिता 16:10 के इसी पद का हवाला दिया था। प्रेरितों के काम 2:27 में लिखा है: “क्योंकि तू मेरी आत्मा को कब्र में नहीं छोड़ेगा, न ही तू अपने पवित्र जन को सड़ने देगा।” प्रेरित पौलुस ने भी भजन संहिता 16:10 के इस पद का हवाला दिया: “जैसा कि एक और भजन में भी कहा गया है: ‘तू अपने पवित्र जन को सड़ने नहीं देगा।’”

“...ठीक जैसा उसने कहा था” (प्रेरितों के काम 13:35)। यह भजन संहिता 110:1 में पाए जाने वाले शब्दों को संदर्भित करता है: “यहोवा मेरे प्रभु से कहता है: ‘मेरे दाहिने हाथ बैठ, जब तक कि मैं तेरे शत्रुओं को तेरे पैरों की चौकी न बना दूँ।’” प्रेरित पतरस ने प्रेरितों के काम 2:34–35 में अपने उपदेश के दौरान भजन संहिता 110:1 के इस वचन को उद्धृत किया: “क्योंकि दाऊद तो स्वर्ग पर नहीं चढ़ा, परन्तु वह स्वयं कहता है: ‘प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा: ‘मेरे दाहिने हाथ बैठ, जब तक कि मैं तेरे शत्रुओं को तेरे पैरों की चौकी न बना दूँ।’” यह अंश इस बात की गवाही देता है कि यीशु मसीह न केवल मृतकों में से जी उठे, बल्कि स्वर्ग भी चले गए और परमेश्वर के दाहिने हाथ विराजमान हैं। प्रेरित पौलुस ने भी इसकी गवाही दी: “फिर वह कौन है जो दोषी ठहराता है? कोई नहीं। मसीह यीशु, जो मर गए—और उससे भी बढ़कर, जो जिलाए गए—परमेश्वर के दाहिने हाथ हैं और हमारे लिए मध्यस्थता भी कर रहे हैं” (रोमियों 8:34)। इस प्रकार, पुराने नियम ने यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान की भविष्यवाणी पहले ही कर दी थी, और इस भविष्यवाणी के अनुसार, यीशु की मृत्यु हुई और तीन दिन बाद वे फिर से जी उठे।

ऐसी भविष्यवाणियाँ, जिनमें कहा गया है कि यीशु अपनी मृत्यु के तीन दिन बाद मृतकों में से जी उठेंगे, नए नियम में भी मिलती हैं। ये शब्द 1 कुरिन्थियों 15:3-4 में पाए जाते हैं: "क्योंकि जो मैंने ग्रहण किया, वही मैंने तुम्हें सबसे महत्वपूर्ण बात के रूप में सौंप दिया: कि मसीह पवित्रशास्त्र के अनुसार हमारे पापों के लिए मर गए; कि उन्हें दफनाया गया; और कि वे पवित्रशास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी उठे।" प्रेरित पौलुस ने गवाही दी कि यीशु "पवित्रशास्त्र के अनुसार" मर गए और तीसरे दिन "पवित्रशास्त्र के अनुसार" ही जी भी उठे। यहाँ, "पवित्रशास्त्र के अनुसार" वाक्यांश पुराने नियम को संदर्भित करता है। पुराने नियम ने भविष्यवाणी की थी कि यीशु मसीह हमारी जगह—"हमारे पापों के लिए"—मरेंगे। प्रेरितों के धर्मसार पर विचार करें: "...पन्तियुस पीलातुस के अधीन दुख उठाया, क्रूस पर चढ़ाए गए, मर गए, और दफनाए गए; तीसरे दिन वे मृतकों में से फिर जी उठे..." अपने विश्वास की प्रार्थना के माध्यम से, हम अपने इस विश्वास को स्वीकार करते हैं कि यीशु पवित्रशास्त्र के अनुसार मरे और पवित्रशास्त्र के अनुसार ही फिर से जी उठे।

हमें यीशु के पुनरुत्थान के संबंध में कोई संदेह नहीं रखना चाहिए; बल्कि, हमें पूर्ण निश्चितता के साथ इस पर दृढ़ रहना चाहिए। हमें इस बात का पूरा यकीन होना चाहिए कि यीशु पवित्र शास्त्रों के अनुसार मरे, और उसी तरह, पवित्र शास्त्रों की पूर्ति के लिए वे तीन दिन बाद फिर से जीवित हो उठे। यीशु हमारे लिए "पहलौठा" बन गए हैं। हम भी वैसे ही जीवित किए जाएँगे जैसे यीशु हुए थे। यदि यीशु के दूसरी बार आने के समय तक हम इस दुनिया से जा चुके होंगे, तो प्रभु स्वयं स्वर्ग से एक ज़ोरदार आज्ञा के साथ, महादूत की आवाज़ के साथ, और परमेश्वर के तुरही की पुकार के साथ नीचे उतरेंगे; और मसीह में मरे हुए लोग सबसे पहले जीवित होंगे (1 थिस्सलोनिकियों 4:16) [नोट: (1 कुरिन्थियों 15:52) "क्योंकि तुरही बजेगी, मरे हुए लोग अविनाशी रूप में जीवित किए जाएँगे, और हम बदल जाएँगे"]। हालाँकि, यदि यीशु के लौटने पर हम अभी भी जीवित होंगे, तो हम सभी तुरंत और अचानक बदल जाएँगे—पलक झपकते ही—और हमें एक ऐसा शरीर मिलेगा जो यीशु के महिमामय शरीर जैसा होगा। यही 1 कुरिन्थियों 15:51 का संदेश है: "सुनो, मैं तुम्हें एक भेद की बात बताता हूँ: हम सभी सोएँगे नहीं, बल्कि हम सभी बदल जाएँगे—एक पल में, पलक झपकते ही, आखिरी तुरही बजने पर।" और यहाँ फिलिप्पियों 3:21 का अंश है (*The Bible for Modern People* से): "जब वह आएगा, तो उस शक्ति के द्वारा जो उसे हर चीज़ को अपने नियंत्रण में लाने में सक्षम बनाती है, वह हमारे इस दीन-हीन शरीर को बदल देगा ताकि यह उसके महिमामय शरीर जैसा हो जाए।" मैं प्रार्थना करता हूँ कि पुनरुत्थान में इस विश्वास को मज़बूती से थामे हुए, आप सुसमाचार

के प्रचारक बनें—प्रभु यीशु मसीह के शुभ समाचार को बाँटते रहें, विशेष रूप से यह कि वह पवित्र शास्त्रों के अनुसार मरे और फिर से जीवित हो उठे—उस दिन तक जब प्रभु हमें अपने घर बुला लें, या ठीक उस क्षण तक जब वह दूसरी बार आएँ।

उनकी मृत्यु और पुनरुत्थान की भविष्यवाणी (3)

[मत्ती 16:21-23]

मत्ती 16:21-23 का अंश इस प्रकार है: “उस समय से यीशु ने अपने शिष्यों को समझाना शुरू किया कि उन्हें यरूशलेम जाना होगा और वहाँ प्राचीनों, मुख्य याजकों और व्यवस्था के शिक्षकों के हाथों बहुत कुछ सहना होगा, और यह कि उन्हें मार डाला जाएगा और तीसरे दिन फिर से जीवित किया जाएगा। पतरस उन्हें एक तरफ ले गया और उन्हें डाँटना शुरू किया। उसने कहा, ‘ऐसा कभी न हो, प्रभु! यह आपके साथ कभी नहीं होगा!’ यीशु मुड़े और पतरस से कहा, ‘मेरे पीछे हट जा, शैतान! तू मेरे लिए एक ठोकर का कारण है; तू परमेश्वर की बातों पर नहीं, बल्कि केवल इंसानी बातों पर ध्यान दे रहा है।’” यहाँ, वाक्यांश “उस समय से” उस पल को संदर्भित करता है जब शमौन पतरस ने, स्वर्ग में स्थित परमेश्वर पिता से मिले एक प्रकाशन के माध्यम से, अपने विश्वास की घोषणा की—यह कहते हुए, “आप मसीह हैं, जीवित परमेश्वर के पुत्र” (पद 16)—और यीशु से बहुत प्रशंसा पाई। पतरस के विश्वास की घोषणा सुनकर, यीशु ने कहा, “मैं इस चट्टान [पतरस के विश्वास की इस घोषणा] पर अपनी कलीसिया बनाऊँगा, और अधोलोक के द्वार उस पर प्रबल न होंगे। मैं तुम्हें स्वर्ग के राज्य की कुंजियाँ दूँगा; जो कुछ तुम पृथ्वी पर बाँधोगे, वह स्वर्ग में बँधेगा, और जो कुछ तुम पृथ्वी पर खोलोगे, वह स्वर्ग में खुलेगा” (पद 18-19)। इसके अलावा, यहाँ जिस स्थान को “यरूशलेम” (पद 21) कहा गया है, वह परमेश्वर द्वारा निर्धारित एक विशिष्ट स्थान है; (1) अब्राहम के युग में, यह मोरियाह पर्वत था (उत्पत्ति 22:2, 3, 9; 2 इतिहास 3:1); (2) दाऊद के युग में, यह अरौना का खलिहान था (2 शमूएल 24:16); और (3) सुलैमान के युग में, यह यरूशलेम में मोरियाह पर्वत था—ठीक वही स्थान जहाँ प्रभु का मंदिर बनाया गया था (2 इतिहास 3:1)। हमें भी, परमेश्वर की स्तुति और आराधना उसी स्थान पर करनी चाहिए जिसे उन्होंने निर्धारित किया है। मत्ती 16:21 में जिन “बुजुर्गों, मुख्य याजकों

और शास्त्रियों" का ज़िक्र है, वे ही वे लोग थे जिनसे मिलकर सनहेद्रिन परिषद बनी थी। उस समय, सनहेद्रिन यहूदी लोगों की सर्वोच्च शासी निकाय के तौर पर काम करती थी, और इस तरह उसके पास बहुत ज़्यादा अधिकार थे—यहाँ तक कि किसी व्यक्ति को मौत की सज़ा देने का अधिकार भी। यीशु ने भविष्यवाणी की थी कि यरूशलेम जाने पर, उन्हें इन लोगों के हाथों बहुत दुख उठाना पड़ेगा, उन्हें मार डाला जाएगा, और उसके बाद तीसरे दिन वे फिर से जीवित हो जाएँगे। इसके अलावा, मत्ती 16:21 में कहा गया है कि यीशु ने "अपने चेलों को" ये बातें "दिखाना शुरू किया"; वाक्यांश "दिखाना शुरू किया" का मतलब है कि उन्होंने इन मामलों के बारे में "खुले तौर पर" या "साफ़-साफ़" बात की (मरकुस 8:32)। इस पल से पहले—यानी, पतरस के विश्वास की स्वीकारोक्ति से पहले, "आप मसीह हैं, जीवित परमेश्वर के पुत्र"—यीशु ने अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के बारे में खुले तौर पर बात नहीं की थी, बल्कि इन विषयों पर निजी तौर पर (अक्सर दृष्टांतों के माध्यम से) बात की थी। मत्ती 9:14-15 में लिखा है: "तब यूहन्ना के चेले उनके पास आए और पूछा, 'हम और फरीसी अक्सर उपवास क्यों करते हैं, लेकिन आपके चेले उपवास नहीं करते?' यीशु ने उत्तर दिया, 'जब तक दूल्हा उनके साथ है, तब तक क्या दूल्हे के मेहमान शोक मना सकते हैं? वह समय आएगा जब दूल्हे को उनसे ले लिया जाएगा; तब वे उपवास करेंगे।'" यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के चेलों द्वारा पूछे गए प्रश्न (पद 14) के प्रति यीशु के उत्तर (पद 15) की जाँच करने पर, कोई यह देख सकता है कि हालाँकि कोई स्पष्ट भविष्यवाणी नहीं है जिसमें यह कहा गया हो कि यीशु की मृत्यु सार्वजनिक रूप से होगी, फिर भी वाक्यांश "वह समय आएगा जब दूल्हे को उनसे ले लिया जाएगा" यह दर्शाता है कि यीशु की मृत्यु निश्चित रूप से होगी। यूहन्ना 2:18-22 में कहा गया है: "तब यहूदियों ने उनसे पूछा, 'यह सब करने का अपना अधिकार साबित करने के लिए तुम हमें कौन-सा चमत्कार दिखा सकते हो?' यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, 'इस मंदिर को गिरा दो, और मैं इसे तीन दिनों में फिर से खड़ा कर दूँगा।' यहूदियों ने जवाब दिया, 'इस मंदिर को बनाने में छियालीस साल लगे हैं, और क्या तुम इसे सचमुच तीन दिनों में खड़ा कर दोगे?' लेकिन जिस मंदिर की बात उन्होंने की थी, वह उनका अपना शरीर था। जब वे मरे हुएों में से जी उठे, तो उनके शिष्यों को याद आया कि उन्होंने क्या कहा था। तब उन्होंने पवित्रशास्त्र और यीशु के कहे वचनों पर विश्वास किया।" जब फसह का त्योहार नज़दीक आ रहा था, तो यीशु यरूशलेम गए; वहाँ, मंदिर के अंदर मवेशी, भेड़ें और कबूतर बेचने वालों, साथ ही पैसे बदलने वालों को बैठे देखकर, उन्होंने रस्सियों का एक कोड़ा बनाया, सभी भेड़ों और मवेशियों को मंदिर से बाहर निकाल

दिया, पैसे बदलने वालों के सिक्के बिखेर दिए, उनकी मेज़ें उलट दीं, और इस तरह मंदिर को शुद्ध किया (पद 13-16)। उस समय, यहूदियों ने यीशु से पूछा, “यह सब करने का अपना अधिकार साबित करने के लिए तुम हमें कौन-सा चमत्कार दिखा सकते हो?” (पद 18)। यीशु ने उत्तर दिया, “इस मंदिर को गिरा दो, और मैं इसे तीन दिनों में फिर से खड़ा कर दूँगा।” यहाँ, “मंदिर” शब्द का अर्थ यीशु का अपना शरीर था (पद 21); “इस मंदिर को गिरा दो” की आज्ञा ने यीशु की मृत्यु की भविष्यवाणी की, जबकि “मैं इसे तीन दिनों में फिर से खड़ा कर दूँगा” के वादे ने उनके पुनरुत्थान की भविष्यवाणी की। हालाँकि, उस समय यीशु के शिष्य भी इन शब्दों का अर्थ नहीं समझ पाए थे; यीशु के मरने और फिर से जी उठने के बाद ही उन्हें उनके शब्द याद आए और उन्होंने पवित्रशास्त्र तथा यीशु के कहे वचनों, दोनों पर विश्वास किया (पद 22)। इस प्रकार, पतरस द्वारा अपने विश्वास की गवाही देने से पहले, यीशु ने अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के बारे में खुलकर बात नहीं की, बल्कि केवल दृष्टांतों में (निजी तौर पर) बात की; हालाँकि, पतरस की गवाही के बाद, उन्होंने इन मामलों के बारे में सार्वजनिक रूप से (खुले तौर पर) बात करना शुरू कर दिया। ठीक उसी क्षण “पतरस उन्हें एक तरफ ले गया और उन्हें डाँटना शुरू कर दिया। ‘ऐसा कभी न हो, प्रभु!’ उसने कहा। ‘आपके साथ ऐसा कभी नहीं होगा!’” (मत्ती 16:22)। जब यीशु केवल दृष्टांतों में बात करते थे, तब उनके चेले यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान से जुड़ी भविष्यवाणियों को समझ नहीं पाए थे; लेकिन जब उन्होंने इन बातों के बारे में खुलकर बात करना शुरू किया, तो वे उनके शब्दों का अर्थ साफ़-साफ़ समझ गए। इसीलिए पतरस यीशु को एक तरफ ले गया और उन्हें डाँटते हुए कहा: “हे प्रभु, ऐसा कभी नहीं हो सकता! आपके साथ ऐसी कोई भी बात कभी नहीं होनी चाहिए!” (पद 22, *द कंटेम्पररी बाइबल*)। उसी पल, यीशु मुड़े, पतरस की ओर देखा, और उसे डाँटा: “हे शैतान, मेरे पीछे हट जा! तू मेरे लिए एक रुकावट है; तू परमेश्वर की बातों पर नहीं, बल्कि केवल इंसानी बातों पर ध्यान दे रहा है” (पद 23)। यह कितना चालाक प्रलोभन था—शैतान की ओर से आया हुआ एक प्रलोभन! यह प्रलोभन केवल प्रेरित पतरस के लिए ही नहीं था; बल्कि दूसरे चेले भी इसकी चपेट में आ गए थे। हम मरकुस 8:33 को देखकर यह समझ सकते हैं: “यीशु मुड़े और अपने चेलों की ओर देखा, फिर उन्होंने पतरस को डाँटा और कहा, ‘हे शैतान, मेरे पीछे हट जा! तू परमेश्वर की बातों पर नहीं, बल्कि केवल इंसानी बातों पर ध्यान दे रहा है।’” मरकुस 8:33 का यह पद कहता है, “यीशु मुड़े और अपने चेलों की ओर देखा...” (जबकि मत्ती 16:23 कहता है, “यीशु मुड़े और

पतरस से कहा...")। चूंकि दूसरे चेलों की सोच भी पतरस जैसी ही थी, इसलिए यीशु ने न केवल पतरस की ओर देखा, बल्कि दूसरे चेलों की ओर भी देखा, और फिर उनके प्रतिनिधि के तौर पर पतरस को डांटा।

आज हमारे बारे में क्या? क्या हम भी, यीशु के शिष्यों की तरह, शैतान के ऐसे प्रलोभनों का अक्सर शिकार नहीं होते? क्या हम भी अक्सर शैतान के प्रलोभनों में नहीं फँस जाते, ठीक उनकी तरह, और "परमेश्वर की बातों पर नहीं, बल्कि मनुष्यों की बातों पर ध्यान देते हैं"? (मत्ती 16:23; मरकुस 8:33) प्रेरित पतरस और दूसरे शिष्यों ने यीशु को चेतावनी दी थी कि उन्हें मनुष्यों की बातों पर ध्यान देना चाहिए, और यीशु की मृत्यु कभी नहीं होनी चाहिए (मत्ती 16:22, मॉडर्न इंग्लिश वर्शन)। शैतान के प्रलोभन का ठीक यही मकसद है। क्योंकि शैतान का मानना था कि शास्त्रों के अनुसार हमारे पापों के लिए मसीह की मृत्यु (1 कुरिन्थियों 15:3) कभी नहीं होनी चाहिए, इसलिए उसने यीशु को तीन बार प्रलोभन दिया, तब भी जब वे क्रूस पर लटके हुए थे: (1) पहला प्रलोभन: (लूका 23:35) "लोग खड़े होकर देख रहे थे, और शासक उनका मज़ाक उड़ाते हुए कह रहे थे, 'इसने दूसरों को बचाया; अगर यह मसीह है, जिसे परमेश्वर ने चुना है, तो यह खुद को बचाए!'" (2) दूसरा प्रलोभन: (पद 36-37) "सैनिक आगे आए, उसका मज़ाक उड़ाया और उसे खट्टी दाखमधु दी, और कहा, 'अगर तुम यहूदियों के राजा हो, तो खुद को बचाओ!'" (3) तीसरा प्रलोभन: (पद 39) "वहाँ लटके हुए अपराधियों में से एक ने उसका मज़ाक उड़ाते हुए कहा, 'क्या तुम मसीह नहीं हो? खुद को और हमें बचाओ!'" शैतान के इन तीनों प्रलोभनों का मूल यह है कि यीशु को क्रूस से खुद को बचा लेना चाहिए और मरने के बजाय जीवित रहना चाहिए। दूसरे शब्दों में, क्योंकि शैतान कभी नहीं चाहता था कि यीशु हमारी ओर से हमारे पापों का बोझ उठाएँ और क्रूस पर प्रायश्चित की मृत्यु मरें, इसलिए उसने "शासकों" (पद 35), "सैनिकों" (पद 36), और "वहाँ लटके हुए अपराधियों में से एक" (पद 39) का इस्तेमाल करके यीशु को तीन बार प्रलोभन दिया कि वे "खुद को बचाएँ।" शैतान के चालाक प्रलोभन हमें केवल यीशु की मृत्यु पर ध्यान केंद्रित करने पर मजबूर करते हैं और हमें यीशु के पुनरुत्थान पर ध्यान केंद्रित करने से रोकते हैं। दूसरे शब्दों में, शैतान हमें तब लुभाता है जब वह यीशु की भविष्यवाणी (मत्ती 16:21) के उस हिस्से को छोड़ देता है जिसमें कहा गया था कि यीशु "बहुत दुख उठाएँगे, मार डाले जाएँगे, और तीसरे दिन फिर जी उठेंगे," और इसके बजाय वह केवल उन अनेक दुखों और मृत्यु पर ज़ोर देता है जिन्हें यीशु को सहना पड़ा। विशेष रूप से, शैतान हमारे पास तब आता है और हमें लुभाता है जब हमारे प्रियजन मर जाते हैं, जिससे हम निराश अविश्वासियों की तरह शोक करने लगते हैं (1 थिस्सलोनिकियों 5:13)। शैतान के इस प्रलोभन में फँसने से बचने और इस आत्मिक लड़ाई को जीतने के लिए, हमें यीशु

मसीह के सुसमाचार में दृढ़ रहना चाहिए। हमें सत्य के उस वचन में अपने विश्वास को मज़बूती से स्थापित करना चाहिए कि मसीह हमारे पापों के लिए मरे और पवित्रशास्त्र के अनुसार दफनाए गए, और पवित्रशास्त्र के अनुसार ही तीसरे दिन फिर जी उठे (1 कुरिन्थियों 15:3-4)। ऐसा इसलिए है क्योंकि यह सुसमाचार परमेश्वर की वह सामर्थ्य है जो विश्वास करने वाले हर व्यक्ति के लिए उद्धार लाती है (रोमियों 1:16)। यीशु ने अपनी भविष्यवाणी के अनुसार मरकर और तीसरे दिन फिर जी उठकर उस भविष्यवाणी को पूरा किया। इसलिए, भले ही हमें भयानक कष्ट सहने पड़ें, हमें पुनरुत्थान के भरोसे और आशा को थामे रहना चाहिए, और शैतान के प्रलोभनों को ठुकराकर उन पर विजय प्राप्त करनी चाहिए। यह 1 कुरिन्थियों 15:42-44 से लिया गया है: "मरे हुआ का पुनरुत्थान भी ऐसा ही है। वह नाशवान दशा में बोया जाता है, और अविनाशी दशा में जी उठता है; वह अनादर की दशा में बोया जाता है, और महिमा की दशा में जी उठता है; वह निर्बलता की दशा में बोया जाता है, और सामर्थ्य की दशा में जी उठता है; वह शारीरिक देह के रूप में बोया जाता है, और आत्मिक देह के रूप में जी उठता है। यदि शारीरिक देह है, तो आत्मिक देह भी है।" जिस प्रकार यीशु एक महिमामयी देह के साथ जी उठे, उसी प्रकार हम भी एक महिमामयी देह के साथ जी उठेंगे। इस बात पर दृढ़ विश्वास करते हुए, हमें शैतान के प्रलोभनों के विरुद्ध लड़ना चाहिए और विजयी होना चाहिए। इसके अलावा, हमें यीशु मसीह के इस सुसमाचार का प्रचार करने का प्रयास करना चाहिए।

गेतसेमानी में प्रार्थना (1)

[लूका 22:39-46]

लूका 22:39-46 में गेतसेमानी के बगीचे में यीशु की प्रार्थना का विवरण मिलता है—यह एक ऐसी घटना है जिसका ज़िक्र चारों सुसमाचारों (मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना) में किया गया है। हमने पहले भी—तीन अलग-अलग मौकों पर—उस भविष्यवाणी पर मनन किया है जो यीशु मसीह ने मत्ती 16:21-23 में अपने शिष्यों से की थी: कि उन्हें "यरूशलेम जाना होगा और वहाँ प्राचीनों, महायाजकों और शास्त्रियों के हाथों बहुत दुख उठाना पड़ेगा, और वे मार डाले जाएँगे, और तीसरे दिन फिर जी उठेंगे" (पद 21)। आज हमारे सामने जो अंश है—लूका 22:39-46, जिसमें गेतसेमानी के बगीचे में यीशु की प्रार्थना का वर्णन है—वह उसी भविष्यवाणी की पूर्ति में एक निर्णायक मोड़ है; अपनी पीड़ा सहने के लिए यरूशलेम पहुँचने के बाद, यीशु ने अगले दिन क्रूस पर अपनी जान देने से पहले, इस बगीचे में यह प्रार्थना की।

लूका 22:39 कहता है: "यीशु बाहर निकले और अपनी आदत के अनुसार, जैतून के पहाड़ की ओर चले गए..." वहीं, मत्ती 26:36 में लिखा है: "तब यीशु उनके साथ गेतसेमानी नामक एक जगह पर आए..." यहाँ, संयोजक शब्द "तब" पिछले वृत्तांत के साथ एक जोड़ने वाली कड़ी का काम करता है—विशेष रूप से, यूहन्ना अध्याय 17 में पाई जाने वाली 'महायाजकीय प्रार्थना' के साथ, जिसमें यीशु एक महान महायाजक के रूप में परमेश्वर से मध्यस्थता करते हैं। दूसरे शब्दों में, महायाजक के रूप में परमेश्वर से अपनी प्रार्थना समाप्त करने के बाद (यूहन्ना 17), यीशु आगे बढ़े (लूका 22:39)। मत्ती 26:36 के अनुसार, यीशु "अपने शिष्यों के साथ" बाहर निकले और गेतसेमानी के बगीचे की ओर चल दिए; यहाँ, "शिष्यों" शब्द का तात्पर्य उन ग्यारह शिष्यों से है, जिसमें यहूदा इस्करियोती शामिल नहीं है, जो यीशु के साथ विश्वासघात करने के लिए पहले ही बाहर जा चुका था। लूका 22:39 कहता है कि यीशु जैतून के पहाड़ पर "अपनी आदत के

अनुसार" गए; इसका अर्थ यह है कि जब भी यीशु यरूशलेम आते थे, वे उस विशेष स्थान पर इतनी बार जाते थे कि यह उनकी आदत बन गई थी। इस प्रकार, भले ही रात थी, यीशु अपने शिष्यों के साथ गेथसेमनी के बगीचे तक अपना रास्ता खोजने में सफल रहे। यूहन्ना 18:2 में लिखा है, "अब यहूदा, जो उन्हें धोखा देने वाला था, वह भी उस जगह को जानता था, क्योंकि यीशु अक्सर वहाँ अपने शिष्यों के साथ मिलते थे।" परिणामस्वरूप, यहूदा इस्करियोती वहाँ गया—उसके साथ महायाजकों और फरीसियों द्वारा भेजे गए सैनिकों और अधिकारियों का एक दस्ता था—जो लालटेन, मशालें और हथियार लिए हुए थे (पद 3)। हमें भी यीशु की प्रार्थना करने की आदत का अनुकरण करना चाहिए, यह सुनिश्चित करते हुए कि प्रार्थना हमारे अपने जीवन में भी एक आदत बन जाए। जबकि लूका 22:39 और मरकुस 14:26 में कहा गया है कि यीशु "जैतून के पहाड़ पर गए," मत्ती 26:36 और मरकुस 14:32 विशेष रूप से उस स्थान की पहचान "गेथसेमनी" के रूप में करते हैं। ये विवरण इस तरह से दर्ज किए गए हैं क्योंकि गेथसेमनी का बगीचा जैतून के पहाड़ के भीतर स्थित है।

मत्ती 26:36–37 का पहला भाग निम्नलिखित है: "तब यीशु उनके साथ गेथसेमनी नामक एक स्थान पर आए, और शिष्यों से कहा, 'तुम यहाँ बैठो, जब तक मैं जाकर वहाँ प्रार्थना करूँ।' और वह अपने साथ पतरस और ज़ेबेदी के दो पुत्रों को ले गए..." अपनी आदत के अनुसार, यीशु "गेथसेमनी नामक एक स्थान" पर पहुँचे, जो जैतून के पहाड़ पर स्थित था (लूका 22:39)। प्रवेश द्वार पर, उन्होंने अपने आठ शिष्यों को निर्देश दिया, "तुम यहाँ बैठो, जब तक मैं जाकर वहाँ प्रार्थना करूँ।" फिर, अपने साथ पतरस और ज़ेबेदी के दो पुत्रों—याकूब और यूहन्ना (मत्ती 26:37; मरकुस 14:33)—को लेकर, वह गेथसेमनी के बगीचे में और भीतर चले गए (मत्ती 26:36–37) और ये शब्द कहे: "मेरा प्राण मृत्यु तक बहुत उदास है। तुम यहाँ ठहरो और मेरे साथ जागते रहो" (पद 38)। उन तीनों शिष्यों को पीछे छोड़कर, यीशु एक पत्थर फेंकने जितनी दूरी पर हट गए, घुटने टेके और प्रार्थना की (लूका 22:41)। इस दूरी को देखते हुए—जो "पत्थर फेंकने जितनी पास" थी—यह मानना तर्कसंगत लगता है कि पतरस, यूहन्ना और याकूब शायद यीशु की प्रार्थना सुन पाए होंगे। जहाँ लूका का सुसमाचार कहता है कि वह "घुटने टेककर प्रार्थना करने लगा" (पद 41), वहीं मत्ती 26:39 में उनका वर्णन इस प्रकार किया गया है कि वह "मुँह के बल ज़मीन पर गिरकर प्रार्थना करने लगे।" यीशु की प्रार्थना के विषय की जाँच करने पर, हम देखते हैं कि उन्होंने परमेश्वर पिता से अत्यंत

दीनतापूर्वक यह विनती की: "अब्बा, हे पिता... तेरे लिये सब कुछ सम्भव है। इस कटोरे को मुझसे हटा दे। फिर भी, मेरी नहीं, बल्कि तेरी ही इच्छा पूरी हो" (मरकुस 14:36)। हालाँकि आज का अंश, लूका 22:42, उन्हें केवल "हे पिता" कहते हुए दर्ज करता है, वहीं मरकुस 14:36 में अधिक आत्मीय संबोधन, "अब्बा, हे पिता" दर्ज है। इस प्रकार, जब यीशु गेथसेमनी के बाग़ में यह पहली प्रार्थना कर रहे थे, तो स्वर्ग से एक स्वर्गदूत उनके सामने प्रकट हुआ और उन्हें सामर्थ्य प्रदान की (लूका 22:43)। अतः यीशु, संघर्ष और पीड़ा सहते हुए, और भी अधिक दीनतापूर्वक प्रार्थना करने लगे, और उनका पसीना रक्त की बूँदों के समान ज़मीन पर टपकने लगा (पद 44)।

यह अंश लूका 22:45–46 से है: "जब वह प्रार्थना से उठे और अपने शिष्यों के पास लौटे, तो उन्होंने पाया कि वे सब सो रहे थे, और दुख के कारण थक गए थे। 'तुम क्यों सो रहे हो?' उन्होंने उनसे पूछा। 'उठो और प्रार्थना करो ताकि तुम परीक्षा में न पड़ो।'" जब यीशु ने अपनी पहली दिली प्रार्थना कर ली, तो वह अपने शिष्यों—पतरस, याकूब और यूहन्ना—के पास गए, लेकिन उन्होंने देखा कि वे तीनों शिष्य सो गए थे। यह देखकर यीशु ने उनसे कहा, "उठो और प्रार्थना करो ताकि तुम परीक्षा में न पड़ो" (पद 45–46)। (लूका का सुसमाचार केवल यहीं तक का वर्णन करता है; यानी, लूका केवल गेथसेमनी के बाग़ में यीशु की तीन प्रार्थनाओं में से पहली का ही वर्णन करता है।) यीशु ने पहले ही ग्यारह शिष्यों से कह दिया था: "तुम सब मुझे छोड़कर भाग जाओगे, क्योंकि यह लिखा है: 'मैं चरवाहे को मारूंगा, और भेड़ें तितर-बितर हो जाएंगी।' लेकिन मेरे जी उठने के बाद, मैं तुमसे पहले गलील जाऊंगा।" उस समय, पतरस ने कहा, "भले ही सब तुझे छोड़कर भाग जाएं, पर मैं नहीं भागूंगा" (मरकुस 14:27–29)। तब यीशु ने उत्तर दिया, "मैं तुमसे सच कहता हूँ, आज—इसी रात—मुझे के दो बार बांग देने से पहले, तुम तीन बार मुझे नकार दोगे।" पतरस ने ज़ोर देकर कहा, "भले ही मुझे तेरे साथ मरना पड़े, मैं तुझे कभी नहीं नकारूंगा," और बाकी सभी शिष्यों ने भी यही कहा (पद 30–31)। फिर भी, पतरस, यूहन्ना और याकूब यीशु के साथ एक घंटा भी जागते रहने में असमर्थ रहे (मत्ती 26:40)। इसलिए, यीशु ने उनसे कहा, "जागते रहो और प्रार्थना करो ताकि तुम परीक्षा में न पड़ो। आत्मा तो तैयार है, पर शरीर कमज़ोर है" (पद 41)। (मत्ती ने गेथसेमानी बाग़ में यीशु की प्रार्थना को बहुत विस्तार से लिखा है; यहाँ पद 41 तक का अंश यीशु की पहली प्रार्थना का विवरण है।) यीशु ने परमेश्वर पिता से प्रार्थना करते हुए कहा, "दूसरी बार जाकर, उन्होंने प्रार्थना की, 'हे मेरे पिता, यदि यह प्याला मेरे लिए बिना मुझसे न टल सके, तो तेरी ही इच्छा पूरी हो'" (मत्ती 26:42)। (मरकुस 14:39 में इसे इस तरह बताया गया है: "फिर जाकर, उन्होंने उन्हीं शब्दों में प्रार्थना की।") ये शब्द गेथसेमानी बाग़ में

यीशु की दूसरी प्रार्थना का सार बताते हैं, जैसा कि मत्ती ने लिखा है। यीशु द्वारा यह दूसरी प्रार्थना करने के बाद, वे पतरस, याकूब और यूहन्ना के पास लौटे; जब उन्होंने उनकी ओर देखा, तो पाया कि वे सो रहे थे, क्योंकि उनकी आँखें नींद से भारी थीं (पद 43)। उस समय, पतरस, याकूब और यूहन्ना को समझ नहीं आ रहा था कि यीशु को क्या उत्तर दें (मरकुस 26:40)। मत्ती 26:44-46 में इस प्रकार लिखा है: "इसलिए वे उन्हें छोड़कर फिर चले गए और तीसरी बार प्रार्थना की, और वही बातें कहीं। फिर वे चेलों के पास लौटे और उनसे कहा, 'क्या तुम अब भी सो रहे हो और आराम कर रहे हो? देखो, वह घड़ी निकट आ गई है, और मनुष्य का पुत्र पापियों के हाथों में सौंपा जाने वाला है। उठो! आओ, हम चलें! देखो, मेरा पकड़वाने वाला निकट आ गया है!'" [(मरकुस 14:41-42) "तीसरी बार लौटकर, उन्होंने उनसे कहा, 'क्या तुम अब भी सो रहे हो और आराम कर रहे हो? बस बहुत हो गया! वह घड़ी आ गई है। देखो, मनुष्य का पुत्र पापियों के हाथों में सौंपा जाने वाला है। उठो! आओ, हम चलें! देखो, मेरा पकड़वाने वाला निकट आ गया है!'"] ये शब्द यीशु ने अपने चेलों से तब कहे, जब उन्होंने गेथसेमानी बाग में अपनी तीसरी प्रार्थना पूरी कर ली थी और उनके पास लौट आए थे। जब वे ये बातें कह ही रहे थे, तभी यहूदा इस्करियोती—जो बारह चेलों में से एक था—वहाँ आ पहुँचा; उसके साथ प्रधान याजकों और लोगों के प्राचीनों द्वारा भेजी गई एक बड़ी भीड़ थी, जिनके हाथों में तलवारें और लाठियाँ थीं (मत्ती 26:47; तुलना करें मरकुस 14:43)। यूहन्ना अध्याय 17 में दर्ज "महायाजकीय प्रार्थना" करने के बाद, यीशु अपने ग्यारह शिष्यों के साथ गेथसेमनी के बगीचे में गए। चूँकि यह वह जगह थी जहाँ यीशु और उनके शिष्य अक्सर इकट्ठा होते थे, इसलिए यहूदा—जो उन्हें धोखा देने वाला था—भी इस जगह के बारे में अच्छी तरह जानता था (यूहन्ना 18:1-2)। हालाँकि यीशु जानते थे कि यहूदा इस्करियोती, महायाजकों और प्राचीनों द्वारा भेजी गई एक बड़ी भीड़ के साथ उन्हें धोखा देने के लिए आ रहा है, फिर भी वे अपनी पुरानी आदत के अनुसार प्रार्थना करने के लिए गेथसेमनी के बगीचे में गए। यह दानिय्येल 6:10 में पाए जाने वाले शब्दों की याद दिलाता है: "जब दानिय्येल को पता चला कि वह आज्ञा जारी हो गई है, तो वह अपने घर गया, ऊपर अपने कमरे में, जहाँ खिड़कियाँ यरूशलेम की ओर खुलती थीं। दिन में तीन बार वह घुटनों के बल बैठकर प्रार्थना करता था और अपने परमेश्वर का धन्यवाद करता था, ठीक वैसे ही जैसे वह पहले करता था।" यह जानते हुए कि उनके साथ क्या होने वाला है, यीशु आगे बढ़े और उस बड़ी भीड़ से पूछा, "तुम किसे ढूँढ़ रहे हो?" उन्होंने उत्तर दिया, "नासरत के यीशु को," और यीशु ने कहा, "मैं ही वह हूँ।" उसी क्षण, यहूदा—वह व्यक्ति जो यीशु को धोखा देने वाला था—भी उनके साथ वहीं खड़ा था (यूहन्ना 18:4-5)। जब यीशु ने उनसे कहा, "मैं ही वह हूँ," तो वे पीछे हट गए और ज़मीन पर गिर पड़े (पद 6)। यीशु को अपनी प्रार्थना का उत्तर मिल गया था, और उनका अधिकार प्रकट हो गया

था। इस उथल-पुथल के बीच भी, यीशु ने उस बड़ी भीड़ से कहा, "यदि तुम मुझे ढूँढ़ रहे हो, तो इन लोगों को जाने दो" (पद 8)। यहाँ तक कि जब उन्हें हिरासत में लिया जा रहा था, तब भी यीशु ने यह सुनिश्चित किया कि उनके शिष्य बच निकलें। इसका कारण उन शब्दों को पूरा करना था जो उन्होंने कहे थे: "पिता ने मुझे जितने लोग दिए हैं, उनमें से मैंने एक भी नहीं खोया है" (पद 9)। उसी क्षण, प्रेरित पतरस ने अपनी तलवार निकाली, मालखुस—महायाजक के सेवक—पर वार किया और उसका दाहिना कान काट डाला (पद 10)। तब यीशु ने पतरस से कहा, "अपनी तलवार म्यान में रख ले। क्या मैं वह प्याला न पीऊँ जो पिता ने मुझे दिया है?" (पद 11)। उस प्याले को पीने के लिए यीशु को हिरासत में लिया जाना ज़रूरी था। गेथसेमाने के बाग़ में यीशु द्वारा की गई प्रार्थना के संबंध में, हमें अपने विश्वास पर अडिग रहना चाहिए।

गेथसेमनी में प्रार्थना (2)

[लूका 22:39-46]

यह अंश मत्ती 26:36-38 से लिया गया है: "तब यीशु अपने चेलों के साथ गेथसेमनी नामक एक जगह पर गए, और उन्होंने उनसे कहा, 'तुम यहाँ बैठो, जब तक मैं वहाँ जाकर प्रार्थना करूँ।' वह पतरस और ज़ेबेदी के दोनों बेटों को अपने साथ ले गए, और उन्हें दुख और संकट महसूस होने लगा। तब उन्होंने उनसे कहा, 'मेरा मन इतना दुखी है कि मानो मेरे प्राण निकलने वाले हैं। तुम यहीं ठहरो और मेरे साथ जागते रहो।'"

यहाँ, संयोजक शब्द "तब" (पद 36) एक कड़ी का काम करता है जो इस अंश को इसके पहले वाले अंश से जोड़ता है; यह दर्शाता है कि यीशु *तब* बाहर गए (लूका 22:39) जब उन्होंने महायाजक के रूप में परमेश्वर से अपनी प्रार्थना कर ली थी (यूहन्ना 17)। यह संयोजक शब्द "तब" (मत्ती 26:36) एक पुल का काम करता है जो पिछले पदों—मत्ती 26:31-35—को इसके बाद आने वाले पदों से जोड़ता है। पिछले अंश को देखने पर, हम पाते हैं कि यीशु ने कहा था: "उस समय यीशु ने अपने चेलों से कहा, 'आज ही रात तुम सब मेरे कारण ठोकर खाओगे, क्योंकि यह लिखा है: 'मैं चरवाहे को मारूँगा, और झुंड की भेड़ें तितर-बितर हो जाएँगी'"" (पद 31)। यहाँ, यह कथन कि "ऐसा लिखा है: 'मैं चरवाहे को मारूँगा, और झुंड की भेड़ें तितर-बितर हो जाएँगी'" दरअसल ज़क़र्याह 13:7 में पाई जाने वाली भविष्यवाणी का यीशु द्वारा किया गया उल्लेख है: "'हे तलवार, मेरे चरवाहे के विरुद्ध, उस मनुष्य के विरुद्ध जाग उठ, जो मेरा साथी है,' सर्वशक्तिमान प्रभु की यह वाणी है। 'चरवाहे को मार, और भेड़ें तितर-बितर हो जाएँगी, और मैं अपना हाथ छोटों के विरुद्ध उठाऊँगा।'" यहाँ, यीशु के इस कथन—"ऐसा लिखा है: 'मैं चरवाहे को मारूँगा, और झुंड की भेड़ें तितर-बितर हो जाएँगी'"—के पीछे का अर्थ यह है कि वह यह भविष्यवाणी कर रहे थे कि परमेश्वर

पिता ("मैं") अपने पुत्र, यीशु—जो कि अच्छा "चरवाहा" है (यूहन्ना 10:11, 14)—को मारेंगे, और इसके परिणामस्वरूप, "झुंड की भेड़ें"—यानी यीशु के शिष्य (ग्यारह शिष्य, जिसमें यहूदा इस्करियोती शामिल नहीं था)—तितर-बितर हो जाएंगे। यीशु के मुख से ये भविष्यसूचक शब्द सुनकर, पतरस ने घोषणा की, "भले ही बाकी सब लोग आपको छोड़ दें, मैं आपको कभी नहीं छोड़ूंगा" (मत्ती 26:33)। तब यीशु ने पतरस से कहा, "मैं तुमसे सच कहता हूँ: आज ही रात, मुर्गे के बांग देने से पहले, तुम तीन बार मुझे नकारोगे" (पद 34)। इस पर, पतरस ने बड़े साहस के साथ कहा, "भले ही मुझे आपके साथ मरना पड़े, मैं आपको कभी नहीं नकारूंगा" (पद 35)। और बाकी सभी शिष्यों ने भी यही बात कही (पद 35)।

इसके बाद, यीशु—अपने ग्यारह शिष्यों के साथ (यहूदा इस्करियोती को छोड़कर, जो उन्हें पकड़वाने के लिए बाहर चला गया था)—अपनी आदत के अनुसार, जैतून पर्वत पर स्थित गेतसेमनी नामक बगीचे में गए (लूका 22:39) [तुलना करें मत्ती 26:36: "तब यीशु अपने शिष्यों के साथ गेतसेमनी नामक एक स्थान पर गए"]। फिर यीशु ने अपने आठ शिष्यों को गेतसेमनी बगीचे के प्रवेश द्वार पर छोड़ दिया, और उनसे कहा, "तुम लोग यहीं बैठो, जबकि मैं वहाँ जाकर प्रार्थना करूँगा" (मत्ती 26:36)। अपने साथ पतरस और ज़ेबेदी के दो बेटों—याकूब और यूहन्ना (पद 37)—को लेकर, वह बगीचे में और अंदर चले गए (मरकुस 14:33; मत्ती 26:36–37)। जैसे-जैसे वह आगे बढ़े, यीशु व्याकुल और बहुत ज़्यादा परेशान हो गए (पद 37), और उन्होंने पतरस, याकूब और यूहन्ना से कहा, "मेरी आत्मा इतनी ज़्यादा उदास है कि मानो मेरी जान ही निकल जाएगी। तुम यहीं रुको और मेरे साथ जागते रहो" (पद 38)। फिर, उन तीनों चेलों को पीछे छोड़कर, यीशु थोड़ी और दूर आगे गए—लगभग एक पत्थर फेंकने जितनी दूरी (करीब 10 मीटर)—घुटने टेके, और प्रार्थना की (लूका 22:41)। यहाँ, जब यीशु ने पतरस, याकूब और यूहन्ना से कहा कि "मेरे साथ जागते रहो" (पद 38), तो उनका इरादा यह था कि ये तीनों चले उनके साथ मिलकर "जागते रहें और प्रार्थना करें ताकि वे किसी परीक्षा में न पड़ें" (पद 41)। यहाँ, यीशु ने उन तीनों चेलों से यह नहीं कहा कि वे जागते रहें और *उनके* (यीशु के) लिए प्रार्थना करें—भले ही वह व्याकुल और दुखी थे (पद 37), और उनकी आत्मा इतनी ज़्यादा उदास थी कि मानो उनकी जान ही निकल जाएगी (पद 38)—क्योंकि यीशु इस दुनिया में अपनी सेवा करवाने या मदद लेने नहीं आए थे, बल्कि दूसरों की सेवा करने और मदद करने

आए थे (20:28)। इसके बजाय, यीशु ने चेलों को निर्देश दिया कि वे जागते रहें और *अपने भले के लिए* प्रार्थना करें—खास तौर पर इसलिए, ताकि वे किसी परीक्षा में न पड़ें (पद 41)। उन्होंने ऐसा इसलिए किया, क्योंकि जिस तरह उन्होंने भविष्यवक्ता ज़क़र्याह का वचन दोहराया था—यह कहते हुए, “ऐसा लिखा है: ‘मैं चरवाहे को मारूंगा, और झुंड की भेड़ें तितर-बितर हो जाएंगी’” (पद 31)—वह जानते थे कि जब परमेश्वर पिता उन्हें, यानी चरवाहे को मारेंगे, तो उनके सभी चले उन्हें छोड़कर तितर-बितर हो जाएंगे (पद 31); इसके अलावा, वह यह भी जानते थे कि पतरस के मामले में, वह चेला उन्हें नकार देगा, ठीक वैसे ही जैसा यीशु ने पहले ही बता दिया था: “आज रात, मुर्गे के बांग देने से पहले, तुम तीन बार मुझे पहचानने से इनकार कर दोगे” (पद 34)। हालाँकि, चेलों की आत्मा तो तैयार थी, लेकिन उनका शरीर कमज़ोर था (पद 41); परिणामस्वरूप, वे यीशु के साथ जागकर प्रार्थना नहीं कर पाए, और इसके बजाय अपने दुख के कारण सो गए (लूका 22:45; मरकुस 14:40)।

यीशु ने अपनी गेथसेमनी प्रार्थना में विजय प्राप्त की; अगले ही दिन क्रूस पर अपनी मृत्यु का सामना करते हुए, उन्होंने इतने तीव्र संघर्ष और लगन से प्रार्थना की (लूका 22:44) कि उन्होंने हमारे खातिर, परमेश्वर पिता की इच्छा के अनुसार, “दुख का प्याला” (पद 42, *द कंटेम्पररी बाइबल*) पूरी तरह से पी लिया [न्यू हिमनल 154, “लॉर्ड ऑफ़ लाइफ़, द क्राउन,” पद 4]। इसके विपरीत, यीशु के शिष्य—उनका यह आदेश सुनने के बावजूद कि, “यहाँ ठहरो और मेरे साथ जागते रहो” (मत्ती 26:38)—यानी, उनके साथ “जागते रहने और प्रार्थना करने” के लिए ताकि वे परीक्षा में न पड़ें (पद 41)—ऐसा करने में असमर्थ रहे। हालाँकि उनकी आत्माएँ तो तैयार थीं, पर उनका शरीर कमज़ोर था (पद 41); परिणामस्वरूप, वे यीशु के साथ जागते रहने और प्रार्थना करने में असफल रहे, और इसके बजाय सो गए (लूका 22:45; मरकुस 14:40), और अंततः परीक्षा के आगे घुटने टेककर पाप कर बैठे। हम भी यीशु के शिष्यों से अलग नहीं हैं। हम भी परमेश्वर के विरुद्ध पाप करते हैं क्योंकि हम परीक्षा में पड़ने से बचने के लिए यीशु के साथ जागते रहने और प्रार्थना करने में असफल रहते हैं। जहाँ हमारी आत्माएँ यीशु के साथ जागते रहने और प्रार्थना करने—और इस प्रकार पाप से बचने—की इच्छा रखती हैं, वहीं हमारा शरीर कमज़ोर है; इसलिए, हम उनके साथ जागते रहने और प्रार्थना करने में असफल रहते हैं, और ऐसा करते हुए, हम परमेश्वर के विरुद्ध ऐसे पाप कर बैठते हैं जिन्हें करने का हमारा कोई इरादा नहीं था। तो फिर, हमें क्या करना चाहिए?

सबसे पहले, हमें रोमियों 8:26-27 और 34 में पाए जाने वाले वचनों को विश्वास के साथ दृढ़ता से थामे रहना चाहिए: "पवित्र आत्मा भी हमारी कमज़ोरी में हमारी सहायता करता है। जब हम नहीं जानते कि प्रार्थना कैसे करें, तो आत्मा हमारे लिए ऐसी कराहों के साथ मध्यस्थता करता है जिन्हें शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता। और परमेश्वर, जो हमारे हृदयों को जाँचता है, आत्मा के मन को जानता है, क्योंकि आत्मा परमेश्वर की इच्छा के अनुसार परमेश्वर के लोगों के लिए मध्यस्थता करता है। ... मसीह यीशु, जो मरकर फिर जीवित हो उठे, परमेश्वर के दाहिने हाथ विराजमान हैं और सदैव हमारे लिए मध्यस्थता कर रहे हैं" (*द कंटेम्प्टरी बाइबल*)। दूसरे, पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन का पालन करते हुए—जो "हमारी कमज़ोरी" में हमारी मदद करता है (रोम 8:26) और हमें "मज़बूत" करता है (लूका 22:43) ताकि हम प्रलोभन में न पड़ें (मत्ती 26:41)—हमें परमेश्वर के पुत्र, यीशु के साथ "मिलकर" (मत्ती 26:38; रोम 8:34) "जागते रहना और प्रार्थना करना" चाहिए (मत्ती 26:41)।

तीसरे, हमें लगातार "परमेश्वर के बीज" (1 यूहन्ना 3:9) को सुनना चाहिए जो हमारे भीतर बसता है—यानी, परमेश्वर का "सुसमाचार" (1 पतरस 1:23-25), जो "अविनाशी बीज" और "परमेश्वर का जीवित और स्थिर वचन" है—और हमें यीशु मसीह में विश्वास के द्वारा विजयी होना चाहिए; क्योंकि यीशु मसीह का सुसमाचार परमेश्वर की वह शक्ति है जो उन सभी को उद्धार दिलाती है जो विश्वास करते हैं (रोम 1:16)।

विश्वास के द्वारा, हमें प्रभु को छोड़ने के प्रलोभन पर, प्रभु का इनकार करने के प्रलोभन पर, और प्रभु से मुँह मोड़ने के प्रलोभन पर विजय प्राप्त करनी चाहिए। भले ही हम ऐसी परिस्थितियों में हों जिनमें क्लेश, संकट, सताव, अकाल, नग्नता, खतरा, या तलवार (मृत्यु) शामिल हों, इन सभी बातों में हम उसके द्वारा जिसने हमसे प्रेम किया, विजेताओं से भी बढ़कर होंगे (रोम 8:35, 37)। आइए हम सब, गेथसेमानी बाग़ में यीशु की प्रार्थना का अनुकरण करते हुए, प्रलोभन पर विजय प्राप्त करें।

गेथसेमेन में प्रार्थना (3)

[लूका 22:39-46]

जब हम गेथसेमेन में यीशु की प्रार्थना से पहले और बाद में हुई घटनाओं पर विचार करते हैं, तो मैं प्रार्थना करता हूँ कि आपको यह पक्का विश्वास और भरोसा मिले कि यीशु ने अपने लोगों से अंत तक प्रेम किया। यह अंश यूहन्ना 13:1 से लिया गया है: “यह फसह के पर्व से ठीक पहले का समय था। यीशु जानते थे कि अब उनका इस संसार को छोड़कर पिता के पास जाने का समय आ गया है। उन्होंने अपने लोगों से, जो इस संसार में थे, प्रेम किया और अंत तक उनसे प्रेम करते रहे।” यह पद दर्शाता है कि यीशु, यह जानते हुए कि अब उनका स्वर्ग से—जहाँ से वे आए थे—प्रस्थान करके वापस स्वर्ग लौटने का समय आ गया है, अपने लोगों से, जो इस संसार में थे, प्रेम करते रहे; और उन्होंने अंत तक उनसे प्रेम किया।

गेथसेमेन में यीशु की प्रार्थना से पहले हुई घटनाएँ (विशेष रूप से, 'अंतिम भोज' के दौरान हुई घटनाएँ, जो फसह से ठीक पहले हुई थीं) इस प्रकार हैं:

(1) यीशु ने शिष्यों के पैर धोए।

यूहन्ना 13:8 कहता है: “पतरस ने कहा, ‘आप कभी भी मेरे पैर नहीं धोएँगे।’ यीशु ने उत्तर दिया, ‘यदि मैं तुम्हें न धोऊँ, तो तुम्हारा मेरे साथ कोई भाग नहीं है।’” यीशु ने शिष्यों के पैर धोए—जो उनके शरीर का सबसे गंदा हिस्सा था—ठीक इसलिए ताकि वे उनके साथ एक संबंध स्थापित और बनाए रख सकें (“यदि मैं तुम्हें न धोऊँ, तो तुम्हारा मेरे साथ कोई भाग नहीं है”)। चूँकि पवित्र यीशु शिष्यों के साथ तब तक कोई संबंध

स्थापित नहीं कर सकते थे जब तक कोई अशुद्धि शेष रहती (क्योंकि ऐसी अशुद्धि पहले से स्थापित बंधन को भी तोड़ सकती थी), इसलिए उन्होंने उनके पैर धोए। सबसे बड़ी अशुद्धि पाप है; और क्योंकि यीशु ही एकमात्र ऐसे हैं जो उस पाप को पूरी तरह से शुद्ध करने में सक्षम हैं, इसलिए उन्होंने शिष्यों के गंदे पैर धोकर उनके प्रति अपने प्रेम को प्रदर्शित किया।

(2) यीशु ने 'प्रभु भोज' (Lord's Supper) के संस्कार की स्थापना की और उसकी अध्यक्षता की। लूका 22:19-20 में लिखा है: "और उसने रोटी ली, धन्यवाद दिया और उसे तोड़ा, और उन्हें देते हुए कहा, 'यह मेरा शरीर है जो तुम्हारे लिए दिया गया है; मेरी याद में ऐसा ही करना।' इसी तरह, भोजन के बाद उसने प्याला लिया, और कहा, 'यह प्याला मेरे लहू में नया वाचा है, जो तुम्हारे लिए बहाया गया है।'" यहाँ, "रोटी" यीशु के शरीर का प्रतीक है, और "प्याला" यीशु के लहू का प्रतीक है। यीशु के इस "लहू" के बारे में, मत्ती 26:28 में कहा गया है: "यह मेरे वाचा का लहू है, जो बहुतों के पापों की क्षमा के लिए बहाया गया है।" यीशु ने अपने शिष्यों से अंत तक प्रेम किया—यहाँ तक कि अपना शरीर और लहू भी दे दिया; यानी, अपना पूरा जीवन ही दे दिया।

(3) यीशु ने कई तरह की शिक्षाएँ दीं।

(a) उसने एक-दूसरे से प्रेम करने की शिक्षा दी। यूहन्ना 13:34 में लिखा है: "मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूँ: एक-दूसरे से प्रेम करो। जैसा मैंने तुमसे प्रेम किया है, वैसा ही तुम भी एक-दूसरे से प्रेम करो।"

(b) उसने सिखाया कि पिता तक पहुँचने का एकमात्र मार्ग स्वयं यीशु ही है। यूहन्ना 14:6 में लिखा है: "यीशु ने उत्तर दिया, 'मार्ग, सत्य और जीवन मैं ही हूँ। मेरे बिना कोई भी पिता के पास नहीं पहुँच सकता।'"

(c) उसने दाखलता के दृष्टान्त के माध्यम से शिक्षा दी। यूहन्ना 15:1 और 5 में लिखा है: "सच्ची दाखलता मैं हूँ, और मेरा पिता माली है... दाखलता मैं हूँ; तुम डालियाँ हो। यदि तुम मुझमें बने रहोगे और मैं तुममें, तो तुम बहुत फल लाओगे; मुझसे अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते।"

(d) उसने पवित्र आत्मा की उपस्थिति और उसकी सेवकाई के बारे में शिक्षा दी। यूहन्ना 16:7-8, 13-14 के शब्द इस प्रकार हैं: "फिर भी, मैं तुमसे सच कहता हूँ: यह तुम्हारे ही फ़ायदे के लिए है कि मैं चला जाऊँ, क्योंकि अगर मैं नहीं जाऊँगा, तो सहायक तुम्हारे पास नहीं आएगा। लेकिन अगर मैं चला गया, तो मैं उसे तुम्हारे पास भेजूँगा। और जब वह आएगा, तो वह दुनिया को पाप, नेकी और न्याय के बारे में समझाएगा... हालाँकि, जब सच्चाई की आत्मा आएगी, तो वह तुम्हें पूरी सच्चाई की राह दिखाएगी। क्योंकि वह अपनी मर्जी से कुछ नहीं बोलेगा, बल्कि जो कुछ वह सुनेगा, वही बोलेगा, और वह तुम्हें आने वाली बातें बताएगा। वह मेरी महिमा करेगा, क्योंकि वह मेरी बातें लेकर तुम्हें बताएगा।"

(e) यीशु ने अपने लोगों के लिए मध्यस्थता की। यीशु ने अलग-अलग लोगों के लिए मध्यस्थता की। लूका 22:31-32 के शब्द इस प्रकार हैं: "शमौन, शमौन, देखो, शैतान ने तुम्हें माँग लिया है, ताकि वह तुम्हें गेहूँ की तरह फटक सके, लेकिन मैंने तुम्हारे लिए प्रार्थना की है कि तुम्हारा विश्वास कमज़ोर न पड़े। और जब तुम फिर से मेरी ओर मुड़ोगे, तो अपने भाइयों को मज़बूत करना।" यीशु ने शमौन पतरस के लिए प्रार्थना की, और यह माँगा कि उसका विश्वास कमज़ोर न पड़े। यीशु ने सभी चुने हुए लोगों के लिए मध्यस्थता की। अपनी प्रार्थना की शुरुआत "अपनी आँखें स्वर्ग की ओर उठाकर और यह कहकर करने के बाद, 'हे पिता, वह समय आ गया है; अपने बेटे की महिमा कर, ताकि बेटा तेरी महिमा कर सके'" (यूहन्ना 17:1), यीशु ने अपनी प्रार्थना का समापन यह कहकर किया, "मैंने उन्हें तेरा नाम बताया है, और मैं इसे बताता रहूँगा, ताकि जिस प्यार से तूने मुझसे प्यार किया है, वह उनमें हो, और मैं उनमें रहूँ" (पद 26)।

यह एक ऐसी घटना है जो तब घटी जब यीशु प्रार्थना करने के लिए गेथसेमानी बाग़ की ओर जा रहे थे (इस घटना का ज़िक्र मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना के सुसमाचारों में मिलता है)। इस घटना में यीशु अपने शिष्यों को—यहूदा इस्करियोती को छोड़कर—संबोधित करते हुए कहते हैं, "तुम सब मुझे छोड़ दोगे।" ऐसा करते हुए, उन्होंने भविष्यवक्ता ज़क़र्याह (जो यीशु के आने से लगभग 500 साल पहले जीवित थे) के भविष्यसूचक शब्दों को उद्धृत किया, विशेष रूप से ज़क़र्याह 13:7 को: "मैं चरवाहे को मारूँगा, और भेड़ें तितर-बितर हो जाएंगी।" संक्षेप में, यीशु की यह भविष्यवाणी यह बताती है कि यदि परमेश्वर पिता—जिन्हें यहाँ "मैं" कहा गया है—"अपने ही पुत्र," यीशु मसीह (जो ज़क़र्याह 13:7 में उल्लिखित "चरवाहा" हैं) को

नहीं छोड़ते, बल्कि हम सबके भले के लिए उन्हें क्रूस पर चढ़ा देते हैं (रोमियों 8:32), तो शिष्य—जो "भेड़ें" (ज़कर्याह 13:7) हैं—सब तितर-बितर हो जाएंगे। यह बात कहने के बाद, यीशु ने अपने शिष्यों से आगे कहा कि क्रूस पर अपनी मृत्यु के तीन दिन बाद, वह फिर से जीवित हो उठेंगे और "तुमसे पहले गलील जाएंगे" (मरकुस 14:28)। उस समय, पतरस ने कहा, "भले ही बाकी सब तुम्हें छोड़ दें, मैं तुम्हें कभी नहीं छोड़ूंगा" (पद 29)। तब यीशु ने उसे उत्तर दिया, "मैं तुमसे सच कहता हूँ, आज ही रात—मुर्गे के दो बार बांग देने से पहले—तुम तीन बार मुझे नकार दोगे" (पद 30)। यह सुनकर, पतरस ने ज़ोर देकर कहा, "भले ही मुझे तुम्हारे साथ मरना पड़े, मैं तुम्हें कभी नहीं नकारूंगा," और बाकी सभी शिष्यों ने भी उसकी बात का समर्थन किया (पद 31)। जबकि धर्मग्रंथों में यह भविष्यवाणी की गई थी कि यदि परमेश्वर पिता यीशु—चरवाहे—को मारेंगे, तो भेड़ें निश्चित रूप से तितर-बितर हो जाएंगी, फिर भी यीशु के शिष्यों ने अपने आत्मविश्वास में यह दावा किया कि वे प्रभु को कभी नहीं नकारेंगे (या छोड़ेंगे), भले ही इसके लिए उन्हें उनके साथ मरना पड़े। गेथसेमानी बाग में प्रार्थना करने के बाद जब यीशु को गिरफ्तार किया गया, तब ठीक यही घटना घटी। यह अंश यूहन्ना 18:8–9 में मिलता है: "यीशु ने उत्तर दिया, 'मैंने तुमसे कहा कि मैं ही वह हूँ। यदि तुम मुझे ढूँढ़ रहे हो, तो इन लोगों को जाने दो।' ऐसा इसलिए हुआ ताकि उसके कहे हुए वचन पूरे हों: 'जिन्हें तूने मुझे दिया, उनमें से मैंने एक भी नहीं खोया।'" यहाँ तक कि जब उसे गिरफ्तार करके ले जाया जा रहा था, तब भी यीशु—इस बात पर दृढ़ था कि परमेश्वर पिता ने जिन लोगों को उसके भरोसे सौंपा था, उनमें से एक भी न खो जाए—उसने अपने पकड़ने वालों से कहा, "इन लोगों को जाने दो।" ऐसा करके, यीशु ने यह सुनिश्चित किया कि उसके सभी चेले बच निकलें। भागने के बाद, पतरस अंततः लौट आया और कुछ दूरी से यीशु का पीछा किया, जब उसे महायाजक कैफा के घर ले जाया जा रहा था (लूका 22:54; यूहन्ना 18:13)। बाद में, जब महायाजक कैफा के सामने यीशु से पूछताछ की जा रही थी, तब पतरस—कैफा के घर के आँगन में खड़ा होकर (यूहन्ना 18:15)—तीन बार यीशु का इनकार किया। ठीक उसी समय जब पतरस तीसरी बार यीशु का इनकार कर रहा था, एक मुर्गे ने तुरंत बांग दी (लूका 22:55–60)। उस क्षण, पूछताछ के दौरान भी, यीशु मुड़ा और सीधे पतरस की ओर देखा; प्रभु के वचन

याद करके—कि “आज मुर्गे के बांग देने से पहले, तुम तीन बार मेरा इनकार करोगे”—पतरस बाहर गया और पश्चाताप में फूट-फूटकर रोया (पद 61–62)।

यह तब हुआ जब यीशु गोलगोथा के रास्ते पर अपना क्रूस उठाए जा रहा था। कृपया लूका 23:27–28 देखें: “लोगों की एक बड़ी भीड़ उसके पीछे-पीछे चली, जिसमें ऐसी स्त्रियाँ भी थीं जो उसके लिए शोक मना रही थीं और विलाप कर रही थीं। यीशु उनकी ओर मुड़ा और कहा, ‘हे यरूशलेम की पुत्रियों, मेरे लिए मत रोओ; अपने लिए और अपने बच्चों के लिए रोओ।’” यीशु ने रोती हुई स्त्रियों की उस बड़ी भीड़ से कहा, “मेरे लिए मत रोओ; अपने लिए और अपने बच्चों के लिए रोओ।” इसका कारण यह था कि क्लेश का समय अभी आना बाकी था।

यह तब हुआ जब यीशु को क्रूस पर चढ़ाया जा रहा था। लूका 23:34 कहता है: “यीशु ने कहा, ‘हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये नहीं जानते कि ये क्या कर रहे हैं।’ ...” क्रूस से, यीशु ने प्रार्थना की, “हे पिता, इन्हें क्षमा कर।” लूका 23:42–43 में लिखा है: “तब उसने कहा, ‘हे यीशु, जब तू अपने राज्य में आए, तो मुझे याद करना।’” यीशु ने उसे उत्तर दिया, ‘मैं तुझसे सच कहता हूँ, आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा।’” जब उनके साथ क्रूस पर चढ़ाए गए दो अपराधियों में से एक ने पूछा, “हे यीशु, जब तू अपने राज्य में आए, तो मुझे याद करना,” तो यीशु ने उत्तर दिया, “मैं तुझसे सच कहता हूँ, आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा।” इस प्रकार, यीशु ने अपने लोगों से प्रेम किया—उनसे अंत तक प्रेम किया, यहाँ तक कि क्रूस पर कष्ट सहते हुए भी।

हमारे प्रभु हमसे अंत तक प्रेम करते हैं। हमारे प्रभु हमसे अनंत काल तक प्रेम करते हैं। आइए, हम सब अपने प्रभु के प्रेम के इस भरोसे को मज़बूती से थामे रहें—एक ऐसा प्रेम जो हमें अंत तक और अनंत काल तक अपनी गोद में समेटे रहता है।

गेथसेमनी में प्रार्थना (4)

[लूका 22:39-46]

जब यीशु गेथसेमनी के बगीचे में थे, तो उन्होंने कहाँ प्रार्थना की? (प्रार्थना का स्थान) यीशु ने अपने आठ शिष्यों को गेथसेमनी के बगीचे के प्रवेश द्वार पर छोड़ दिया, और उनसे कहा, "तुम यहाँ बैठो, जब तक मैं वहाँ जाकर प्रार्थना करूँ" (मत्ती 26:36)। फिर उन्होंने पतरस और ज़ेबेदी के दो बेटों—याकूब और यूहन्ना (पद 37)—को अपने साथ लिया (मरकुस 14:33), बगीचे में और अंदर गए (मत्ती 26:36-37), उनसे पत्थर फेंकने जितनी दूरी पर हट गए (लूका 22:41), और अपनी प्रार्थना की। जब यीशु व्याकुल और शोकित हो गए—वास्तव में, इतने गहरे रूप से व्याकुल कि उन्हें लगा कि वे "मृत्यु तक शोकित" हैं (मत्ती 26:37-38)—तो क्या उनके लिए यह बेहतर नहीं होता कि वे कम से कम उन तीन शिष्यों—पतरस, याकूब और यूहन्ना—के साथ मिलकर प्रार्थना करते? सभोपदेशक 4:12 के शब्दों पर विचार करें: "यद्यपि कोई एक व्यक्ति हार सकता है, पर दो मिलकर अपना बचाव कर सकते हैं। तीन लतों वाली डोरी जल्दी नहीं टूटती" [(समकालीन कोरियाई बाइबल) "एक ऐसा हमला जिसे अकेला व्यक्ति सहन नहीं कर सकता, उसे दो लोग मिलकर प्रभावी ढंग से रोक सकते हैं; क्योंकि तीन लतों वाली डोरी आसानी से नहीं टूटती"]। फिर भी, यीशु ने उनके साथ प्रार्थना नहीं की; इसके बजाय, वे अकेले हट गए—उस जगह से पत्थर फेंकने जितनी दूरी पर चले गए जहाँ वे थे—और एकांत में परमेश्वर पिता से अपनी प्रार्थना की। यीशु ने परमेश्वर से अकेले प्रार्थना करने के लिए अपने और अपने शिष्यों के बीच इतनी दूरी क्यों बनाई? डॉ. पार्क यून-सन के अनुसार, यह तथ्य कि यीशु ने अपने शिष्यों से यह दूरी बनाई, मंदिर की संस्थागत संरचना से समानता रखता है। दूसरे शब्दों में, मंदिर में इस्राएलियों का आँगन, याजकों का आँगन, और परमपवित्र स्थान (Holy of Holies) शामिल थे—एक ऐसा पवित्र स्थान जिसमें केवल महायाजक को प्रवेश करने की अनुमति थी, और वह भी

वर्ष में केवल एक बार। यीशु ने भी इसी के समानांतर, अपने आठ शिष्यों को गेथसेमनी के बगीचे के प्रवेश द्वार पर छोड़ दिया (जो इस्राएलियों के आँगन के अनुरूप है); फिर उन्होंने अपने तीन शिष्यों—पतरस, याकूब और यूहन्ना—को बगीचे में और अंदर ले जाकर वहीं छोड़ दिया (जो 'पुजारियों के आँगन' के समान था); और अंत में, वे उस जगह से एक पत्थर फेंकने जितनी दूरी पर और आगे चले गए (जो 'परमपवित्र स्थान' के समान था) ताकि वे अकेले परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना कर सकें। यहाँ, "परमपवित्र स्थान" परमेश्वर के वास्तविक निवास स्थान को दर्शाता है, और इसके भीतर तीन विशेष वस्तुएँ पाई जाती थीं: (1) वाचा का संदूक [जिसमें (a) दस आज्ञाएँ थीं, जिन्हें स्वयं परमेश्वर ने पत्थर की दो पट्टियों पर अपने हाथों से लिखा था; (b) मन्ना का एक मर्तबान था—वह स्वर्गीय भोजन जो परमेश्वर ने इस्राएलियों को मिस्र से निकलने के बाद जंगल में भटकने के दौरान दिया था; और (c) हारून की लाठी थी जिसमें कोंपलें फूट आई थीं]; (2) दया का सिंहासन [शुद्ध सोने से बना एक ढक्कन, जिसकी लंबाई ढाई हाथ और चौड़ाई डेढ़ हाथ थी, जिसे वाचा के संदूक को ढकने के लिए बनाया गया था (निर्गमन 25:17)]; और (3) दो करूब [दो स्वर्गदूतों जैसी आकृतियाँ जो दया के सिंहासन के दोनों सिरों पर स्थित थीं, और जिनके पंख उसे ढकने और उस पर छाया करने के लिए फैले हुए थे (निर्गमन 25:18–20; 37:6–9)]। साल में एक बार, प्रायश्चित के दिन (योम किप्पूर) पर, महायाजक एक बलि के चढ़ावे का रक्त लेकर परमपवित्र स्थान में प्रवेश करता था; फिर वह उस रक्त को दया के सिंहासन के ऊपर और उसके सामने छिड़कता था ताकि इस्राएल के लोगों के पापों का प्रायश्चित हो सके (लैव्यव्यवस्था 16:14–19)। निर्गमन 25:22 में यही संदेश मिलता है: "वहाँ मैं तुझसे मिलूँगा, और दया के सिंहासन के ऊपर से—गवाही के संदूक पर स्थित दो करूबों के बीच से—मैं तुझसे उन सभी बातों के विषय में बात करूँगा जिनका मैं तुझे इस्राएल के लोगों के संबंध में आदेश देता हूँ।" दया के सिंहासन पर ("वहाँ"), यहोवा परमेश्वर ("मैं") महायाजक हारून ("तू") से मिलते थे। दूसरे शब्दों में, प्रतीकात्मक रूप से कहें तो, दया का सिंहासन उस स्थान का प्रतीक है जहाँ परमेश्वर इस्राएल के लोगों से मिलते हैं (निर्गमन 30:6; गिनती 7:89)। जब यीशु गेथसेमनी के बगीचे में गए—पीटर, जेम्स और जॉन को पीछे छोड़कर और उनसे थोड़ी दूर हटकर—तो जिस जगह वे गए, वह 'परमपवित्र स्थान' (Holy of Holies) था, वह जगह जहाँ परमेश्वर से मिला जाता है।

आज यह बात हम पर कैसे लागू होती है? प्रेरित पीटर ने कहा: “पर तुम एक चुना हुआ वंश, एक राजसी याजक-वर्ग, एक पवित्र राष्ट्र, और परमेश्वर की अपनी प्रजा हो; ताकि तुम उसकी महानता का प्रचार करो, जिसने तुम्हें अंधकार से निकालकर अपने अद्भुत प्रकाश में बुलाया है” (1 पीटर 2:9)। दूसरे शब्दों में, इसका मतलब है कि हम एक “राजसी याजक-वर्ग” हैं। इसके अलावा, बाइबल हमें बताती है कि यीशु “महान महायाजक” हैं। इब्रानियों 4:14 में लिखा है: “इसलिए, जब हमारा एक महान महायाजक है जो स्वर्गों से होकर गुज़रा है—यीशु, परमेश्वर का पुत्र—तो आओ, हम अपने विश्वास को दृढ़ता से थामे रहें।” यीशु हारून से कहीं अधिक महान महायाजक हैं। आज, एक राजसी याजक-वर्ग के सदस्यों के रूप में, हम यीशु—हमारे महान महायाजक—के क्रूस पर दिए गए बलिदान के द्वारा, 'दया के सिंहासन' (Mercy Seat) पर परमेश्वर से मिल सकते हैं। लैव्यव्यवस्था 16:2 में कहा गया है: “यहोवा ने मूसा से कहा: ‘अपने भाई हारून से कहो कि वह किसी भी समय उस पर्दे के पीछे, 'परमपवित्र स्थान' में, और उस संदूक के ऊपर रखे 'दया के सिंहासन' के सामने न आए; ऐसा न हो कि वह मर जाए; क्योंकि मैं 'दया के सिंहासन' के ऊपर बादल में प्रकट होऊँगा।’” ऐसा नहीं था कि कोई भी व्यक्ति जब चाहे, बस 'दया के सिंहासन' के सामने जाकर परमेश्वर से मिल सकता था। ऐसा करने का परिणाम मृत्यु होता—यहाँ तक कि स्वयं महायाजक के लिए भी। हालाँकि, यीशु मसीह—हमारे महान महायाजक—के क्रूस पर दिए गए बलिदान के द्वारा, हमें किसी भी समय 'दया के सिंहासन' तक पहुँचने का अधिकार मिल गया है। मत्ती 27:50–51 में लिखा है: “और यीशु ने फिर ऊँचे स्वर में पुकारा, और अपने प्राण त्याग दिए। तब, देखो, मंदिर का पर्दा ऊपर से नीचे तक दो टुकड़ों में फट गया; और पृथ्वी काँप उठी, और चट्टानें फट गईं।” यीशु की मृत्यु के कारण, मंदिर का वह पर्दा—जो पहले एक बाधा के रूप में काम करता था और किसी को भी 'परमपवित्र स्थान' में प्रवेश करने से रोकता था—ऊपर से नीचे तक दो टुकड़ों में फट गया; परिणामस्वरूप, अब हम 'परम पवित्र स्थान' में आज्ञादी से प्रवेश कर सकते हैं और बाहर निकल सकते हैं। इब्रानियों 10:20 कहता है: “एक नए और जीवित मार्ग से, जिसे उसने हमारे लिए पवित्र किया है—पर्दे के द्वारा, अर्थात् अपने शरीर के द्वारा।” अब, विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए जाने के बाद—परमेश्वर की संतान के रूप में—हमें यीशु मसीह के द्वारा यह सामर्थ्य मिला है कि हम हर समय और हर मौसम में विश्वास के साथ परमेश्वर के निकट

जा सकें (रोमियों 5:1–2)। इस प्रकार, हमें यह असीम आशीष मिली है कि हम किसी भी क्षण परमेश्वर की स्तुति और आराधना कर सकें, और उसे महिमा दे सकें। इसके अलावा, हमें पवित्र आत्मा में निरंतर प्रार्थना करने के लिए समर्थ बनाया गया है। इफिसियों 6:18 कहता है: "हर समय और हर प्रकार की प्रार्थना और विनती के साथ आत्मा में प्रार्थना करते रहो; और इसी उद्देश्य से पूरी दृढ़ता और सभी संतों के लिए विनती करते हुए जागते रहो।" पवित्र आत्मा, जो हमारे भीतर वास करता है, हमारी कमजोरी में हमारी सहायता करता है—क्योंकि हम अक्सर यह नहीं जानते कि हमें किस प्रकार प्रार्थना करनी चाहिए—और वह अवर्णनीय कराहों के साथ, परमेश्वर की इच्छा के पूर्ण अनुरूप होकर, हमारी ओर से परमेश्वर के सामने मध्यस्थता करता है (रोमियों 8:26–27)। इसलिए, हमें बिना रुके प्रार्थना करते रहना चाहिए (1 थिस्सलोनिकियों 5:17)।

गेतसेमानी में प्रार्थना (5)

[लूका 22:39-46]

यीशु ने गेतसेमानी में प्रार्थना कब की? (प्रार्थना का समय) यीशु ने गेतसेमानी में प्रार्थना तब की जब वे बहुत दुखी और शोकाकुल थे—जब उनकी आत्मा दुख से इतनी भर गई थी कि उन्हें लगा जैसे उनकी मृत्यु ही हो जाएगी (मत्ती 26:37-38)। यीशु के शिष्यों को यह प्रार्थना करनी चाहिए थी कि जब परीक्षा का समय आए, तो वे किसी प्रलोभन या परीक्षा में न पड़ें। यहाँ, शिष्यों के सामने आने वाले "प्रलोभन" या "परीक्षा" का अर्थ उस घटना से है जिसमें वे सब यीशु को छोड़कर भाग जाएँगे—यानी, उनका तितर-बितर हो जाना (पद 31, 56)। उनमें से, पतरस ने दूर से यीशु का पीछा किया और महायाजक के घर के आँगन तक गया; वहाँ उसने तीन बार यीशु को जानने से इनकार कर दिया (पद 58)। तीसरी बार इनकार करते समय (पद 58), पतरस ने तो यहाँ तक कह दिया कि वह यीशु को नहीं जानता, और उसने कसम खाई और शपथ भी ली (मरकुस 14:71)।

यीशु ने गेतसेमानी में प्रार्थना कहाँ की? (प्रार्थना का स्थान) यीशु ने अपने आठ शिष्यों को गेतसेमानी बाग के प्रवेश द्वार पर छोड़ दिया और उनसे कहा, "तुम यहाँ बैठो, जब तक मैं वहाँ जाकर प्रार्थना करूँ" (मत्ती 26:36); जिस जगह पर वे आठ शिष्य बैठे, वही उनके लिए प्रार्थना का निर्धारित स्थान बन गया। उसके बाद, यीशु अपने बाकी तीन शिष्यों—पतरस और ज़ेबेदी के दो पुत्रों (पद 37), यानी याकूब और यूहन्ना (मरकुस 14:33)—को अपने साथ ले गए और गेतसेमानी बाग के और भी अंदर चले गए (मत्ती 26:36-37); जिस जगह पर वे तीन शिष्य रुके, वही उनके लिए प्रार्थना का निर्धारित स्थान बन गया। अंत में, यीशु उस जगह से, जहाँ वे तीन शिष्य इंतज़ार कर रहे थे, पत्थर फेंकने जितनी दूरी पर आगे गए (लूका 22:41) और प्रार्थना की; वह विशेष स्थान यीशु के लिए प्रार्थना का अपना निजी स्थान बन गया। यीशु ने इस तरह से

प्रार्थना क्यों की, जिसमें उन्होंने अपने और आठ तथा तीन शिष्यों के समूहों के बीच एक निश्चित दूरी बनाए रखी? इसका कारण यह है कि यीशु यरूशलेम के मंदिर की व्यवस्था को दर्शाना चाहते थे। मंदिर में इस्राएलियों का आँगन, पुजारियों का आँगन, और 'परमपवित्र स्थान' (Holy of Holies) शामिल थे—यह एक ऐसा पवित्र स्थान था जहाँ केवल महायाजक को ही साल में एक बार जाने की अनुमति थी। यीशु ने आठ शिष्यों को गेथसेमानी बाग के प्रवेश द्वार पर ठहराया (जो इस्राएलियों के आँगन का प्रतीक था); फिर वे तीन शिष्यों—पतरस, याकूब और यूहन्ना—को बाग के और अंदर ले गए और उन्हें वहाँ ठहराया (जो पुजारियों के आँगन का प्रतीक था); अंत में, वे वहाँ से एक पत्थर फेंकने जितनी दूरी और आगे चले गए (जो 'परमपवित्र स्थान' का प्रतीक था) ताकि वे एकांत में परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना कर सकें। इस संदर्भ में, "परमपवित्र स्थान" परमेश्वर के निवास स्थान का संकेत देता है, और इसमें तीन विशिष्ट वस्तुएँ रखी थीं: (1) वाचा का संदूक [जिसमें (a) दस आज्ञाएँ थीं, जिन्हें परमेश्वर ने स्वयं पत्थर की दो पट्टियों पर लिखा था; (b) मन्ना से भरा एक पात्र था—यह वह स्वर्गीय भोजन था जो परमेश्वर ने इस्राएलियों को मिस्र से निकलने के बाद जंगल में भटकने के दौरान प्रदान किया था; और (c) हारून की लाठी थी जिसमें कोपलें फूट आई थीं]; (2) दया का सिंहासन (Mercy Seat) [यह शुद्ध सोने का बना एक ढक्कन था जो वाचा के संदूक को ढके रहता था; इसकी लंबाई ढाई हाथ और चौड़ाई डेढ़ हाथ थी (निर्गमन 25:17)]; और (3) दो करूब (Cherubim) [ये दो स्वर्गदूतों की आकृतियाँ थीं जो दया के सिंहासन के दोनों सिरों पर स्थित थीं, और उनके पंख उसे छाया देने के लिए फैले हुए थे (निर्गमन 25:18–20; 37:6–9)]। साल में एक बार, प्रायश्चित के दिन (योम किप्पूर) पर, महायाजक बलिदान के चढ़ावे का रक्त लेकर 'परमपवित्र स्थान' में प्रवेश करता था; फिर वह इस रक्त को दया के सिंहासन के ऊपर और उसके सामने छिड़कता था, ताकि इस्राएल के लोगों के पापों का प्रायश्चित हो सके (लैव्यव्यवस्था 16:14–19)। निर्गमन 25:22 में लिखा है: "वहाँ मैं तुझसे मिलूँगा, और दया के सिंहासन के ऊपर से—साक्ष्य के संदूक पर स्थित दो करूबों के बीच से—मैं तुझसे उन सभी बातों के विषय में बात करूँगा जिनकी आज्ञा मैं तुझे इस्राएल के लोगों के लिए दूँगा।" दया के सिंहासन पर ("वहाँ"), यहोवा परमेश्वर ("मैं") महायाजक हारून ("तू") से मिलते थे। दूसरे शब्दों में, प्रतीकात्मक रूप से कहें तो, दया-सिंहासन उस जगह को दर्शाता है जहाँ परमेश्वर इस्राएल के लोगों से मिलते हैं (निर्गमन 30:6; गिनती 7:89)। इसे एक और तरीके से कहें तो, वह जगह जहाँ कोई परमेश्वर से मिलता है, वह 'परम पवित्र स्थान' के अंदर स्थित दया-सिंहासन पर थी। जब यीशु गेथसेमानी के बगीचे में

प्रवेश किया, और पतरस, याकूब और यूहन्ना को पीछे छोड़कर, वहाँ से लगभग एक पत्थर फेंकने जितनी दूरी पर एक जगह पर चले गए, तो वे असल में उसी 'परम पवित्र स्थान' में प्रवेश कर रहे थे जहाँ परमेश्वर अपने लोगों से मिलते हैं। यीशु ने 'परम पवित्र स्थान' में प्रवेश किया और परमेश्वर के सामने अपनी प्रार्थनाएँ कीं। हमें भी परमेश्वर के करीब जाना चाहिए और प्रार्थना करनी चाहिए। अब दया-सिंहासन कहाँ स्थित है? परमेश्वर सर्वव्यापी हैं; वे हर जगह मौजूद हैं। इसलिए, पवित्र आत्मा के द्वारा, हमारी आत्माओं को परमेश्वर की ओर बढ़ना चाहिए और अपनी प्रार्थनाएँ उन्हें अर्पित करनी चाहिए। इफिसियों 6:18 कहता है: "और हर समय आत्मा में हर तरह की प्रार्थना और विनती करते रहो। इसी बात को ध्यान में रखते हुए, जागते रहो और हमेशा प्रभु के सभी लोगों के लिए प्रार्थना करते रहो।"

गेथसेमानी में यीशु ने कैसे प्रार्थना की? (प्रार्थना करते समय उनकी मुद्रा) यीशु ने घुटने टेककर, ज़मीन पर साष्टांग प्रणाम करके, और अपना चेहरा धरती से सटाकर प्रार्थना की। लूका 22:41 कहता है: "वह उनसे लगभग एक पत्थर फेंकने जितनी दूरी पर चले गए, घुटने टेके और प्रार्थना की।" मरकुस 14:35 कहता है: "थोड़ा और आगे जाकर, वह ज़मीन पर गिर पड़े और प्रार्थना की कि यदि संभव हो तो वह घड़ी उनसे टल जाए।" मत्ती 26:39 कहता है: "थोड़ा और आगे जाकर, वह अपना चेहरा ज़मीन पर टेककर गिर पड़े और प्रार्थना की, कहते हुए..."। प्रार्थना की यह मुद्रा यह दर्शाती है कि पवित्र परमेश्वर के करीब जाना कितना विस्मयकारी अनुभव है। हालाँकि यीशु निष्पाप और धर्मी थे, फिर भी उन्होंने हमारे पापों का पूरा बोझ उठाया; इसलिए, जब वे महिमामय और पवित्र परमेश्वर की उपस्थिति में आए, तो उन्होंने घुटने टेके, ज़मीन पर साष्टांग प्रणाम किया, और अपना चेहरा धरती से सटाकर प्रार्थना की। हमें गेथसेमानी में यीशु की प्रार्थना की इस मुद्रा पर गहराई से विचार करना चाहिए। वास्तव में, *हमारी* प्रार्थनाओं की मुद्रा क्या है? क्या हम सचमुच उस महिमामय और पवित्र परमेश्वर के पास ऐसे भाव से जाते हैं, जो यह स्वीकार करता हो कि हम उनकी साक्षात् उपस्थिति में खड़े हैं—या बल्कि, घुटनों के बल बैठे हैं? यदि स्वयं यीशु भी घुटनों के बल बैठे, साष्टांग प्रणाम किया, और अपना मुख धरती की ओर करके परमेश्वर से प्रार्थना की, तो फिर हमें—उनके अनुयायियों को—प्रार्थना की इसी मुद्रा का कितना अधिक अनुकरण करना चाहिए? हमारी आत्माओं को अपनी गहराइयों तक विनम्र हो जाना चाहिए, और परमेश्वर से प्रार्थना करते समय साष्टांग

प्रणाम करना चाहिए। हमें परमेश्वर के प्रति श्रद्धा और विस्मय की भावना के साथ प्रार्थना करनी चाहिए, और अपने पापों के बोझ पर शोक और दुख प्रकट करना चाहिए।

गेथसेमनी में प्रार्थना (6)

[लूका 22:39–46]

गेथसेमनी में यीशु की प्रार्थना का विषय क्या था? (प्रार्थना का विषय) मरकुस 14:35–36 का अंश इस प्रकार है: “थोड़ा और आगे बढ़कर, वह ज़मीन पर गिर पड़े और प्रार्थना की कि यदि संभव हो, तो यह घड़ी उनसे टल जाए। ‘अब्बा, पिता,’ उन्होंने कहा, ‘आपके लिए सब कुछ संभव है। यह प्याला मुझसे हटा लीजिए। फिर भी, मेरी इच्छा नहीं, बल्कि आपकी इच्छा पूरी हो” (संदर्भ: लूका 22:42; मत्ती 26:39)।

(1) पहली प्रार्थना का विषय: “थोड़ा और आगे बढ़कर, वह ज़मीन पर गिर पड़े और प्रार्थना की कि यदि संभव हो, तो यह घड़ी उनसे टल जाए। ‘अब्बा, पिता,’ उन्होंने कहा, ‘आपके लिए सब कुछ संभव है। यह प्याला मुझसे हटा लीजिए” (मरकुस 14:35–36)।

यहाँ, “यह घड़ी” और “यह प्याला” का अर्थ एक ही है। जब यीशु ने परमेश्वर—अपने “अब्बा, पिता”—से विनती की कि “यह घड़ी उनसे टल जाए” और आग्रह किया, “यह प्याला मुझसे हटा लीजिए,” तो उनकी इस याचिका का तात्पर्य क्रूस पर होने वाली अपनी मृत्यु से बच जाने (उससे छूट पाने, या उससे बचने) के लिए किया गया एक अनुरोध था। स्पष्ट रूप से, जिस उद्देश्य से यीशु इस पृथ्वी पर आए थे, वह हमारे सभी पापों का बोझ उठाने और क्रूस पर अपना रक्त बहाते हुए मृत्यु को गले लगाने का था; फिर, यीशु ने ऐसी प्रार्थना क्यों की? यह दर्शाता है कि यीशु पूर्ण रूप से मनुष्य थे। दूसरे शब्दों में, यीशु—यद्यपि निष्पाप और धर्मी थे—फिर भी एक पूर्ण मनुष्य होने के नाते उनमें मानवीय दुर्बलताएँ भी थीं (उदाहरण के लिए, यदि यीशु भोजन नहीं करते थे, तो उन्हें भूख लगती थी; यदि वह सोते नहीं थे, तो उन्हें थकान महसूस होती थी)।

दुर्बल होना कोई पाप नहीं है। हालाँकि, शैतान और उसके चेले हमारी कमज़ोरियों का फ़ायदा उठाकर हमें प्रलोभन देते हैं और हमें परीक्षाओं में डालते हैं; यदि हम ऐसी परीक्षा के आगे हार मान लेते हैं, तो हम पाप करते हैं, लेकिन यदि हम उस पर विजय पा लेते हैं, तो हम पाप नहीं करते। दुर्बल मनुष्य आमतौर पर मृत्यु से डरते हैं और उससे बचना चाहते हैं, फिर भी हर किसी की भावना ऐसी नहीं होती। उदाहरण के लिए, वे शहीद जो अपने विश्वास को बनाए रखने के लिए अपने प्राणों की आहुति दे देते हैं—जैसे कि याकूब, पतरस

और अन्य—वे मृत्यु से नहीं डरते और, परिणामस्वरूप, उससे बचने का प्रयास भी नहीं करते। फिर, यीशु ने परमेश्वर पिता से यह विनती क्यों की कि वे उन्हें क्रूस पर होने वाली मृत्यु से बचा लें? इसका कारण यह है कि, यद्यपि यीशु स्वयं पूरी तरह से निष्पाप थे—और इस प्रकार क्रूस पर मृत्यु के पात्र नहीं थे—फिर भी उन्हें पूरी मानवजाति के सामूहिक पापों का बोझ उठाना था और उन पापों का पूरा दंड भोगना था; यह एक ऐसी मृत्यु थी जिसमें स्वयं नरक की यातना भी शामिल थी; इसी कारण से उन्होंने ऐसी विनती की थी। इसके अतिरिक्त, उन्होंने इस प्रकार प्रार्थना इसलिए की क्योंकि क्रूस पर उनकी मृत्यु का अर्थ था परमेश्वर पिता द्वारा त्याग दिया जाना। जैसा कि मरकुस 15:34 में लिखा है: “नौवें घंटे यीशु ने ऊँचे स्वर में पुकारा, ‘एलोई, एलोई, लामा सबक्तानी?’—जिसका अर्थ है, ‘हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों त्याग दिया है?’”

(2) दूसरी प्रार्थना: “फिर भी जैसा मैं चाहता हूँ वैसा नहीं, बल्कि जैसा तू चाहता है वैसा ही हो” (मरकुस 14:36)।

यह यीशु की ओर से की गई एक अत्यंत गंभीर और हार्दिक विनती है। विशेष रूप से, यीशु ने परमेश्वर से—जिन्हें उन्होंने “अब्बा, पिता” कहकर संबोधित किया—यह हार्दिक प्रार्थना की, “जैसा मैं चाहता हूँ वैसा न हो, बल्कि जैसा तू चाहता है वैसा ही हो।” इस संदर्भ में, “जैसा पिता चाहता है” का तात्पर्य परमेश्वर पिता की ईश्वरीय इच्छा से है: कि उनका एकलौता पुत्र, यीशु, क्रूस पर अपनी मृत्यु के द्वारा “घावों से भरा जाए और दुःख सहे” ताकि वह “हमारे समस्त पापों का प्रायश्चित्त करने वाला बलिदान” बन सके (यशायाह 53:10)। इसलिए, यदि हम रोमियों 8:32 को देखें, तो वह हमें बताता है कि परमेश्वर पिता ने अपने स्वयं के पुत्र को भी नहीं बख्शा, बल्कि हम सब के लिए उसे सौंप दिया।

हमारी मानवीय दुर्बलता के कारण, कई बार ऐसा होता है जब हमारी हार्दिक प्रार्थनाएँ परमेश्वर पिता की इच्छा के अनुरूप नहीं होतीं। दूसरे शब्दों में, ठीक हमारी इसी कमज़ोरी के कारण, हम अक्सर परमेश्वर से उनकी इच्छा के बजाय अपनी स्वयं की इच्छा पूरी करने के लिए कहते हैं। मत्ती अध्याय 8 में, हम एक कोढ़ी को देखते हैं जो यीशु के पास आया, उनके सामने झुक गया, और यह विनती की: “हे प्रभु, यदि तू चाहे, तो मुझे शुद्ध कर सकता है” [(समकालीन अंग्रेज़ी संस्करण) “हे प्रभु, यदि तू चाहे, तो मुझे पूरी तरह चंगा कर सकता है”] (पद 2)। यह दर्शाता है कि वह कोढ़ी प्रभु की इच्छा जानना चाहता था। इसके जवाब में, यीशु ने अपना हाथ बढ़ाया, उसे छुआ, और कहा: “मैं चाहता हूँ; तू शुद्ध हो जा” [(समकालीन अंग्रेज़ी संस्करण) “मैं चाहता हूँ। तू पूरी तरह चंगा हो जा”] (पद 3)। जैसे ही यीशु ने ये शब्द कहे, वह कोढ़ी तुरंत अपने कोढ़ से शुद्ध हो गया (पद 3)।

हमें अपनी इच्छा से ऊपर परमेश्वर की इच्छा को प्राथमिकता देनी चाहिए। यही हमारे विश्वास का रवैया होना चाहिए, और यही हमारे विश्वास का अभ्यास भी होना चाहिए। हमें परमेश्वर की इच्छा पर भरोसा करने और उसका पालन करने के लिए खुद को समर्पित कर देना चाहिए। फिलिप्पियों 2:8 कहता है: "और मनुष्य के रूप में प्रकट होकर, उसने अपने आप को दीन किया और मृत्यु तक—हाँ, क्रूस की मृत्यु तक—आज्ञाकारी बना रहा।" यीशु ने केवल परमेश्वर पिता की इच्छा जानने की कोशिश नहीं की; उसने परमेश्वर पिता की इच्छा का पालन मृत्यु तक किया। यीशु के उदाहरण का अनुसरण करते हुए, हमें भी न केवल परमेश्वर की इच्छा जाननी चाहिए, बल्कि मृत्यु तक उसका पालन भी करना चाहिए। काश हम ऐसे लोग बनें जो केवल परमेश्वर की इच्छा पूरी करते हैं (1 यूहन्ना 2:17), और काश हमारी प्रार्थनाएँ केवल उसकी इच्छा के अनुसार ही की जाएँ (1 यूहन्ना 5:14)। "हे मेरे प्रभु, तेरी इच्छा पूरी हो; मैं अपने सारे काम पूरी तरह से तुझे सौंपता हूँ। जैसे-जैसे मैं चुपचाप स्वर्गीय नगर की ओर अपनी यात्रा करता हूँ, चाहे मैं जीवित रहूँ या मर जाऊँ, सब कुछ तेरी इच्छा के अनुसार ही हो।" (न्यू हिमनल 549, "हे मेरे प्रभु, तेरी इच्छा के अनुसार," पद

3)

गेथसेमानी में प्रार्थना (7)

[लूका 22:39–46]

यीशु ने गेथसेमानी में पूरी लगन से प्रार्थना की। इस धरती पर आकर और अपनी सेवकाई को पूरा करते हुए, यीशु ने हर काम पूरे जोश के साथ किया; और परमेश्वर पिता से प्रार्थना करते समय भी, उन्होंने उतनी ही लगन दिखाई।

यीशु ने अपनी सार्वजनिक सेवकाई की शुरुआत में ही यह जोश दिखाया था। यूहन्ना 2:13–16 के अनुसार, जैसे ही फसह का त्योहार नज़दीक आया, यीशु यरूशलेम गए। मंदिर के अंदर, उन्होंने रस्सियों से एक कोड़ा बनाया और सभी भेड़ों और मवेशियों को बाहर निकाल दिया; उन्होंने पैसे बदलने वालों के सिक्के बिखेर दिए, उनकी मेज़ें उलट दीं, और कबूतर बेचने वालों से कहा, “इन चीज़ों को यहाँ से तुरंत बाहर निकालो! मेरे पिता के घर को बाज़ार मत बनाओ।” इस तरह, यीशु ने मंदिर को शुद्ध किया। उस समय, उनके शिष्यों को पवित्रशास्त्र के शब्द याद आए—विशेष रूप से भजन संहिता 69:9 का पहला भाग (जिसका ज़िक्र यूहन्ना 2:17 में है): “तेरे घर के लिए मेरा जोश मुझे भस्म कर रहा है...” दूसरे शब्दों में, प्रभु ने अपने ही पवित्र स्थान के लिए गहरी लगन के कारण मंदिर के अंदर के हिस्से को शुद्ध किया। यहाँ, शब्द “भस्म करना” का अर्थ “नष्ट करना” या “मार डालना” है; यह इस बात का संकेत है कि यीशु—जिनका शारीरिक शरीर ही सच्चा “मंदिर” था (यूहन्ना 2:21)—क़ूस पर अपनी जान देंगे ताकि हमें हमारे सभी पापों से शुद्ध कर सकें और हमें “परमेश्वर का मंदिर” (1 कुरिन्थियों 3:16) बना सकें।

यीशु ने अपनी सार्वजनिक सेवकाई के बिल्कुल अंत तक भी यही जोश दिखाना जारी रखा। लूका 22:44 के अनुसार, जिस रात उन्होंने क़ूस पर हमारे सभी पापों का बोझ उठाया और अपनी जान दी, उस रात यीशु ने गेथसेमानी में इतनी ज़बरदस्त मेहनत और पीड़ा के साथ प्रार्थना की कि उनकी विनती में और भी ज़्यादा तीव्रता आ गई। यीशु ने कितनी लगन से प्रार्थना की होगी कि उनका पसीना खून की बूंदों जैसा बनकर ज़मीन पर गिरने लगा? (पद 44) यहाँ, यह तथ्य कि यीशु ने “पूरी लगन से” प्रार्थना की, इसके तीन अलग-अलग अर्थ हैं:

(1) पहला अर्थ यह है कि यीशु ने “अपनी पूरी शक्ति लगाकर” प्रार्थना की। यह बात मरकुस 12:30 में मिलती है: “अपने प्रभु परमेश्वर से अपने पूरे मन, अपनी पूरी आत्मा, अपनी पूरी बुद्धि और अपनी पूरी शक्ति से प्रेम करो।” गेथसेमनी में, यीशु ने अपने पूरे मन से प्रार्थना की। हालाँकि, हम अक्सर पूरे मन से परमेश्वर से प्रार्थना करने में असफल रहते हैं। इसका कारण यह है कि दूसरी चीज़ें हमारे मन में घर कर गई हैं और हमारी प्रार्थनाओं में बाधा डाल रही हैं। दूसरे शब्दों में, हम अक्सर प्रार्थना में परमेश्वर के पास “दोहरे मन” (यानी मन में दुविधा) के साथ जाते हैं (याकूब 1:8; 4:8)। गेथसेमनी में, यीशु ने अपनी पूरी आत्मा से प्रार्थना की—यानी, अपने स्वयं के जीवन से। हालाँकि, हम अक्सर अपने जीवन के ऐसे पूर्ण समर्पण के साथ परमेश्वर से प्रार्थना करने में असफल रहते हैं। इसका कारण यह है कि यीशु और सुसमाचार की खातिर अपने जीवन को खोने के लिए तैयार रहने के बजाय, हम मरने से डरते हैं और इसके बजाय अपने जीवन को बचाने की कोशिश करते हैं (मरकुस 8:35)। यीशु ने अपनी पूरी बुद्धि से प्रार्थना की—यानी, अपनी पूरी इच्छाशक्ति से। हालाँकि, हम अक्सर अपनी इच्छाशक्ति के ऐसे पूर्ण तालमेल के साथ परमेश्वर से प्रार्थना करने में असफल रहते हैं। इसका कारण यह है कि हम परमेश्वर की इच्छा के बजाय अपनी इच्छा पूरी होने की कामना करते हैं (तुलना करें: लूका 22:42)। यीशु ने अपनी पूरी शक्ति से प्रार्थना की। हालाँकि, हम अक्सर अपनी शक्ति का ऐसा पूर्ण उपयोग करते हुए परमेश्वर से प्रार्थना करने में असफल रहते हैं। इसका कारण यह है कि परमेश्वर पर भरोसा करने के बजाय—जो हमारी शक्ति हैं (भजन संहिता 18:1; यिर्मयाह 16:19)—हम इसके बजाय अपनी स्वयं की शक्ति पर भरोसा करते हैं (तुलना करें: व्यवस्थाविवरण 8:17)।

(2) दूसरा महत्व यह है कि यीशु ने प्रार्थना करते समय अपनी जीवन-शक्ति को पूरी तरह से उड़ेल दिया।

(a) जब यीशु ने गेथसेमनी में प्रार्थना की, तो उन्होंने आँसू बहाते हुए परमेश्वर पिता से अपनी विनितियाँ कीं। इब्रानियों 5:7 कहता है: “अपने सांसारिक जीवन के दिनों में, उन्होंने ऊँची आवाज़ और आँसुओं के साथ प्रार्थनाएँ और विनितियाँ उस परमेश्वर के सामने रखीं जो उन्हें मृत्यु से बचाने में समर्थ था, और उनकी प्रार्थना सुनी गई क्योंकि वे परमेश्वर का भय मानते थे।”

(b) जब यीशु ने गेथसेमनी में प्रार्थना की, तो उन्होंने पसीना बहाते हुए परमेश्वर पिता से अपनी विनितियाँ कीं। लूका 22:44 कहता है: “और अत्यंत पीड़ा में होने के कारण, उसने और भी अधिक लगन से प्रार्थना की; और उसका पसीना...” जब यीशु ने पसीना बहाते हुए प्रार्थना की, तो उस समय तापमान बिल्कुल भी गर्म नहीं था; बल्कि, वह ठंडा था [(यूहन्ना 18:18): “अब सेवक और अधिकारी, जिन्होंने कोयलों की आग जलाई थी, वहाँ खड़े थे, क्योंकि ठंड थी, और वे अपने आपको सेंक रहे थे। और पतरस भी उनके साथ खड़ा होकर अपने आपको सेंक रहा था”]]। इस प्रकार, ऐसे ठंडे मौसम में, जिसमें लोगों को गर्म रहने के लिए आग जलानी पड़ रही थी, यीशु ने परमेश्वर पिता से इतनी तन्मयता से प्रार्थना की कि उन्हें पसीना भी आ गया।

(c) जब यीशु ने गेथसेमनी में प्रार्थना की, तो उन्होंने परमेश्वर पिता से अपनी विनतियाँ करते समय रक्त भी बहाया। लूका 22:44 कहता है: “और अत्यंत पीड़ा में होने के कारण, उसने और भी अधिक लगन से प्रार्थना की; और उसका पसीना रक्त की बड़ी-बड़ी बूंदों जैसा हो गया, जो ज़मीन पर गिर रही थीं।” यीशु ने परमेश्वर पिता से केवल आँसू और पसीना बहाते हुए ही विनती नहीं की; बल्कि, उन्होंने इतनी तीव्रता से प्रार्थना की कि उनका “पसीना रक्त की बूंदों जैसा हो गया, जो ज़मीन पर गिर रही थीं।” यद्यपि हमारी त्वचा के छिद्र नंगी आँखों से दिखाई नहीं देते, फिर भी वे मौजूद होते हैं; इस प्रकार, जब हमें गर्मी लगती है, तो उन्हीं छिद्रों से पसीना बाहर निकलता है। धर्मग्रंथ का यह वर्णन कि यीशु का पसीना “रक्त की बूंदों जैसा हो गया, जो ज़मीन पर गिर रही थीं”—भले ही उनकी प्रार्थना के समय मौसम ठंडा था—यह दर्शाता है कि जब उनके शरीर से पसीना और रक्त बह रहा था, तो वे आपस में मिल गए थे, और बूंदों के रूप में धरती पर गिर रहे थे।

(3) तीसरा महत्व यह है कि यीशु ने परमेश्वर पिता से ठीक उसी तरह प्रार्थना की, जिस तरह तेल निकालने वाली मशीन (ऑयल प्रेस) का उपयोग करके तेल निकाला जाता है।

यद्यपि मत्ती और मरकुस के सुसमाचार इस स्थान को “गेथसेमनी” (मत्ती 26:36; मरकुस 14:32) के नाम से संबोधित करते हैं, वहीं लूका का सुसमाचार इसे “जैतून का पहाड़” (लूका 22:39) बताता है। गेथसेमनी का बगीचा जैतून के पहाड़ पर ही स्थित था; लूका द्वारा विशेष रूप से “जैतून के पहाड़” का उल्लेख करने का कारण यह है कि वह पहाड़ जैतून के पेड़ों से भरा हुआ था—जिन पर भरपूर फल लगते थे—और इसलिए वहाँ तेल निकालने के लिए उपयोग की जाने वाली मशीनें (प्रेस) भी मौजूद थीं। यीशु ने वहीं पर प्रार्थना की, और परमेश्वर पिता से विनती करते समय उन्होंने अपने अस्तित्व के सार—अपने आँसू, पसीना और रक्त—को पूरी तरह से उड़ेल दिया। यीशु के इस प्रकार प्रार्थना करने का कारण उनकी यह तीव्र अभिलाषा थी कि परमेश्वर की इच्छा—अर्थात् हम पापियों का उद्धार—पूरी हो।

यीशु ने गेथसेमनी में लगन से प्रार्थना की। मत्ती 26:42 और 44 में धर्मग्रंथ कहते हैं: “वह दूसरी बार वहाँ से हट गया और प्रार्थना की, ‘हे मेरे पिता, यदि यह प्याला मेरे लिए बिना नहीं हट सकता, तो तेरी ही इच्छा पूरी हो’... उन्हें फिर छोड़कर, वह चला गया और तीसरी बार भी वही बातें कहकर प्रार्थना की।” जैतून पर्वत पर स्थित गेथसेमनी में, यीशु ने परमपिता परमेश्वर से विनती करते हुए आँसू, पसीना और लहू बहाया; उन्होंने तब तक लगन से प्रार्थना की जब तक उन्हें अपनी प्रार्थना का उत्तर नहीं मिल गया। हालाँकि यीशु को “दूसरी बार” प्रार्थना करने के बाद भी परमेश्वर से कोई उत्तर नहीं मिला, उन्हें उत्तर केवल “तीसरी बार” प्रार्थना करने के बाद ही मिला; परिणामस्वरूप, बाइबल में यह दर्ज नहीं है कि यीशु “चौथी बार” या “पाँचवीं बार” प्रार्थना करने गए। लूका 18:1–8 में, यीशु ने एक दृष्टान्त का उपयोग करके सिखाया कि व्यक्ति को

प्रार्थना करते रहना चाहिए और हार नहीं माननी चाहिए (लूका 18:1)। एक नगर में, एक विधवा थी जो अक्सर एक अधर्मी न्यायाधीश के पास जाती थी—एक ऐसा न्यायाधीश जो न तो परमेश्वर से डरता था और न ही लोगों का आदर करता था—और विनती करती थी, “मेरे विरोधी के विरुद्ध मुझे न्याय दिला।” अंततः, न्यायाधीश ने उसकी विनती पर ध्यान दिया और उसे न्याय दिलाया, यह तर्क देते हुए कि यदि वह उसकी शिकायत का समाधान नहीं करेगा, तो वह लगातार आती रहेगी और उसे परेशान करती रहेगी। “तो क्या परमेश्वर अपने चुने हुएों को न्याय नहीं दिलाएगा, जो दिन-रात उससे गुहार लगाते हैं? क्या वह उन्हें टालता रहेगा? मैं तुमसे कहता हूँ, वह यह सुनिश्चित करेगा कि उन्हें न्याय मिले, और वह भी शीघ्र ही...” (पद 7-8)। मत्ती 7:7-8 में लिखा है: “मांगो, तो तुम्हें दिया जाएगा; ढूँढ़ो, तो तुम पाओगे; खटखटाओ, तो तुम्हारे लिए खोला जाएगा। क्योंकि जो कोई मांगता है, उसे मिलता है; जो ढूँढ़ता है, वह पाता है; और जो खटखटाता है, उसके लिए द्वार खोला जाएगा।” इन पदों में, यीशु यह वादा करते हैं कि हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर दिया जाएगा। प्रार्थना के उत्तर मिलने के इस वादे पर दृढ़ रहते हुए, हमें—धैर्य के साथ—परमेश्वर के सामने मांगना, ढूँढ़ना और खटखटाना तब तक जारी रखना चाहिए जब तक हमें उनका उत्तर नहीं मिल जाता। हालाँकि, बाइबल में ऐसे व्यक्तियों के उदाहरण भी मिलते हैं जिन्हें लंबी और धैर्यपूर्ण विनती की आवश्यकता के बिना ही, अपनी प्रार्थनाओं के तत्काल उत्तर मिल गए। नहेमायाह इसका एक बेहतरीन उदाहरण हैं। नहेमायाह 2:4-8 के अनुसार, राजा अर्तक्षत्र (2:1) ने नहेमायाह से पूछा कि वह क्या चाहते हैं (पद 4); उसी क्षण, राजा को जवाब देने से पहले (पद 5), नहेमायाह ने स्वर्ग के परमेश्वर से एक छोटी सी प्रार्थना की (पद 4)। क्योंकि नहेमायाह की मदद के लिए परमेश्वर का कृपालु हाथ उन पर था, इसलिए राजा ने उनकी विनती मान ली (पद 8)—और इस ईश्वरीय सहायता के ज़रिए, नहेमायाह और यहूदा के लोग अपने विरोधियों के सताने के बावजूद (6:15-16), यरूशलेम की दीवारों का पुनर्निर्माण सिर्फ़ 52 दिनों में पूरा कर पाए। इसके विपरीत, भविष्यवक्ता एलियाह को अपनी प्रार्थना का जवाब तभी मिला जब उन्होंने सात बार विनती की (1 राजा 18:42-45)। इसके अलावा, जॉर्ज मुलर—एक ऐसे व्यक्ति जो 50,000 से भी ज़्यादा बार अपनी प्रार्थनाओं का जवाब पाने के लिए मशहूर थे—ने अपने दो दोस्तों की आत्माओं के उद्धार के लिए 25 साल तक प्रार्थना की, फिर भी उन्हें तब तक जवाब नहीं मिला जब तक कि वे गुज़र नहीं गए। परमेश्वर हमारी सच्ची प्रार्थनाओं का जवाब देते हैं—और वे ऐसा अपने ही समय पर और अपने ही तरीके से करते हैं। हमें भी गेथसेमनी में यीशु की प्रार्थना का अनुकरण करना चाहिए, और परमेश्वर से पूरे जोश और लगन के साथ प्रार्थना करनी चाहिए। यीशु की तरह, हमें भी परमेश्वर से न सिर्फ़ तब सच्ची विनती करनी चाहिए जब हम अपनी सेवा शुरू करते हैं, बल्कि तब तक करते रहना चाहिए जब तक हम उसे पूरा नहीं कर लेते। जब हम सच्ची प्रार्थना करते हैं, तो हमें—बिल्कुल यीशु की तरह—अपनी प्रार्थनाओं में अपनी पूरी जान लगा देनी चाहिए। भले ही हमें अपना खून न बहाना पड़े, फिर भी हमें परमेश्वर से पूरी लगन से विनती करनी चाहिए, और इस प्रक्रिया में अपने आँसू और पसीना बहाना चाहिए। इसके अलावा, हमें परमेश्वर से अपनी विनतियों में धैर्य के साथ तब तक लगे रहना चाहिए जब तक हमें अपनी प्रार्थनाओं का जवाब न मिल जाए। परमेश्वर हमारी सच्ची और धैर्यपूर्ण विनतियों को ज़रूर सुनेंगे और—अपने ही समय पर और अपने ही तरीके से—हमारी प्रार्थनाओं का जवाब देंगे।

गेथसेमनी में प्रार्थना (8)

[लूका 22:39-46]

यहाँ गेथसेमनी में यीशु की प्रार्थना का जोश दिखाया गया है: (1) यीशु ने परमेश्वर पिता से अपने पूरे दिल, अपनी पूरी आत्मा, अपने पूरे मन और अपनी पूरी शक्ति से प्रार्थना की (मरकुस 12:30)। यीशु के चेले—जो उनके "दोहरे आदेश" के पहले हिस्से का पालन करते हैं (जिसमें कहा गया है, "अपने प्रभु परमेश्वर से अपने पूरे दिल, अपनी पूरी आत्मा, अपने पूरे मन और अपनी पूरी शक्ति से प्रेम करो"—पद 30)—यीशु के उदाहरण का अनुसरण करते हैं; जिस तरह वे परमेश्वर से अपने पूरे दिल, आत्मा, मन और शक्ति से प्रेम करते हैं, उसी तरह वे भी परमेश्वर से अपने पूरे दिल, आत्मा, मन और शक्ति से पूरी लगन के साथ विनती करते हैं। (2) यीशु ने परमेश्वर पिता से प्रार्थना करते समय अपना पूरा जीवन-सार (शारीरिक द्रव) बहा दिया (लूका 22:44)। यीशु ने परमेश्वर पिता से विनती करते समय शुद्ध और पवित्र आँसू, पसीना और लहू बहाया। हालाँकि, परमेश्वर पिता से विनती करते समय हम जो आँसू और पसीना बहाते हैं, वे शुद्ध और पवित्र द्रव नहीं होते। दूसरे शब्दों में, हमारे आँसू और पसीना पाप से दूषित द्रव होते हैं। (3) यीशु ने परमेश्वर पिता से इस तरह प्रार्थना की, मानो उन्हें किसी तेल निकालने वाली मशीन में पीसा जा रहा हो (लूका 22:39)। "जैतून के पहाड़" पर जैतून के पेड़ बहुतायत में थे, जिन पर बहुत फल लगते थे; इसलिए, इन जैतूनों से तेल निकालने वाली मशीन का उपयोग करके तेल निकाला जाता था। यीशु ने परमेश्वर से विनती करते समय अपना पूरा जीवन-सार (शुद्ध और पवित्र आँसू, पसीना और लहू) बहा दिया। हालाँकि, हमारी प्रार्थनाएँ केवल उस तीव्रता की लगती हैं, जिससे व्यक्ति "पीड़ा की आग में जलता है" (यानी, आंतरिक कष्ट से पूरी तरह घिर जाता है)।

यहाँ गेथसेमनी में यीशु की प्रार्थना का धीरज दिखाया गया है। यीशु ने परमेश्वर पिता से अपनी विनती केवल एक बार नहीं की (लूका 22:45-46); बल्कि, उन्होंने दो बार (मत्ती 26:42; मरकुस 14:39) और तीन बार (मत्ती 26:44; मरकुस 14:41) प्रार्थना की, और तब तक प्रार्थना में डटे रहे, जब तक उन्हें परमेश्वर पिता से उत्तर नहीं मिल गया। (हालाँकि वे तीन बार से ज़्यादा प्रार्थना कर सकते थे, लेकिन तीसरी बार के बाद उन्होंने प्रार्थना करना बंद कर दिया, क्योंकि उन्हें परमेश्वर पिता से अपना जवाब मिल गया था।) इस प्रकार, यीशु ने उन्हीं शब्दों का इस्तेमाल करते हुए तीन बार प्रार्थना की, जब तक कि उन्हें अपना जवाब नहीं मिल गया (मत्ती 26:44; मरकुस 14:39); परमेश्वर पिता से विनती करते हुए उन्होंने अपना पूरा सार—पवित्र और

निर्मल आँसू, पसीना और लहू—बहा दिया। हमें भी गेथसेमनी में यीशु की प्रार्थना की लगन की नकल करनी चाहिए; हमें परमेश्वर से तब तक धैर्य के साथ प्रार्थना करनी चाहिए, जब तक हमें जवाब न मिल जाए, और विशेष रूप से तब तक प्रार्थना करनी चाहिए, जब तक परमेश्वर की इच्छा पूरी न हो जाए।

गेथसेमनी में यीशु की प्रार्थना के परिणाम निम्नलिखित हैं:

(1) पहली प्रार्थना का परिणाम यह है: अपना जवाब मिलने के बाद, यीशु निडर होकर उस दुष्ट भीड़ का सामना करने के लिए आगे बढ़े, जो उन्हें और उनके ग्यारह शिष्यों को पकड़ने आई थी।

मत्ती 26:46 में लिखा है: “उठो, हम चलें; देखो, जो मुझे पकड़वाने वाला है, वह पास आ पहुँचा है।” उन्हीं शब्दों का इस्तेमाल करते हुए तीसरी बार प्रार्थना करने के बाद, और यह महसूस करने के बाद कि जो उन्हें पकड़वाने वाला है, वह पास आ रहा है, यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, “उठो, हम चलें” (मरकुस 14:42)। जैसे ही उन्होंने ये शब्द कहे, यहूदा इस्करियोती आ पहुँचा—उसके साथ तलवारों और लाठियों से लैस एक बड़ी भीड़ थी, जिसे महायाजकों और लोगों के बड़ों ने भेजा था—ताकि यीशु और उनके शिष्यों का सामना कर सके (मत्ती 26:47)। क्योंकि यीशु को अपनी प्रार्थना का जवाब मिल गया था, इसलिए वे उस बड़ी, दुष्ट भीड़ का सामना करने के लिए निडर होकर आगे बढ़े, और परमेश्वर पिता की इच्छा के अनुसार “दुख के इस प्याले” को स्वीकार करने के लिए तैयार थे (पद 39)।

(2) दूसरी प्रार्थना का परिणाम प्रभु की अद्भुत शक्ति (अधिकार) का प्रकटीकरण था।

जब यीशु ने भीड़ से पूछा, “तुम किसे ढूँढ़ रहे हो?” तो उन्होंने जवाब दिया, “नासरत के यीशु को।” उसी क्षण, यीशु ने घोषणा की, “मैं ही वह हूँ” [“मैं ही वह व्यक्ति हूँ”]। यीशु के ये शब्द सुनकर, वे पीछे हट गए और ज़मीन पर गिर पड़े [“यीशु के शब्दों—‘मैं ही वह व्यक्ति हूँ’—से चकित होकर, वे लड़खड़ाते हुए पीछे हटे और ज़मीन पर गिर पड़े”] (यूहन्ना 18:4–6)। यीशु ने केवल यही प्रार्थना की थी कि परमेश्वर पिता की इच्छा पूरी हो; फिर भी, इस प्रार्थना के द्वारा, प्रभु की शक्ति (अधिकार) प्रकट हुई, जब यह दुष्ट भीड़ अस्त-व्यस्त होकर पीछे हटी और ज़मीन पर गिर पड़ी। जब हम परमेश्वर की इच्छा के अनुसार प्रार्थना करते हैं, तो परमेश्वर न केवल वह पूरा करता है जिसकी हमने विशेष रूप से विनती की है, बल्कि वह इस तरह के अन्य आश्चर्यजनक कार्य भी करता है। जैसा कि मत्ती 6:33 में कहा गया है: “परन्तु पहले तुम उसके राज्य और उसकी धार्मिकता की खोज करो, और ये सब वस्तुएँ भी तुम्हें मिल जाएँगी।” और जैसा कि 1 राजा 18:46 में कहा गया है: “प्रभु की शक्ति एलियाह पर आ गई; उसने अपनी कमर कसी और अहाब के आगे-आगे यिज़्रैल के प्रवेश द्वार तक दौड़ता चला गया।” करमेल पर्वत पर भविष्यवक्ता एलियाह द्वारा की

गई प्रार्थना का विषय परमेश्वर से ताज़गी देने वाली वर्षा भेजने की विनती थी, ताकि सूखा समाप्त हो सके; फिर भी, परमेश्वर ने न केवल भारी वर्षा भेजी (पद 45); बल्कि उसने प्रभु की शक्ति को एलिय्याह पर भी आने दिया, जिससे वह करमेल पर्वत से लेकर यिज़्रैल तक (लगभग 27 किमी की दूरी) राजा अहाब के रथ के आगे-आगे दौड़ने में सक्षम हो गया (पद 46; *मॉडर्न पीपल्स बाइबल*)। कृपया 1 राजा 3:13 देखें: “मैं तुम्हें धन और सम्मान भी दूँगा, जिसकी तुमने विनती नहीं की है; ताकि तुम्हारे जीवन भर राजाओं में से कोई भी तुम्हारे बराबर न हो।” क्योंकि राजा सुलैमान ने परमेश्वर से केवल कानूनी विवादों को समझने और उनका न्याय करने के लिए बुद्धि माँगी थी (पद 11)—एक ऐसी विनती जिससे प्रभु प्रसन्न हुआ (पद 10)—इसलिए परमेश्वर ने उसे न केवल वह बुद्धि प्रदान की, बल्कि वह धन और सम्मान भी दिया जिसकी सुलैमान ने विनती नहीं की थी (पद 13)। इस प्रकार, परमेश्वर ही वह है जो, जब हम उसकी इच्छा के अनुसार प्रार्थना करते हैं—ठीक वैसे ही जैसे यीशु ने की थी—तो हमें हमारी माँगी हुई या कल्पना की हुई किसी भी चीज़ से कहीं अधिक बहुतायत में प्रदान करता है। इफिसियों 3:20 (*मॉडर्न पीपल्स बाइबल*) में यही संदेश मिलता है: “उस परमेश्वर को, जो अपनी उस शक्ति के अनुसार, जो हमारे भीतर काम कर रही है, हमारी हर प्रार्थना और सोच से कहीं ज़्यादा बढ़कर करने में समर्थ है।”

(3) तीसरा, प्रार्थना का परिणाम यह होता है कि परमेश्वर अपने वादों को पूरा करता है।

यूहन्ना 18:8 में कहा गया है: “यीशु ने उत्तर दिया, ‘मैंने तुमसे कहा कि मैं ही वह हूँ। इसलिए यदि तुम मुझे ही ढूँढ़ रहे हो, तो इन लोगों को जाने दो।’” जब यीशु गतसमनी बाग़ में अपनी प्रार्थना के बाद उस दुष्ट भीड़ द्वारा गिरफ़्तार किए जा रहे थे, तो उन्होंने उनसे कहा, “इन लोगों को जाने दो” [“यदि तुम मुझे ही ढूँढ़ रहे हो, तो इन लोगों को जाने दो” (*मॉडर्न पीपल्स बाइबल*)]—यहाँ उनका इशारा अपने ग्यारह शिष्यों की ओर था (पद 8)। वह दुष्ट भीड़ न केवल यीशु को पकड़ने आई थी, बल्कि उनके शिष्यों को भी गिरफ़्तार करने आई थी (क्योंकि यदि वे शिष्यों को ले जाकर उनसे पूछताछ करते, तो क्या उन्हें यीशु पर आरोप लगाने के लिए सबूत नहीं मिल जाते?)। फिर भी, यीशु ने उन्हें निर्देश दिया कि वे केवल उन्हें ही गिरफ़्तार करें और उन ग्यारह शिष्यों को आज़ाद जाने दें। यीशु के ऐसा कहने का कारण उन शब्दों को पूरा करना था जो उन्होंने पहले कहे थे: “जिन्हें तूने मुझे दिया है, उनमें से मैंने एक को भी नहीं खोया है” (पद 9)। इस कार्य से यीशु के उस कथन की पूर्ति हुई जो उन्होंने यूहन्ना 17:12 में कहा था—यह बात उन्होंने गतसमनी बाग़ के लिए रवाना होने से ठीक पहले कही थी—जो इस प्रकार है: “जब मैं उनके साथ था, तो मैंने तेरे नाम में उनकी रक्षा की और उन्हें सुरक्षित रखा; वह नाम जो तूने मुझे दिया है। उनमें से एक भी नहीं खोया गया, सिवाय उस एक के जो विनाश के लिए ठहराया गया था, ताकि पवित्रशास्त्र की पूर्ति हो सके।” इस प्रकार, हमारे प्रभु, जो स्वयं सत्य के साक्षात् स्वरूप हैं, वही हैं जो अपने किए गए वादों को पूरी निष्ठा के साथ पूरा करते हैं। जब यीशु ने यूहन्ना 19:30 में घोषणा की, “यह पूरा हुआ,” तो वे उस वादे को पूरा कर रहे थे जो परमेश्वर ने लगभग 4,000 साल पहले उत्पत्ति 3:15 में किया था: “मैं तेरे और स्त्री के बीच, और तेरी संतान

और उसकी संतान के बीच बैर उत्पन्न करूँगा; वह तेरे सिर को कुचलेगा, और तू उसकी एड़ी पर वार करेगा।” हमें प्रार्थना करने वाले लोग बनने का प्रयास करना चाहिए—ऐसे व्यक्ति जो उन दिव्य शिक्षाओं को अपने जीवन में उतारते हैं, जो हमने गेथसेमानी के बाग़ में यीशु की प्रार्थना के जोश, सहनशीलता और परिणाम को देखकर प्राप्त की हैं। इसलिए, मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम सभी प्रभु के हाथों के साधन बनें, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि परमपिता परमेश्वर की इच्छा पृथ्वी पर भी वैसे ही पूरी हो, जैसे वह स्वर्ग में पूरी होती है (मत्ती 6:10)।

यीशु को गिरफ्तार किया गया

[यूहन्ना 18:1-14]

जब यीशु को अपनी आसन्न मृत्यु का सामना करना पड़ा, तो उन्होंने गेथसेमनी में प्रार्थना की। प्रार्थना के *स्थान* के संबंध में, यीशु ने परमेश्वर की उपस्थिति में प्रार्थना की (लूका 22:41)। प्रार्थना की *मुद्रा* के संबंध में, यीशु घुटनों के बल बैठे, ज़मीन पर औंधे मुँह गिर पड़े, और अपना चेहरा ज़मीन से सटाकर प्रार्थना की (मत्ती 26:39; मरकुस 14:35; लूका 22:41)। प्रार्थना के *विषय* के संबंध में, यीशु ने प्रार्थना की, "फिर भी, जैसा मैं चाहता हूँ वैसा नहीं, बल्कि जैसा तू चाहता है, हे पिता, वैसा ही हो" (मरकुस 14:35-36)। प्रार्थना की *तीव्रता* के संबंध में, यीशु ने और भी अधिक लगन से प्रार्थना की, अपनी विनती में संघर्ष करते हुए और गहरी पीड़ा सहते हुए (लूका 22:44)। प्रार्थना की *निरंतरता* के संबंध में, यीशु तब तक प्रार्थना करते रहे जब तक कि परमेश्वर पिता ने उनकी प्रार्थना का उत्तर नहीं दे दिया (मत्ती 26:42, 44)। प्रार्थना के *परिणाम* के संबंध में, अपनी प्रार्थना का उत्तर पाने के बाद, यीशु निडर होकर उस दुष्ट भीड़ का सामना करने के लिए आगे बढ़े जो उन्हें और उनके ग्यारह शिष्यों को गिरफ्तार करने आई थी (मत्ती 26:46)। प्रभु की अद्भुत शक्ति (अधिकार) प्रकट हुई (यूहन्ना 18:4-6)। जब यीशु ने भीड़ से पूछा, "तुम किसे ढूँढ़ रहे हो?" तो उन्होंने उत्तर दिया, "नासरत के यीशु को।" उसी क्षण, यीशु ने घोषणा की, "मैं ही वह हूँ" [अर्थात्, "मैं ही वह हूँ जो है" (निर्गमन 3:14)]; यीशु के इन शब्दों को सुनते ही, भीड़ पीछे हट गई और ज़मीन पर गिर पड़ी। क्योंकि यीशु परमेश्वर हैं, इसलिए भीड़ उनके ईश्वरीय अधिकार—स्वयं परमेश्वर के अधिकार—से अभिभूत हो गई, जिसके कारण वे सब लड़खड़ाकर पीछे की ओर गिरे और ज़मीन पर ढेर हो गए (यूहन्ना 18:6)। जब यीशु ने परमेश्वर की इच्छा के अनुसार प्रार्थना की, तो परमेश्वर ने एक अद्भुत कार्य किया—एक ऐसा कार्य जो यीशु द्वारा की गई विशिष्ट प्रार्थनाओं से भी कहीं बढ़कर था (तुलना करें: मत्ती 6:33; 1 राजा 3:13, 18:46; इफिसियों 3:20)। परमेश्वर ने अपनी वाचा पूरी की (यूहन्ना 18:8)। भीड़ से यह कहकर, "इन लोगों [चेलों] को जाने दो" (यूहन्ना 18:8), यीशु ने उस वचन को पूरा किया कि परमेश्वर पिता ने उन्हें जितने लोग दिए थे, उनमें से वे एक को भी नहीं खोएंगे (पद 9)।

गेतसेमानी में अपनी प्रार्थना करने के बाद, यीशु को गिरफ्तार कर लिया गया। यीशु को पकड़ने कौन आया था? मत्ती, मरकुस और लूका (सिनाॉटिक सुसमाचार) के सुसमाचारों में, साथ ही यूहन्ना के सुसमाचार में दर्ज विवरणों में थोड़ा अंतर दिखाई देता है: (1) सिनाॉटिक सुसमाचार: "महायाजकों और लोगों के प्राचीनों द्वारा

भेजी गई एक बड़ी भीड़" (मत्ती 26:47); "महायाजकों, शास्त्रियों और प्राचीनों द्वारा भेजी गई एक भीड़" (मरकुस 14:43); और "महायाजक, मंदिर के पहरेदारों के अधिकारी, और प्राचीन जो उन्हें गिरफ्तार करने आए थे" (लूका 22:52)। यहाँ, "मंदिर के पहरेदारों के अधिकारी" का तात्पर्य उन सेनापतियों से है जो मंदिर की रखवाली के लिए जिम्मेदार थे। महायाजक के ठीक बाद का पद मंदिर के पहरेदारों के सेनापति का था, और उसके बाद प्राचीनों का। जबकि मत्ती (26:47) और मरकुस (14:43) यह दर्ज करते हैं कि एक बड़ी भीड़—जिसे महायाजकों और प्राचीनों [और "शास्त्रियों" (मरकुस 14:43)] ने भेजा था—यीशु को गिरफ्तार करने आई थी, लूका (22:52) यह दर्ज करते हैं कि महायाजक, मंदिर के पहरेदारों के अधिकारी, और प्राचीन स्वयं उन्हें गिरफ्तार करने आए थे। ये महायाजक, मंदिर के पहरेदारों के सेनापति, और प्राचीन वे लोग हैं जो यहूदी धार्मिक व्यवस्था का प्रतिनिधित्व करते हैं। (2) यूहन्ना का सुसमाचार: "सैनिकों की टुकड़ी और महायाजकों तथा फरीसियों की ओर से आए अधिकारी" (यूहन्ना 18:3); "सैनिकों की टुकड़ी, सेनापति, और यहूदी अधिकारी" (पद 12)। यहाँ, "सैनिकों की टुकड़ी" शब्द रोमन सैनिकों को संदर्भित करता है, जबकि "सेनापति"—1,000 सैनिकों का प्रभारी एक नेता—को रोमन सैन्य उपस्थिति के प्रतिनिधि के रूप में वर्णित किया जा सकता है। जब वे यीशु को गिरफ्तार करने आए, तो वे अपने साथ क्या लाए थे? मत्ती, मरकुस और लूका (सिनोंटिक सुसमाचार) में पाए जाने वाले विवरण यूहन्ना के विवरण से थोड़े अलग लगते हैं: (1) सिनोंटिक सुसमाचार: "तलवारें और लाठियाँ" (मत्ती 26:47); "तलवारें और लाठियाँ" (मरकुस 14:43; लूका 22:52)। (2) यूहन्ना का सुसमाचार: "लालटेन, मशालें और हथियार" (यूहन्ना 18:3)। यीशु को गिरफ्तार करने के बाद वे उन्हें किसके पास ले गए? फिर से, सिनोंटिक सुसमाचार के विवरण यूहन्ना के विवरण से कुछ हद तक अलग हैं: (1) सिनोंटिक सुसमाचार: "महायाजक कैफा" (मत्ती 26:57; मरकुस 14:54; लूका 22:54)। (2) यूहन्ना का सुसमाचार: सबसे पहले, वे उन्हें अन्नास के पास ले गए—जो महायाजक कैफा का ससुर था (यूहन्ना 18:13)। उसके बाद, वे उन्हें महायाजक कैफा के पास ले गए (पद 15)।

हालाँकि जब वह बड़ी भीड़ यीशु को गिरफ्तार करने आई थी, तब वे आसानी से बच निकल सकते थे, लेकिन उन्होंने भागना नहीं चुना। मत्ती 26:53 में यह कहा गया है: "क्या तुम्हें लगता है कि मैं अपने पिता को नहीं पुकार सकता, और वह तुरंत मेरे लिए बारह से अधिक सेनाएँ (legions) स्वर्गदूतों की उपलब्ध नहीं करा देगा?" यीशु ने पतरस से बात की—जिसने अपनी तलवार खींचकर महायाजक के सेवक मलखुस का कान काट दिया था (पद 51; यूहन्ना 18:10)—और उसे बताया कि वह परमेश्वर पिता से बारह से अधिक सेनाएँ स्वर्गदूतों की भेजने के लिए कह सकते थे, फिर भी उन्होंने ऐसा न करना ही चुना (मत्ती 26:53)। यहाँ, एक "सेना" (legion) का तात्पर्य रोमन सेना की एक इकाई से है, जिसमें कथित तौर पर लगभग 6,500 से 7,000 सैनिक होते थे। इस प्रकार, यीशु ने जिन बारह सेनाओं स्वर्गदूतों की बात की थी, उनकी संख्या लगभग 78,000 से 84,000 स्वर्गीय प्राणियों के बराबर होगी। यीशु को गिरफ्तार करने के

लिए जो बड़ी भीड़ आई थी, उसमें लगभग 3,000 लोग थे [जिसमें एक "कमांडर" (यूहन्ना 18:12)—जो 1,000 रोमन सैनिकों का प्रतिनिधित्व करता था—और साथ ही लगभग 1,500 से 2,000 महायाजक, मंदिर के रक्षक, बुजुर्ग और उनके सेवक शामिल थे; कुल मिलाकर 2,500 से 3,000 लोग]। अगर यीशु ने परमेश्वर पिता से उन बारह दूतों की टुकड़ियों को भेजने के लिए कहा होता—जिनकी कुल संख्या लगभग 78,000 से 84,000 दूत होती—तो क्या वे यीशु को गिरफ्तार करने आई 2,500 से 3,000 लोगों की उस बड़ी भीड़ से बचाने में पूरी तरह सक्षम नहीं होते? फिर, जब यीशु उस बड़ी भीड़ द्वारा पकड़े जाने से बच सकते थे—तो उन्होंने भागने का रास्ता क्यों नहीं चुना, बल्कि इसके बजाय स्वेच्छा से खुद को हिरासत में लिए जाने दिया? इसके कारण ये हैं: (1) यीशु ने परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के लिए ऐसा किया, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने प्रार्थना की थी (मत्ती 26:39, 42, 44; मरकुस 14:36, 39, 41; लूका 22:42); (2) यीशु ने उस वाचा (वादे) के वचन को पूरा करने के लिए ऐसा किया जो परमेश्वर ने किया था; और (3) यीशु ने ऐसा हमारे उद्धार को संभव बनाने के लिए किया।

इसलिए, हमें यीशु की गिरफ्तारी के लिए आभारी होना चाहिए। इसका कारण यह है कि—ठीक इसी वजह से कि यीशु को पकड़ा गया, बांधा गया, ले जाया गया, उनसे पूछताछ की गई, उन्हें कष्ट सहने पड़े, और वे क्रूस पर मरे—हमें अपनी आज़ादी मिली है और हमने उद्धार प्राप्त किया है। हमें प्रभु से अपने पूरे हृदय, आत्मा और मन से प्रेम करना चाहिए, और उन्हें प्रसन्न करने के लिए हमें उनकी इच्छा के अनुसार जीवन जीना चाहिए। मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम सभी यह संकल्प लें, "मैं प्रभु के लिए जीऊँगा।"

यीशु पर मुक़दमा (1)

[यूहन्ना 18:28–19:16]

यूहन्ना 18:28 में लिखा है: “तब वे यीशु को कैफा के यहाँ से प्रेतोरियम ले गए, और वह सुबह का समय था। लेकिन वे खुद प्रेतोरियम में दाखिल नहीं हुए, ताकि वे अशुद्ध न हो जाएँ, बल्कि इसलिए कि वे फसह का भोजन कर सकें” [(कंटेम्पररी इंग्लिश वर्शन) “सुबह-सुबह, यहूदी नेता यीशु को कैफा के घर से गवर्नर के निवास पर ले गए। हालाँकि, वे खुद गवर्नर के निवास में दाखिल नहीं हुए, ताकि वे अशुद्ध न हों और फसह का भोजन कर सकें”]। यहाँ, “वे” (पद 28) का मतलब “यहूदी नेताओं” (पद 28; कंटेम्पररी इंग्लिश वर्शन) से है— वे लोग जिन्होंने यीशु को पकड़ा और बाँधा था, उन्हें पूछताछ के लिए महायाजक कैफा के घर पर जमा हुई सनहेद्रिन परिषद के सामने पेश किया था, और, उन्हें ईश्वर-निंदा का दोषी पाकर, जिसके लिए मौत की सज़ा बनती थी, बाद में उन्हें रोमन गवर्नर पीलातुस के सामने घसीटकर ले गए; उनका इरादा उन्हें यहूदी कानून के तहत पत्थर मारकर मारने के बजाय, रोमन कानून के तहत सूली पर चढ़ाकर मरवाने का था। इसके अलावा, जहाँ बाइबल में कहा गया है, “वे यीशु को कैफा के यहाँ से प्रेतोरियम ले गए” (पद 28), वहीं *कंटेम्पररी इंग्लिश वर्शन* इसका अनुवाद इस तरह करता है, “वे यीशु को कैफा के घर से गवर्नर के निवास पर ले गए।” यहाँ, “गवर्नर का महल” (जिसे *द बाइबल फॉर मॉडर्न मैन* में “सरकारी निवास” कहा गया है) शब्द रोमन गवर्नर पीलातुस के सरकारी निवास को दर्शाता है। हालाँकि पीलातुस आम तौर पर अपने काम कैसरिया में करता था—जहाँ उसका मुख्य निवास था—लेकिन आज के पाठ, यूहन्ना 18:28 में जिस “गवर्नर के महल” का ज़िक्र है, वह खास तौर पर यरूशलेम में उसके निवास को दर्शाता है। यह वह जगह थी जहाँ पीलातुस यहूदी त्योहारों के दौरान अपने सरकारी काम करने के लिए खास तौर पर आता था; वह ऐसा इसलिए करता था ताकि व्यवस्था बनी रहे, क्योंकि उसे अंदेशा था कि लाखों—शायद दस लाख तक—यहूदी पुरुष जो पूरे इलाके से त्योहार मनाने के लिए यरूशलेम में जमा हुए थे, वे कहीं कोई विद्रोह न भड़का दें। नतीजतन, यहूदी नेताओं ने—जो धार्मिक अशुद्धि से बचना चाहते थे ताकि वे फसह के भोज में हिस्सा ले सकें—रोमन गवर्नर (जो एक गैर-यहूदी था) के घर में घुसने से मना कर दिया, और इसके बजाय गवर्नर पीलातुस को मजबूर किया कि वह उनसे मिलने के लिए बाहर आए (पद 28–29)। ये यहूदी नेता कितने धोखेबाज़, कर्मकांडी और पाखंडी थे! यही वे लोग थे—जिन्होंने बेदाग यीशु (जो फसह का सच्चा मेमना थे) को ईश्वर-निंदा के झूठे आरोपों

में फंसाया था, और उन्हें रोमन कानून के तहत सूली पर चढ़ाकर मरवाने की अपनी हताश कोशिश में, एक गैर-यहूदी रोमन गवर्नर पीलातुस के हवाले कर दिया था—और यही वे लोग थे जो खुद को धार्मिक अशुद्धि से इतनी सावधानी से बचा रहे थे, ताकि वे फसह के भोज में (जो एक हफ्ते तक चलता था) हिस्सा ले सकें। बेदाग यीशु पर विश्वास न करना ही अपने आप में एक पाप था [(यूहन्ना 16:9: “पाप के विषय में, इसलिए कि वे मुझ पर विश्वास नहीं करते”)], और उनकी मौत की साज़िश रचने की हद तक जाना तो और भी बड़ा पाप था [(19:11: “...इसलिए जिसने मुझे तुम्हारे हवाले किया है, उसका पाप कहीं ज़्यादा बड़ा है...”)]; फिर भी, इस बात से बेखबर होकर, उन्होंने गैर-यहूदी पीलातुस के दरबार (praetorium) में घुसने से मना कर दिया—एक ऐसा रवैया जिसे झूठा, कर्मकांडी और पाखंडी कहने के अलावा और कुछ नहीं कहा जा सकता।

यह प्रसंग यूहन्ना 18:29–31 में मिलता है: “इसलिए पीलातुस उनके पास बाहर आया और कहा, ‘तुम इस आदमी पर क्या आरोप लगाते हो?’ उन्होंने जवाब दिया और उससे कहा, ‘अगर यह आदमी कोई बुरा काम करने वाला न होता, तो हम इसे तुम्हारे हवाले न करते।’ तब पीलातुस ने उनसे कहा, ‘तुम इसे ले जाओ और अपने कानून के हिसाब से इसका न्याय करो।’ इसलिए यहूदियों ने उससे कहा, ‘हमारे लिए किसी को भी मौत की सज़ा देना जायज़ नहीं है।’” क्योंकि यहूदी नेताओं ने—जो बिना किसी धार्मिक अशुद्धि के फसह के भोज में हिस्सा लेना चाहते थे—गैर-यहूदी रोमन गवर्नर के दरबार में घुसने से मना कर दिया था, इसलिए पीलातुस उनके पास बाहर आया और पूछा, “तुम इस आदमी [यीशु] पर क्या आरोप लगाते हो?” (पद 28–29)। उस समय, यहूदी नेताओं ने जवाब दिया, “अगर यह आदमी [यीशु] कोई बुरा काम करने वाला न होता, तो हम इसे तुम्हारे हवाले न करते” (पद 30)। उन्होंने यीशु को “बुरा काम करने वाला” इसलिए कहा, क्योंकि उनकी नज़र में, उसने “बुरे काम” किए थे (पद 30, *कंटेम्पररी इंग्लिश वर्शन*)। खास तौर पर, यह “बुरा काम” यीशु के इस दावे से जुड़ा था कि वह “परमेश्वर का पुत्र—मसीह” है; उनके नज़रिए से, ऐसा दावा करना “ईशनिंदा” (परमेश्वर का अपमान) माना जाता था (मत्ती 26:63–66)। इसके अलावा, उनका पक्का मानना था कि यीशु के ईशनिंदा के इस धिनौने पाप की सही सज़ा “मौत की सज़ा” ही होनी चाहिए (पद 66, *द कंटेम्पररी बाइबल*)। उस समय, पीलातुस ने यहूदी नेताओं से कहा, “इसे (यीशु को) तुम खुद ले जाओ और अपने (यहूदी) कानून के हिसाब से इसका फैसला करो” (यूहन्ना 18:31)। रोमन गवर्नर पीलातुस ने ऐसा इसलिए कहा, क्योंकि वह इस मुकदमे में शामिल नहीं होना चाहता था। इसके चार कारण थे:

(1) पीलातुस के नज़रिए से, उसे नहीं लगता था कि यीशु ने कोई इतना बड़ा जुर्म किया है जिसके लिए रोमन कानून के तहत उसे सूली पर चढ़ाने की सज़ा दी जाए।

ये थे वे आरोप जो पीलातुस ने उनसे सुने: “पूरी भीड़ उठ खड़ी हुई और यीशु को पीलातुस के पास ले गई; वे उस पर आरोप लगाते हुए कहने लगे, ‘हमने पाया है कि यह आदमी हमारे लोगों को गुमराह कर रहा है, उन्हें

कैसर को टैक्स देने से मना कर रहा है, और दावा कर रहा है कि वह मसीह, यानी एक राजा है” (लूका 23:1-2)। पीलातुस का जवाब यह था: “पीलातुस ने मुख्य याजकों और भीड़ से कहा, ‘मुझे इस आदमी पर लगाए गए आरोपों में कोई दम नज़र नहीं आता’” (पद 4)।

(2) पीलातुस को अच्छी तरह पता था कि यहूदी नेताओं ने यीशु को उसके हवाले सिर्फ ईर्ष्या (जलन) की वजह से किया था।

मत्ती 27:18 (*द कंटेम्पररी बाइबल*) में लिखा है: “पीलातुस को अच्छी तरह पता था कि यहूदी नेताओं ने यीशु को उसके हवाले ईर्ष्या की वजह से किया था।”

(3) पीलातुस ने ऐसा इसलिए किया, क्योंकि उसकी पत्नी ने उससे कहा था, “उस बेकसूर आदमी (यीशु) के मामले में बिल्कुल भी मत पड़ना।” यहाँ मत्ती 27:19 का अंश दिया गया है (*The Bible for Modern Man* से): “जब पीलातुस न्याय की गद्दी पर बैठा था, तो उसकी पत्नी ने उसके पास एक दूत भेजा, जिसके साथ यह संदेश था: ‘उस निर्दोष व्यक्ति के मामले में कुछ मत करना; क्योंकि कल रात मैंने उसके कारण सपने में बहुत कष्ट उठाया है।’”

(4) ऐसा इसलिए था क्योंकि पीलातुस को एहसास हो गया था कि यीशु से पूछताछ करना और उसका न्याय करना एक बहुत ही भयानक काम था।

यहाँ यूहन्ना 19:7-8 का अंश दिया गया है: “यहूदियों ने उसे उत्तर दिया, ‘हमारा एक नियम है, और उस नियम के अनुसार उसे मरना ही चाहिए, क्योंकि उसने स्वयं को ‘परमेश्वर का पुत्र’ होने का दावा किया है।’ जब पीलातुस ने यह बात सुनी, तो वह और भी अधिक डर गया।” पीलातुस—जो एक गैर-यहूदी रोमन गवर्नर था—के दृष्टिकोण से, यह सुनकर वह भयभीत हो गया कि यहूदी नेताओं ने यीशु पर उसके सामने जो आरोप लगाया था, उसका कारण यह था कि यीशु ने स्वयं को “परमेश्वर का पुत्र” होने का दावा किया था। यहाँ यूहन्ना 19:10-11 का अंश दिया गया है: “पीलातुस ने उससे कहा, ‘क्या तुम मुझसे बात नहीं करोगे? क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हें छोड़ने का अधिकार मेरे पास है, और तुम्हें क्रूस पर चढ़ाने का अधिकार भी मेरे ही पास है?’ यीशु ने उसे उत्तर दिया, ‘तुम्हारे पास मुझ पर तब तक कोई अधिकार नहीं हो सकता था, जब तक वह तुम्हें ऊपर से न दिया गया होता; इसलिए जिस व्यक्ति ने मुझे तुम्हारे हाथों में सौंपा है, उसका पाप अधिक बड़ा है।’” पीलातुस के डरने का एक और कारण यह था कि यीशु ने कहा था: “तुम्हारे पास मुझ पर तब तक कोई अधिकार नहीं हो सकता था, जब तक वह तुम्हें ऊपर से न दिया गया होता (अर्थात्, जब तक परमेश्वर पिता ने पीलातुस को वह अधिकार न दिया होता); इसलिए जिस व्यक्ति ने मुझे तुम्हारे हाथों में सौंपा है, उसका पाप अधिक बड़ा है।” पीलातुस के दृष्टिकोण से, इन शब्दों को सुनकर वह इसलिए डर गया क्योंकि उसे एहसास

हो गया था कि यदि वह इस मुकदमे को आगे बढ़ाता है, तो वह स्वयं एक पापी बन जाएगा। यहाँ यूहन्ना 18:36-37 का अंश दिया गया है (आधुनिक कोरियाई संस्करण): “मेरा राज्य इस संसार का नहीं है। यदि मेरा राज्य इस संसार का होता, तो मेरे सेवक लड़ते ताकि मुझे यहूदियों के हाथों में न सौंपा जाए। परन्तु मेरा राज्य इस संसार का नहीं है।” “तो क्या तुम एक राजा हो?” “हाँ। जैसा तुम कहते हो, मैं एक राजा हूँ...” यीशु के ये शब्द सुनकर, पीलातुस का भय से भर जाना स्वाभाविक था।

इसलिए, रोमन गवर्नर पीलातुस ने यीशु को रिहा करने की कोशिशें कीं:

(1) पहली कोशिश: पीलातुस ने तीन बार यह ऐलान किया कि यीशु बेकसूर हैं।

यूहन्ना 18:38 में कहा गया है: “पीलातुस ने पूछा, ‘सच क्या है?’ यह कहने के बाद, वह फिर से यहूदियों के पास बाहर गया और उनसे कहा, ‘मुझे उसके खिलाफ किसी भी आरोप का कोई आधार नहीं मिला।’” यूहन्ना 19:4 में कहा गया है: “पीलातुस फिर बाहर गया और उनसे कहा, ‘देखो, मैं उसे तुम्हारे सामने ला रहा हूँ ताकि तुम्हें पता चल जाए कि मुझे उसके खिलाफ किसी भी आरोप का कोई आधार नहीं मिला।’” यूहन्ना 19:6 में कहा गया है: “जब मुख्य पुजारियों और उनके अधिकारियों ने उसे देखा, तो वे चिल्लाए, ‘सूली पर चढ़ाओ! सूली पर चढ़ाओ!’ लेकिन पीलातुस ने जवाब दिया, ‘तुम उसे ले जाओ और सूली पर चढ़ाओ। जहाँ तक मेरी बात है, मुझे उसके खिलाफ किसी भी आरोप का कोई आधार नहीं मिला।’”

(2) दूसरी कोशिश: पीलातुस ने यीशु को राजा हेरोदेस के पास भेज दिया।

लूका 23:6-7 में कहा गया है: “यह सुनकर, पीलातुस ने पूछा कि क्या वह आदमी गलील का रहने वाला है। जब उसे पता चला कि यीशु हेरोदेस के अधिकार क्षेत्र में आते हैं, तो उसने उन्हें हेरोदेस के पास भेज दिया, जो उस समय यरूशलेम में ही था।” हेरोदेस को भी यीशु में कोई दोष नहीं मिला (पद 15)। हालाँकि, यहूदी नेता वहाँ खड़े रहे और यीशु पर ज़ोरदार आरोप लगाए (पद 10)।

(3) तीसरी कोशिश: पीलातुस ने फसह के त्योहार के दौरान एक कैदी को रिहा करने की प्रथा का पालन करके यीशु को रिहा करने की कोशिश की।

यूहन्ना 18:39 में कहा गया है: “लेकिन तुम्हारी यह प्रथा है कि मैं फसह के समय तुम्हारे लिए एक कैदी को रिहा कर दूँ। क्या तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिए ‘यहूदियों के राजा’ को रिहा कर दूँ?” हालाँकि, वे ज़ोर से चिल्लाए, “इस आदमी को नहीं! बरब्बास को रिहा करो!” बरब्बास एक डाकू था (पद 40, *द बाइबल फॉर मॉडर्न पीपल*)।

(4) चौथी कोशिश: पीलातुस ने यीशु को रोमन सैनिकों के हवाले कर दिया, और उन्हें निर्देश दिया कि वे यीशु को कोड़े मारें और अन्य तरह से सताएं; यह यीशु को रिहा करने की उसकी आखिरी कोशिश थी—भले ही इसके लिए उसे लोगों की दया की भावना को जगाना पड़े। यूहन्ना 19:1-4 का अंश इस प्रकार है: "तब पीलातुस ने यीशु को पकड़ा और उसे कोड़े लगवाए। सैनिकों ने कांटों का एक मुकुट गूथा और उसे उसके सिर पर रख दिया; उन्होंने उसे एक बैंगनी रंग का चोगा भी पहनाया। उसके पास आकर, उन्होंने चिल्लाकर कहा, 'यहूदियों के राजा, तेरी जय हो!' और अपने हाथों से उसे बार-बार मारा। पीलातुस फिर बाहर गया और भीड़ से कहा, 'देखो, मैं उसे तुम्हारे सामने इसलिए ला रहा हूँ ताकि तुम्हें पता चल जाए कि मुझे उस पर लगाए गए किसी भी आरोप का कोई आधार नहीं मिला है।'" जब लोगों ने यीशु को देखा—जिसे इतनी बेरहमी से कोड़े मारे गए थे कि उसका मांस फट गया था और खून बह रहा था, जिसने कांटों का मुकुट पहना हुआ था, और जो सिर से पैर तक खून से लथपथ था—तो क्या उनके मन में उसके लिए करुणा का भाव नहीं जागा होगा? पीलातुस का इरादा यीशु की अत्यंत दयनीय दशा को भीड़ के सामने प्रदर्शित करके उसे रिहा करने का था, ताकि वह उनकी सहानुभूति प्राप्त कर सके। हालाँकि, यीशु को देखते ही, मुख्य पुजारियों और मंदिर के पहरेदारों ने अपनी पूरी ताकत से चिल्लाकर कहा, "उसे क्रूस पर चढ़ा दो! उसे क्रूस पर चढ़ा दो!" (पद 6, *द बाइबल फॉर मॉडर्न पीपल*)।

इस प्रकार, रोमन गवर्नर पीलातुस ने यीशु को रिहा करने के चार अलग-अलग प्रयास किए, फिर भी अंत में, उसके सभी प्रयास विफल रहे। यह अंश यूहन्ना 19:12 से है: "तब से पीलातुस ने यीशु को मुक्त करने की कोशिश की, लेकिन यहूदी लगातार चिल्लाते रहे, 'यदि तुम इस आदमी को जाने देते हो, तो तुम कैसर के मित्र नहीं हो। जो कोई भी खुद को राजा होने का दावा करता है, वह कैसर का विरोध करता है।'" [नोट: (लूका 23:20) "पीलातुस, जो यीशु को रिहा करना चाहता था, उसने उनसे फिर बात की।"] हालाँकि रोमन गवर्नर के रूप में पीलातुस के पास असीम शक्ति थी, फिर भी उन यहूदियों का ज़ोरदार कोलाहल अंततः भारी पड़ा [(लूका 23:23, *कंटेम्पररी इंग्लिश वर्शन*): "लेकिन वे और भी ज़ोर से चिल्लाए, और हठपूर्वक मांग करने लगे कि यीशु को क्रूस पर चढ़ाया जाए; और अंत में, उनकी आवाज़ों की ही जीत हुई।"] परिणामस्वरूप, पीलातुस यीशु को बाहर ले गया, और 'पत्थर के चबूतरे' (इब्रानी भाषा में *गब्बाथा*) नामक स्थान पर न्याय-आसन पर बैठ गया (यूहन्ना 19:13), और घोषणा की कि वह यहूदी नेताओं की मांगों को पूरा करेगा (लूका 23:24, *कंटेम्पररी इंग्लिश वर्शन*)। फिर उसने उस आदमी को रिहा कर दिया जिसकी उन्होंने माँग की थी—एक कैदी जिसे विद्रोह और हत्या के आरोप में जेल में डाला गया था—और यीशु को उनके हवाले कर दिया ताकि वे उसके साथ जैसा चाहें वैसा कर सकें (पद 25, *कंटेम्पररी इंग्लिश वर्शन*)।

हालाँकि रोमन गवर्नर पीलातुस ने यीशु को आज़ाद करने की कोशिश की, लेकिन यह परमेश्वर की इच्छा नहीं थी; इसलिए, अपने संप्रभु उद्देश्य के अनुसार, परमेश्वर ने यहूदी नेताओं की ऊँची आवाज़ों को हावी होने दिया, जिससे यीशु का क्रूस पर चढ़ना और मृत्यु हुई। यह उत्पत्ति 3:15 में पाए जाने वाले वचन की पूर्ति है—परमेश्वर का *मूल सुसमाचार* (पुराने नियम में पहली मसीही भविष्यवाणी): "और मैं तेरे और स्त्री के बीच, और तेरे वंश

और उसके वंश के बीच बैर उत्पन्न करूँगा; वह तेरे सिर को कुचलेगा, और तू उसकी एड़ी को कुचलेगा।” परमेश्वर ने “साँप” (शैतान) से कहा, “स्त्री का वंश तेरे सिर को कुचलेगा”; यहाँ, “स्त्री का वंश” यीशु मसीह को संदर्भित करता है—वह जो पवित्र आत्मा द्वारा मरियम के गर्भ में आया (मत्ती 1:18), जिसकी सगाई यूसुफ से हुई थी लेकिन अभी उससे शादी नहीं हुई थी, और जो बाद में उससे पैदा हुआ (पद 25)। इसके अलावा, परमेश्वर ने “साँप” (शैतान) से कहा, “तू उसकी एड़ी को कुचलेगा” (उत्पत्ति 3:15); इसका अर्थ यह है कि, कलवरी पर्वत पर कूस पर, शैतान अपने ही वंश (जैसे, महायाजक अन्नास और कैफा, और यहूदी नेता) का उपयोग करके यीशु मसीह को कूस पर चढ़ाएगा। कृपया प्रेरितों के काम 2:23 देखें: “उसे, जो परमेश्वर के निश्चित उद्देश्य और पूर्वज्ञान द्वारा सौंपा गया था, तुमने अधर्मी हाथों से पकड़कर, कूस पर चढ़ाया और मार डाला” [(कंटेम्पररी कोरियन बाइबिल) “इस यीशु को परमेश्वर की पूर्व-निर्धारित योजना और पूर्वज्ञान के अनुसार तुम्हारे हवाले किया गया था, और तुमने दुष्ट लोगों के हाथों का उपयोग करके उसे कूस पर चढ़ाया और मार डाला”]। परमेश्वर का पूर्व-निर्धारित उद्देश्य और पूर्वज्ञान यह था कि यीशु को अन्यजातियों—यानी “अधर्मी लोगों”—के हाथों कूस पर चढ़ाया जाएगा और मार डाला जाएगा। इस प्रकार, हालाँकि अन्यजातीय रोमन गवर्नर पीलातुस ने यीशु को रिहा करने और कूस पर उसकी मृत्यु को रोकने की पूरी कोशिश की, फिर भी, अंततः परमेश्वर की इच्छा ही पूरी हुई। इस बात ने मुझे योना अध्याय 1 में लिखी बातें याद दिला दीं। परमेश्वर की इच्छा थी कि योना—जिसने उनकी आज्ञा नहीं मानी थी—को समुद्र में फेंक दिया जाए (योना 1:12, 14); फिर भी, उन अविश्वासी नाविकों ने, योना को बचाने की कोशिश करते हुए, सृष्टिकर्ता परमेश्वर द्वारा भेजे गए “भयंकर तूफ़ान” (पद 12) का सामना किया, और जहाज़ को वापस किनारे की ओर मोड़ने के लिए अपनी पूरी ताक़त से पतवार चलाई (पद 13)। हालाँकि, जैसे-जैसे समुद्र उनके प्रति और भी ज़्यादा उग्र होता गया और वे उस पर काबू नहीं पा सके, उन्होंने “यहोवा को पुकारा और कहा, ‘हे यहोवा, हम तुझसे विनती करते हैं, इस आदमी की जान के बदले हमें नष्ट न होने दे, और हम पर निर्दोष खून का दोष न लगा; क्योंकि हे यहोवा, तूने वही किया है जो तुझे अच्छा लगा,’” और ऐसा कहकर, उन्होंने योना को उठाया और उसे समुद्र में फेंक दिया (पद 13-15)। उसी पल, यहोवा ने योना को निगलने के लिए पहले से ही एक बड़ी मछली तैयार कर रखी थी, और इस तरह उसकी जान बचा ली (पद 17)। फिर भी, अपनी ही इच्छा के अनुसार—और हमें अनंत जीवन देने के लिए—परमेश्वर ने अपने इकलौते पुत्र, यीशु मसीह को कूस पर चढ़ाए जाने और मरने दिया, और इस तरह हमें, जो अपने अपराधों और पापों के कारण आत्मिक रूप से मरे हुए थे, जीवन प्रदान किया (इफिसियों 2:1; *द मॉडर्न इंग्लिश बाइबल*)। अंततः, परमेश्वर की इच्छा के अनुसार, क्योंकि उनके इकलौते पुत्र, यीशु मसीह को कूस पर चढ़ाया गया और उनकी मृत्यु हुई, हम परमेश्वर की संतान बन गए हैं। इफिसियों 1:5 पर ध्यान दें: “उसने अपनी इच्छा की प्रसन्नता के अनुसार, यीशु मसीह के द्वारा हमें अपने पुत्र के रूप में गोद लेने के लिए पहले से ही चुन लिया था” [(*द मॉडर्न इंग्लिश बाइबल* से: “परमेश्वर ने अपनी ही इच्छा की प्रसन्नता के अनुसार, यीशु मसीह के द्वारा हमें अपनी संतान बनाने के लिए पहले से ही चुन लिया था”)]। यहाँ 1 यूहन्ना 3:1 (*द मॉडर्न इंग्लिश बाइबल*) के शब्द दिए गए हैं: “ज़रा सोचिए कि परमेश्वर पिता ने

हम पर कितना महान प्रेम बरसाया है। उस महान प्रेम के कारण, हम परमेश्वर की संतान बन गए हैं..." *द बाइबल फॉर मॉडर्न पीपल* से रोमियों 8:17 कहता है: "यदि हम परमेश्वर की संतान हैं, तो हम परमेश्वर के वारिस हैं और मसीह के साथ सह-वारिस हैं। इसलिए, यदि हमें मसीह की महिमा में सहभागी होना है, तो हमें उनके दुखों में भी सहभागी होना होगा।"

यीशु पर मुक़दमा (2)

[यूहन्ना 19:13-16]

मुक़दमे की अध्यक्षता करने वाले न्यायाधीश पीलातुस थे। यूहन्ना 19:13 में कहा गया है: “जब पीलातुस ने यह सुना, तो वह यीशु को बाहर ले आया और न्यायाधीश की कुर्सी पर बैठ गया; यह जगह ‘पत्थर का चबूतरा’ (जिसे अरमाईक भाषा में ‘गब्बाथा’ कहते हैं) कहलाती थी।” न्यायाधीश की कुर्सी पर बैठे हुए, पीलातुस—रोमन गवर्नर के तौर पर—यहूदिया प्रदेश पर शासन कर रहे थे। न्यायाधीश के तौर पर अपनी भूमिका निभाते हुए, उन्होंने यह पूरी कोशिश की कि अगर संभव हो तो यीशु पर मुक़दमा चलाने से बचा जाए। इसके चार कारण थे: (1) पहला कारण यह था कि, पीलातुस की नज़र में, उन्हें नहीं लगता था कि यीशु ने कोई इतना गंभीर अपराध किया है जिसके लिए रोमन कानून के तहत उन्हें क्रूस पर चढ़ाकर मृत्युदंड दिया जाए। भीड़ की तरफ़ से पीलातुस ने यीशु पर जो आरोप सुने, वे इस प्रकार थे: “पूरी सभा खड़ी हो गई और वे यीशु को पीलातुस के पास ले गए। और उन्होंने उस पर आरोप लगाना शुरू कर दिया, यह कहते हुए: ‘हमने इस आदमी को हमारे राष्ट्र को भड़काते हुए पाया है। यह कैसर को कर देने का विरोध करता है और दावा करता है कि वह मसीहा, यानी एक राजा है’” (लूका 23:1-2)। इस पर पीलातुस ने जवाब दिया: “तब पीलातुस ने मुख्य याजकों और भीड़ से कहा, ‘मुझे इस आदमी पर लगाए गए आरोपों में कोई सच्चाई नज़र नहीं आती’” (पद 4)। (2) दूसरा कारण यह था कि पीलातुस इस बात से भली-भांति परिचित थे कि यहूदी नेताओं ने केवल ईर्ष्या के कारण यीशु को उनके हवाले किया था। मत्ती 27:18 के *कंटेम्पररी इंग्लिश वर्शन* में लिखा है: “पीलातुस अच्छी तरह जानते थे कि यहूदी नेताओं ने ईर्ष्या के कारण ही यीशु को उनके हवाले किया था।” (3) तीसरा कारण यह था कि पीलातुस की पत्नी ने उनसे कहा था, “उस निर्दोष व्यक्ति [यीशु] के मामले में आप बिल्कुल भी हस्तक्षेप न करें।” मत्ती 27:19 (*मॉडर्न पीपल्स बाइबल* से) में लिखा है: “जब पीलातुस न्याय-आसन पर बैठे हुए थे, तब उनकी पत्नी ने एक दूत के द्वारा उन्हें यह संदेश भिजवाया: ‘उस निर्दोष व्यक्ति के मामले में आप बिल्कुल भी हस्तक्षेप न करें, क्योंकि कल रात मैंने उसके कारण अपने सपने में बहुत कष्ट उठाया है।’” (4) चौथा कारण यह था कि पीलातुस को यह एहसास हो गया था कि यीशु से पूछताछ करना और उन पर फ़ैसला सुनाना एक बहुत ही गंभीर और भयभीत करने वाला काम था। यूहन्ना 19:7-8 में कहा गया है: “यहूदियों ने उसे उत्तर दिया, ‘हमारा एक कानून है, और उस कानून के अनुसार उसे मरना चाहिए, क्योंकि

उसने खुद को परमेश्वर का पुत्र होने का दावा किया है।' जब पीलातुस ने यह बात सुनी, तो वह और भी ज़्यादा डर गया।" पीलातुस—जो एक गैर-यहूदी रोमन गवर्नर था—के नज़रिए से, वह यह सुनकर डर गया कि यहूदी नेताओं ने यीशु पर उसके सामने जो आरोप लगाया था, उसका कारण यह था कि यीशु ने खुद को "परमेश्वर का पुत्र" होने का दावा किया था। यूहन्ना 19:10-11 में लिखा है: "पीलातुस ने उससे कहा, 'क्या तुम मुझसे बात नहीं करोगे? क्या तुम नहीं जानते कि मुझे तुम्हें रिहा करने का अधिकार है और तुम्हें क्रूस पर चढ़ाने का भी अधिकार है?' यीशु ने उसे उत्तर दिया, 'तुम पर मेरा कोई अधिकार नहीं होता, जब तक कि तुम्हें यह ऊपर से न दिया गया होता; इसलिए जिसने मुझे तुम्हारे हवाले किया है, उसका पाप ज़्यादा बड़ा है।'" पीलातुस के डरने का एक और कारण यह था कि यीशु ने कहा था: "तुम पर मेरा कोई अधिकार नहीं होता, जब तक कि तुम्हें यह ऊपर से न दिया गया होता [यानी, जब तक परमेश्वर पिता ने पीलातुस को वह अधिकार न दिया होता]; इसलिए जिसने मुझे तुम्हारे हवाले किया है, उसका पाप ज़्यादा बड़ा है।" पीलातुस के दृष्टिकोण से, ये शब्द सुनकर वह डर गया, क्योंकि उसे एहसास हो गया था कि अगर उसने इस मुकदमे को आगे बढ़ाया, तो वह खुद एक पापी बन जाएगा। यूहन्ना 18:36-37 में इस प्रकार लिखा है (*द बाइबल फॉर मॉडर्न मैन* से): "मेरा राज्य इस दुनिया का नहीं है। अगर मेरा राज्य इस दुनिया का होता, तो मेरे सेवक मुझे यहूदियों के हवाले होने से बचाने के लिए लड़ते। लेकिन मेरा राज्य इस दुनिया का नहीं है।" "तो क्या तुम एक राजा हो?" "हाँ। जैसा तुम कहते हो, मैं एक राजा हूँ..." यीशु से ये शब्द सुनकर, पीलातुस खुद को डरने से रोक नहीं पाया। इस प्रकार, इन चार कारणों से, पीलातुस ने यीशु पर मुकदमा चलाने से बचने की कोशिश की; हालाँकि, जिस कारण से उसने अंततः मुकदमा आगे बढ़ाया, वह यह था कि शिकायतकर्ताओं ने अपने मामले पर बहुत ज़ोर दिया।

शिकायतकर्ताओं में महायाजक कैफा और सन्हेद्रिन परिषद के सदस्य शामिल थे। उस समय, सन्हेद्रिन परिषद इज़राइल की सर्वोच्च धार्मिक अदालत थी—वही संस्था जिसने यीशु को क्रूस पर चढ़वाने में मुख्य भूमिका निभाई थी। परिषद के पीठासीन अधिकारी महायाजक थे—विशेष रूप से यूसुफ कैफा—और उनका अधिकार बहुत अधिक था। इसकी सदस्यता में अन्य महायाजक, बुजुर्ग और शास्त्री शामिल थे (मत्ती 16:21)। जहाँ पीठासीन न्यायाधीश—रोमन गवर्नर पीलातुस—यीशु को रिहा करने का प्रयास कर रहे थे (यूहन्ना 19:12), वहीं वादी—महायाजक कैफा—ने यीशु को मृत्युदंड दिलवाने के लिए हर संभव प्रयास किया। यूहन्ना 11:50 कहता है: "तुम यह नहीं समझते कि तुम्हारे लिए यह बेहतर है कि पूरे राष्ट्र के नाश होने के बजाय एक व्यक्ति लोगों के लिए मर जाए।" ये शब्द वादी, महायाजक कैफा द्वारा कहे गए थे (पद 49); वाक्यांश "एक व्यक्ति" का संदर्भ यीशु से था, और वाक्यांश "लोगों के लिए मर जाए" कैफा के उस इरादे को दर्शाता था कि यीशु को मरवा दिया जाए। इसके पीछे ज़ाहिरा कारण यह था कि कैफा ने यह तर्क दिया कि यीशु की मृत्यु यहूदी लोगों के लिए फायदेमंद होगी—क्योंकि यह पूरे यहूदी राष्ट्र को नाश होने से बचाएगी—फिर भी वे इस तथ्य को पहचानने में असफल हो रहे थे। इसका महत्व यूहन्ना अध्याय 11 में निहित है: यह अध्याय उस चमत्कार का वर्णन करता है जिसमें यीशु ने मृत लाज़र को फिर से जीवित कर दिया था। इस

चमत्कार के कारण—और इसलिए भी कि कई यहूदियों ने, जिन्होंने यीशु के इस कार्य को देखा था, उन पर विश्वास कर लिया था (पद 45)—मुख्य याजकों और फरीसियों ने परिषद की बैठक बुलाई। उन्होंने तर्क दिया, “यदि हम उसे [यीशु को] इसी तरह आगे बढ़ने देते हैं, तो हर कोई उस पर विश्वास कर लेगा; और यदि ऐसा होता है, तो रोमन—जो उस समय यहूदी राष्ट्र पर शासन कर रहे थे—आकर हमारी ज़मीन और हमारे राष्ट्र, दोनों को छीन लेंगे” (पद 48)। हालाँकि, वादी—महायाजक कैफा—के हृदय की गहराइयों में “एक व्यक्ति”: यीशु को मार डालने का इरादा छिपा हुआ था। इसका उल्लेख यूहन्ना 11:53 में किया गया है: “इसलिए उस दिन से उन्होंने उसके प्राण लेने की साज़िश रची” [(समकालीन अंग्रेज़ी संस्करण) “उस दिन से, उन्होंने यीशु को मारने की साज़िश रचनी शुरू कर दी”]। वादी पक्ष, वास्तव में, इस बात की साज़िश रच रहा था कि यीशु को कब और कैसे मृत्युदंड दिया जाए। मरकुस 14:61–64 में इस प्रकार लिखा है: “परन्तु वह चुप रहा और उसने कोई उत्तर न दिया। फिर महायाजक ने उससे पूछा, ‘क्या तू मसीह, उस धन्य का पुत्र है?’ यीशु ने कहा, ‘मैं हूँ। और तुम मनुष्य के पुत्र को सर्वशक्तिमान के दाहिने हाथ बैठा हुआ और स्वर्ग के बादलों पर आते हुए देखोगे।’ महायाजक ने अपने कपड़े फाड़े और कहा, ‘अब हमें और गवाहों की क्या ज़रूरत है? तुमने यह ईशनिंदा सुन ली है। तुम्हारी क्या राय है?’ उन सबने उसे मृत्युदण्ड के योग्य ठहराया।” यीशु चुप रहा और झूठे गवाहों द्वारा दी गई झूठी गवाही का कोई जवाब नहीं दिया (पद 61)। उस समय, महायाजक कैफा ने यीशु से सीधे पूछा, “क्या तू मसीह, उस धन्य का पुत्र है?” [(समकालीन अंग्रेज़ी संस्करण) “क्या तू मसीह, परमेश्वर का पुत्र है?”] (पद 61)। इस प्रकार, यीशु ने उत्तर दिया, “हाँ, जैसा तू कहता है, वैसा ही है। तुम मनुष्य के पुत्र को सर्वशक्तिमान के दाहिने हाथ बैठा हुआ और स्वर्ग के बादलों पर आते हुए देखोगे” (पद 62, *मॉडर्न पीपल्स बाइबल*)। यीशु से यह उत्तर सुनकर, महायाजक कैफा ने अपने कपड़े फाड़े और चिल्लाकर कहा, “तुमने उसकी ईशनिंदा सुन ली है! तुम्हारा क्या फैसला है?” (पद 64)। इसके जवाब में, सभा ने सर्वसम्मति से घोषणा की, “वह मृत्युदण्ड का पात्र है” (पद 64, *मॉडर्न पीपल्स बाइबल*)। इस प्रकार यीशु को दोषी ठहराने के बाद, अभियोग लगाने वालों को—जिनमें महायाजक, कैफा और सनहेद्रिन के सदस्य शामिल थे—ईशनिंदा से संबंधित कानून के अनुसार, यीशु को पत्थरों से मारकर मार डालना चाहिए था; इसके बजाय, महायाजक कैफा ने उसे एक पेड़ पर लटकाकर मृत्युदण्ड देने की कोशिश की। इसका कारण यह था कि जो कोई भी पेड़ पर लटकाया जाता था, उसे परमेश्वर द्वारा शापित माना जाता था (व्यवस्थाविवरण 21:23; गलातियों 3:13); इस प्रकार, उनका इरादा इस तरीके का उपयोग करके यीशु को सार्वजनिक रूप से परमेश्वर द्वारा शापित व्यक्ति के रूप में चित्रित करना था।

इस मुकदमे में प्रतिवादी यीशु मसीह था। प्रतिवादी के रूप में, यीशु पूरी तरह से पाप-रहित था। जैसा कि इब्रानियों 4:15 में कहा गया है: “क्योंकि हमारा महायाजक ऐसा नहीं है जो हमारी कमज़ोरियों के प्रति सहानुभूति न रख सके, बल्कि हमारे पास एक ऐसा महायाजक है जिसकी हर तरह से परीक्षा हुई है, ठीक हमारी तरह—फिर भी वह पाप-रहित था।” इब्रानियों का लेखक इस बात की पुष्टि करता है कि यीशु की “हर तरह से परीक्षा हुई, ठीक हमारी तरह—फिर भी वह पाप-रहित था।” इसका अर्थ यह है कि यद्यपि यीशु को भी

ठीक वैसी ही परीक्षाओं का सामना करना पड़ा जैसा हम करते हैं, फिर भी उन्होंने उनके आगे घुटने नहीं टेके, बल्कि उन पर विजय प्राप्त की, और इस प्रकार वे पूरी तरह से पाप-रहित बने रहे। यहाँ तक कि इस संसार में उनके जन्म के समय भी—यद्यपि उनका जन्म कुंवारी मरियम के शरीर से हुआ था, जो कि एक ऐसी इंसान थीं जो पाप के अधीन थीं—फिर भी उनका गर्भधारण पवित्र आत्मा के द्वारा हुआ था (मत्ती 1:18, 20) और इसलिए उनका जन्म पाप-रहित हुआ था। यही कारण है कि यहाँ तक कि एक गैर-यहूदी रोमन गवर्नर, पीलातुस ने भी तीन बार यह घोषणा की कि यीशु पाप-रहित थे (यूहन्ना 18:38; 19:4, 6)। फिर भी, यीशु—जो कि एक प्रतिवादी थे—वास्तव में पाप के दोषी ठहराए गए। इसका यह अर्थ नहीं है कि यीशु पापी बन गए क्योंकि वे परीक्षा के आगे झुक गए थे; बल्कि, इसका अर्थ यह है कि यद्यपि वे स्वयं पाप-रहित थे, फिर भी उन्हें दोषी ठहराया गया क्योंकि परमेश्वर ने हमारे सारे पाप उन पर डाल दिए थे। यही यशायाह 53:6 का संदेश है: “...यहोवा ने हम सब के अधर्म का बोझ उसी पर डाल दिया।” और यही 2 कुरिन्थियों 5:21 का संदेश है: “क्योंकि उसने उसे, जो पाप को जानता भी न था, हमारे लिए पाप ठहराया, ताकि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएँ” [(समकालीन कोरियाई बाइबल): “परमेश्वर ने हमारे पापों का बोझ मसीह पर डाल दिया—जो पाप को जानता भी न था—ताकि मसीह में होकर, हम परमेश्वर के सामने धर्मी ठहराए जा सकें”]। इस प्रकार, यीशु एक प्रतिवादी के रूप में मुकदमे का सामना करने के लिए खड़े हुए। हालाँकि, इस परिणाम का स्रोत न तो अभियोग लगाने वाला—महायाजक कैफा—था, न ही पीठासीन न्यायाधीश—रोमन गवर्नर पीलातुस—था, और न ही कोई अन्य मनुष्य; बल्कि, यह तो स्वयं परमेश्वर थे जो उन भविष्यवाणियों को पूरा कर रहे थे जिन्हें उन्होंने पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं के माध्यम से कहा था। लूका 18:31 का संदेश यह है: “तब उसने उन बारह को एक ओर ले जाकर उनसे कहा, ‘देखो, हम यरूशलेम को जा रहे हैं, और जो कुछ भविष्यवक्ताओं ने मनुष्य के पुत्र के विषय में लिखा है, वह सब पूरा होगा।’” और मत्ती 20:18-19 का संदेश यह है: “देखो, हम यरूशलेम को जा रहे हैं, और मनुष्य का पुत्र प्रधान याजकों और शास्त्रियों के हाथ सौंपा जाएगा; और वे उसे मृत्यु-दण्ड देंगे और उसे अन्यजातियों के हाथ सौंप देंगे ताकि वे उसका ठट्ठा करें, उसे कोड़े मारें और उसे क्रूस पर चढ़ाएँ। और तीसरे दिन वह फिर जी उठेगा।” ठीक जैसा यीशु ने पहले ही बता दिया था—और भविष्यवक्ताओं के द्वारा लिखी गई सभी बातों को पूरा करते हुए—उन्हें प्रधान याजकों और शास्त्रियों के हाथ सौंप दिया गया, और उसके बाद अन्यजातियों के हाथ—विशेष रूप से रोमन राज्यपाल पीलातुस और उसके सैनिकों के हाथ—सौंप दिया गया; जिन्होंने उनका ठट्ठा किया, उन्हें कोड़े मारे और उन्हें क्रूस पर चढ़ा दिया।

मुकदमे का दिन “फसह की तैयारी का दिन” [(मॉडर्न मैन्स बाइबल) “फसह से एक दिन पहले का दिन”] था, और मुकदमे का समय “छठा घंटा” [(मॉडर्न मैन्स बाइबल) “दोपहर के आस-पास”] था। यह बात यूहन्ना

19:14 में दर्ज है: "अब यह फसह की तैयारी का दिन था, और लगभग छठा घंटा था..."। हालाँकि मत्ती, मरकुस और लूका (सिनॉटिक सुसमाचार) में दिए गए विवरण इस तथ्य के संबंध में कुछ अलग प्रतीत होते हैं, फिर भी हम—जो पवित्रशास्त्र की अचूकता को पहले से ही मानकर चलते हैं, और यह विश्वास करते हैं कि बाइबल में कोई त्रुटि नहीं है और यह अचूक परमेश्वर के पूर्ण चरित्र को दर्शाती है—हमें विनम्रतापूर्वक परमेश्वर के प्रकाशन की प्रतीक्षा करनी चाहिए। हमें तब तक प्रतीक्षा करनी चाहिए जब तक कि पवित्र आत्मा हमें उन अंशों के संबंध में समझ प्रदान न कर दे, जो मानवीय दृष्टि से एक-दूसरे के विपरीत प्रतीत होते हैं। बाइबल स्वयं अपने बारे में यह दावा करती है कि वह पूर्ण है: "यहोवा के वचन शुद्ध वचन हैं, जैसे चाँदी भट्टी में तपाकर, सात बार शुद्ध की गई हो" (भजन 12:6); "यहोवा की व्यवस्था सिद्ध है" (भजन 19:7); और "परमेश्वर का हर एक वचन खरा है" (नीतिवचन 30:5)। बाइबल की शुद्धता और पूर्णता के संबंध में इन पदों में किए गए दावे पूर्ण कथन हैं। इसके अलावा, बाइबल अपने रचयिता—परमेश्वर पवित्र आत्मा—को दर्शाती है। परमेश्वर ने मानवीय लेखकों का उपयोग करके, ईश्वरीय प्रेरणा की प्रक्रिया के माध्यम से पवित्रशास्त्र को लिखवाया: "संपूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है" (2 तीमुथियुस 3:16; 2 पतरस 1:21; तुलना करें यिर्मयाह 1:2)।

मुकदमे का परिणाम एक ऐसा फैसला था जिसमें यीशु को क्रूस पर चढ़ाए जाने की सज़ा सुनाई गई। जब पीलातुस—रोमी राज्यपाल जो न्याय-आसन पर बैठकर सुनवाई कर रहा था—ने वादियों से (अर्थात् मुख्य याजकों, प्राचीनों, शास्त्रियों और अन्य यहूदियों से) कहा, "देखो, तुम्हारा राजा!" (यूहन्ना 19:14), तो उन्होंने अपनी पूरी ताकत से चिल्लाते हुए कहा, "इसे मार डालो! इसे क्रूस पर चढ़ा दो!" (पद 15)। तब पीलातुस ने उनसे पूछा, "क्या मैं तुम्हारे राजा को क्रूस पर चढ़ा दूँ?" जिस पर मुख्य याजकों ने उत्तर दिया, "रोमी सम्राट के अलावा हमारा कोई राजा नहीं है" (पद 15)। नतीजतन, पिलातुस ने आखिरकार यीशु को उन्हें सौंप दिया ताकि उन्हें सूली पर चढ़ाया जा सके (पद 16)। इसके परिणामस्वरूप, यीशु को सूली पर चढ़ाया गया और उनकी मृत्यु हो गई। यह उत्पत्ति 3:15 की पूर्ति है—परमेश्वर का "मूल सुसमाचार" (पुराने नियम में पहली मसीही भविष्यवाणी): "मैं तेरे और स्त्री के बीच, और तेरे वंश और उसके वंश के बीच बैर उत्पन्न करूँगा; वह तेरे सिर को कुचलेगा, और तू उसकी एड़ी को कुचलेगा।" परमेश्वर ने "साँप" (शैतान) से घोषणा की, "स्त्री का वंश तेरे सिर को कुचलेगा"; यहाँ, "स्त्री का वंश" यीशु मसीह को संदर्भित करता है—जो पवित्र आत्मा द्वारा मरियम के गर्भ में आए (मत्ती 1:18), जिसकी सगाई यूसुफ से हो चुकी थी लेकिन अभी उससे शादी नहीं हुई थी—और बाद में उसी से उनका जन्म हुआ (पद 25)। इसके अलावा, परमेश्वर ने "साँप" (शैतान) से कहा, "तू उसकी एड़ी को कुचलेगा" (उत्पत्ति 3:15); इसका अर्थ शैतान को संदर्भित करता है—जो अपने वंशजों (जैसे, महायाजक अन्नास और कैफा, और यहूदी नेताओं) के माध्यम से कार्य करते हुए—यीशु मसीह को कलवरी पर्वत पर सूली पर कीलों से जड़ देता है। इस प्रकार, हमें बचाने की अपनी ईश्वरीय योजना के अनुसार, परमेश्वर ने हमारे सभी पापों को निष्पाप यीशु पर डाल दिया और उन्हें सूली पर चढ़ाए जाने के लिए सौंप दिया।

गोलगोथा के रास्ते पर यीशु (1)

[लूका 23:26–32]

लूका 23:26 में लिखा है: “जब वे यीशु को ले जा रहे थे, तो उन्होंने साइमन नाम के एक आदमी को पकड़ लिया—जो कुरेनी का रहने वाला था और गाँव से आ रहा था—और उस पर सलीब रख दी ताकि वह उसे उठाकर यीशु के पीछे-पीछे चले” [(समकालीन कोरियाई बाइबल) “जब वे यीशु को ले जा रहे थे, तो उन्होंने साइमन को पकड़ लिया—जो कुरेनी का रहने वाला था और गाँव से आ रहा था; उन्होंने उस पर सलीब रख दी और उसे यीशु के पीछे चलने पर मजबूर किया”]। मरकुस 15:21–22 में लिखा है: “ठीक उसी समय, कुरेनी का रहने वाला साइमन नाम का एक आदमी—जो सिकंदर और रूफस का पिता था—गाँव से आते हुए वहाँ से गुज़र रहा था। उन्होंने उसे सलीब उठाने पर मजबूर किया, और वे यीशु को गोलगोथा नाम की जगह पर ले गए (जिसका मतलब है ‘खोपड़ी की जगह’)।” यहाँ, “गोलगोथा” (मत्ती 27:33; मरकुस 15:22; यूहन्ना 19:17) के नाम से जानी जाने वाली जगह, उस जगह से लगभग 700 मीटर दूर बताई जाती है जहाँ यीशु पर मुक़दमा चला था। इस जगह को “खोपड़ी की जगह” (मत्ती 27:33; मरकुस 15:22) या “खोपड़ी नाम की जगह (इब्रानी में, गोलगोथा)” (यूहन्ना 19:17) कहने की वजह यह है कि, जब ऊपर से देखा जाता था, तो उस जगह की बनावट इंसानी खोपड़ी जैसी दिखती थी। मुक़दमे के दौरान मौत की सज़ा सुनाए जाने के बाद, यीशु को सलीब पर चढ़ाकर मौत की सज़ा देने के लिए गोलगोथा ले जाया गया। गोलगोथा की ओर यीशु की यात्रा के दौरान, तीन खास घटनाएँ हुई: (1) कुरेनी के साइमन को यीशु के लिए उनकी सलीब उठाने पर मजबूर किया गया (लूका 23:26); (2) जब लोगों और औरतों की भीड़ रोते-बिलखते हुए यीशु के पीछे-पीछे चली (पद 27), तो यीशु ने उनकी ओर मुड़कर उनसे बात की (पद 28–31); और (3) दो और अपराधी, जिन्हें भी मौत की सज़ा सुनाई गई थी, यीशु के साथ-साथ ले जाए गए (पद 32)। आज के पाठ—

लूका 23:26—में, सर्वनाम “वे” उस भीड़ को संदर्भित करता है जो यीशु को क्रूस पर चढ़ाने के लिए ज़िम्मेदार थी (विशेष रूप से, रोमन सैनिक)। वाक्यांश, “जब वे यीशु को ले जा रहे थे... उन्होंने क्रूस को उन पर लाद दिया...” उस युग की प्रथा को दर्शाता है, जिसमें एक दोषी अपराधी से यह अपेक्षा की जाती थी कि वह अपने क्रूस को स्वयं ही वध-स्थल तक ले जाए (पार्क यून-सन के अनुसार)। हालाँकि, रोमन सैनिकों ने कुरेने के साइमन को पकड़ लिया और उसे यीशु के स्थान पर क्रूस उठाने के लिए विवश किया। “साइमन”

नाम का अर्थ है "ईश्वर उत्तर देते हैं"; चूँकि उस समय इसे एक शुभ नाम माना जाता था, इसलिए यह लोगों के बीच एक अत्यंत प्रचलित नाम था। उदाहरण के लिए, यदि कोई यीशु के बारह प्रेरितों के नामों पर दृष्टि डाले, तो उसे "साइमन (जिसे पतरस भी कहा जाता है)" और "साइमन ज़ीलॉट" (मत्ती 10:2, 4) — दोनों ही नाम मिलते हैं। क्योंकि "साइमन" नाम इतना अधिक प्रचलित था, इसलिए एक व्यक्ति को दूसरे से अलग करने हेतु, प्रायः इस नाम के पूर्व कोई भौगोलिक अथवा वर्णनात्मक उपाधि जोड़ दी जाती थी [उदाहरणार्थ, "साइमन ज़ीलॉट" (पद 4)—जहाँ "ज़ीलॉट" उस विशिष्ट साइमन की पहचान के रूप में प्रयुक्त हुआ है]। वाक्यांश "साइमन नामक एक व्यक्ति, जो कुरेने का निवासी था" (लूका 23:26) में, "कुरेने" उस क्षेत्र को संदर्भित करता है जहाँ साइमन निवास करता था; विशेष रूप से, कुरेने का यह क्षेत्र लीबिया की राजधानी था—एक ऐसा राष्ट्र जो मिस्र के दक्षिण में स्थित था [(प्रेरितों के काम 2:10): "...मिस्र और लीबिया के वे भाग जो कुरेने के निकट हैं..."]। कुरेने उत्तरी अफ्रीका के भूमध्यसागरीय तट पर स्थित एक नगर था, जो वर्तमान लीबिया के त्रिपोली नगर के समतुल्य है (पार्क यून-सन के अनुसार)। यह कुरेने का साइमन ही था जिसने फसह का पर्व मनाने हेतु लीबिया से यरूशलेम तक की वह सुदीर्घ यात्रा—लगभग 270 से 280 किलोमीटर की दूरी—तय की थी (एक ऐसी यात्रा जिसमें संभवतः लगभग एक माह का समय लगा होगा)। तथापि, यदि हम आज के पाठ—लूका 23:26—पर दृष्टि डालें, तो उसमें यह वर्णित है कि रोमन सैनिकों ने, कुरेने के साइमन को ग्रामीण अंचल से आते हुए देखकर, उसे "पकड़ लिया"। मत्ती और मरकुस के सुसमाचारों में, इस्तेमाल किया गया शब्द "पकड़ा" नहीं, बल्कि "मजबूर किया" है: (मत्ती 27:32) "जब वे बाहर निकले, तो उन्हें कुरेने का एक आदमी मिला, जिसका नाम शमौन था, और उन्होंने उसे यीशु का क्रूस उठाने के लिए मजबूर किया"; (मरकुस 15:21) "कुरेने का एक आदमी, शमौन (सिकंदर और रूफुस का पिता), गाँव से शहर की ओर आ रहा था, और उन्होंने उसे क्रूस उठाने के लिए मजबूर किया।" शमौन का यीशु की जगह उनका क्रूस उठाने का कोई इरादा नहीं था। हालाँकि वह ऐसा करना नहीं चाहता था, फिर भी रोमन सैनिकों ने उसे पकड़ लिया और उसे क्रूस उठाने के लिए मजबूर किया; इस प्रकार, शमौन ने यीशु का क्रूस "मजबूरी में" उठाया। यहाँ जो सवाल उठता है, वह यह है: "क्या शमौन का यीशु का क्रूस उठाने का काम—भले ही मजबूरी में किया गया हो—गोलगोथा में वध-स्थल तक ले जाना, सचमुच यीशु के लिए एक मदद थी?" कई टीकाकार इस घटना की व्याख्या इस तरह करते हैं कि, ठीक इसलिए क्योंकि शमौन ने क्रूस उठाया—भले ही अनिच्छा से—उसने यीशु को सहायता प्रदान की; परिणामस्वरूप, उसे और उसके परिवार को आशीर्ष मिली, और अंततः उन्होंने यीशु पर विश्वास किया और कलीसिया में विशिष्ट सेवा की। हालाँकि, डॉ. पार्क यून-सन कुछ अलग ही व्याख्या प्रस्तुत करते हैं। उनका तर्क है कि शमौन का मजबूरी में यीशु का क्रूस उठाने का काम, वास्तव में, यीशु के लिए कोई मदद नहीं थी। इसका कारण दो गुना है: पहला, क्योंकि यीशु परमेश्वर हैं, और परमेश्वर को मनुष्यों से किसी सहायता की आवश्यकता नहीं होती; और दूसरा, क्योंकि प्रायश्चित का कठिन कार्य एक ऐसा काम था जिसे केवल यीशु ही पूरा कर सकते थे, और कोई अन्य व्यक्ति—पापी होने के कारण—इसमें कोई भी पुण्य योगदान नहीं दे सकता था। शमौन ने यीशु की सहायता नहीं की; बल्कि, उसे उसी भीड़ की सहायता करने के लिए मजबूर किया गया था जो उस समय उन्हें क्रूस पर चढ़ा रही थी।

बाइबल हमें "मजबूरी में" काम करने का निर्देश नहीं देती। मजबूरी में काम करना भटक जाना है। परमेश्वर की इच्छा है कि हम प्रसन्नता से, आनंदित हृदय से और इच्छुक आत्मा के साथ काम करें। इस बात की पुष्टि निर्गमन 35:21 और 29 में की गई है: "और हर वह व्यक्ति जिसका हृदय उसे प्रेरित करता था, और हर वह व्यक्ति जिसकी आत्मा उसे उकसाती थी, वे सब आए और प्रभु के लिए भेंट लाए—मिलाप के तम्बू के काम के लिए, उसकी समस्त सेवा के लिए, और पवित्र वस्त्रों के लिए... पुरुष और स्त्रियाँ—वे सभी जिनका हृदय उन्हें प्रेरित करता था कि वे उस काम के लिए कुछ भी लाएँ जिसे प्रभु ने मूसा के द्वारा करवाने की आज्ञा दी थी—वे सब उसे प्रभु के लिए स्वेच्छा-भेंट के रूप में लाए।" इसके अलावा, निर्गमन 36:3 और 5 में पाए जाने वाले शब्दों पर विचार करें: "उन्होंने मूसा से वे सभी भेंटें ग्रहण कीं जो इस्राएली पवित्रस्थान के निर्माण-कार्य को पूरा करने के लिए लाए थे... परन्तु लोग सुबह-दर-सुबह स्वेच्छा-भेंटें लाते ही रहे... लोग उस काम के लिए बहुत अधिक सामग्री ला रहे हैं जिसे करने की आज्ञा प्रभु ने दी थी—आवश्यकता से भी कहीं अधिक।" जब हम प्रभु के कार्य में संलग्न होते हैं, तो हमें ऐसा किसी विवशता के अधीन होकर नहीं, बल्कि एक आनंदित और इच्छुक हृदय के साथ करना चाहिए। मैं प्रार्थना करता हूँ कि, आज से ही, आप प्रभु के कार्य को आनंद और तत्परता की भावना के साथ पूरा करने का दृढ़ संकल्प करेंगे।

गोलगोथा के रास्ते पर यीशु (2)

[लूका 23:26-32]

पिछले हफ्ते की बुधवार की प्रार्थना सभा के दौरान, "गोलगोथा के रास्ते पर यीशु (1)" शीर्षक के तहत, हमने गोलगोथा के रास्ते पर हुई घटनाओं में से पहली घटना पर मनन किया था: वह घटना जिसमें कुरेने के शमौन को यीशु की जगह उनका क्रूस उठाने के लिए मजबूर किया गया था। आज का धर्मग्रंथ का अंश लूका 23:26 से लिया गया है: "जब वे उसे ले जा रहे थे, तो उन्होंने एक आदमी, कुरेने के शमौन को पकड़ लिया, जो गाँव से आ रहा था, और उस पर क्रूस रख दिया, ताकि वह यीशु के पीछे-पीछे उसे उठाकर चले।" कुरेने का शमौन यरूशलेम आया हुआ था; वहाँ, रोमन सैनिकों ने उसे पकड़ लिया और उसकी मर्जी के खिलाफ उसे क्रूस उठाने के लिए मजबूर किया। इस क्रूस में एक आड़ी लकड़ी और एक खड़ी लकड़ी (या खंभा) होती थी; इसकी बनावट के बारे में दो मुख्य सिद्धांत प्रचलित हैं। एक सिद्धांत यह कहता है कि खड़ी लकड़ी तो पहले से ही फाँसी की जगह पर खड़ी होती थी, और जिस अपराधी को सज़ा मिली होती थी, वह सिर्फ़ आड़ी लकड़ी उठाकर ले जाता था—जिसका वज़न लगभग 20 किलोग्राम बताया जाता है। बेशक, गोलगोथा का रास्ता ऊबड़-खाबड़ और चढ़ाई वाला था; फिर भी, तीस साल के आस-पास की उम्र के किसी आदमी के लिए—जैसा कि यीशु थे—इतना भारी क्रूस उठाना शायद शारीरिक रूप से मुमकिन रहा होगा। हालाँकि, यीशु ने भी दूसरे सज़ा पाए हुए कैदियों की तरह, क्रूस पर चढ़ाए जाने की प्रक्रिया के तहत कोड़ों की भयानक मार सही थी, लेकिन उन्होंने दूसरे कैदियों के मुकाबले कहीं ज़्यादा तकलीफ़ें झेली थीं। उन्होंने गेथसेमनी के बाग़ में प्रार्थना करते हुए अपनी सारी जीवन-शक्ति खर्च कर दी थी, और पूरी रात अन्नास, कैफ़ा, सनहेद्रिन परिषद और पीलातुस की अदालत में पूछताछ और मुक़दमे का सामना करते हुए बिताई थी। नतीजतन, क्योंकि वे शारीरिक रूप से इतने कमज़ोर हो चुके थे कि ऐसा लग रहा था कि वे गोलगोथा में फाँसी की जगह तक पहुँच ही नहीं पाएँगे, इसलिए रोमन सैनिकों ने कुरेने के शमौन को पकड़ लिया और उसे यीशु की जगह उनका क्रूस उठाने के लिए मजबूर किया, और उसे अपने पीछे-पीछे चलने का आदेश दिया। फिर भी, जब यीशु गोलगोथा की ओर जा रहे थे, तो उन्होंने एक भी शब्द नहीं कहा—सिवाय उस संदेश के जो लूका 23:28-31 में दर्ज है, जिसे उन्होंने लोगों को—और विशेष रूप से, अपने पीछे चल रही स्त्रियों को—संबोधित किया था; और यह तब तक चलता रहा जब तक वे मृत्युदंड स्थल पर नहीं पहुँच गए। क्रूस पर कीलों से जड़े जाने के बाद भी, वे तीन घंटे तक मौन रहे, और उस पीड़ा की पूरी तीव्रता को सहन करते रहे; और उस घोर अंधकार के तीन घंटों के दौरान, उन्होंने परमपिता परमेश्वर द्वारा त्याग दिए जाने की असहनीय पीड़ा को भोगा। क्या यह सच हो

सकता है कि इसी यीशु में इतनी शक्ति नहीं थी कि वे अपना क्रूस पिलातुस के न्याय-भवन से—जहाँ उनसे पूछताछ की गई थी—लेकर गोलगोथा स्थित मृत्युदंड स्थल तक स्वयं ढोकर ले जा सकें? बहुत से लोग पूछते हैं: "यदि कोई व्यक्ति क्रूस उठाता है—भले ही वह केवल विवशता में ही क्यों न हो—तो क्या यह कार्य विश्वास की ओर ले जाएगा और इसके परिणामस्वरूप उसके पूरे परिवार का उद्धार हो जाएगा?" हालाँकि, लोगों को विवशता में कार्य करने के लिए प्रेरित करने के बजाय, हमें उन्हें एक ऐसे हृदय के साथ क्रूस उठाने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए जो आनंद और कृतज्ञता से भरा हो, और ऐसा प्रार्थना की भावना के साथ किया जाना चाहिए। जब हम ऐसा करते हैं, तो यह परमेश्वर को कहीं अधिक प्रसन्न करने वाला होता है। इसलिए, आइए हम अपने क्रूसों को अनिच्छा से न उठाएँ, बल्कि उन्हें स्वेच्छा से—आनंदित और कृतज्ञ हृदयों के साथ—उठाएँ, जिस प्रकार हम प्रभु का अनुसरण करते हैं।

आज, मैं गोलगोथा की ओर जाने वाले मार्ग पर घटित घटनाओं में से दूसरी घटना पर विचार करना चाहूँगा: वे लोग जो यीशु के पीछे-पीछे चल रहे थे। आज के लिए हमारा पाठ लूका 23:27 से लिया गया है: "लोगों की एक बड़ी भीड़ उनके पीछे-पीछे चल रही थी, जिसमें ऐसी स्त्रियाँ भी शामिल थीं जो उनके लिए शोक मना रही थीं और विलाप कर रही थीं।" स्त्रियों की इस विशाल भीड़ को संबोधित करते हुए, यीशु ने कहा, "हे यरूशलेम की पुत्रियों" (पद 28)। वास्तव में, ऐसी स्त्रियाँ थीं जो यीशु का अनुसरण करती थीं। यह अंश लूका 8:1-3 से है: "इसके बाद, यीशु एक नगर से दूसरे नगर और एक गाँव से दूसरे गाँव की यात्रा करते रहे, और परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाते रहे। बारह प्रेरित उनके साथ थे, और उनके साथ कुछ ऐसी स्त्रियाँ भी थीं जो दुष्ट आत्माओं और रोगों से चंगी की गई थीं: मरियम (जिसे मगदलीनी कहा जाता था), जिससे सात दुष्ट आत्माएँ निकल गई थीं; योअन्ना, जो हेरोदेस के गृह-प्रबंधक कूज़ा की पत्नी थी; सूज़न्ना; और कई अन्य स्त्रियाँ। ये स्त्रियाँ अपने स्वयं के साधनों से उनकी सेवा-सहायता करती थीं।" ये औरतें यीशु के पीछे-पीछे चलती थीं, ठीक वैसे ही जैसे चले चलते थे (जिनमें से ज़्यादातर गलील के थे), और वे अपने ही साधनों से प्रभु की सेवा करती थीं। हालाँकि, आज के पाठ—लूका 23:27—में जिन औरतों का ज़िक्र है, जो यीशु के साथ गोलगोथा में सूली की जगह तक जाते हुए अपनी छाती पीटती और ज़ोर-ज़ोर से रोती थीं, वे वे औरतें नहीं थीं जिनका ज़िक्र लूका 8:1-3 में है; वे औरतों का एक अलग समूह थीं। इससे यह सवाल उठता है: क्या इन औरतों के आँसुओं से—जो आज के पाठ (लूका 23:27) में बताए अनुसार, गहरे दुख में अपनी छाती पीटते हुए यीशु के पीछे-पीछे चल रही थीं—यीशु को उनके दुख में कोई तसल्ली मिली? इस सवाल का जवाब यह है कि इन औरतों के आँसुओं से यीशु को न तो कोई तसल्ली मिली और न ही कोई मदद। इसकी वजह यह है कि ये औरतें यह नहीं समझ पाईं कि यीशु *क्यों* सूली उठा रहे थे। यीशु यह सूली *हमारे* लिए उठा रहे थे; अगर उन्हें यह लगता कि वे यह सूली अपने *खुद* के पापों की वजह से उठा रहे हैं, तो उनके आँसुओं से यीशु को भला क्या तसल्ली मिल सकती थी? उन्होंने यीशु की बिल्कुल भी मदद नहीं की। एक पादरी का मानना है कि यह व्यवहार बस यहूदियों में अंतिम संस्कार के समय रोने-पीटने का एक आम रिवाज़ था। दूसरे शब्दों में, उनका तर्क है कि इन

औरतों ने शायद बस अपनी आदत के मुताबिक ही आँसू बहाए थे। अगर सच में ऐसा ही था, तो उनके आँसुओं से यीशु को निश्चित रूप से कोई तसल्ली नहीं मिली होगी।

आज का धर्मग्रंथ का अंश लूका 23:28 से लिया गया है: “यीशु ने उनकी ओर मुड़कर कहा, ‘हे यरूशलेम की पुत्रियों, मेरे लिए मत रोओ; अपने लिए और अपने बच्चों के लिए रोओ।’” ये शब्द यीशु ने उन स्त्रियों से कहे थे जो उनके पीछे-पीछे चल रही थीं, और अपनी छाती पीटते हुए फूट-फूटकर रो रही थीं। यीशु ने उनसे कहा, “अपने लिए और अपने बच्चों के लिए रोओ।” यीशु ने ऐसा क्यों कहा? पद 29 इसकी व्याख्या करता है: “क्योंकि वे दिन आ रहे हैं जब लोग कहेंगे, ‘धन्य हैं वे बाइबल स्त्रियाँ, वे गर्भ जिन्होंने कभी जन्म नहीं दिया, और वे स्तन जिन्होंने कभी दूध नहीं पिलाया!’” यह तथ्य कि लोग एक स्त्री की गर्भधारण करने की असमर्थता को एक आशीष मानेंगे, यह दर्शाता है कि कुछ बहुत ही गलत होने वाला है। क्या हम आम तौर पर एक स्त्री की गर्भधारण करने की असमर्थता को आशीष की कमी—या यहाँ तक कि एक अभिशाप नहीं मानते? फिर भी यीशु ने घोषणा की कि वह बाइबल स्त्री—साथ ही वह गर्भ जिसने कभी बच्चे को जन्म नहीं दिया (क्योंकि वह गर्भधारण नहीं कर सका) और वे स्तन जिन्होंने कभी दूध नहीं पिलाया (क्योंकि कोई बच्चा पैदा नहीं हुआ)—धन्य हैं। क्या यह सचमुच एक आशीष है? फिर भी, यीशु ने कहा कि ऐसा दिन वास्तव में आएगा। पद 30 कहता है: “उस समय लोग पहाड़ों से कहेंगे, ‘हम पर गिर पड़ो!’ और पहाड़ियों से, ‘हमें ढक लो!’” यहाँ, “वह समय” उन्हीं “दिनों” को संदर्भित करता है जिनका उल्लेख पद 29 में किया गया है। लूका 19:41-44 का अंश कहता है: “जब वह पास आया और नगर को देखा, तो वह उस पर रोया और कहा, ‘काश, तुम भी, हाँ तुम भी, आज के दिन यह जान पातीं कि तुम्हें शांति किस बात से मिलेगी—परन्तु अब यह तुम्हारी आँखों से छिपा हुआ है। तुम पर वे दिन आएँगे जब तुम्हारे शत्रु तुम्हारे विरुद्ध एक तटबंध बनाएँगे, तुम्हें घेर लेंगे, और तुम्हें हर ओर से कसकर बंद कर देंगे। वे तुम्हें ज़मीन पर पटक देंगे—तुम्हें और तुम्हारी दीवारों के भीतर के बच्चों को। वे एक पत्थर पर दूसरा पत्थर भी नहीं छोड़ेंगे, क्योंकि तुमने उस समय को नहीं पहचाना जब परमेश्वर तुम्हें बचाने के लिए आया था।” तो फिर, यीशु ने लूका 23:29 में ऐसा क्यों कहा कि जो गर्भधारण नहीं कर सकतीं, वे गर्भ जिन्होंने जन्म नहीं दिया, और वे स्तन जिन्होंने दूध नहीं पिलाया—वे धन्य हैं? इसका कारण यह है कि, क्योंकि लूका 19:41-44 में बताई गई विपत्तियाँ—दुख और विनाश—नज़दीक आ रही थीं, ऐसे समय में कोई संतान न होना या छोटा परिवार होना एक बड़ा आशीर्वाद माना जाता। जब यीशु यरूशलेम में प्रवेश कर रहे थे, तो उन्होंने शहर की ओर देखा और रो पड़े, क्योंकि उन्हें उसका आने वाला विनाश पहले से ही दिख गया था। इसका कारण यह था कि वहाँ के लोग दुष्ट थे और उन्होंने बहुत से बुरे काम किए थे। यीशु के ये शब्द कहने के लगभग चालीस साल बाद, लूका 19:43-44 में पाई जाने वाली भविष्यवाणी पूरी हुई: “वे दिन तुम पर आएँगे जब तुम्हारे दुश्मन तुम्हारे खिलाफ एक ऊँचा टीला बनाएँगे, तुम्हें घेर लेंगे और तुम्हें चारों ओर से फँसा लेंगे। वे तुम्हें ज़मीन पर पटक देंगे—तुम्हें और तुम्हारी दीवारों के भीतर रहने वाले बच्चों को। वे एक पत्थर पर दूसरा पत्थर भी नहीं छोड़ेंगे, क्योंकि तुमने उस समय को नहीं पहचाना जब परमेश्वर तुम्हें बचाने के लिए आया था।” यहाँ, “तुम्हारे दुश्मन” का मतलब रोमन सेना से है, और “टीला” का मतलब यरूशलेम के खिलाफ बनाए गए घेराबंदी के कामों से है—एक ऐसा शहर जो चारों ओर से ऊँची चट्टानों के ऊपर एक प्राकृतिक किले की तरह खड़ा था। यह किला एक गढ़ था जो मज़बूत पत्थर की दीवारों और ऊँची निगरानी मीनारों से घिरा हुआ था,

और सुरक्षा के लिए एक के ऊपर एक कई परतों वाली दीवारों से और भी मज़बूत बनाया गया था। इसके अलावा, क्योंकि यरूशलेम में मंदिर भी दीवारों की दोहरी कतार से घिरा हुआ था—जिससे रोमन सैनिकों के लिए सुरक्षा घेरा तोड़ना बिल्कुल असंभव था—इसलिए उन्होंने एक “टीला” बनाने का सहारा लिया (या, जैसा कि *मॉडर्न मैन बाइबल* में कहा गया है, “घेराबंदी के लिए एक ढलान बनाना”)। दूसरे शब्दों में, उन्होंने एक कृत्रिम पहाड़ी बनाई। फिर उन्होंने यरूशलेम को चारों ओर से पूरी तरह घेर लिया। इसके परिणामस्वरूप, यरूशलेम शहर के अंदर फँसे लोगों के पास खाने का सारा सामान पूरी तरह खत्म हो गया। नतीजतन, वे भूख से मरने लगे, और कुछ तो यहाँ तक गिर गए कि उन्होंने अपने ही बच्चों को खाना शुरू कर दिया। यह सचमुच कितनी दयनीय और दुखद स्थिति थी! आज का धर्मग्रंथ का अंश लूका 23:30 से लिया गया है: “तब लोग पहाड़ों से कहेंगे, ‘हम पर गिर पड़ो!’” और पहाड़ों से कहेंगे, ‘हमें ढक लो!’” उस समय, यरूशलेम के अंदर रहने वाले लोग—यानी यहूदी—इतनी गहरी पीड़ा में थे कि, आत्महत्या करने में असमर्थ होने के कारण (क्योंकि ऐसा करने से उन्हें नरक की सज़ा मिलती), वे एक ऐसे बिंदु पर पहुँच गए थे जहाँ वे यह ज़्यादा पसंद करते कि पहाड़ उन पर गिर पड़ें, और उन्हें अपने मलबे के नीचे कुचलकर मार डालें। पद 31 कहता है: “क्योंकि यदि लोग हरे पेड़ के साथ ऐसा करते हैं, तो सूखे पेड़ के साथ क्या होगा?” यहाँ, “हरा पेड़” धर्मी यीशु का प्रतीक है, जबकि “सूखा पेड़” दुष्टों—विशेष रूप से यरूशलेम के अंदर रहने वाले उन यहूदियों—को संदर्भित करता है, जो यीशु का अनुसरण करने के बावजूद, अंततः अधर्मी ही रहे। यहाँ तक कि रोमन गवर्नर पीलातुस भी, जिसने यीशु से पूछताछ की और उनके मुक़दमे की अध्यक्षता की, जानता था कि यीशु निर्दोष थे; उसने उन्हें रिहा करने का प्रयास किया, लेकिन अंत में, उसने यीशु को क्रूस पर चढ़ाए जाने के लिए सौंप दिया। यदि धर्मी यीशु—वह “हरा पेड़”—को भी क्रूस उठाना पड़ा, तो रोमनों के दृष्टिकोण से, *तुम* यहूदियों—उन दुष्ट “सूखे पेड़ों”—पर कैसी विपत्ति नहीं टूटेगी? (पद 31, *द कंटेम्पररी बाइबल*)। इसीलिए, आज के अंश—लूका 23:28—में यीशु ने कहा, “मेरे लिए मत रोओ, बल्कि अपने और अपने बच्चों के लिए रोओ।” जिन लोगों ने यीशु के इन शब्दों पर ध्यान दिया—प्रेरितों के मार्गदर्शन का अनुसरण करते हुए—और अपने, अपने बच्चों और यरूशलेम के लिए रोए, वे इस विनाश से बच गए। यरूशलेम की कलीसिया ने अपने और अपने बच्चों के लिए रोया और प्रार्थना की। अपने नेताओं द्वारा प्राप्त एक ईश्वरीय प्रकाशन पर कार्य करते हुए, उन्होंने युद्ध छिड़ने से पहले ही यरूशलेम छोड़ दिया, और जॉर्डन के पूर्व में स्थित एक क्षेत्र में शरण ली जिसे पेरिया के नाम से जाना जाता है—विशेष रूप से पेला नामक एक शहर में—जहाँ वे अंततः बस गए (इंटरनेट स्रोत)। इसके बाद ही रोमन सेनापति टाइटस ने यरूशलेम की घेराबंदी की, उस पर कब्ज़ा किया, और शहर को पूरी तरह से जलाकर राख कर दिया। कहा जाता है कि, उस समय, यरूशलेम की दीवारों के भीतर लगभग 2.7 मिलियन लोग रह रहे थे। जोसेफस के अनुसार, उस युद्ध में 1.1 मिलियन यहूदी मारे गए, और 97,000 को बंदी बना लिया गया। शेष यहूदी प्रतिरोध सेनानियों ने मसादा नामक एक स्थान पर अपना मोर्चा संभाला, लेकिन अंततः, वे सभी भी मारे गए। तो फिर, आज हमारे जीवन की क्या स्थिति है? ओमिक्रॉन वायरस के कारण हम इस समय खुद को पंगु पाते हैं—हम आज़ादी से घूम-फिर नहीं पा रहे हैं—और हम अनेक कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं। यदि कोई और वायरस सामने आ जाए, तो हमें निश्चित रूप से और भी अधिक मुश्किलों का सामना करना पड़ेगा। इसके अलावा, अनगिनत लोग अन्य विभिन्न परीक्षाओं—जैसे भारी बर्फ़बारी, भूकंप और प्राकृतिक आपदाओं—से गुज़र रहे हैं। ऐसे समय में, हमें ठीक-ठीक क्या करना

चाहिए, और हमें किस तरह आगे बढ़ना चाहिए? हमें यीशु के इन शब्दों को अपने हृदय में बसा लेना चाहिए और उन पर गहराई से मनन करना चाहिए: “अपने लिए और अपने बच्चों के लिए रोओ” (लूका 23:28)। हमें परमेश्वर के वचन का पालन करने, बिना किसी विश्वासघात के प्रभु के प्रति वफ़ादार बने रहने, और अंत तक उनका अनुसरण करने के लिए बुलाया गया है; फिर भी, यदि हम दिन-रात प्रार्थना न करें और परमेश्वर के वचन पर मनन न करें, तो यह सब हासिल करना भला कैसे संभव हो सकता है? तो फिर, हमारे बाद आने वाली पीढ़ियों का क्या होगा? क्या उनके संघर्ष और भी अधिक गंभीर नहीं हो जाएँगे? इसलिए, हमारे बीच एक ऐसा आंदोलन उठना चाहिए जिसमें हम रोएँ और प्रार्थना करें—अपने लिए भी और अपने बच्चों के लिए भी। बाइबल की ‘प्रकाशितवाक्य’ (Revelation) नामक पुस्तक यह भविष्यवाणी करती है कि क्लेश का समय केवल और अधिक तीव्र ही होता जाएगा। हमारे लिए—और हमारे बच्चों के लिए भी—इन कठिनाइयों को सहना उत्तरोत्तर कठिन होता जाएगा। अतः, हमें सतर्क रहना चाहिए, और अपने तथा अपने बच्चों की ओर से परमेश्वर के सम्मुख रोते हुए और गिड़गिड़ाते हुए प्रार्थना करनी चाहिए। परिणामस्वरूप, हम सब ऐसे लोग बनें जो इन समस्त क्लेशों से परमेश्वर द्वारा उद्धार प्राप्त करें, और जो प्रभु का स्वागत करने के लिए तत्पर पाए जाएँ।

गोलगोथा के रास्ते पर यीशु (3)

[लूका 23:26–32]

गोलगोथा के रास्ते पर जो पहली घटना घटी, वह यह थी कि कुरेने के शमौन को यीशु के लिए उनका क्रूस उठाने के लिए मजबूर किया गया (लूका 23:26)। दूसरी घटना यह थी कि लोगों की एक बड़ी भीड़ यीशु के पीछे-पीछे चल रही थी (पद 27)। तीसरी घटना यह थी कि दो अन्य अपराधियों को भी यीशु के साथ-साथ ले जाया गया। कृपया आज के पाठ, लूका 23:32 पर ध्यान दें: “दो अन्य लोग, दोनों अपराधी, भी उसके साथ वध के लिए ले जाए गए।” यहाँ, “दो अपराधी” वाक्यांश को यूहन्ना के सुसमाचार में “दो लोग” (यूहन्ना 19:18); मत्ती के सुसमाचार में “दो डाकू” (मत्ती 27:38) या “डाकू” (पद 44); और मरकुस के सुसमाचार में “दो डाकू” (मरकुस 15:27) के रूप में संदर्भित किया गया है। उस युग में, डाकूओं के लिए निर्धारित दंड का एकमात्र रूप क्रूस पर चढ़ाना नहीं था। हालाँकि, यह तथ्य कि इन दो डाकूओं को यीशु के साथ-साथ गोलगोथा की ओर ले जाया गया, यह दर्शाता है कि वे विशेष रूप से जघन्य अपराधी थे। क्या इन दो डाकूओं का यीशु के साथ होना वास्तव में उनके लिए किसी भी तरह से मददगार या फायदेमंद साबित हुआ? निश्चित रूप से नहीं। हम यह कैसे जान सकते हैं?

जब यीशु ने लाज़र को—जो पहले ही चार दिनों से मृत था और जिसका शरीर सड़ने लगा था—पुनर्जीवित किया (यूहन्ना 11:41–44), तो इस चमत्कार के गवाह बने लोग दो समूहों में बँट गए। कई यहूदी, जो लाज़र की बहन मरियम को सांत्वना देने आए थे और जिन्होंने यीशु के किए हुए कार्य को देखा था, उन पर विश्वास करने लगे (पद 45)। हालाँकि, यीशु के चमत्कार के गवाहों में से कुछ लोग फरीसियों के पास गए और उन्हें बताया कि यीशु ने क्या किया था (पद 46)। परिणामस्वरूप, प्रधान याजकों और फरीसियों ने परिषद बुलाई और विचार-विमर्श किया (पद 47–48); उस समय, कैफा—जो उस वर्ष का प्रधान याजक था—ने उन्हें संबोधित किया (पद 49–52); और आखिरकार, उस दिन से आगे, उन्होंने यीशु को मार डालने की साज़िश रचनी शुरू कर दी (पद 53)। जब यीशु एक जवान गधे पर सवार होकर यरूशलेम में दाखिल हुए, तो एक बड़ी भीड़ ने सड़क पर अपने कपड़े बिछाकर और पेड़ों से डालियाँ काटकर नीचे बिछाकर उनका स्वागत किया, और ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला रहे थे: “दाऊद के पुत्र को होसन्ना! धन्य है वह जो प्रभु के नाम से आता है! परमप्रधान में होसन्ना!” (मत्ती 21:7–9)। जब यीशु यरूशलेम में दाखिल हुए, तो पूरा शहर हिल उठा, और

लोग पूछने लगे, “यह कौन है?” (पद 10)। भीड़ ने जवाब दिया, “यह यीशु है, जो गलील के नासरत का भविष्यवक्ता है” (पद 11)। यहाँ, “भविष्यवक्ता” शब्द मूसा जैसे किसी भविष्यवक्ता को दर्शाता है— [व्यवस्थाविवरण 18:15: “तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे ही भाइयों में से तेरे लिये मेरे समान एक भविष्यवक्ता खड़ा करेगा। तू उसकी सुनना”]—जो विशेष रूप से उस मसीहा की ओर इशारा करता है जिसका यहूदी लोग लंबे समय से इंतज़ार कर रहे थे: यीशु मसीह। इसके बाद, यीशु ने मंदिर में मौजूद अंधों और लंगड़ों को चंगा किया; हालाँकि, जब मुख्य पुजारियों और शास्त्रियों ने यीशु द्वारा किए जा रहे “अद्भुत कामों” को देखा और मंदिर में बच्चों को ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाते हुए सुना, “दाऊद के पुत्र को होसन्ना!” तो वे बहुत नाराज़ हो गए। तब उन्होंने यीशु से पूछा, “क्या तुम सुनते हो कि ये बच्चे क्या कह रहे हैं?” (मत्ती 21:14–16)। इस प्रकार, भजन संहिता 8:2 का हवाला देते हुए, यीशु ने उनसे कहा, “हाँ; क्या तुमने कभी नहीं पढ़ा: ‘शिशुओं और दूध पीते बच्चों के मुँह से तुमने स्तुति को सिद्ध किया है’?” (मत्ती 21:16)। आखिरकार, मुख्य पुजारियों ने यीशु को वह “भविष्यवक्ता जो मेरे [मूसा] जैसा है” नहीं माना, जिसके बारे में मूसा ने व्यवस्थाविवरण 18:15 में बात की थी—इसके बावजूद कि भीड़ उन्हें “यीशु, जो गलील के नासरत का भविष्यवक्ता है” (पद 11) के रूप में पहचान रही थी। ठीक इसी कारण से, जब यीशु ने लाज़र को मरे हुएों में से जिलाया, तो उन्होंने उन्हें मार डालने की साज़िश रचनी शुरू कर दी (यूहन्ना 11:53)। परिणामस्वरूप, उन्होंने रोमन गवर्नर, पिलातुस के सामने यीशु पर आरोप लगाए (लूका 23:2)। हालाँकि पिलातुस ने तीन बार यह घोषणा की कि यीशु निर्दोष हैं (पद 4, 14, 22) और उन्हें रिहा करने की पूरी कोशिश की (पद 20), लेकिन उनके सारे प्रयास व्यर्थ साबित हुए। अंत में, भीड़ ने ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाते हुए पिलातुस पर दबाव डाला और माँग की कि यीशु को सूली पर चढ़ाया जाए; उनकी आवाज़ें भारी पड़ गईं (पद 23)। पिलातुस ने घोषणा की कि वह उनकी माँग मान लेगा; इस प्रकार, उसने यीशु को उनके हवाले कर दिया ताकि वे उनके साथ जैसा चाहें वैसा बर्ताव कर सकें (पद 24–25)। इसके बाद, मुख्य पुजारियों ने दो अन्य अपराधियों—दो हिंसक डाकुओं (मत्ती 27:38, 44; मरकुस 15:27)—को यीशु के साथ गोलगोथा ले जाने का इंतज़ाम किया। उनका मकसद भीड़ को यह परोक्ष रूप से जताना था कि यीशु उन दो हिंसक डाकुओं से किसी भी तरह अलग नहीं हैं। और, कुछ हद तक, मुख्य पुजारियों की यह योजना सफल भी रही। मत्ती 27:38–42 पर नज़र डालकर हम कुछ हद तक यह समझ सकते हैं कि ऐसा कैसे हुआ: “उस समय यीशु के साथ दो डाकुओं को सूली पर चढ़ाया गया—एक उनके दाईं ओर और एक उनके बाईं ओर। वहाँ से गुज़रने वाले लोग सिर हिलाते हुए उनका अपमान कर रहे थे और कह रहे थे, ‘तुम जो मंदिर को नष्ट करके तीन दिन में फिर से बना देने का दावा करते हो, खुद को बचाओ! अगर तुम परमेश्वर के पुत्र हो, तो सूली से नीचे उतर आओ!’ इसी तरह मुख्य पुजारियों, व्यवस्था के शिक्षकों और बुजुर्गों ने भी उनका मज़ाक उड़ाते हुए कहा, ‘इसने दूसरों को तो बचाया, लेकिन खुद को नहीं बचा पा रहा! यह तो इस्राएल का राजा है! अब इसे सूली से नीचे उतर आने दो, तब हम इस पर विश्वास करेंगे।’” इस प्रकार, जब यीशु को उन दो डाकुओं के साथ सूली पर चढ़ाया गया, तो वहाँ से गुज़रने वाले लोगों ने—जिनमें मुख्य पुजारी, व्यवस्था के शिक्षक

और बुजुर्ग भी शामिल थे—उनका अपमान किया और उनका मज़ाक उड़ाया। हालाँकि, यह घटना वास्तव में यशायाह 53:12 में पाई गई भविष्यवाणी की पूर्ति थी—एक ऐसा अंश जिसकी भविष्यवाणी भविष्यवक्ता यशायाह ने यीशु के इस पृथ्वी पर आने से लगभग 700 साल पहले की थी: “इसलिए मैं उसे महान लोगों के बीच एक हिस्सा दूँगा, और वह बलवानों के साथ लूट का माल बाँटेगा, क्योंकि उसने अपना जीवन मृत्यु तक न्योछावर कर दिया, और उसे अपराधियों के साथ गिना गया। क्योंकि उसने बहुतों के पापों का बोझ उठाया, और अपराधियों के लिए मध्यस्थता की।” भविष्यवक्ता यशायाह की भविष्यवाणी के अनुसार, यीशु वास्तव में “अपराधियों के साथ गिना गया।” दूसरे शब्दों में, दो डाकुओं के साथ क्रूस पर चढ़ाए जाने के कारण, यीशु को भी मृत्युदंड का सामना कर रहे निंदित अपराधियों में से एक माना गया। यीशु, जो पाप-रहित था (यहाँ तक कि गैर-यहूदी रोमन गवर्नर पीलातुस ने भी तीन बार यह घोषित किया था कि यीशु निर्दोष है), उसके साथ एक जघन्य डाकू की तरह, मृत्युदंड पाए अपराधी जैसा व्यवहार क्यों किया गया? ऐसा ठीक हम जैसे निंदित कैदियों के पापों को क्षमा करने और उन्हें बचाने के लिए किया गया था—हम जैसे लोग जो जघन्य डाकुओं की तरह ही अनंत मृत्यु के लिए निर्धारित थे। इसलिए, हमें उद्धार की इस अद्भुत कृपा और प्रेम के लिए परमेश्वर का धन्यवाद, स्तुति और आराधना करनी चाहिए; स्वयं को प्रभु को समर्पित करना चाहिए; और यीशु मसीह के इस सुसमाचार को पूरे संसार में फैलाना चाहिए।

(पद 1) प्रभु की महान कृपा अद्भुत है; हमारे पापों का प्रायश्चित्त करने के लिए, उसने कलवरी के क्रूस पर मेमे का बहुमूल्य रक्त बहाया।

(पद 2) पाप उफनती लहरों की तरह हमारी आत्माओं को धमकाता है, लेकिन प्रभु की असीम कृपा क्रूस पर प्रकट हुई।

(पद 3) प्रभु पाप से कलंकित आत्माओं को अपने रक्त से धोता है; उस रक्त में स्वयं को बर्फ से भी अधिक श्वेत धो लें, जो अभी भी बह रहा है।

(पद 4) वह अतुलनीय कृपा उन लोगों को निःशुल्क दी जाती है जो विश्वास करते हैं; भाई, प्रभु के सम्मुख आओ, अब और विलंब न करो, बल्कि इसे तुरंत ग्रहण करो।

(कोरस) प्रभु की कृपा ने हमारे समस्त पापों को धो डाला है; प्रभु की कृपा ने हमारे समस्त पापों को धो डाला है।

[भजन “प्रभु की महान कृपा अद्भुत है”]

यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया (1)

[मरकुस 15:21-32]

मरकुस 15:22-25 का अंश इस प्रकार है: “वे यीशु को गोलगोथा नामक एक स्थान पर ले गए (जिसका अर्थ है ‘खोपड़ी का स्थान’)। उन्होंने उसे गन्धरस (myrrh) मिली हुई दाखमधु पीने को दी, परन्तु उसने उसे नहीं लिया। और उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ा दिया। उसके कपड़े आपस में बाँटते हुए, उन्होंने पर्चियाँ डालीं (लॉट डाले) ताकि यह तय हो सके कि किसे क्या मिलेगा। जब उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाया, तब तीसरा पहर था।” यहाँ, वाक्यांश “गोलगोथा नामक एक स्थान (जिसका अर्थ है ‘खोपड़ी का स्थान’)” उस वध-स्थल को संदर्भित करता है जहाँ यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया था। अन्य सुसमाचार भी इसे इसी तरह से दर्ज करते हैं: “गोलगोथा नामक एक स्थान (जिसका अर्थ है ‘खोपड़ी का स्थान’)” (मत्ती 27:33); “खोपड़ी नामक स्थान” (लूका 23:33); और “खोपड़ी का स्थान (जिसे इब्रानी भाषा में गोलगोथा कहते हैं)” (यूहन्ना 19:17)। किंग जेम्स संस्करण (King James Version), वाक्यांश “खोपड़ी नामक स्थान” (लूका 23:33) का अनुवाद “कलवरी” (Calvary) के रूप में करता है। जहाँ आज का पाठ, मरकुस 15:23, इस पेय को “गन्धरस मिली हुई दाखमधु” कहता है, वहीं मत्ती 27:34 इसे “पित्त (gall) मिली हुई दाखमधु” के रूप में दर्ज करता है। हालाँकि गन्धरस पौधों से प्राप्त होता है और पित्त जानवरों से—जिससे ये दोनों अलग-अलग पदार्थ बन जाते हैं—फिर भी इनमें एक बात समान थी: दोनों में ही संज्ञाहारक (दर्द कम करने वाले) गुण मौजूद थे। परंपरा के अनुसार, यहूदी लोगों में हिंसक अपराधियों को ऐसे मादक पेय देने का रिवाज़ था जिनमें संज्ञाहारक तत्व मिले होते थे; इस प्रथा का उद्देश्य उन कैदियों की पीड़ा को कम करना था जिन्हें क्रूस पर चढ़ाए जाने की सज़ा दी जा रही होती थी (इंटरनेट स्रोत)। यह संभव है कि यीशु के साथ क्रूस पर चढ़ाए गए दोनों डाकुओं ने वह पेय पिया हो; हालाँकि, यीशु ने उसे चखा तो सही, पर पीने से मना कर दिया (मत्ती 27:34)। इसका कारण यह है कि यीशु, जो निष्पाप थे, उन्होंने इतनी गहरी पीड़ा इसलिए सहन की क्योंकि वे इस संसार में उद्धार का महान कार्य पूरा करने आए थे—अर्थात् हमारे सभी पापों को क्षमा करना और हमें अनंत नरक से निकालकर अनंत जीवन प्रदान करना। हमारे उद्धार की खातिर, यीशु ने न केवल भीषण शारीरिक पीड़ा सहन की, बल्कि मानसिक संताप और परमपिता परमेश्वर द्वारा त्याग दिए जाने की आध्यात्मिक वेदना भी सहन की; इन सब का सामना साफ़ मन से करने के लिए, उन्होंने उस दाखमधु को पीने से मना कर दिया

जिसमें मूर्त मिला हुआ था—यह एक ऐसा पदार्थ था जिसमें बेहोशी लाने वाला तत्व होता है, जो उनके दर्द को कम कर देता। यीशु के लिए, यह दुख ही महिमा थी। यूहन्ना 12:23-24 और 28 में धर्मशास्त्र कहता है: "यीशु ने उन्हें उत्तर देते हुए कहा, 'वह समय आ गया है कि मनुष्य के पुत्र की महिमा हो। मैं तुमसे सच कहता हूँ, जब तक गेहूँ का दाना ज़मीन में गिरकर मर नहीं जाता, वह अकेला ही रहता है; लेकिन अगर वह मर जाता है, तो बहुत फल देता है।' ... 'पिता, अपने नाम की महिमा कर।' तब स्वर्ग से एक आवाज़ आई, जिसमें कहा गया, 'मैंने इसकी महिमा की है और फिर से करूँगा।'" जिस समय यीशु ने क्रूस पर दुख सहा और अपनी जान दी, वही वह पल था जब उन्होंने महिमा प्राप्त की। इससे न केवल स्वयं यीशु की महिमा हुई, बल्कि परमेश्वर पिता की भी महिमा हुई। यूहन्ना 17:1 में कहा गया है: "यीशु ने ये शब्द कहे, अपनी आँखें स्वर्ग की ओर उठाई, और कहा: 'पिता, वह समय आ गया है। अपने पुत्र की महिमा कर, ताकि तेरा पुत्र भी तेरी महिमा करे।'" उद्धार के इस महान कार्य को पूरा करते हुए, यीशु ने कड़वे रस (पित्त) मिली दाखमधु पीकर अपने दुख को कम करने की कोशिश नहीं की—ताकि वे अर्ध-चेतना की स्थिति में अपनी पीड़ा न सहें—और न ही उन्होंने धुंधले मन से क्रूस पर दुख सहा और अपनी जान दी। इसके विपरीत, हमारे पापों को क्षमा करने और हमारे उद्धार को सुनिश्चित करने के कार्य में, उन्होंने कभी भी अपने दर्द को कम करने की कोशिश नहीं की, बल्कि दुख की पूरी मात्रा को सहा।

आज के पाठ—मरकुस 15:24—को देखते हुए, धर्मशास्त्र कहता है, "उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ा दिया।" जिस विशिष्ट समय पर यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया, उसे "तीसरा पहर" (पद 25) के रूप में दर्ज किया गया है—यानी, "सुबह लगभग 9:00 बजे" (पद 25, *मॉडर्न पीपल्स बाइबिल*)। हालाँकि, यूहन्ना 19:14 में, धर्मशास्त्र बताता है कि जिस समय रोमन गवर्नर पीलातुस ने यीशु से पूछताछ की थी, वह "फसह के पर्व की तैयारी का दिन था, और लगभग छठा पहर था" [या "उस समय के आसपास" (*मॉडर्न पीपल्स बाइबिल*) था]। इस विसंगति के संबंध में कई सिद्धांत हैं; ऐसा ही एक सिद्धांत यह सुझाव देता है कि यह अंतर कोरिया में सौर और चंद्र कैलेंडरों के बीच के अंतर के समान है। हमारी नज़र में, यीशु को सूली पर चढ़ाए जाने का समय और पिलातुस द्वारा उनसे पूछताछ किए जाने का समय आपस में विरोधाभासी प्रतीत होता है; फिर भी, क्योंकि हमारी मूल मान्यता बाइबल की अचूकता में विश्वास है—कि इसमें कोई त्रुटि नहीं है—इसलिए हम यह निष्कर्ष निकालते हैं कि यह स्पष्ट विसंगति केवल एक ऐसा विषय है जिसे हम अभी तक पूरी तरह से समझ नहीं पाए हैं। जब यीशु को सूली पर चढ़ाया गया, तो उनके दोनों हाथों और पैरों में कीलें ठोक दी गईं। सूली पर लगाया गया शिलालेख—जिसमें उन पर लगाए गए आरोप का उल्लेख था—उस पर लिखा था, "यहूदियों का राजा" (मरकुस 15:26, *मॉडर्न पीपल्स बाइबल*)। यीशु के साथ दो डाकुओं को भी सूली पर चढ़ाया गया: एक को उनके दाईं ओर और दूसरे को उनकी बाईं ओर रखा गया (पद 27)। इसके अलावा, आज के पाठ—मरकुस 15:24—को देखें तो बाइबल कहती है, "और उन्होंने उसके कपड़े आपस में बाँट लिए, और यह तय करने के लिए कि किसे क्या मिलेगा, उन्होंने उनके लिए

चिट्ठियाँ डालीं।" इस घटना के बारे में अधिक विस्तृत जानकारी यूहन्ना 19:23-24 में दर्ज है: "जिन सैनिकों ने यीशु को सूली पर चढ़ाया था, उन्होंने उसके कपड़े ले लिए और उन्हें चार हिस्सों में बाँट दिया, और हर सैनिक को एक हिस्सा दिया। हालाँकि, उसका अंदर का वस्त्र ऊपर से नीचे तक एक ही टुकड़े में बुना हुआ था, जिसमें कोई जोड़ नहीं था; इसलिए सैनिकों ने आपस में कहा, 'चलो इसे फाड़ें नहीं, बल्कि चिट्ठियाँ डालकर देखें कि यह किसे मिलता है।' ऐसा इसलिए हुआ ताकि वह शास्त्र पूरा हो सके जिसमें कहा गया है, 'उन्होंने मेरे बाहरी कपड़े आपस में बाँट लिए और मेरे अंदर के वस्त्र के लिए चिट्ठियाँ डालीं।' और इसलिए, सैनिकों ने ठीक वैसा ही किया" (मॉडर्न पीपल्स बाइबल)। यहाँ, पाठ में कहा गया है कि जिन सैनिकों ने यीशु को सूली पर चढ़ाया था, उन्होंने उनके कपड़े ले लिए, उन्हें चार हिस्सों में बाँट दिया, और हर किसी ने एक हिस्सा ले लिया। हालाँकि, पादरी हेंड्रिक्सन और पादरी जेम्स बॉयस जैसे विद्वानों ने इन "चार हिस्सों" की व्याख्या इस प्रकार की है कि इनमें (क) सिर ढकने का वस्त्र, (ख) सैंडल, (ग) कमरबंद या बेल्ट, और (घ) बाहरी वस्त्र शामिल थे; और उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला है कि चारों सैनिकों में से हर किसी ने इनमें से एक-एक वस्तु ले ली। जहाँ तक यीशु के "अंदर के वस्त्र" की बात है, तो सैनिकों ने उसे न फाड़ने का, बल्कि उसके लिए चिट्ठियाँ डालने का फैसला किया; इस प्रकार भजन संहिता 22:18 में पाई जाने वाली भविष्यवाणी पूरी हुई: "उन्होंने मेरे बाहरी कपड़े आपस में बाँट लिए और मेरे अंदर के वस्त्र के लिए चिट्ठियाँ डालीं" (मॉडर्न पीपल्स बाइबल)। मरकुस 15:29-32 का अंश इस प्रकार है: "वहाँ से गुज़रने वाले लोग उसका अपमान कर रहे थे, वे अपने सिर हिलाते हुए कह रहे थे, 'अच्छा! तुम जो मंदिर को नष्ट करके तीन दिन में फिर से बना देने वाले हो, अब क्रूस से नीचे उतर आओ और खुद को बचाओ!' इसी तरह, प्रधान याजक और व्यवस्था के शिक्षक भी आपस में मिलकर उसका मज़ाक उड़ा रहे थे। उन्होंने कहा, 'इसने दूसरों को तो बचाया, पर खुद को नहीं बचा सकता! यह मसीह, यह इस्राएल का राजा, अब क्रूस से नीचे उतर आए ताकि हम उसे देखकर विश्वास कर सकें।' उसके साथ क्रूस पर चढ़ाए गए लोग भी उसका अपमान कर रहे थे।" इसी तरह का एक विवरण मत्ती 27:39-44 में भी मिलता है; उस पाठ की जाँच करने पर हम देखते हैं कि "वहाँ से गुज़रने वाले लोग"—जिन्होंने मंदिर का अपमान करने और ईश्वर-निंदा करने का आरोप लगाकर यीशु का अपमान किया था—उन्होंने ताना मारते हुए यीशु के सामने दो खास माँगें रखीं। ये दो माँगें थीं: "यदि तुम परमेश्वर के पुत्र हो, तो खुद को बचाओ," और "क्रूस से नीचे उतर आओ" (मत्ती 27:40)। इन तानों में अपनी आवाज़ मिलाने वाले लोग कोई और नहीं, बल्कि प्रधान याजक, व्यवस्था के शिक्षक और बुजुर्ग लोग थे। उन्होंने भी इस तरह से यीशु का मज़ाक उड़ाने (उसकी खिल्ली उड़ाने) में उनका साथ दिया: "इसने दूसरों को तो बचाया, पर खुद को नहीं बचा सकता! यह इस्राएल का राजा है! अब यह क्रूस से नीचे उतर आए, तो हम इस पर विश्वास करेंगे। यह परमेश्वर पर भरोसा करता है—अगर परमेश्वर इसे बचाना चाहता है, तो अब बचा ले, क्योंकि इसने कहा था, 'मैं परमेश्वर का पुत्र हूँ'" (पद 42-43)। इस मज़ाक के विषय-वस्तु को देखने पर यह साफ़ ज़ाहिर होता है कि उन्होंने भी, ठीक वहाँ से गुज़रने वाले लोगों की तरह, यह माँग की कि यीशु क्रूस से नीचे उतर आए। इससे यह पता चलता है कि उन सभी ने यीशु का मज़ाक इस बात का संकेत देते हुए उड़ाया कि यदि वह सचमुच परमेश्वर का पुत्र होता, तो उसे क्रूस पर मरना नहीं चाहिए था, बल्कि या तो खुद को बचाना चाहिए था या परमेश्वर द्वारा

बचाया जाना चाहिए था। यह ठीक शैतान का ही काम है। शैतान नहीं चाहता था कि यीशु क्रूस पर मरे। और ज़्यादा स्पष्ट रूप से कहें तो, शैतान नहीं चाहता था कि यीशु हमारे सभी पापों का बोझ उठाए और क्रूस पर मरे। ऐसा इसलिए है क्योंकि शैतान की बिल्कुल भी यह इच्छा नहीं है कि हमें हमारे पापों की क्षमा मिले और हम उद्धार प्राप्त करें। फिर भी, परमेश्वर—जो अपने इकलौते पुत्र, यीशु (3:17) से प्रेम करते हैं और उसमें प्रसन्न होते हैं—ने चाहा कि वह घायल हो और कष्ट सहे (यशायाह 53:10); अंततः, परमेश्वर ने तो उस पुकार से भी अपना मुख फेर लिया जो यीशु ने क्रूस पर रहते हुए लगाई थी—“हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?” (मत्ती 27:46)—और चाहा कि वह वहीं प्राण त्याग दे। इसका कारण यह है कि परमेश्वर की इच्छा है कि सभी लोग उद्धार पाएं और सत्य के ज्ञान तक पहुंचें (1 तीमुथियुस 2:4)। यहां तक कि वे डाकू भी, जिन्हें उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया था, इसी तरह उसकी निंदा करने में शामिल हो गए (मत्ती 27:44)।

यीशु ने हमारी जगह वह सब कुछ सहा, जिसे सहना हमारे भाग्य में लिखा था; लज्जा के क्रूस को उठाकर और स्वयं को क्रूस पर चढ़ने देकर, उसने हमारा उद्धार पूरा किया। यीशु ने महिमा पाई और बदले में, परमेश्वर पिता को महिमा दी। इसलिए, कृतज्ञता से भरे हृदय के साथ, हमें इस पृथ्वी पर अपना जीवन केवल प्रभु को महिमा देने के लिए समर्पित करना चाहिए।

यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया (2)

[मरकुस 15:21-32]

मरकुस 15:22-23 में लिखा है: “वे यीशु को उस जगह ले गए जिसे गोलगोथा कहते हैं (जिसका अर्थ है ‘खोपड़ी की जगह’)। उन्होंने उसे मुर (एक प्रकार का सुगंधित पदार्थ) मिली हुई दाखमधु पीने को दी, पर उसने उसे नहीं लिया।” मृत्यु-दंड दिए जाने की जगह—यानी ‘खोपड़ी की जगह’ या गोलगोथा—पर पहुँचने और क्रूस पर चढ़ाए जाने से पहले, यीशु ने मुर मिली हुई दाखमधु लेने से इनकार कर दिया। मुर मिली हुई यह दाखमधु एक बेहोशी की दवा (एनेस्थीसिया) का काम करती थी, जो आम तौर पर क्रूस पर चढ़ाए जाने वालों को उनकी पीड़ा कम करने के लिए दी जाती थी; लेकिन, यीशु ने इसे लेने से मना कर दिया, क्योंकि वह इसके असर से सुन्न नहीं होना चाहते थे। इसका कारण यह था कि हमारे उद्धार के काम में, यीशु ने पीड़ा को पूरी तरह से सहने का इरादा किया था, बिना उसे कम करने की कोशिश किए। यीशु ने इस पीड़ा को पूरी हद तक इसलिए सहा, ताकि वह हमें—जो उनके साथ क्रूस पर चढ़ाए गए अपराधियों से भी ज़्यादा दीन-हीन हैं—बचा सकें, और हमें ऐसे संतों में बदल सकें जो परमेश्वर के पुत्र के समान हों। यीशु का यह कार्य—हमारे उद्धार की खातिर पीड़ा को पूरी हद तक सहना—प्रभु की महिमा करता है। हमें भी—जिन्होंने परमेश्वर की कृपा से इस यीशु पर अपना विश्वास रखा है—एक परिपक्व और उमड़ता हुआ विश्वास विकसित करना चाहिए, और एक इच्छुक हृदय के साथ, यीशु और सुसमाचार की खातिर पीड़ा को पूरी तरह से स्वीकार करना चाहिए (तुलना करें: मरकुस 8:35; 15:23; फिलिप्पियों 1:29)। यह अंश यूहन्ना 12:23-24 और 28 से लिया गया है: “यीशु ने उन्हें उत्तर देते हुए कहा, ‘वह समय आ गया है कि मनुष्य के पुत्र की महिमा हो। मैं तुमसे सच कहता हूँ, जब तक गेहूँ का एक दाना ज़मीन में गिरकर मर नहीं जाता, वह अकेला ही रहता है; लेकिन यदि वह मर जाता है, तो बहुत फल देता है।’ ... ‘हे पिता, अपने नाम की महिमा कर।’ तब स्वर्ग से एक वाणी आई, जिसने कहा, ‘मैंने इसकी महिमा की है और फिर करूँगा भी।’” फसह के त्योहार के दौरान आराधना करने के लिए यरूशलेम गए लोगों में कई यूनानी भी थे; वे फिलिप के पास आए और बड़ी विनती के साथ यीशु को देखने की इच्छा ज़ाहिर की। नतीजतन, फिलिप गया और एंड्रयू से बात की, और फिर एंड्रयू और फिलिप दोनों मिलकर यीशु के पास गए और उन्हें यह विनती बताई (यूहन्ना 12:1, 12, 20-22)। तब यीशु ने इस सवाल का जवाब दिया (पद 23)। यीशु ने ऐलान किया, “वह समय आ गया है कि मनुष्य के पुत्र की महिमा हो।” इस बात के दो

मतलब हो सकते हैं: (1) इसका मतलब है कि यीशु के लिए सलीब पर मरने का समय आ गया था—ठीक वैसे ही जैसे “गेहूँ का एक दाना [जो] ज़मीन में गिरकर मर जाता है” (पद 24)—जैसा कि उन्होंने पद 23 में कहा था; और (2) इसका मतलब है कि, ठीक वैसे ही जैसे “गेहूँ का एक दाना” ज़मीन में गिरकर और मरकर “बहुत फल” देता है, वैसे ही यीशु भी सलीब पर अपनी मौत के ज़रिए “बहुत फल” देंगे (पद 24)। इस संदर्भ में, “बहुत फल” का मतलब उन गैर-यहूदियों से है—जैसे कि वे यूनानी जो फिलिप के पास यीशु को देखने की विनती लेकर आए थे—जो सलीब पर यीशु की मौत के ज़रिए बचाए जाएँगे; इन आत्माओं का उद्धार ही वह “फल” है, और इसी नतीजे को यीशु “महिमा” कहते हैं (पद 23)। यह अंश यूहन्ना 12:28 से है: “हे पिता, अपने नाम की महिमा कर।” तब स्वर्ग से एक आवाज़ आई, जिसने कहा, “मैंने इसकी महिमा की है और फिर करूँगा।” यीशु ने परमेश्वर पिता से प्रार्थना की, और कहा, “हे पिता, अपने नाम की महिमा कर।” उसी पल, स्वर्ग से एक आवाज़ आई, और परमेश्वर पिता ने जवाब दिया (बोला), और ऐलान किया कि उन्होंने पहले ही इसकी महिमा कर दी है। तो फिर, परमेश्वर पिता के इस बयान का यहाँ क्या मतलब है कि उन्होंने पहले ही यीशु की महिमा कर दी थी? इसका जवाब लूका 2:14 में मिलता है: “स्वर्ग में परमेश्वर की महिमा हो, और पृथ्वी पर उन लोगों में शांति हो जिनसे वह प्रसन्न है।” यह अंश यीशु के अवतार (जन्म) की बात करता है, और कहता है: “क्योंकि आज दाऊद के नगर में तुम्हारे लिए एक उद्धारकर्ता का जन्म हुआ है, जो मसीह प्रभु है” (पद 11)। इस तरह, परमेश्वर पिता को यीशु के अवतार (जन्म) के ज़रिए पहले ही महिमा मिल चुकी थी (यूहन्ना 12:28)। तो फिर, परमेश्वर पिता के इस कथन का क्या अर्थ है, “मैं इसे फिर से महिमामंडित करूँगा”? (पद 28)। इसका अर्थ यह है कि भविष्य में, परमेश्वर पिता यीशु को महिमामंडित करेंगे—उन्हें क्रूस पर मृत्यु देकर, तीन दिन बाद उन्हें फिर से जीवित करके (पुनरुत्थान), और उन्हें अपने दाहिने हाथ बिठाकर। प्रेरित पौलुस फिलिप्पियों 2:9-11 में इसका वर्णन इस प्रकार करते हैं: “इसलिए परमेश्वर ने उन्हें बहुत ऊँचा उठाया और उन्हें वह नाम दिया जो हर नाम से ऊपर है, ताकि यीशु के नाम पर हर घुटना झुके—स्वर्ग में, पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे—और हर जीभ यह स्वीकार करे कि यीशु मसीह प्रभु हैं, परमेश्वर पिता की महिमा के लिए।” यहाँ, “इसलिए” वाक्यांश इस तथ्य की ओर संकेत करता है कि यीशु ने, मानव रूप में प्रकट होकर, स्वयं को दीन बनाया और मृत्यु तक आज्ञाकारी बने रहे—विशेष रूप से, क्रूस पर मृत्यु तक (पद 8)। परमेश्वर ने यीशु को बहुत ऊँचा उठाया और महिमामंडित किया, जो क्रूस पर मरने तक भी परमेश्वर पिता के प्रति आज्ञाकारी बने रहे थे (पद 9-11)।

यूहन्ना 12:32-33 का अंश कहता है: “और जब मैं पृथ्वी से ऊपर उठाया जाऊँगा, तो मैं सभी लोगों को अपनी ओर खींच लूँगा।” उन्होंने यह बात यह बताने के लिए कही थी कि वे किस प्रकार की मृत्यु मरने वाले थे। जब यीशु ने कहा, “जब मैं पृथ्वी से ऊपर उठाया जाऊँगा,” तो वे अपने क्रूसारोपण की ओर संकेत कर रहे थे—जो यूहन्ना 3:14 में पाए जाने वाले शब्दों की ही पुनरावृत्ति थी: “जैसे मूसा ने जंगल में साँप को ऊपर उठाया था, वैसे

ही मनुष्य के पुत्र को भी ऊपर उठाया जाना अवश्य है।" कृपया गिनती 21:9 देखें (*द कंटेम्पररी बाइबल* से): "इसलिए मूसा ने पीतल का एक साँप बनाया और उसे एक खंभे पर टाँग दिया; और जब भी किसी साँप के काटे हुए व्यक्ति ने उस पीतल के साँप की ओर देखा, तो वह जीवित बच गया।" ठीक वैसे ही जैसे मूसा ने पीतल का एक साँप बनाया और उसे एक खंभे पर टाँग दिया था (गिनती 21:9), यीशु भी यह घोषणा कर रहे थे कि उन्हें भी ऊपर उठाया जाएगा और क्रूस पर चढ़ाया जाएगा (यूहन्ना 3:14; 12:32-33)। इसके अलावा, जब यीशु ने कहा, "मैं सब लोगों को अपनी ओर खींच लूँगा" (यूहन्ना 12:32), तो इसका अर्थ यह है कि अपने ऊँचे उठाए जाने और क्रूस पर चढ़ाए जाने के द्वारा, वह उन सभी लोगों को अपनी ओर खींचेंगे जिन्हें परमेश्वर ने दुनिया की रचना से पहले ही चुन लिया था—जिन्हें यहाँ "सब लोग" कहा गया है—और उन्हें उद्धार तक पहुँचाकर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश दिलाएँगे। यहाँ, "मार्ग दिखाना" शब्द का अर्थ यह है कि यीशु—जिनका वर्णन यूहन्ना अध्याय 10 में 'अच्छा चरवाहा' के रूप में किया गया है—अपनी भेड़ों को प्रेम से मार्ग दिखाते हैं, ठीक वैसे ही जैसे एक चरवाहा अपने झुंड का मार्गदर्शन करता है। इसकी झलक होशे 11:3-4 में भी मिलती है: "फिर भी, मैंने ही एप्राइम को चलना सिखाया, उन्हें अपनी बाहों में थामकर; पर वे यह न जान पाए कि मैंने ही उन्हें चंगा किया था। मैंने उन्हें मनुष्य की रस्सियों से, प्रेम के बंधनों से अपनी ओर खींचा; और मैं उनके लिए ठीक वैसा ही था, जैसा कोई उनके गले से जुआ उतार देता है; मैंने उनके सामने भोजन परोसा।" ठीक वैसे ही जैसे एक पिता अपने छोटे बच्चे को चलना सिखाता है, परमेश्वर ने इस्राएल के लोगों ("एप्राइम") को मिस्र से छुड़ाया; उन्होंने उन्हें जंगल में चलना सिखाया, उन्हें अपनी बाहों में समेट लिया, और अपने प्रेम की रस्सियों से उनका मार्गदर्शन किया। ठीक इसी तरह, यीशु—वह अच्छा चरवाहा—अपनी भेड़ों को प्रेम की इन्हीं रस्सियों से आगे ले गए, यहाँ तक कि उन्होंने उनकी खातिर अपनी जान भी दे दी (यूहन्ना 10:11, 15)। इस प्रकार, परमेश्वर के चुने हुए सभी लोगों को उद्धार तक पहुँचाकर, यीशु ने परमेश्वर पिता के नाम की महिमा की (यूहन्ना 12:28)। इसके अलावा, परमेश्वर पिता की उद्धार की इच्छा को पूरा करने के लिए, यीशु "गोलगोथा नामक एक स्थान पर पहुँचे (जिसका अर्थ है 'खोपड़ी का स्थान')"; वहाँ, उन्होंने मूर् (एक प्रकार का सुगंधित पदार्थ) मिली हुई दाखमधु को स्वीकार करने से इनकार कर दिया, और क्रूस पर चढ़ाए जाने के लिए स्वयं को समर्पित करके तथा दुखों की पूरी सीमा को सहकर (मरकुस 15:22-24), उन्होंने परमेश्वर पिता के नाम की महिमा की (यूहन्ना 12:28)। ठीक वैसे ही जैसे परमेश्वर पिता ने अपने इकलौते पुत्र, यीशु मसीह से कहा—जिन्होंने इस प्रकार अपने पिता के नाम की महिमा की—"मैंने पहले ही इसकी महिमा की है, और फिर से इसकी महिमा करूँगा" (यूहन्ना 12:28), उन्होंने वास्तव में यीशु को उनके अवतार (जन्म) के माध्यम से महिमामंडित किया और उनके क्रूसारोपण और मृत्यु के माध्यम से उन्हें एक बार फिर महिमामंडित किया। अंततः, पुत्र, यीशु ने परमेश्वर की इच्छा के अनुसार इस संसार में आकर (उनका अवतार/जन्म) और परमेश्वर की इच्छा के अनुसार ही क्रूस पर चढ़कर और मरकर (उनकी मृत्यु) परमेश्वर पिता के नाम की महिमा की। दूसरे शब्दों में, यीशु के सांसारिक जीवन की शुरुआत (जन्म) और अंत (मृत्यु)—दोनों ही पूरी तरह से परमेश्वर पिता की महिमा करने के लिए थे। यीशु के उदाहरण का अनुसरण करते हुए, हम भी—जो केवल परमेश्वर के अनुग्रह से, यीशु मसीह में विश्वास के द्वारा "नए लोग" बन गए हैं (हमारे नए जीवन की शुरुआत)—उस क्षण से लेकर इस पृथ्वी पर

अपनी मृत्यु के दिन तक परमेश्वर की महिमा अवश्य करें। पहला कुरिन्थियों 10:31 (*The Bible for Modern People* से) कहता है: "इसलिए, चाहे तुम खाओ या पियो, या जो कुछ भी करो, सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिए करो।" जब तक हम इस पृथ्वी पर जीवित हैं, हम जो कुछ भी करें, हमें परमेश्वर की महिमा के लिए ही जीना चाहिए। वेस्टमिंस्टर शॉर्टर कैटेकिज़्म (Westminster Shorter Catechism) का पहला प्रश्न पूछता है: "मनुष्य का मुख्य उद्देश्य क्या है?" इस प्रश्न का उत्तर है: "मनुष्य का मुख्य उद्देश्य परमेश्वर की महिमा करना, और सदाकाल तक उनका आनंद लेना है।" जैसे-जैसे हम सदाकाल तक परमेश्वर का आनंद लेते हैं, हमें केवल पृथ्वी पर अपने समय के दौरान ही उनकी महिमा नहीं करनी चाहिए; बल्कि—ठीक वैसे ही जैसे यीशु ने किया—हमें अपनी मृत्यु के माध्यम से भी उनकी महिमा करनी चाहिए। इसके अलावा, विश्वास के पूर्वज, हाबिल की तरह, हमें अपनी मृत्यु के बाद भी परमेश्वर की महिमा करना जारी रखना चाहिए—क्योंकि हमारे विश्वास के माध्यम से, वह "अब भी बोलता है" (इब्रानियों 11:4, *The Bible for Modern People*)—हमारे बच्चों, हमारी संतानों और सभी लोगों से, आज भी।

यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया (3)

[मरकुस 15:21-32]

जब यीशु क्रूस पर दुख सह रहे थे, तो लोगों ने उनका मज़ाक उड़ाया, उनका अपमान किया, उन पर ताने कसे और उन्हें बुरा-भला कहा। वे कौन लोग थे जिन्होंने क्रूस पर चढ़े हुए यीशु का मज़ाक उड़ाया, उनका अपमान किया, उन पर ताने कसे और उन्हें बुरा-भला कहा? वहाँ से गुज़रने वाले लोगों ने यीशु का अपमान किया। मरकुस 15:29-30 में लिखा है: “वहाँ से गुज़रने वाले लोगों ने सिर हिलाते हुए उनका अपमान किया और कहा, ‘अहा! तुम जो मंदिर को गिराकर तीन दिन में फिर से बना देने वाले हो, खुद को बचाओ और क्रूस से नीचे उतर आओ!’” मुख्य पुजारियों ने यीशु का मज़ाक उड़ाया। मरकुस 15:31-32 में लिखा है: “इसी तरह, मुख्य पुजारियों ने, व्यवस्था के शिक्षकों के साथ मिलकर, आपस में उनका मज़ाक उड़ाया। उन्होंने कहा, ‘इसने दूसरों को बचाया, लेकिन खुद को नहीं बचा सकता! यह मसीहा, यह इस्राएल का राजा, अब क्रूस से नीचे उतर आए ताकि हम उसे देखें और विश्वास करें।’ उसके साथ क्रूस पर चढ़ाए गए लोगों ने भी उसका अपमान किया।” व्यवस्था के शिक्षकों ने भी यीशु का मज़ाक उड़ाया। मरकुस 15:31 में लिखा है: “इसी तरह, मुख्य पुजारियों ने, व्यवस्था के शिक्षकों के साथ मिलकर, उसका मज़ाक उड़ाया...” मत्ती 27:41 में लिखा है: “इसी तरह मुख्य पुजारियों, व्यवस्था के शिक्षकों और बुजुर्गों ने उसका मज़ाक उड़ाया।” बुजुर्गों ने भी यीशु का मज़ाक उड़ाया। मत्ती 27:41-43 में लिखा है: “इसी तरह मुख्य पुजारियों, व्यवस्था के शिक्षकों और बुजुर्गों ने उसका मज़ाक उड़ाया। उन्होंने कहा, ‘इसने दूसरों को बचाया, लेकिन खुद को नहीं बचा सकता! यह इस्राएल का राजा है! अब यह क्रूस से नीचे उतर आए, और हम इस पर विश्वास करेंगे। यह परमेश्वर पर भरोसा करता है—अगर परमेश्वर इसे बचाना चाहता है तो अब बचा ले, क्योंकि इसने कहा था, “मैं परमेश्वर का पुत्र हूँ।”” सन्हेद्रिन—यानी यहूदी नेताओं और अधिकारियों—के सदस्यों के तौर पर, उन्होंने यीशु का मज़ाक उड़ाया। लूका 23:35 में कहा गया है: “लोग खड़े होकर देख रहे थे, और शासकों ने तो उस पर ताने भी कसे। उन्होंने कहा, ‘इसने दूसरों को बचाया; अगर यह परमेश्वर का मसीहा, वह चुना हुआ व्यक्ति है, तो खुद को बचा ले।’” सैनिकों ने भी यीशु का मज़ाक उड़ाया। लूका 23:36-37 में लिखा है: “सैनिक भी उसके पास आए और उसका मज़ाक उड़ाया। उन्होंने उसे सिरका मिला हुआ दाखमधु दिया और कहा, ‘यदि तू यहूदियों का राजा है, तो खुद को बचा ले।’” डाकुओं ने भी यीशु का अपमान किया। मत्ती 27:44 में कहा गया है: “इसी तरह, वे

डाकू भी जो उसके साथ क्रूस पर चढ़ाए गए थे, उन्होंने भी उसका अपमान किया।" क्रूस पर चढ़ाए गए यीशु पर इन सात समूहों के लोगों द्वारा किए गए मज़ाक, उपहास और अपमान का मुख्य विषय क्या था—(1) राहगीर, (2) मुख्य याजक, (3) व्यवस्था के शिक्षक, (4) बुजुर्ग, (5) अधिकारी, (6) सैनिक, और (7) डाकू? उनका संदेश यह था: "खुद को बचा ले, और क्रूस से नीचे उतर आ।" दूसरे शब्दों में, वे उससे कह रहे थे कि वह अपनी ही शक्ति से खुद को बचा ले—कि वह क्रूस पर मरने के बजाय जीवित रहने का चुनाव करे। वास्तव में, यह शैतान का काम है। शैतान नहीं चाहता था कि यीशु क्रूस पर मरे। और भी स्पष्ट रूप से कहें तो, शैतान नहीं चाहता था कि यीशु हमारे सभी पापों का बोझ उठाए और क्रूस पर मरे। ऐसा इसलिए था क्योंकि शैतान की बिल्कुल भी इच्छा नहीं है कि हमें हमारे पापों की क्षमा मिले और हम उद्धार प्राप्त करें।

हालाँकि यीशु को अपनी सेवा शुरू करने से पहले शैतान (दियाबल) द्वारा तीन बार परखा गया था (लूका 4:1-13), लेकिन जब वह क्रूस पर लटका हुआ था और अपनी सेवा को पूरा करने की ओर अग्रसर था, तब भी उसे तीन परीक्षाओं का सामना करना पड़ा (यह केवल लूका के सुसमाचार में दिए गए विवरण पर आधारित है)। ये वे तीन परीक्षाएँ हैं जिनका सामना यीशु ने क्रूस पर रहते हुए किया: (1) पहली परीक्षा: "लोग खड़े होकर देख रहे थे, और शासक भी उसका मज़ाक उड़ा रहे थे। उन्होंने कहा, 'इसने दूसरों को बचाया; यदि यह परमेश्वर का मसीह, उसका चुना हुआ है, तो खुद को बचा ले'" (23:35); (2) दूसरी परीक्षा: "सैनिक भी उसके पास आए और उसका मज़ाक उड़ाया। उन्होंने उसे सिरका मिला हुआ दाखमधु दिया और कहा, 'यदि तू यहूदियों का राजा है, तो खुद को बचा ले'" (पद 36-37); (3) तीसरा प्रलोभन: "वहाँ लटके हुए अपराधियों में से एक ने उसका अपमान करते हुए कहा: 'क्या तुम मसीहा नहीं हो? खुद को और हमें बचाओ!'" (पद 39)। शैतान द्वारा दिए गए इन तीन प्रलोभनों का उद्देश्य यीशु को क्रूस से खुद को बचाने के लिए लुभाना था—यानी मरने के बजाय जीने का चुनाव करने के लिए उकसाना। दूसरे शब्दों में, क्योंकि शैतान बिल्कुल नहीं चाहता था कि यीशु हमारे पापों का बोझ अपने ऊपर लें और क्रूस पर हमारे उद्धार के लिए अपनी जान दें, इसलिए उसने "शासकों" (पद 35), "सैनिकों" (पद 36), और "वहाँ लटके हुए अपराधियों में से एक" (पद 39) का इस्तेमाल करके यीशु को—तीन अलग-अलग बार—इस चुनौती के साथ प्रलोभन दिया कि वे "खुद को बचाएँ।" यह तथ्य हमें क्या सबक सिखाता है? शैतान इस धरती पर हमारे जीवन की शुरुआत से लेकर अंत तक लगातार हमें प्रलोभन देता रहता है। वह हमें—हमारा मज़ाक उड़ाते हुए, हमारी खिल्ली उड़ाते हुए और हमारी निंदा करते हुए—इस बात के लिए लुभाता है कि हम परमेश्वर की इच्छा के अनुसार मरने के बजाय इंसानी इच्छा के अनुसार जिंएँ। शैतान प्रलोभन देने की एक क्रमिक रणनीति अपनाता है: पहले वह हमें उन लोगों के ज़रिए प्रलोभन देता है जो हमसे कुछ दूरी पर होते हैं—जैसे कि "अधिकारी"; फिर वह हमें उन लोगों के ज़रिए प्रलोभन देता है जो हमारे ज़्यादा करीब होते हैं—जैसे कि "सैनिक"; और अंत में, वह हमें उन लोगों के ज़रिए प्रलोभन देता है जो हमारे सबसे ज़्यादा करीब होते हैं—जैसे कि "हमारे साथ क्रूस पर चढ़ाए गए अपराधियों में से एक।" शैतान लोगों की इन तीन श्रेणियों के ज़रिए हमें प्रलोभन देता है; फिर भी, मेरी नज़र में, सबसे घातक

प्रलोभन वह है जो हमारे अपने ही घर के सदस्यों—यानी हमारे सबसे करीबी लोगों—के ज़रिए आता है। उदाहरण के लिए, अय्यूब के मामले में, जब वह अपनी पीड़ा सह रहा था, तब उसकी पत्नी ने उससे कहा, "क्या तुम अब भी अपनी ईमानदारी पर कायम हो? परमेश्वर को कोसो और मर जाओ!" (अय्यूब 2:9)। "लेकिन अय्यूब ने जवाब दिया, 'तुम एक मूर्ख स्त्री की तरह बातें कर रही हो। क्या हम परमेश्वर से केवल अच्छी चीज़ें ही स्वीकार करेंगे, और मुसीबतें नहीं?' इन सब बातों में, अय्यूब ने अपने होंठों से कोई पाप नहीं किया" (पद 10)।

यीशु को, जिसे क्रूस पर चढ़ाया गया था, ऐसे मज़ाक, खिल्ली और अपमान का सामना क्यों करना पड़ा? ऐसा हमारे पापों की वजह से हुआ। यीशु ने वह सारा मज़ाक, खिल्ली और अपमान सहा, जो असल में हमारे हिस्से में आना चाहिए था। बाइबल बताती है कि यीशु के दुख की भविष्यवाणी भजन संहिता 22:6-8 (समकालीन अंग्रेज़ी संस्करण) में की गई थी: "लेकिन अब मैं एक कीड़े से ज़्यादा कुछ नहीं हूँ, इंसान नहीं; यहाँ तक कि मेरे अपने लोग भी मेरा तिरस्कार करते हैं और मैं सबके लिए मज़ाक का पात्र बन गया हूँ। जो भी मुझे देखता है, वह मेरा मज़ाक उड़ाता है और मेरा अपमान करता है; वे अपना सिर हिलाते हैं और कहते हैं, 'क्या यह वही नहीं था जिसने प्रभु पर भरोसा किया था? तो फिर, वह उसे क्यों नहीं बचाता? अगर प्रभु सचमुच उससे प्रसन्न है, तो वह उसकी मदद के लिए क्यों नहीं आता?'" परमेश्वर की इच्छा उन लोगों को बचाने की है जिन्हें उसने—अपने पूर्वज्ञान में—प्यार किया है, चुना है, बुलाया है, धर्मी ठहराया है, और महिमा दी है (रोमियों 8:30)। इसी ईश्वरीय इच्छा को पूरा करने के लिए यीशु ने क्रूस पर हर संभव अपमान सहा।

यीशु ने क्रूस पर हमारे खातिर हर अपमान और दुख सहा—हमारे लिए, जो अपने पापों की सज़ा के सही हकदार थे—जब "हम अभी भी शक्तिहीन थे" (रोमियों 5:6), "जब हम अभी भी पापी थे" (पद 8), और "जब हम [परमेश्वर के] शत्रु थे" (पद 10)। इसलिए, जब हम यीशु के बारे में सोचते हैं—जिसने क्रूस पर इतना अपमान और दुख सहा—तो हमारी आँखों से कृतज्ञता और गहरी भावना के आँसू बहने चाहिए। *न्यू हिमनल* (New Hymnal) के भजन 143 के पद 4 और 5 के बोल नीचे दिए गए हैं, जिसका शीर्षक है "यह कितना अद्भुत प्रेम है": (पद 4) "जब मैं क्रूस के सामने खड़ा होता हूँ, उस कार्य के लिए अत्यंत कृतज्ञ, तो मैं अपना चेहरा ऊपर उठाने का साहस नहीं कर पाता, बल्कि केवल अपने आँसू बहाता हूँ।" (पद 5) "भले ही मैं हमेशा रोता रहूँ, मैं जानता हूँ कि मेरे आँसू इसका मोल नहीं चुका सकते; देने के लिए मेरे पास और कुछ नहीं है, इसलिए मैं स्वयं को ही अर्पित करता हूँ।" जब हम यीशु को देखते हैं—जिसे क्रूस पर चढ़ाया गया और जिसने हर अपमान और दुख सहा—तो हमें इस बात के लिए इतनी कृतज्ञता से भर जाना चाहिए कि उसने हमारे सारे पाप अपने ऊपर ले लिए और हमारी ओर से हर सज़ा भुगती, और क्रूस पर अपने प्राण दे दिए; हमारी कृतज्ञता इतनी गहरी होनी चाहिए कि हम अपना चेहरा भी ऊपर न उठा पाएँ; इसके बजाय, धन्यवाद के आँसू बहाते हुए, हमें अपने पूरे शरीर, मन और जीवन को प्रभु के लिए जीने हेतु समर्पित कर देना चाहिए। फिर भी, ऐसा

लगता है कि जहाँ हम इस सत्य को बौद्धिक रूप से तो समझ लेते हैं, वहीं हमने इसे अपने हृदय में सचमुच आत्मसात नहीं किया है। इसका कारण यह है कि हमारे दिल हीरे जैसे कठोर हो गए हैं (जकर्याह 7:12), और हमारे माथे भी चकमक पत्थर से भी ज़्यादा कठोर—हीरे जैसे हो गए हैं (यहेजकेल 3:9)। तो फिर, हमें क्या करना चाहिए? *न्यू हिमनल* (New Hymnal) संख्या 87, "द गारमेंट माई लॉर्ड वोर" (The Garment My Lord Wore) का दूसरा पद इसका जवाब देता है: "मेरे प्रभु ने सारी कड़वी पीड़ा सहन की; जब मैं उस क्रूस को देखता हूँ जिसे उन्होंने उठाया था, तो मेरी आँखों से आँसू बह निकलते हैं।" हमें उस क्रूस के पास, जिसे प्रभु ने उठाया था, विनम्रता और विश्वास के साथ जाना चाहिए। हमें उस सारी अपमान और पीड़ा पर गहराई से मनन करना चाहिए जो उन्होंने हमारी जगह सहन की, और प्रभु से अपनी विनतियाँ करनी चाहिए। इसलिए, सभी व्यर्थ सांसारिक इच्छाओं और अहंकारी विचारों को त्यागकर, और प्रभु की असीम कृपा की हमारी समझ में बढ़ते हुए—ऐसा अद्भुत प्रेम पाकर—हमें अपने शरीर को ही प्रभु के लिए एक जीवित बलिदान के रूप में अर्पित करना चाहिए; न केवल कृतज्ञता के आँसू बहाते हुए, बल्कि पूर्ण समर्पण के आँसू भी बहाते हुए (*न्यू हिमनल* संख्या 149, "द क्रॉस वेयर जीसस डाइड")। इसके अलावा, क्योंकि हमारे दिल प्रभु के क्रूस की ओर खिंचे चले जाते हैं—जिसका उपहास और तिरस्कार किया गया था (*न्यू हिमनल* संख्या 150, "ऑन कैल्वरीज़ माउंटेन," पद 2)—हमें यह घोषणा करनी चाहिए: "सम्मान, महिमा और सारा अधिकार केवल प्रभु का ही हो; जहाँ तक मेरी बात है, मैं उपहास और तिरस्कार का क्रूस उठाऊँगा।" इस प्रकार, हमें प्रभु की सेवा कृतज्ञता के साथ करनी चाहिए, बिना किसी प्रसिद्धि या पहचान की चाह रखे (*न्यू हिमनल* संख्या 323, "कॉल्ड टू सर्व," पद 3)।

सलीब से कहे गए सात वचन (1)

[लूका 23:34-43]

आज से शुरू करके, हम उन सात वचनों पर मनन करेंगे जो यीशु ने सलीब से कहे थे। जिस पल उन्हें गेथसेमनी के बगीचे में पकड़ा गया—और मुख्य पुजारियों, बुजुर्गों, शास्त्रियों और सैनिकों ने, जो उन्हें गिरफ्तार करने आए थे, उन्हें हिरासत में ले लिया—उस पल से लेकर, जब तक उन्हें सलीब पर कीलों से नहीं जड़ दिया गया, यीशु ने लगभग कोई शब्द नहीं कहा। जो थोड़े-बहुत शब्द उन्होंने कहे, वे पूरी तरह से सत्य और सुसमाचार थे (मत्ती 26:34; 27:11; मरकुस 14:62; 15:2; लूका 23:3, 28-31; यूहन्ना 18:20, 21, 23, 34, 36, 37; 19:11)। इन खास मौकों के अलावा, यीशु ने कोई और शब्द नहीं कहा—चाहे वह शारीरिक दर्द की वजह से हो या भावनात्मक पीड़ा के कारण। जब यीशु को दो अपराधियों के साथ गोलगोथा ले जाया जा रहा था, तो शायद उन्होंने हर तरह के अपशब्द और अपमानजनक बातें कही होंगी; फिर भी, यीशु ने अपना मुँह नहीं खोला। इससे यशायाह 53:7 में पाया जाने वाला भविष्यसूचक वचन पूरा हुआ। यशायाह 53:7 कहता है: “उस पर जुल्म हुआ और उसे सताया गया, फिर भी उसने अपना मुँह नहीं खोला; उसे एक मेमने की तरह कत्ल के लिए ले जाया गया, और जिस तरह ऊन काटने वालों के सामने एक भेड़ चुप रहती है, उसी तरह उसने अपना मुँह नहीं खोला।” यह वही यीशु थे—जो इतने चुप रहे थे—जिन्होंने सलीब पर रहते हुए सात खास वचन कहे: (1) पहला वचन लूका 23:34 में मिलता है: “हे पिता, इन्हें माफ़ कर दे, क्योंकि ये नहीं जानते कि ये क्या कर रहे हैं।” (2) दूसरा वचन लूका 23:43 में मिलता है: “मैं तुझसे सच कहता हूँ, आज तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा” (ये शब्द उनके साथ सलीब पर चढ़ाए गए दो अपराधियों में से एक से कहे गए थे)। (3) तीसरी बात यूहन्ना 19:26-27 में मिलती है: “हे नारी, देख, यह तेरा पुत्र है” (पद 26) (“अपनी माँ” से कही गई बात), और “देख, यह तेरी माँ है” (पद 27) (“उस चेले से कही गई बात जिससे वह प्रेम करता था”)। (4) चौथी बात मत्ती 27:46 (मरकुस 15:34) में मिलती है: “एली, एली, लामा सबक्तनी?” (जिसका अर्थ है, “हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?”)। (5) पाँचवीं बात यूहन्ना 19:28 में मिलती है: “मैं प्यासा हूँ।” (6) छठी बात यूहन्ना 19:30 में मिलती है: “पूरा हुआ।” (7) अंतिम, सातवीं बात लूका 23:46 में मिलती है: “हे पिता, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूँ।” जब हम क्रूस से यीशु द्वारा कही गई इन सात बातों की जाँच करते हैं, तो हम देखते हैं कि मत्ती (27:46) और मरकुस (15:34) बिल्कुल एक ही बात को दर्ज करते हैं—जो

यीशु के शब्दों के एक ही उदाहरण के रूप में दिखाई देती है; लूका यीशु की तीन ऐसी बातें दर्ज करता है जो दूसरे सुसमाचारों (मत्ती, मरकुस, या यूहन्ना) में नहीं मिलतीं; और यूहन्ना यीशु की तीन बातें दर्ज करता है। इस प्रकार, चारों सुसमाचारों (मत्ती, मरकुस, लूका, और यूहन्ना) में, हमें वे सात बातें मिलती हैं जो यीशु ने क्रूस पर रहते हुए कहीं थीं।

आज, मैं उस अनुग्रह को साझा करना चाहूँगा जो परमेश्वर हम पर बरसाता है, जब हम क्रूस से यीशु द्वारा कही गई पहली बात पर मनन करते हैं, जो लूका 23:34 में मिलती है। हमें क्रूस से यीशु द्वारा कहे गए इन शब्दों को सर्वोच्च सम्मान देना चाहिए। यह अंश लूका 23:34 से है: "तब यीशु ने कहा, 'हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये नहीं जानते कि ये क्या कर रहे हैं'..." [(समकालीन अंग्रेजी संस्करण)] "तब यीशु ने कहा, 'हे पिता, इन लोगों को क्षमा कर दे। ये नहीं जानते कि ये क्या कर रहे हैं।'"।

यह कथन यीशु ने परमेश्वर पिता से कहा था; यह एक प्रार्थना है। (हमें भी ऐसी प्रार्थनाएँ करनी चाहिए जिनमें हम परमेश्वर से बातचीत करें, ठीक वैसे ही जैसे यीशु ने की थी। दूसरे शब्दों में, हमारी प्रार्थनाएँ परमेश्वर के वचन पर केंद्रित होनी चाहिए।) यीशु की इस प्रार्थना का उद्देश्य "पिता" थे, और प्रार्थना का विषय था, "उन्हें क्षमा कर।" यहाँ, "उन्हें" शब्द विशेष रूप से उन लोगों को संदर्भित करता है जो यीशु को क्रूस पर चढ़ा रहे थे, लेकिन व्यापक अर्थ में, इसमें हम भी शामिल हैं। जिन लोगों ने यीशु को क्रूस पर चढ़ाया, उन्होंने ऐसा अज्ञानता के कारण किया—क्योंकि वे यह नहीं समझते थे कि वे क्या कर रहे हैं। [नोट: (नया भजन संग्रह, भजन 144, "यीशु, मेरे लिए," पद 2) "उन्होंने कौन सा पाप उठाया, जिसके लिए उन्हें क्रूस उठाना पड़ा? उन अज्ञानी लोगों ने मसीहा को मार डाला।"] हम अनेक पाप करते हैं, और कई बार ऐसा भी होता है जब हम बिना एहसास हुए ही पाप कर बैठते हैं। यहाँ तक कि यीशु के अपने शिष्य भी उनके शब्दों को समझने में असफल रहे—विशेष रूप से, "इस मंदिर को ढा दो, और तीन दिन में मैं इसे फिर खड़ा कर दूँगा" (यूहन्ना 2:19)—जो उनकी अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान को संदर्भित करता था। यह बाद में हुआ, जब यीशु मृतकों में से जी उठे, तब उन्हें याद आया कि उन्होंने ये शब्द कहे थे; तभी उन्होंने पवित्रशास्त्र और यीशु के कहे शब्दों पर विश्वास किया (पद 22)।

बाइबल सिखाती है कि कुछ पाप ऐसे होते हैं जिन्हें क्षमा किया जा सकता है, और कुछ पाप ऐसे भी होते हैं जिन्हें क्षमा नहीं किया जा सकता। यह अंश 1 यूहन्ना 5:16-17 से लिया गया है: "यदि कोई अपने भाई को ऐसा पाप करते देखे जो मृत्यु की ओर नहीं ले जाता, तो वह प्रार्थना करे, और परमेश्वर उसे जीवन देगा—उन लोगों को जिनका पाप मृत्यु की ओर नहीं ले जाता। एक ऐसा पाप है जो मृत्यु की ओर ले जाता है। मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि उसके विषय में प्रार्थना की जाए। समस्त अधर्म पाप है, परन्तु एक ऐसा पाप भी है जो मृत्यु की ओर नहीं ले जाता" [(समकालीन अंग्रेजी संस्करण)] "यदि तुम किसी भाई को पाप करते देखो—बशर्ते वह ऐसा पाप न हो जो मृत्यु की ओर ले जाता हो—तो उसके लिए परमेश्वर से क्षमा माँगो, और परमेश्वर उसे जीवन प्रदान करेगा। तथापि, एक ऐसा पाप है जो मृत्यु की ओर ले जाता है; मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि तुम उसके विषय में

प्रार्थना करो। समस्त अधार्मिकता पाप है, परन्तु एक ऐसा पाप भी है जो मृत्यु की ओर नहीं ले जाता”]। अज्ञानतावश किए गए पापों को क्षमा किया जा सकता है। यीशु ने क्रूस पर से परमेश्वर पिता से जो प्रार्थना की थी—जिसमें उन्होंने इन शब्दों के साथ पापों की क्षमा माँगी थी, “हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये नहीं जानते कि ये क्या कर रहे हैं” (लूका 23:34)—उसका उत्तर मिला। हमें यह कैसे पता चलता है? प्रेरितों के काम (Acts of the Apostles) को देखकर—जिसे लूका ने लिखा था, जो लूका के सुसमाचार के भी लेखक हैं—हम देखते हैं कि परमेश्वर ने उस प्रार्थना का उत्तर दिया जो यीशु ने क्रूस पर की थी। परिणामस्वरूप, उसने लोगों की एक बड़ी भीड़ को—जिन्हें परमेश्वर ने जगत की नींव डालने से पहले ही चुन लिया था—यीशु मसीह का सुसमाचार सुनने, उस पर विश्वास करने, पश्चात्ताप करने, यीशु मसीह के नाम पर बपतिस्मा लेने और पापों की क्षमा पाने (प्रेरितों के काम 2:38) के योग्य बनाया, और इस प्रकार उन्होंने उद्धार प्राप्त किया: (पद 41) “जिन्होंने उसका संदेश स्वीकार किया, उन्होंने बपतिस्मा लिया, और उस दिन उनकी संख्या में लगभग तीन हज़ार लोग और जुड़ गए”; (4:4) “बहुत से लोगों ने, जिन्होंने संदेश सुना, विश्वास किया, और पुरुषों की संख्या बढ़कर लगभग पाँच हज़ार हो गई”; (5:14) “अधिक से अधिक पुरुषों और स्त्रियों ने प्रभु पर विश्वास किया और उनकी संख्या में जुड़ते गए”; (6:1, 7) “उस समय, जब चेलों की संख्या बढ़ रही थी... परमेश्वर का वचन फैलता रहा, और यरूशलेम में चेलों की संख्या बहुत बढ़ गई; और याजकों की भी एक बड़ी संख्या विश्वास के प्रति आज्ञाकारी हो गई”; (21:20) “जब उन्होंने यह सुना, तो उन्होंने परमेश्वर की स्तुति की और पौलुस से कहा, ‘हे भाई, जैसा कि तुम देख सकते हो, यहूदियों के बीच हज़ारों-हज़ार विश्वासी हैं...’” आज भी, यीशु ने क्रूस पर से परमेश्वर पिता से जो प्रार्थना की थी—जिसमें उन्होंने पापों की क्षमा माँगी थी—उसका उत्तर मिलना जारी है।

ठीक इसी पल, यीशु परमेश्वर के दाहिने हाथ विराजमान हैं, और हमारी ओर से मध्यस्थता कर रहे हैं (रोमियों 8:34)। इब्रानियों 7:25 कहता है: “इसलिए वह उन लोगों को पूरी तरह से बचाने में भी समर्थ है जो उसके द्वारा परमेश्वर के पास आते हैं, क्योंकि वह हमेशा उनके लिए मध्यस्थता करने के लिए जीवित रहता है” [(समकालीन अंग्रेजी संस्करण): “इसलिए, यीशु उन लोगों को पूरी तरह से बचाने में समर्थ है जो उसके द्वारा परमेश्वर के पास आते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि वह हमेशा उनके लिए मध्यस्थता वाली प्रार्थनाएँ करने के लिए जीवित रहता है”]। यीशु—जिसके पास एक अनंत पुरोहिताई है और जो सदा जीवित रहता है (पद 24, CEV)—उन लोगों के लिए मध्यस्थता कर रहा है जो उसके द्वारा परमेश्वर के पास आते हैं, ताकि वह उन्हें पूरी तरह से बचा सके (पद 25, CEV)। इसका कारण यह है कि परमेश्वर की इच्छा है कि सभी लोग बचाए जाएँ और सत्य के ज्ञान तक पहुँचें (1 तीमुथियुस 2:4, CEV)। इसलिए, हमें भी—यीशु के उदाहरण का अनुसरण करते हुए—परमेश्वर पिता से यह कहते हुए विनती करनी चाहिए, “पिता, उन्हें क्षमा कर” [“पिता, कृपया उन लोगों को क्षमा कर”] (लूका 23:34)। जब हम अपनी विनतियाँ करते हैं, तो हमें विश्वास के साथ परमेश्वर पिता से पापों की क्षमा माँगनी चाहिए—इस वादे पर भरोसा करते हुए कि पवित्र आत्मा, जो हमारे भीतर वास करता है, हमारी कमज़ोरी में हमारी सहायता करता है और परमेश्वर की इच्छा के अनुसार, ऐसी आहों के साथ हमारे लिए मध्यस्थता करता है जिन्हें शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता (रोमियों 8:26–27); और इस वादे पर

भरोसा करते हुए कि मसीह यीशु, जो परमेश्वर के दाहिने हाथ है, हमारी ओर से मध्यस्थता करता है (पद 34)। इसके अलावा, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की तरह, हमें भी “पापों की क्षमा के लिए मन फिराव के बपतिस्मा का प्रचार करना चाहिए” (लूका 3:3)। जब हम प्रचार करते हैं, तो हमें ऐसा निडर होकर करना चाहिए—प्रेरित पतरस की तरह पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर—यीशु मसीह के सुसमाचार की घोषणा करते हुए: क्रूस पर उसकी मृत्यु और उसका पुनरुत्थान (प्रेरितों के काम 2:14-36)। जब ऐसा होता है—जब लोग हमारे द्वारा यीशु मसीह का सुसमाचार सुनते हैं और उनके हृदय छिद जाते हैं, और वे पूछते हैं, “हमें क्या करना चाहिए?” (पद 37)—हमें उनसे कहना चाहिए: “तुम सब पश्चात्ताप करो, और अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम पर बपतिस्मा लो। तब तुम्हें पवित्र आत्मा का वरदान मिलेगा। यह वादा तुम्हारे लिए, तुम्हारे बच्चों के लिए, और उन सभी के लिए है जो दूर हैं—हर उस व्यक्ति के लिए जिसे हमारा प्रभु परमेश्वर बुलाएगा” (पद 38-39, *Modern People’s Bible*)। या फिर, हमें कहना चाहिए: “प्रभु यीशु पर विश्वास करो, और तुम और तुम्हारा पूरा परिवार उद्धार पाएगा” (16:31)। इसलिए, न केवल उन्हें स्वयं, बल्कि उनके पूरे परिवार को यीशु पर विश्वास करना चाहिए और उद्धार प्राप्त करना चाहिए (पद 33-34)। जब ऐसा होता है—जैसे कि वे लोग जो अपने अपराधों और पापों में आध्यात्मिक रूप से मृत थे, उन्हें फिर से जीवित किया जाता है (पुनर्जीवित किया जाता है) (इफिसियों 2:1, *Modern People’s Bible*)—तो हम निश्चित रूप से आनंद मनाएंगे और उत्सव करेंगे (लूका 15:32, *Modern People’s Bible*)। आइए हम सब, जब हम अपनी स्तुति अर्पित करते हैं, तो नए भजन संख्या 150, “On a Hill Far Away” (The Old Rugged Cross) के बोलों को अपनी प्रार्थना का विषय बनाएं: (पद 1) एक दूर की पहाड़ी पर एक पुराना, ऊबड़-खाबड़ क्रूस खड़ा था, जो दुख और शर्म का प्रतीक था; और मैं उस पुराने क्रूस से प्रेम करता हूँ, जहाँ खोए हुए पापियों की दुनिया के लिए सबसे प्रिय और सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति को बलिदान किया गया था। (पद 2) ओह, वह पुराना, ऊबड़-खाबड़ क्रूस, जिसे दुनिया ने इतना तिरस्कृत किया, मेरे लिए एक अद्भुत आकर्षण रखता है; क्योंकि परमेश्वर का प्रिय मेम्ना अपनी स्वर्गीय महिमा को छोड़कर, उसे अंधेरे कलवरी तक ले जाने के लिए नीचे आया। (पद 3) उस पुराने, ऊबड़-खाबड़ क्रूस में, जो उस दिव्य रक्त से रंगा हुआ है, मैं एक अद्भुत सुंदरता देखता हूँ; क्योंकि उसी पुराने क्रूस पर यीशु ने मुझे क्षमा करने और पवित्र करने के लिए दुख सहा और प्राण त्यागे। (पद 4) उस पुराने, ऊबड़-खाबड़ क्रूस के प्रति मैं सदा सच्चा रहूँगा, उसकी शर्म और निंदा को मैं खुशी-खुशी सहूँगा; फिर किसी दिन वह मुझे मेरे दूर स्थित घर बुलाएगा, जहाँ मैं सदा के लिए उसकी महिमा में सहभागी बनूँगा। (दोहराव) इसलिए मैं उस पुराने, ऊबड़-खाबड़ क्रूस को संजोकर रखूँगा, जब तक कि अंत में मैं अपनी सारी उपलब्धियों को उसके चरणों में न रख दूँ; मैं उस पुराने, ऊबड़-खाबड़ क्रूस से लिपटा रहूँगा, और किसी दिन उसके बदले एक मुकुट प्राप्त करूँगा। आइए, हम सब प्रभु के क्रूस को तब तक संजोकर रखें, जब तक हमें अंतिम विजय प्राप्त न हो जाए। क्योंकि यह उन कष्टों का प्रतीक है जिन्हें प्रभु ने सहा, और वह स्थान है जहाँ उन्होंने अपना बहुमूल्य रक्त बहाया। आइए, हम सब यह दृढ़ संकल्प करें कि हम यीशु मसीह और उनके क्रूस पर चढ़ाए जाने के अलावा और कुछ नहीं जानेंगे (1 कुरिन्थियों 2:2)। आइए, हम सब उस ऊबड़-खाबड़ क्रूस पर प्रभु द्वारा बहाए गए रक्त को विश्वास-भरे हृदय से देखें। यह वह बहुमूल्य रक्त है जिसे उन्होंने हमें क्षमा करने और हमारे पापों का प्रायश्चित्त करने के लिए बहाया। आइए, हम सब विश्वास के साथ यीशु मसीह के उस ऊबड़-खाबड़ क्रूस को तब तक थामे रहें, जब तक हमें हमारा चमकीला मुकुट प्राप्त न हो जाए।

सलीब से कहे गए सात वचन (2)

[लूका 23:34-43]

यह दूसरा वचन है जो यीशु ने सलीब से कहा: “मैं तुझ से सच कहता हूँ, आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा” (लूका 23:43)।

यहाँ यीशु ने “तू” कहकर किन लोगों का ज़िक्र किया है? दूसरे शब्दों में, यीशु ने किससे कहा, “मैं तुझ से सच कहता हूँ, आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा”? वह उन “दो अपराधियों” (पद 39)—या “दो डाकुओं” (मत्ती 27:38)—में से एक था, जिन्हें यीशु के साथ सलीब पर चढ़ाया गया था। यह तय करना नामुमकिन है कि यह व्यक्ति वह डाकू था जो यीशु के दाईं ओर लटका था या वह जो उनकी बाईं ओर लटका था (लूका 23:33; *कंटेम्पररी इंग्लिश वर्शन*)। हालाँकि उस समय डाकुओं के लिए सलीब पर चढ़ाना ही एकमात्र सज़ा नहीं थी, लेकिन यह बात कि इन दोनों को यीशु के साथ सलीब पर चढ़ाया गया था, यह बताती है कि वे कोई आम अपराधी नहीं थे—वे सबसे बुरे अपराधियों में से थे। जब यीशु सलीब पर लटके हुए थे, तो इन दोनों डाकुओं ने उनका मज़ाक उड़ाया। मत्ती 27:44 पर गौर करें: “जो डाकू उसके साथ सलीब पर चढ़ाए गए थे, उन्होंने भी उसी तरह उसकी बेइज़्जती की।” यहाँ, “उसी तरह” वाक्यांश यह बताता है कि इन दोनों डाकुओं ने यीशु का मज़ाक ठीक वैसे ही उड़ाया, जैसे मुख्य याजकों, शास्त्रियों और बुजुर्गों ने पहले तब उड़ाया था, जब उन्होंने उनका उपहास किया था। यह अंश मत्ती 27:41-43 से है: “इसी तरह, मुख्य याजकों, व्यवस्था के शिक्षकों और बुजुर्गों ने भी उसका मज़ाक उड़ाया। उन्होंने कहा, ‘इसने दूसरों को बचाया, लेकिन खुद को नहीं बचा सकता! यह तो इस्राएल का राजा है! इसे अभी सलीब से नीचे उतरने दो, तब हम इस पर विश्वास करेंगे। यह परमेश्वर पर भरोसा करता है—अगर परमेश्वर इसे बचाना चाहता है, तो अभी बचा ले, क्योंकि इसने कहा था, “मैं परमेश्वर का पुत्र हूँ।”’” [(समकालीन कोरियाई बाइबल) “मुख्य याजकों ने, व्यवस्था के शिक्षकों और बुजुर्गों के साथ मिलकर, यीशु का भी मज़ाक उड़ाया और कहा, ‘इसने दूसरों को बचाया, फिर भी खुद को नहीं बचा सकता! तुम जो इस्राएल का राजा होने का दावा करते हो—अभी इसी वक्त सलीब से नीचे उतरो! तब हम भी विश्वास करेंगे। इसने परमेश्वर पर भरोसा किया और परमेश्वर का पुत्र होने का दावा किया; निश्चित रूप से, अगर परमेश्वर इससे प्रसन्न है, तो वह इसे

अभी बचा लेगा।”] इन दो डाकुओं में से एक ने यीशु का “अपमान किया”—[“उसे बुरा-भला कहा” (समकालीन कोरियाई बाइबल)]—और कहा, “क्या तुम मसीह नहीं हो? खुद को और हमें बचाओ!” (लूका 23:39)। उसी पल, “दूसरे” डाकू ने “उस आदमी” (डाकू) को डाँटा और कहा, “क्या तुम्हें परमेश्वर का डर नहीं लगता, जबकि तुम पर भी वही सज़ा का हुक्म है? हमें तो सही सज़ा मिली है, क्योंकि हमें हमारे कर्मों का ही फल मिल रहा है। लेकिन इस आदमी [यीशु] ने कुछ भी गलत नहीं किया है।” [(समकालीन कोरियाई बाइबल) “दूसरे कैदी ने उसे डांटते हुए कहा, ‘क्या तुम्हें परमेश्वर का डर नहीं है, जबकि तुम्हें भी ठीक वही मौत की सज़ा मिली है? ‘हम इस सज़ा के हकदार हैं क्योंकि हमने पाप किए हैं, लेकिन इस आदमी ने कुछ भी गलत नहीं किया है’” (पद 40–41)। यह कहने के बाद, उस डाकू ने यीशु की ओर मुड़कर कहा, “जब आप अपने राज्य में आएँ, तो मुझे याद रखना” (पद 42)। यहाँ, वाक्यांश “जब आप अपने राज्य में आएँ” यीशु के दूसरे आगमन को दर्शाता है। इस डाकू ने एक अनमोल सच्चाई को समझ लिया—सुसमाचार को। पवित्र आत्मा ने उसे समझने की शक्ति दी, और उसे यीशु पर विश्वास करने तथा उन पर भरोसा रखने का आशीर्वाद प्रदान किया। यीशु ने इस डाकू को उत्तर दिया, “मैं तुमसे सच कहता हूँ, आज तुम मेरे साथ स्वर्गलोक में होगे” (पद 43)। इस संदर्भ में, “स्वर्गलोक” का अर्थ स्वर्ग है।

यहाँ एक दिलचस्प बात यह है कि जहाँ मत्ती 27:41–44 में यह दर्ज है कि यीशु के साथ सूली पर चढ़ाए गए दोनों डाकुओं ने उनकी निंदा की (पद 44)—और शायद उन्होंने भी यीशु का वैसे ही मज़ाक उड़ाया होगा जैसे मुख्य पुजारियों, शास्त्रियों और बुजुर्गों ने उड़ाया था (पद 41), यह कहते हुए: “उसने दूसरों को बचाया, लेकिन वह खुद को नहीं बचा सकता! अगर वह इस्राएल का राजा है, तो उसे अभी सूली से नीचे उतर आने दो, तब हम उस पर विश्वास करेंगे। वह परमेश्वर पर भरोसा करता है; अगर परमेश्वर उससे प्रसन्न है, तो उसे अभी बचा ले, क्योंकि उसने कहा था, ‘मैं परमेश्वर का पुत्र हूँ’” (पद 42–43)—वहीं लूका 23:39–41 यह खुलासा करता है कि, असल में, दोनों डाकुओं में से केवल एक ने ही वास्तव में कहा था, “क्या तुम मसीह नहीं हो?” डाकुओं में से एक ने “यीशु का अपमान करते हुए कहा, ‘खुद को बचाओ—और हमें भी!’” (पद 39, *समकालीन कोरियाई बाइबल*), जबकि दूसरे डाकू ने उस डाकू को “डाँटा” जिसने यीशु का मज़ाक उड़ाया था, यह कहते हुए, “क्या तुम्हें परमेश्वर का डर नहीं है, जबकि तुम भी उसी सज़ा के हकदार हो? हमें हमारे कर्मों का उचित फल मिल रहा है, और इसलिए यह बिल्कुल सही है; “लेकिन इस आदमी ने कुछ भी गलत नहीं किया है” (पद 40–41)। ऐसा कैसे हुआ कि उन दो डाकुओं में से एक, जिसने यीशु का अपमान किया था—यह पूछते हुए, “क्या तुम मसीह नहीं हो?”—जबकि एक डाकू ने यीशु का अपमान (बुराई) यह कहकर किया, “खुद को और हमें बचाओ” (पद 39), तो दूसरे डाकू ने—उस डाकू को डांटने के बाद जिसने यीशु का अपमान किया था—उनसे क्यों पूछा, “हे यीशु, जब तुम अपने राज्य में आओ, तो मुझे याद रखना”? (पद 42)। यीशु का अपमान करने वाले डाकू द्वारा कहे गए शब्द—“खुद को और हमें

बचाओ" (पद 39)—एक ताना भरा अपमान थे, जिसका मतलब था: "अगर तुम सचमुच मसीह हो, तो खुद को और हमें (दोनों डाकुओं को) बचाओ, ताकि हमें सलीब पर इस सज़ा के तहत मौत का दंड न भुगतना पड़े, बल्कि हम जीवित रहें।" इसके विपरीत, दूसरा डाकू—जिसने पहले डाकू को डांटा था—परमेश्वर के भय से बोला, और कहा: "हम इस मृत्युदंड के हकदार हैं क्योंकि हमने पाप किए हैं, लेकिन यीशु ने कुछ भी गलत नहीं किया है" (पद 40-41)। दूसरे शब्दों में, इस डाकू ने स्वीकार किया कि यद्यपि यीशु को भी उसी निंदा का सामना करना पड़ा जैसा उसे और दूसरे डाकू को, फिर भी वह और दूसरा डाकू सूली पर चढ़ाए जाने और दंडित होने के हकदार थे क्योंकि उन्होंने पाप किए थे; जबकि यीशु ने ऐसा कोई पाप नहीं किया था जिसके लिए उन्हें सूली पर चढ़कर मरना पड़े। इसके अलावा, जब इस डाकू ने यीशु से कहा, "हे यीशु, जब आप अपने राज्य में प्रवेश करें, तो मुझे याद रखना" (पद 42), तो वह शारीरिक उद्धार—यानी, अपने शारीरिक जीवन की रक्षा ताकि उसे सूली पर मरना न पड़े—की तलाश नहीं कर रहा था, जैसा कि दूसरा डाकू कर रहा था; बल्कि, उसकी इच्छा थी कि जब यीशु परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करें, तो वे उसे याद रखें, ताकि वह भी यीशु के साथ "फिरदौस" (स्वर्ग) में प्रवेश कर सके और अनंत काल तक जीवित रहे (पद 42-43)।

यही उद्धार का कार्य है—परमेश्वर के उद्धार का संप्रभु अनुग्रह, अपने संपूर्ण रूप में। परमेश्वर ने अपनी ही इच्छा के अनुसार, इस डाकू के साथ [व्यवहार किया]... जहाँ परमेश्वर ने डाकुओं में से एक पर दया दिखाई और उसे उद्धार का अनुग्रह प्रदान किया, वहीं उन्होंने दूसरे को कठोर बने रहने दिया (रोमियों 9:15, 18)। जिस डाकू को परमेश्वर की दया प्राप्त हुई और जिसका उद्धार हुआ, वह वास्तव में एक कुकर्म—एक दुष्ट व्यक्ति था, जिसके पाप सूली पर चढ़कर मृत्युदंड पाने के पूर्ण हकदार थे; फिर भी, परमेश्वर के संप्रभु अनुग्रह के माध्यम से, उसने निष्पाप यीशु मसीह पर अपना विश्वास रखा, और इस प्रकार उद्धार (अनंत जीवन) प्राप्त किया और स्वर्ग में प्रवेश पाया। जैसा कि भजन 87, "द रोब माई लॉर्ड वोर" (The Robe My Lord Wore) के बोलों में प्रतिध्वनित होता है: यीशु—जिन्होंने स्वर्गीय नगर को, जो सियोन पर्वत से कहीं अधिक दीप्तिमान स्थान है, छोड़कर इस संसार में आने के लिए छोड़ा—सूली की कड़वी पीड़ा को सहा और अंत तक हमसे प्रेम किया, यहाँ तक कि सूली पर कीलों से ठोककर मृत्यु को गले लगाने की हद तक (यूहन्ना 13:1); ऐसा करते हुए, उन्होंने उस प्रेम को एक अपराधी डाकू तक भी बढ़ाया, और इस प्रकार उसे उद्धार प्रदान किया (लूका 23:43)। इस प्रकार, यीशु मसीह के अलावा—जो कि मार्ग हैं, सत्य, और जीवन—कोई भी परमपिता परमेश्वर के पास नहीं आ सकता (यूहन्ना 14:6)। केवल यीशु मसीह पर विश्वास के द्वारा ही कोई उद्धार पा सकता है और स्वर्ग में प्रवेश कर सकता है। "प्रभु यीशु पर विश्वास करो, और तुम उद्धार पाओगे—तुम और तुम्हारा पूरा परिवार" (प्रेरितों के काम 16:31)।

सलीब से कहे गए सात वचन (3)

[यूहन्ना 19:25-27]

यह तीसरा वचन है जो यीशु ने सलीब से कहा: "हे नारी, देख, यह तेरा पुत्र है! ... देख, यह तेरी माता है!" (यूहन्ना 19:26-27)।

आज का पाठ यूहन्ना 19:25-27 से लिया गया है: "अब यीशु की सलीब के पास उसकी माता, उसकी माता की बहन, क्लोपास की पत्नी मरियम, और मरियम मगदलीनी खड़ी थीं। जब यीशु ने अपनी माता को, और जिस चेले से वह प्रेम रखता था, उसे पास खड़ा देखा, तो उसने अपनी माता से कहा, 'हे नारी, देख, यह तेरा पुत्र है!' फिर उसने उस चेले से कहा, 'देख, यह तेरी माता है!' और उसी घड़ी से वह चेला उसे अपने घर ले गया।" इन वचनों से हम देख सकते हैं कि यीशु की सलीब के पास चार स्त्रियाँ और एक पुरुष खड़े थे।

सबसे पहले, मैं उन चार स्त्रियों पर विचार करना चाहूँगा: (1) "उसकी माता" का तात्पर्य मरियम से है, जो यीशु की माता थी और जिसे सलीब पर चढ़ाया गया था। (2) "उसकी माता की बहन" का तात्पर्य सलोमी (मरकुस 15:40) से है—जो मरियम (यीशु की माता) की छोटी बहन और ज़ेबेदी की पत्नी थी; ज़ेबेदी, यीशु के बारह चेलों में से दो चेलों—याकूब और यूहन्ना—का पिता था (मत्ती 27:56)। हम यह कैसे जान सकते हैं? मत्ती 27:56 और मरकुस 15:40 में वर्णित व्यक्तियों की तुलना करके: (मत्ती 27:56) मरियम मगदलीनी, छोटे याकूब और यूसुफ की माता मरियम, और "ज़ेबेदी के पुत्रों की माता"; (मरकुस 15:40) मरियम मगदलीनी, छोटे याकूब और योसेस की माता मरियम, और "सलोमी।" (3) जहाँ तक उस स्त्री की बात है जिसकी पहचान "क्लोपास की पत्नी मरियम" (यूहन्ना 19:25) के रूप में की गई है, हम स्पष्ट रूप से या निश्चित तौर पर यह नहीं कह सकते कि वह कौन थी। इस विषय पर विभिन्न सिद्धांत प्रचलित हैं। यदि हम मत्ती 10:2-4 और मरकुस 3:18 को देखें—जो उस दृश्य को दर्शाते हैं जहाँ यीशु अपने बारह चेलों को बुलाते हैं—तो एक सिद्धांत यह सुझाव देता है कि अल्फियस के पुत्र, वास्तव में, क्लोपास के ही पुत्र हैं। दूसरे शब्दों में, यह सिद्धांत यह मानता है कि "क्लोपास" और "अल्फेयस" नाम एक ही व्यक्ति को दर्शाते हैं। चारों सुसमाचारों की तुलना करने पर, कोई यह निष्कर्ष निकाल सकता है कि 'जेम्स द लेस' (छोटा

जेम्स) और 'जोसेस' क्लोपास के बेटे थे; इसके अलावा, चूंकि 'जेम्स द लेस' की पहचान अल्फेयस के बेटे के रूप में भी की जाती है, इसलिए यह मानना तर्कसंगत है कि अल्फेयस, क्लोपास का ही दूसरा नाम था (इंटरनेट स्रोत)। (4) "मैरी मैग्डलीन" के नाम से जानी जाने वाली महिला, एक ऐसी मैरी थी जो मगदला क्षेत्र में रहती थी; वह बुरी आत्माओं के प्रभाव से बहुत पीड़ित थी—सात दुष्ट आत्माओं से ग्रस्त थी—जब तक कि यीशु ने उसे चंगा नहीं कर दिया, जिसके बाद उसने अपना जीवन उनकी सेवा में समर्पित कर दिया। कृपया लूका 8:2 देखें: "और कुछ स्त्रियाँ भी, जो बुरी आत्माओं और बीमारियों से चंगी हुई थीं: मैरी (जिसे मैग्डलीन कहते हैं), जिससे सात दुष्ट आत्माएँ निकल गई थीं।" ये चारों स्त्रियाँ शुरू से ही यीशु के साथ नहीं थीं (यूहन्ना 19:25)। वास्तव में, शुरू में वे यीशु को दूर से ही देखती थीं (मरकुस 15:40)। इन चारों स्त्रियों के लिए—जिन्होंने शुरू में यीशु को दूर से देखा था—यह कोई आसान काम नहीं रहा होगा कि वे भारी भीड़ को चीरते हुए, यीशु के क्रूस के ठीक नीचे तक पहुँचें, जब उन्हें क्रूस पर चढ़ाने के लिए गोलगोथा ले जाया गया था।

तो फिर, आज के पाठ—यूहन्ना 19:25–27—में जिस एकमात्र पुरुष का ज़िक्र है, वह कौन है? इस व्यक्ति की पहचान यीशु ने "उस चेले" के रूप में की है "जिससे वह प्रेम करता था" (यूहन्ना 19:26) [नोट: यहाँ "चेला" शब्द एकवचन में है]। अपने बारह चेलों में से, यीशु पीटर, यूहन्ना और जेम्स से विशेष प्रेम करते थे; इसलिए, जब आराधनालय के सरदार—जायरस—की बेटी की मृत्यु हो गई, तो यीशु ने पीटर, जेम्स और जेम्स के भाई यूहन्ना के अलावा किसी और को अपने पीछे आने की अनुमति नहीं दी (मरकुस 5:37)। इसी तरह, जब यीशु 'रूपांतरण के पर्वत' (Mount of Transfiguration) पर चढ़े और उनका रूपांतरण हुआ, तो वे केवल पीटर, जेम्स और यूहन्ना को ही अपने साथ अलग ले गए (मत्ती 17:1–2)। इसके अलावा, जब उन्होंने गेथसेमेन के बगीचे में प्रार्थना की, तो उन्होंने आठ शिष्यों को बगीचे के प्रवेश द्वार पर ही छोड़ दिया और केवल पतरस, याकूब और यूहन्ना को ही अपने साथ अंदर ले गए (मरकुस 14:33)। इन तीनों शिष्यों में से, आज के पाठ—यूहन्ना 19:26—में जिस शिष्य का ज़िक्र "वह शिष्य जिससे यीशु प्रेम करते थे" के रूप में किया गया है, वह यूहन्ना ही है। हम निम्नलिखित कारणों से यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं: पहला, प्रेरित याकूब को हेरोदेस द्वारा पहले ही मृत्युदंड दिया जा चुका था (प्रेरितों के काम 12:2); इसलिए, जब यीशु ने क्रूस से बात की—और "उस शिष्य" से कहा, "देखो, यह तुम्हारी माता है!" (यूहन्ना 19:27)—तब याकूब यीशु की माता, मरियम की देखभाल करने के लिए जीवित नहीं था। दूसरा, हम जानते हैं कि वह प्रेरित पतरस नहीं था, क्योंकि फसह के ठीक पहले एक घटना घटी थी: यह जानते हुए कि अब उनका इस संसार से विदा होने और पिता के पास लौटने का समय आ गया है—और संसार में अपने लोगों से अंत तक प्रेम करते हुए (यूहन्ना 13:1)—यीशु ने शिष्यों के पैर धोए और उनसे बात करते हुए घोषणा की, "मैं तुम से सच कहता हूँ, तुम में से एक मुझे पकड़वा देगा" (पद 21)। उस क्षण, पतरस ने यीशु के शिष्यों में से एक को—विशेष रूप से, "वह जिससे यीशु प्रेम करते थे," जो यीशु के पास ही लेटा हुआ था—संकेत किया और उससे आग्रह किया कि वह पूछे कि यीशु किसके बारे में बात कर रहे हैं (पद 23–24)। तो, जब यीशु को

कूस पर चढ़ाया गया, तब प्रेरित पतरस कहाँ था? बाइबल के अनुसार, पतरस न तो यीशु के कूस के पास खड़ा था—जैसा कि आज के पाठ, यूहन्ना 19:25 में उल्लिखित चार स्त्रियाँ खड़ी थीं—और न ही इस बात का कोई ज़िक्र है कि उसने यीशु को दूर से भी देखा हो, जैसा कि उन स्त्रियों ने किया था (मरकुस 15:40)। इससे यह पता चलता है कि प्रेरित पतरस वहाँ बिल्कुल भी उपस्थित नहीं था। यदि पतरस—जो तीन बार इनकार करने के बाद यीशु के शब्दों को याद करके फूट-फूटकर रोया था—ने सचमुच पश्चाताप किया होता, तो क्या उसे यीशु का और भी अधिक निकटता से अनुसरण नहीं करना चाहिए था? हमारा क्या? क्या हम सचमुच यीशु के कूस के पास खड़े हैं? या, कम से कम, क्या हमें उन्हें दूर से ही नहीं देखना चाहिए? आज के पाठ (यूहन्ना 19:25–26) में बताई गई चार महिलाओं और एक पुरुष—यूहन्ना—की तरह, हमें भी यीशु का करीब से अनुसरण करना चाहिए और उनके कूस के पास खड़े रहना चाहिए।

आज का पाठ यूहन्ना 19:26–27 से लिया गया है: “जब यीशु ने अपनी माँ और उस चेले को, जिससे वह प्रेम करता था, पास खड़े देखा, तो उसने अपनी माँ से कहा, ‘हे स्त्री, देख, यह तेरा पुत्र है,’ और उस चेले से कहा, ‘देख, यह तेरी माँ है।’ उसी समय से, वह चेला उसे अपने घर ले गया।” डॉ. पार्क यून-सन ने यहाँ तीन महत्वपूर्ण बातें बताई हैं: (1) “भले ही वह अपने अंतिम क्षण तक परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारी रहे, फिर भी यीशु ने अपने मानवीय कर्तव्यों की उपेक्षा नहीं की। उन्होंने अपनी माँ के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को पूरी तरह से निभाया। उन्होंने अपनी माँ की देखभाल का कर्तव्य अपने प्रिय चेले, यूहन्ना को सौंपा। (2) यीशु ने अपनी माँ को एक आध्यात्मिक उद्देश्य के लिए अपने प्रिय चेले को सौंपा। यह एक गहरा सबक है, जो हमें सिखाता है कि प्राकृतिक जगत की सभी चीज़ों को अंततः आध्यात्मिक जगत के उद्देश्यों की पूर्ति करनी चाहिए। (3) यीशु ने अपने जैविक परिवार की तुलना में अपने आध्यात्मिक परिवार को अधिक महत्व दिया। इसी कारण से, उन्होंने अपनी माँ को अपने सगे छोटे भाइयों के बजाय प्रेरित यूहन्ना को सौंपा। चूंकि आध्यात्मिक संगति शाश्वत और परमेश्वर-केंद्रित होती है, इसलिए हम इसे जितना अधिक प्राथमिकता देंगे, हम परमेश्वर के उतने ही करीब पहुँचेंगे।”

यीशु के कूस के पास चार महिलाएँ—उनकी माँ मरियम, उनकी मौसी सलोमी, क्लोपास की पत्नी मरियम, और मरियम मगदलीनी—और उनके साथ एक पुरुष, प्रेरित यूहन्ना, खड़े थे। जैसा कि मत्ती 20:28 में कहा गया है, यीशु सेवा करवाने नहीं, बल्कि सेवा करने आए थे; उन्होंने अपना कीमती लहू बहाया और कूस पर अपनी जान दे दी ताकि वे बहुतों के लिए फिरौती के रूप में अपना जीवन अर्पित कर सकें—यानी, बहुत से लोगों के पापों की कीमत चुका सकें। रोमियों 8:35–37 में लिखा है: “कौन हमें मसीह के प्रेम से अलग करेगा? क्या क्लेश, या संकट, या सताव, या अकाल, या नंगापन, या खतरा, या तलवार? जैसा कि लिखा है: ‘तेरे ही कारण हम दिन भर मृत्यु का सामना करते हैं; हम ऐसे भेड़ों के समान गिने जाते हैं जिन्हें बलि के लिए ले जाया जाता है।’ फिर भी इन सब बातों में हम उसके द्वारा, जिसने हमसे प्रेम किया, विजेताओं से भी

बढ़कर हैं।” मसीह के अटूट प्रेम के कारण, हमें भी—यीशु की माँ मरियम, उनकी मौसी सलोमी, क्लोपास की पत्नी मरियम, मरियम मगदलीनी और प्रेरित यूहन्ना की तरह—अंत तक यीशु के साथ रहना चाहिए। इसके अलावा, उस प्रभु के द्वारा जो हमसे प्रेम करते हैं, हमें क्लेश, संकट, सताहट, अकाल, नग्नता, खतरा और तलवार (मृत्यु) पर विजय प्राप्त करनी चाहिए। इसलिए, जब हमारे प्रभु अपनी महिमा के वस्त्र धारण करेंगे और हमारे लिए द्वार खोलेंगे, तो हमें उनके राज्य में प्रवेश करना चाहिए और वहाँ अनंत काल तक रहना चाहिए (New Hymnal 87, “The Garment My Lord Wears,” पद 4)।

सलीब से कहे गए सात वचन (4)

[मत्ती 27:45-49]

यह चौथा वचन है जो यीशु ने सलीब से कहा: “एली, एली, लामा सबक्त्नी।”

मत्ती 27:46 में लिखा है: “लगभग नौवें घंटे यीशु ने ऊँची आवाज़ में पुकारा, ‘एली, एली, लामा सबक्त्नी?’— जिसका अर्थ है, ‘हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?’” यहाँ, “नौवें घंटे” का अर्थ है “लगभग दोपहर 3:00 बजे” (पद 46, *द कंटेम्पररी बाइबल*)। इसके अलावा, यह वाक्यांश कि यीशु “ऊँची आवाज़ में पुकारा,” यह दर्शाता है कि उन्होंने परमेश्वर पिता को बहुत ज़ोर से पुकारा; वास्तव में, कुछ लोगों ने इसे यीशु की “पीड़ा भरी चीख” के रूप में वर्णित किया है। इस संदर्भ में, यह कथन कि यीशु ने सलीब से “पीड़ा में चीखकर पुकारा,” इसका अर्थ है कि उन्होंने परमेश्वर पिता को अपनी पूरी शक्ति से पुकारा—पूरी लगन से और गहरी, कष्टदायक हताशा के साथ।

लगभग 700 साल पहले, भविष्यवक्ता यशायाह ने भविष्यवाणी की थी कि मसीहा (मसीह) अपना मुँह नहीं खोलेगा: “उस पर अत्याचार हुआ और उसे सताया गया, फिर भी उसने अपना मुँह नहीं खोला; उसे एक मेमने की तरह वध के लिए ले जाया गया, और जिस तरह ऊन काटने वालों के सामने एक भेड़ चुप रहती है, उसी तरह उसने अपना मुँह नहीं खोला” (यशायाह 53:7)। इस भविष्यसूचक वचन की पूर्ति में, यीशु मसीह न केवल अपनी पूछताछ और मुक़दमे के दौरान चुप रहे, बल्कि जब उन्हें सलीब पर चढ़ाया जा रहा था, तब भी वे चुप रहे—विशेष रूप से उस समय के दौरान “दोपहर से लेकर अपराह्न तीन बजे तक, जब पूरे देश पर अंधेरा छा गया था” (मत्ती 27:45, *द कंटेम्पररी बाइबल*)। जब हम यहाँ दिए गए इस कथन पर विचार करते हैं कि “पूरे देश पर अँधेरा छा गया” (पद 45, *मॉडर्न पीपल्स बाइबल*), तो हमें इसे निर्गमन 10:21-23 के अंश के संदर्भ में देखना चाहिए: “तब यहोवा ने मूसा से कहा, ‘अपना हाथ आकाश की ओर बढ़ा, ताकि मिस्र देश पर अँधेरा छा जाए—ऐसा अँधेरा जिसे महसूस किया जा सके।’ तब मूसा ने अपना हाथ आकाश की ओर बढ़ाया, और तीन दिन तक पूरे मिस्र देश पर घोर अँधेरा छाया रहा। तीन दिन तक न तो कोई किसी को देख सका और न ही कोई अपनी जगह से उठ सका, परन्तु जहाँ-जहाँ इस्राएली

रहते थे, वहाँ-वहाँ उजाला था।" इस नौवीं विपत्ति को देखते हुए—जो उन दस विपत्तियों में से एक थी जिन्हें परमेश्वर ने इस्राएल के लोगों को छुड़ाने के लिए मिस्र पर भेजा था—हम देखते हैं कि "घोर अंधेरा" पूरे मिस्र देश पर "तीन दिन" तक छाया रहा (पद 22, *मॉडर्न पीपल्स बाइबल*); इस दौरान, लोग एक-दूसरे को पहचान नहीं सके, और न ही कोई अपनी जगह से उठा (पद 23, *मॉडर्न पीपल्स बाइबल*)। फिर भी, दिलचस्प बात यह है कि गोशेन देश में उजाला था, जहाँ इस्राएल के सभी वंशज रहते थे (पद 23)। इस संदर्भ में, परमेश्वर द्वारा पूरे मिस्र देश पर तीन दिन तक घोर अंधेरा छा देने का कार्य यह दर्शाता है कि परमेश्वर मिस्रियों को दण्ड दे रहा था।

यह तथ्य कि—जब यीशु मसीह तीन घंटे तक क्रूस पर टंगे हुए थे, "दोपहर से लेकर अपराह्न तीन बजे तक" (मत्ती 27:45, *मॉडर्न पीपल्स बाइबल*)—तब पूरे देश पर केवल अंधेरा ही छा गया (पद 45) और कोई उजाला नहीं था, यह दर्शाता है कि परमेश्वर पिता अपने एकलौते पुत्र, यीशु मसीह को दण्ड दे रहा था। यीशु मसीह, जो जगत की ज्योति हैं (यूहन्ना 9:5), क्रूस पर रहते हुए तीन घंटे तक अंधेरे के दण्ड को सहते रहे (मत्ती 27:45)। जब यीशु क्रूस पर टंगे हुए थे, तब वे मौन रहे, उन्होंने कभी अपना मुँह नहीं खोला—यहाँ तक कि जब राहगीरों ने सिर हिलाकर उनका अपमान किया (मत्ती 27:39-40); जब प्रधान याजकों ने, शास्त्रियों और पुरनियों के साथ मिलकर, उसी तरह उनका उपहास किया (पद 41-43); और जब उनके साथ सूली पर चढ़ाए गए दो डाकुओं ने भी उनका अपमान किया (पद 44)। तीन घंटे तक ऐसी खामोशी सहने के बाद, यीशु ने आखिरकार "दोपहर लगभग तीन बजे" एक ऊँची आवाज़ में पुकारा, और कहा, "एली, एली, लामा सबक्तनी?" इन शब्दों का अर्थ है: "हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?" (मत्ती 27:46, *मॉडर्न पीपल्स बाइबल*)। परमेश्वर—जिन्होंने इस्राएल के लोगों को मिस्र से छुड़ाने की अपनी इच्छा में, तीन दिनों तक चलने वाले घोर अंधकार की नौवीं विपत्ति भेजी थी—अंततः मिस्र के राजा, फ़िरौन और उसके लोगों पर दसवीं और अंतिम विपत्ति ले आए, क्योंकि वे अपने दिलों को कठोर करने पर अड़े रहे थे। निर्गमन 11:5 (*मॉडर्न पीपल्स बाइबल*) में लिखा है: "मिस्र में, हर पहलौठा मर जाएगा—सिंहासन पर बैठने वाले फ़िरौन के पहलौठे बेटे से लेकर चक्की पर पीसने वाली दासी के पहलौठे बेटे तक; और पशुओं का हर पहलौठा भी मर जाएगा।" इस वचन को पूरा करने के लिए, परमेश्वर ने आधी रात को मिस्र देश में हर पहलौठे को मार डाला—सिंहासन पर बैठने वाले फ़िरौन के पहलौठे बेटे से लेकर कालकोठरी में बंद कैदी के पहलौठे बेटे तक, और साथ ही पशुओं के हर पहलौठे को भी। परिणामस्वरूप, उस रात, फ़िरौन, उसके सभी अधिकारी, और पूरी मिस्री जनता जाग उठी, और पूरे मिस्र देश में विलाप की एक बड़ी चीख सुनाई दी—क्योंकि ऐसा कोई भी घर नहीं था जहाँ किसी की मृत्यु न हुई हो (12:29-30)। यह मिस्र के राजा फ़िरौन और उसके लोगों के पापों का दंड था। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि उनके पाप अपनी चरम सीमा तक पहुँच गए थे, जिसके कारण परमेश्वर ने उन पर ऐसा दंड दिया। फिर भी, पूरी तरह से निष्पाप होने के बावजूद, यीशु मसीह को सूली पर चढ़ाया गया; और उन "तीन घंटों"—"दोपहर से लेकर तीन बजे तक" (मत्ती 27:45)—के दौरान जब वे सूली पर लटके रहे, न केवल

"पूरे देश में अंधकार छा गया" (पद 45), बल्कि उन्होंने अपने प्रेमी स्वर्गीय पिता द्वारा छोड़ दिए जाने की पीड़ा भी सहन की (पद 46)। बाइबल साफ़ तौर पर कहती है कि यीशु मसीह वह हैं जो पाप-रहित हैं: (2 कुरिन्थियों 5:21) "परमेश्वर ने उसे, जिसने कोई पाप नहीं किया था, हमारे लिए पाप बना दिया, ताकि उसमें हम परमेश्वर की धार्मिकता बन सकें" [(समकालीन कोरियाई बाइबल: "परमेश्वर ने हमारे पापों का बोझ मसीह पर डाल दिया—जो पाप को जानता भी नहीं था—ताकि, मसीह में, परमेश्वर हमें धर्म के रूप में स्वीकार कर सकें")]; (1 पतरस 2:22) "उसने कोई पाप नहीं किया, और उसके मुँह में कोई छल नहीं पाया गया" [(समकालीन कोरियाई बाइबल: "मसीह ने कोई पाप नहीं किया, और उसके मुँह में कोई छल नहीं था")]; (1 यूहन्ना 3:5) "परन्तु तुम जानते हो कि वह हमारे पापों को दूर करने के लिए प्रकट हुआ, और उसमें कोई पाप नहीं है" [(समकालीन कोरियाई बाइबल: "जैसा कि तुम भी जानते हो, यीशु पापों को दूर करने के लिए दुनिया में आया, और उसमें बिल्कुल भी पाप नहीं है")]]। हालाँकि यीशु को इस धरती पर अपने तैंतीस साल के जीवन के दौरान कई प्रलोभनों का सामना करना पड़ा, फिर भी उसने कोई पाप नहीं किया। यीशु वह है जिसे कभी भी पाप करने का कोई अनुभव नहीं हुआ। लेकिन ऐसा क्यों है कि वह, जो पूरी तरह से पाप-रहित था, न केवल क्रूस पर चढ़ाया गया, बल्कि उसे पूरी धरती पर छाए तीन घंटे के अंधकार को भी सहना पड़ा, और इसके अलावा, उसे परमेश्वर पिता द्वारा त्याग दिए जाने का अनंत दंड भी भोगना पड़ा? इसका कारण ठीक हमारे ही लिए है। हमें हमारे पापों से बचाने के लिए, यीशु को हमारी जगह क्रूस पर चढ़ाया गया और उसने परमेश्वर पिता द्वारा त्याग दिए जाने का दंड सहा। और अंततः, यीशु क्रूस पर मर गया।

एक दिलचस्प बात यह है कि परमेश्वर ने मिस्रियों पर नौवीं विपत्ति—"घोर अंधकार"—"तीन दिनों" के लिए डाली (निर्गमन 10:22); उसी तरह, आज्ञा न मानने वाले भविष्यवक्ता योना ने एक बड़ी मछली के पेट के अंदर "तीन दिन और तीन रातें" बिताई (योना 1:17); और पाप-रहित यीशु न केवल क्रूस पर "तीन घंटे तक अंधकार में" रहा (मत्ती 27:45), बल्कि अंततः वह "धरती के भीतर तीन दिन और तीन रातें" भी रहा (मत्ती 12:40)। नबी योना ने उस बड़ी मछली के पेट को "कब्र जैसी जगह" (योना 2:2) या "मृत्यु का देश" (पद 6) बताया। जैसा कि यीशु ने घोषणा की थी—"क्योंकि जैसे योना तीन दिन और तीन रात एक बड़ी मछली के पेट में रहा, वैसे ही मनुष्य का पुत्र भी तीन दिन और तीन रात पृथ्वी के गर्भ में रहेगा" (मत्ती 12:40)—ठीक वैसा ही हुआ: हमारे सारे पापों को अपने ऊपर लेकर और हमें बचाने के लिए क्रूस पर मरकर, यीशु मसीह तीन दिन और तीन रात पृथ्वी में रहे, ठीक वैसे ही जैसे नबी योना उस बड़ी मछली के अंदर तीन दिन रहा था। जिस तरह परमेश्वर ने आज्ञा न मानने वाले नबी योना को तीन दिन और तीन रात तक एक बड़ी मछली के पेट में बंद रखा—एक ऐसी जगह जो कब्र या मृत्यु के देश जैसी थी (योना 2:2, 6)—उसी तरह उन्होंने अपने इकलौते पुत्र, यीशु मसीह को भी तीन दिन तक मृत्यु के देश में बंद रखा। [अंग्रेजी 'अपोस्टल्स क्रीड' (Apostles' Creed) इन तीन दिनों को मृत्यु के देश में बिताने का वर्णन इस वाक्यांश से करती है, "वह नरक में उतरा।" दूसरे शब्दों में, यीशु ने सचमुच उस घोर अंधकार के क्षेत्र में तीन दिनों तक नरक की यातनाएँ सहੀं।] इसका कारण यह है कि हम—जिनका भाग्य उस घोर अंधकार के क्षेत्र, यानी नरक में

हमेशा रहने का था—स्वर्ग के राज्य में हमेशा के लिए जी सकें। परमेश्वर, जिसने आज्ञा न मानने वाले नबी योना को अपनी नज़रों से दूर कर दिया था (योना 2:4), उसने यीशु को—जो क्रूस पर मृत्यु तक परमेश्वर के आज्ञाकारी रहे (फिलिप्पियों 2:8)—पृथ्वी की गहराइयों में भेज दिया; उन्होंने ऐसा इसलिए किया ताकि हम—पापी लोग जो परमेश्वर के शत्रु थे और जिनका अंततः हमेशा के लिए नरक में डाला जाना तय था—हमेशा के लिए स्वर्ग में प्रवेश पा सकें। यीशु ने स्वयं को इसलिए दीन बनाया—और नीचे, और नीचे, यहाँ तक कि पृथ्वी के गर्भ तक उतर गए—क्योंकि परमेश्वर का उद्देश्य हमें "स्वर्ग के निवासी" (1 कुरिन्थियों 15:48) बनाना था। यहाँ एक आधुनिक ईसाई गीत, "उस समय, भीड़ ने" (At That Time, the Crowd) के पहले छंद के बोल दिए गए हैं: "उस समय, भीड़ ने यीशु को सूली पर चढ़ा दिया / तीन जंग लगी कीलों के साथ। / हथौड़े की आवाज़ गूँज उठी, जो मेरे दिल की गहराइयों में प्रतिध्वनित हुई; / उनके लहू से, मेरे पाप धुल गए।" सचमुच, जब यीशु को गोलगोथा की पहाड़ी पर उस सूली पर, उन तीन जंग लगी कीलों के साथ जड़ा गया था, तो क्या उस हथौड़े की आवाज़ सचमुच हमारे दिलों में गूँजती है? क्या वह पीड़ा भरी चीख, जो यीशु ने सूली से ऊँची आवाज़ में लगाई थी—"हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?" (मत्ती 27:46)—सचमुच हमारे दिलों में गूँजती है? मैं प्रार्थना करता हूँ कि परमेश्वर हम सब पर अपनी कृपा बरसाएँ, ताकि हम यीशु के सूली से कहे गए इस चौथे वचन को सचमुच सुन सकें: वह पीड़ा भरी चीख, "हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?" (पद 46)। इस प्रकार, मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम सब अपनी पूरी शक्ति से परमेश्वर को धन्यवाद और स्तुति अर्पित करें, यह कहते हुए: "यह हम ही थे जिन्होंने उस समय यीशु को सूली पर चढ़ाया था, उन तीन जंग लगी कीलों के साथ; उनकी पीड़ा भरी चीख मेरी आत्मा की गहराइयों में गूँज उठी, और उनके लहू से, मेरे पाप धुल गए।"

“एलोई, एलोई, लामा सबख्यानी”

[मरकुस 15:33–36]

यह चौथी बात है जो यीशु ने क्रूस से कही: “एलोई, एलोई, लामा सबख्यानी।”

मरकुस 15:34 में लिखा है: “नौवें घंटे यीशु ने ऊँची आवाज़ में पुकारा, ‘एलोई, एलोई, लामा सबख्यानी?’—जिसका मतलब है, ‘हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?’” पिछले हफ़्ते हमारी बुधवार की आराधना के दौरान, हमने क्रूस से यीशु की इस चौथी बात—“एलोई, एलोई, लामा सबख्यानी”—पर मनन किया, और मुख्य रूप से मत्ती 27:46 के अंश पर ध्यान केंद्रित किया। यीशु मसीह के इस दुनिया में आने से लगभग 700 साल पहले, भविष्यवक्ता यशायाह ने यशायाह 53:7 में भविष्यवाणी की थी कि मसीहा—यीशु मसीह—चुप रहेंगे। इस भविष्यवाणी की पूर्ति में, यीशु सचमुच चुप रहे, जब तक कि क्रूस पर अपनी मृत्यु से ठीक पहले, उन्होंने ऊँची आवाज़ में पुकारा, “एलोई, एलोई, लामा सबख्यानी” (मत्ती 27:46)। हालाँकि यीशु निष्पाप थे, फिर भी पिता परमेश्वर ने *हमारे* पापों के कारण उन्हें त्याग दिया; इसी कारण से उन्होंने ऊँची आवाज़ में पुकारा, “हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?”

आज, हम एक बार फिर क्रूस से यीशु की इस चौथी बात—“एलोई, एलोई, लामा सबख्यानी”—पर मनन करेंगे, और आज के हमारे पाठ, मरकुस 15:33–36, और विशेष रूप से पद 34 पर ध्यान केंद्रित करेंगे। सबसे पहले, यह ध्यान देने योग्य है कि वाक्यांश “एलोई, एलोई, लामा सबख्यानी” अरमाईक भाषा में है। दूसरे शब्दों में, क्रूस से, यीशु ने अरमाईक शब्दों का उपयोग करते हुए ऊँची आवाज़ में पुकारा: “एलोई, एलोई, लामा सबख्यानी।” उस समय, इस्राएल के लोग भी अरमाईक बोलते थे। अगला बिंदु जिस पर हम विचार करना चाहते हैं, वह यह है: “पिता परमेश्वर ने पुत्र परमेश्वर, यीशु को कब त्यागा?” आज का हमारा पाठ मरकुस 15:33–34 से लिया गया है: “जब छठा घंटा आया, तो नौवें घंटे तक पूरे देश में अंधेरा छा गया। और नौवें घंटे यीशु ने ऊँची आवाज़ में पुकारा, ‘एलोई, एलोई, लामा सबख्यानी?’ जिसका अनुवाद है, ‘हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?’” यीशु ने ठीक किस समय ऊँची आवाज़ में पुकारा था, “एलोई, एलोई, लामा सबख्यानी” (“हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?”)? यह तब नहीं

था जब महायाजक अन्नास उनसे पूछताछ कर रहे थे; न ही तब जब कैफा उनसे सवाल कर रहे थे; न ही तब जब वे सनहेद्रिन परिषद के सामने मुकदमे के लिए खड़े थे; न ही तब जब पीलातुस उनसे पूछताछ और मुकदमा चला रहे थे; और न ही तब जब राजा हेरोदेस उनसे सवाल कर रहे थे। इसके अलावा, उन्होंने ये शब्द तब भी नहीं कहे जब वे अपनी मृत्यु-स्थल—खोपड़ी (गोलगोथा)—की ओर जाते हुए क्रूस उठाए चल रहे थे, जहाँ उन्हें क्रूस पर चढ़ाया जाना था और अपनी सज़ा भुगतनी थी; न ही उन्होंने ये शब्द ठीक उस पल कहे जब उन्हें क्रूस पर कीलों से जड़ा जा रहा था; न ही उन्होंने क्रूस पर चढ़ाए जाने के तुरंत बाद के तीन घंटों (सुबह 9:00 बजे से दोपहर 12:00 बजे तक) के दौरान ये शब्द कहे; और न ही उन्होंने उस घोर अंधेरे के समय (दोपहर 12:00 बजे से 3:00 बजे तक) ये शब्द कहे। बल्कि, यह दोपहर लगभग 3:00 बजे का समय था—जब यह सारा कष्ट समाप्त होने वाला था—कि उन्होंने ऊँची आवाज़ में पुकारा, "एलोई, एलोई, लामा सबक्तानी।" यीशु ने, "यह जानते हुए कि अब सब कुछ पूरा हो चुका है, और ताकि पवित्रशास्त्र की बात पूरी हो जाए, कहा, 'मुझे प्यास लगी है'" (यूहन्ना 19:28)। खट्टी दाखमधु पीने के बाद, उन्होंने घोषणा की, "यह पूरा हुआ।" फिर, अपना सिर झुकाकर, उन्होंने अपने प्राण त्याग दिए (पद 30); फिर भी, अपनी मृत्यु से ठीक पहले, उन्होंने ऊँची आवाज़ में पुकारा था, "एलोई, एलोई, लामा सबक्तानी?" (मरकुस 15:34)। यीशु ने क्रूस से ऊँची आवाज़ में पुकारा, "एलोई, एलोई, लामा सबक्तानी?" मैं इस बारे में तीन बातों पर विचार करना चाहूँगा कि यह हमें क्या दिखाता है:

पहली बात, यीशु की यह पुकार "एलोई, एलोई, लामा सबक्तानी?" हमें यह दिखाती है कि परमेश्वर धर्मी, न्यायप्रिय और पवित्र है।

अगर हम उस प्रार्थना को देखें जो यीशु ने अपने शिष्यों को सिखाई थी (प्रभु की प्रार्थना), तो उसकी शुरुआत इन शब्दों से होती है, "तेरा नाम पवित्र माना जाए" (मत्ती 6:9; लूका 11:2)। परमेश्वर पवित्र है। हबक्कूक 1:13 का पहला हिस्सा कहता है: "तेरी आँखें इतनी पवित्र हैं कि वे बुराई को देख नहीं सकतीं; तू गलत काम को सहन नहीं कर सकता..." [(समकालीन कोरियाई बाइबल) "तेरी आँखें इतनी पवित्र हैं कि तू बुराई को देख नहीं सकता, और न ही तू दुष्टता को सहन कर सकता है"]। क्योंकि परमेश्वर पवित्र, धर्मी और न्यायप्रिय है, इसलिए उसकी पवित्र आँखें पाप को देख नहीं सकतीं। एक पवित्र, धर्मी और न्यायप्रिय परमेश्वर पाप से घृणा करता है, उसे सहन नहीं कर सकता, और अनिवार्य रूप से—बिना किसी दया के—उस पर दण्ड देता है। परमेश्वर एक धर्मी परमेश्वर है, जिसने पाप के लिए बिना किसी दया के दण्ड देते हुए, यहाँ तक कि अपने प्रिय और इकलौते पुत्र, यीशु मसीह (मत्ती 3:17) को भी क्रूस पर त्याग दिया।

दूसरी बात, यीशु की यह पुकार, "एली, एली, लामा सबक्तानी," हमें दिखाती है कि पाप की कीमत असल में कितनी भारी और भयानक होती है। दूसरे शब्दों में, यीशु की यह पुकार यह साबित करती है कि पाप का फल मृत्यु है।

उत्पत्ति 2:16-17 के अनुसार, परमेश्वर ने आदम को यह आज्ञा दी थी कि यद्यपि वह अदन की वाटिका में किसी भी पेड़ का फल खाने के लिए स्वतंत्र था, लेकिन उसे एक खास पेड़ का फल खाने से सख्त मनाही थी: भले और बुरे के ज्ञान का पेड़। परमेश्वर ने यह घोषणा की थी कि जिस दिन वह उस फल को खाएगा, "तुम निश्चित रूप से मर जाओगे" (पद 17, *मॉडर्न पीपल्स बाइबल*)। हालाँकि, आदम ने परमेश्वर के इस वाचा वाले वचन की अवज्ञा की; उस वर्जित फल को खाकर (3:6), उसने पाप का दंड—यानी मृत्यु—भुगता।

परमेश्वर ने उसे त्याग दिया। मत्ती अध्याय 5 से 7 तक—वह अंश जहाँ यीशु ने पहाड़ की चोटी से व्यवस्था (नियम) दी थी—यीशु ने मत्ती 5:26 में ये शब्द कहे: "मैं तुमसे सच कहता हूँ, तुम तब तक बाहर नहीं निकल पाओगे जब तक तुम एक-एक पैसा चुका न दो" [(संशोधित कोरियाई संस्करण): "मैं तुमसे सच कहता हूँ, तुम तब तक बाहर नहीं निकल पाओगे जब तक तुम आखिरी कौड़ी भी चुका न दो"]। यहाँ, "पैसा" (penny) शब्द यीशु के समय में प्रचलित रोमन मुद्रा की सबसे छोटी इकाई को दर्शाता है। *संशोधित कोरियाई संस्करण* में "कौड़ी" (mite या *hori*) शब्द का प्रयोग किया गया है; यह एक अत्यंत छोटी मौद्रिक इकाई को दर्शाता है जो एक *असारियन* के चौथाई हिस्से के बराबर थी (और एक *असारियन* स्वयं एक *दिनार* का लगभग सोलहवाँ हिस्सा था—एक ऐसा सिक्का जो पूरे एक दिन की मजदूरी के बराबर होता था) (इंटरनेट स्रोत) [आधुनिक अमेरिकी संदर्भ में, यह एक सेंट के बराबर होगा]। यहाँ यीशु के शब्दों का अर्थ यह है कि यदि कोई ऋणी (कर्जदार) सब कुछ चुका देता है, लेकिन फिर भी एक भी पैसा चुकाने से चूक जाता है, तो वह जेल से बाहर नहीं निकल पाएगा। दूसरे शब्दों में, यीशु ने इस बात पर जोर दिया कि जब तक पूरा कर्ज चुका नहीं दिया जाता, तब तक दंड से बचना अत्यंत कठिन है—इस तथ्य को रेखांकित करते हुए कि किसी ऋणी के लिए एक-एक पैसा चुका पाना, असल में, एक पूरी तरह से निराशाजनक प्रयास है। इस प्रकार, मत्ती 5:26 में यीशु के शब्द परमेश्वर के न्याय द्वारा सुनाए गए दोष-सिद्धि के अंतिम निर्णय को दर्शाते हैं। इस दुनिया की कई जेलों में, ऐसा कोई भी व्यक्ति कैद नहीं है जिसे सिर्फ इसलिए जेल में डाला गया हो क्योंकि उसने अपने कर्ज का बाकी सारा हिस्सा चुकाने के बाद, सिर्फ एक सेंट (बहुत छोटी रकम) चुकाने में चूक कर दी हो। हालाँकि इस दुनिया के कानून इसी तरह काम करते हैं, लेकिन परमेश्वर के कानून के तहत, अगर कोई व्यक्ति एक पैसा भी चुकाने में नाकाम रहता है, तो उसे हमेशा की सज़ा भुगतनी पड़ती है और वह उस हमेशा की जेल—नरक—से कभी बाहर नहीं निकल सकता। परमेश्वर के न्याय का विस्तार इतना ही है: वह ऐसा है जो पाप के लिए भयानक सज़ा देता है। यहाँ तक कि एक सेंट जितने छोटे पाप के लिए भी—ऐसा पाप जो शायद इंसानी आँखों को दिखाई भी न दे और इसलिए हम उसे पाप मानें भी नहीं—परमेश्वर, जो पवित्र, धर्मी और न्यायप्रिय है, फिर भी हमें एक भयानक सज़ा देगा। उदाहरण के लिए, भले ही बाकी सभी पापों का पूरी तरह से निपटारा हो गया हो, लेकिन एक बाल की नोक जितना छोटा पाप भी परमेश्वर की उपस्थिति में न तो बर्दाश्त किया जा सकता है और न ही छिपाया जा सकता है। परमेश्वर को हमारे पापों का इतना पूरा ज्ञान है। इसीलिए यीशु मसीह को हमारे सभी पापों की वजह से परमेश्वर पिता ने त्याग दिया था। संक्षेप में कहें तो, यीशु को परमेश्वर ने

ठीक इसीलिए त्याग दिया था ताकि वह हमारे हर पाप का बोझ उठा सके—आखिरी पैसे तक, आखिरी सेंट तक, और यहाँ तक कि एक बाल की नोक जितने छोटे पाप का बोझ भी।

तीसरी बात, यीशु की यह पुकार, "एली, एली, लामा सबक्तनी," हमें भविष्यवाणी की पूर्ति दिखाती है। यहाँ, भविष्यवाणी का संदर्भ भजन संहिता 22:1 में पाए जाने वाले शब्दों से है—यह एक ऐसी भविष्यवाणी है जो यीशु के इस दुनिया में आने से लगभग 1,000 साल पहले दाऊद द्वारा की गई थी: "हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों त्याग दिया है? तू मुझे बचाने से इतना दूर क्यों है, मेरी कराहट के शब्दों से इतना दूर क्यों है?" [(समकालीन कोरियाई बाइबिल) "(दाऊद का एक भजन। 'सुबह का हिरण' की धुन पर गाया गया एक गीत, गायक-दल के निर्देशक के निर्देशन में।) हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों त्याग दिया है? तू मेरी मदद क्यों नहीं करता, और तू मेरी कराहट की आवाज़ पर अपना कान क्यों नहीं लगाता?"]। अगर कोई इस भजन संहिता 22 के शीर्षक (प्रस्तावना) को ध्यान से देखे, तो उसमें लिखा है: "दाऊद का एक भजन। मुख्य संगीतकार के लिए। 'ऐजेलेथ शाहर' की धुन पर आधारित"; *Contemporary Korean Bible* इसका अनुवाद इस तरह करता है: "दाऊद का एक भजन। 'सुबह का हिरण' की धुन पर गाया गया एक गीत, जो गायक-दल के निर्देशक के निर्देशन में गाया गया" (पद 1, *Contemporary Korean Bible*)। हालाँकि, भजन 22 एक गीत से ज़्यादा एक भविष्यवाणी के रूप में काम करता है। हम इसे न केवल पद 1 से समझ सकते हैं—[जहाँ भविष्यसूचक शब्द, "हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?" तब पूरे हुए जब यीशु ने क्रूस से ऊँची आवाज़ में पुकारा, "एलोई, एलोई, लामा सबक्तनी?" ("हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?") (मरकुस 15:34)]—बल्कि, एक और उदाहरण के तौर पर, पद 18 को देखकर भी: "वे मेरे कपड़े आपस में बाँट लेते हैं, और मेरे वस्त्रों के लिए चिट्ठियाँ डालते हैं।" यह भविष्यवाणी यूहन्ना 19:23-24 में पूरी हुई: "तब सैनिकों ने, जब उन्होंने यीशु को क्रूस पर चढ़ा दिया था, उनके कपड़े ले लिए और चार हिस्से किए, हर सैनिक को एक हिस्सा, और कुरता भी। अब वह कुरता बिना जोड़ का था, ऊपर से नीचे तक एक ही टुकड़े में बुना हुआ। इसलिए उन्होंने आपस में कहा, 'चलो इसे फाड़ें नहीं, बल्कि इसके लिए चिट्ठियाँ डालें कि यह किसका होगा,' ताकि वह शास्त्र पूरा हो जाए जिसमें कहा गया है, 'उन्होंने मेरे कपड़े आपस में बाँट लिए, और मेरे वस्त्रों के लिए चिट्ठियाँ डालीं।' इसलिए सैनिकों ने ये काम किए।"

इस प्रकार, परमेश्वर पिता द्वारा त्यागे जाने का यीशु का अनुभव परमेश्वर के न्याय को संतुष्ट करने का काम आया। यीशु ने हमारे सभी पापों को—चाहे वे एक पैसे (एक सेंट) जितने छोटे पाप हों, अदृश्य पाप हों, या वे पाप भी जिन्हें हम पाप के रूप में पहचानने में असफल रहते हैं—अपने ऊपर लेकर, और परमेश्वर पिता द्वारा त्यागे जाने को सहकर, परमेश्वर के न्याय को संतुष्ट किया; और यह तब तक चलता रहा जब तक कि उन्होंने क्रूस से ऊँची आवाज़ में पुकारा नहीं, "एलोई, एलोई, लामा सबक्तनी!" इसकी पुष्टि यशायाह 53:11 में होती है: "वह अपनी आत्मा के परिश्रम का फल देखेगा, और संतुष्ट होगा। अपने ज्ञान के द्वारा मेरा धर्म सेवक बहुतों

को धर्मी ठहराएगा, क्योंकि वह उनके अधर्म को अपने ऊपर ले लेगा।" पुत्र, यीशु मसीह ने, परमेश्वर को [संतुष्ट किया]... परमेश्वर ने उनकी आत्मा के कष्टों को—पिता द्वारा त्याग दिए जाने की उस वेदना को—देखा और संतुष्ट हुए। इसका कारण यह था कि यह ठीक परमेश्वर की ही इच्छा थी। यीशु संतुष्ट थे क्योंकि उन्होंने नए नियम में वह सब पूरा किया जो परमेश्वर ने पहले से ही निर्धारित कर रखा था और पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं के माध्यम से पहले ही बता दिया था। इसके अलावा, परमेश्वर पिता भी संतुष्ट हुए और आनंदित हुए। परमेश्वर पिता को संतुष्ट करने के लिए, यीशु मसीह ने हमारे सभी पापों को—न केवल हमारे गंभीर पापों को, बल्कि एक पैसे जितने छोटे और मामूली पापों को भी—अपने ऊपर ले लिया; और क्रूस पर, उन्होंने परमेश्वर पिता द्वारा पूरी तरह से त्याग दिए जाने की उस चरम पीड़ा को सहा। इसलिए, हमें उस पुकार को विश्वास के साथ सुनना चाहिए जो यीशु मसीह ने क्रूस से ऊँची आवाज़ में लगाई थी: "एली, एली, लामा सबक्तनी?" ("हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया है?")। इसके अतिरिक्त, हमें पापों की क्षमा की इस अद्भुत कृपा के लिए—इस सत्य के लिए कि क्योंकि उनके एकमात्र पुत्र, यीशु मसीह को परमेश्वर पिता द्वारा त्याग दिया गया था, इसलिए हमें परमेश्वर द्वारा क्षमा कर दिया गया है—परमेश्वर को अपना जीवन भर का और अनंत धन्यवाद, स्तुति और आराधना अर्पित करना चाहिए। और हमें यीशु मसीह के इस सुसमाचार की घोषणा, यीशु मसीह के प्रेम के साथ करनी चाहिए।

सलीब से कहे गए सात वचन (5)

[यूहन्ना 19:28-30]

सलीब से यीशु का चौथा वचन है, "एली, एली, लामा सबक्तनी" (मत्ती 27:46)। यीशु का यह कथन अरामी भाषा में है, और इसका अर्थ है, "हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?" (पद 46)। सलीब से कहा गया यह चौथा वचन हमें यह दिखाता है कि क्योंकि परमेश्वर न्यायी और पवित्र है—और इसलिए न केवल पाप-रहित है, बल्कि पाप से पूरी तरह अनभिज्ञ भी है—उसने अपने एकलौते पुत्र, यीशु मसीह को—जिसने मेरे पाप, हमारे पाप, और हमारे सभी पापों का बोझ उठाया था—सलीब पर त्यागा जाने दिया; यह हमारे अपराधों के प्रायश्चित के रूप में था, जिसके द्वारा उसने हमें छुड़ाया और बचाया। इसके अलावा, सलीब से कहा गया यह चौथा वचन यह भी दर्शाता है कि हमारे पाप की कीमत वास्तव में कितनी भारी और भयानक है। साथ ही, यह कथन पुराने नियम में राजा दाऊद द्वारा की गई भविष्यवाणी को पूरा करता है, विशेष रूप से भजन संहिता 22:1 में। इससे भी बढ़कर, सलीब से यीशु द्वारा कहे गए शब्द "एली, एली, लामा सबक्तनी," हमें परमेश्वर के प्रेम का एक ठोस और अकाट्य प्रमाण देते हैं।

जब यीशु ने सलीब से ऊँची आवाज़ में पुकारा, "एली, एली, लामा सबक्तनी," तो हम परमेश्वर के प्रेम को—उस परमेश्वर को जो प्रेम स्वरूप है (1 यूहन्ना 4:8, 16)—एक ठोस और निश्चित तरीके से समझने में समर्थ होते हैं। रोमियों 5:8 (*The Bible for Modern People* से) कहता है: "परन्तु परमेश्वर ने हमारे प्रति अपने प्रेम का प्रमाण इस प्रकार दिया, कि जब हम अभी पापी ही थे, तभी मसीह हमारे लिए मर गया।" हम जन्म से ही पापी रहे हैं [(भजन संहिता 51:5, *The Bible in Today's English Version*: "मैं जिस क्षण पैदा हुआ, तभी से पापी था; जिस समय मेरी माँ ने मुझे गर्भ में धारण किया, तभी से मेरा स्वभाव पापमय था")]; फिर भी, जब हम अभी पापी ही थे, तब परमेश्वर के एकलौते पुत्र, यीशु मसीह को, परमेश्वर पिता द्वारा सलीब पर त्याग दिया गया—हमारे खातिर और हमारी जगह पर ["एलोई, एलोई, लामा सबक्तनी?"]। (मत्ती 27:46)]—और उनकी मृत्यु हो गई, जिससे हमारे प्रति परमेश्वर का प्रेम पूरी तरह से सिद्ध हो गया। रोमियों 5:10 कहता है: "क्योंकि जब हम परमेश्वर के शत्रु थे, तब उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा हमारा उसके साथ मेल हो गया, तो अब मेल हो जाने पर उसके जीवन के द्वारा हम निश्चित रूप से बचाए जाएँगे!" पाप परमेश्वर और हमारे बीच एक रुकावट बनकर खड़ा था, जिसके कारण हम परमेश्वर के शत्रु बन गए थे। हालाँकि, परमेश्वर के पुत्र, यीशु मसीह ने हमारे सारे पापों का बोझ उठाया, क्रूस पर परमेश्वर पिता द्वारा त्याग दिए गए ["एलोई, एलोई, लामा

सबक़्तनी?" (मत्ती 27:46)], और उनकी मृत्यु हो गई; इस कार्य के द्वारा, हमारा परमेश्वर के साथ मेल हो गया (रोमियों 5:10)। 1 यूहन्ना 4:9-10 में, प्रेरित यूहन्ना बिल्कुल स्पष्ट और निर्णायक रूप से बताते हैं कि क्रूस पर परमेश्वर का प्रेम किस प्रकार प्रकट हुआ: "परमेश्वर का प्रेम हमारे बीच इस प्रकार प्रकट हुआ: उसने अपने एकमात्र पुत्र को संसार में भेजा ताकि हम उसके द्वारा जीवन पा सकें। प्रेम इसमें है: यह नहीं कि हमने परमेश्वर से प्रेम किया, बल्कि यह कि उसने हमसे प्रेम किया और हमारे पापों के प्रायश्चित के लिए अपने पुत्र को बलिदान के रूप में भेजा।" प्रेरित यूहन्ना समझाते हैं कि परमेश्वर का प्रेम हम पर कैसे प्रकट हुआ—विशेष रूप से, परमेश्वर द्वारा अपने एकमात्र पुत्र, यीशु मसीह को इस संसार में हमारे पापों का प्रायश्चित करने और हमें जीवन प्रदान करने के लिए एक प्रायश्चित बलिदान के रूप में भेजने के द्वारा। प्रेरित पौलुस ने रोमियों 8:32 में कहा: "जिसने अपने स्वयं के पुत्र को भी नहीं छोड़ा, बल्कि हम सबके लिए उसे सौंप दिया, वह उसके साथ हमें सब कुछ मुक्त में क्यों नहीं देगा?" क्योंकि परमेश्वर हमसे प्रेम करता था और हमें बचाना चाहता था, इसलिए उसने अपने एकमात्र पुत्र को इस संसार में प्रायश्चित के रूप में भेजा; उसने बिना किसी संकोच के उसे क्रूस पर सौंप दिया, जिससे हमारे सारे पाप क्षमा हो गए और हमारा उसके साथ मेल हो गया।

क्रूस से यीशु द्वारा कहे गए पाँचवें वचन थे, "मुझे प्यास लगी है।"

आज का शास्त्र-वचन यूहन्ना 19:28 से लिया गया है: "इसके बाद, यीशु ने यह जानते हुए कि अब सब कुछ पूरा हो चुका है—ताकि शास्त्र का वचन पूरा हो—कहा, 'मुझे प्यास लगी है।'" यहाँ, वाक्यांश "इसके बाद" उस क्षण को संदर्भित करता है जो क्रूस से यीशु की उस ऊँची पुकार के ठीक बाद आया था: "एली, एली, लामा सबक़्तनी?" (मत्ती 27:46; मरकुस 15:34)। इसके अलावा, जब पाठ में यह कहा गया है कि "यीशु यह जानते हुए कि अब सब कुछ पूरा हो चुका है" (यूहन्ना 19:28), तो "सब कुछ" वाक्यांश का अर्थ उनकी यह अनुभूति है कि पृथ्वी पर उनके आने का पूरा उद्देश्य—क्रूस पर चढ़ना, अपना लहू बहाना, और हमें बचाने के लिए मरना—अब पूरी तरह से पूरा हो चुका था। दूसरे शब्दों में, यीशु जानते थे कि हमें छुड़ाने और हमें अनंत विनाश से बचाने का कार्य पहले ही पूरा हो चुका था। इसके अलावा, आज का धर्मग्रंथ का अंश—यूहन्ना 19:28—कहता है कि यह "धर्मग्रंथ को पूरा करने के लिए" हुआ। यहाँ जिस "धर्मग्रंथ" का उल्लेख किया गया है, वह पुराने नियम में भजन संहिता 69:21 की ओर संकेत करता है: "उन्होंने मेरे भोजन के लिए मुझे पित्त दिया और मेरी प्यास के लिए मुझे सिरका दिया" [(समकालीन बाइबिल) "उन्होंने भोजन के बजाय मुझे पित्त दिया, और जब मैं प्यासा था, तो उन्होंने मुझे सिरका दिया"]। इससे पहले कि यीशु ने क्रूस से ऊँची आवाज़ में पुकारा, "एली, एली, लामा सबक़्तनी?" रोमन सैनिकों ने उन्हें पीने के लिए "पित्त मिला हुआ दाखमधु" (मत्ती 27:34) या "मुर्र मिला हुआ दाखमधु" (मरकुस 15:23) देने का प्रयास किया; हालाँकि, यीशु ने उसे चखा, लेकिन पीने से इनकार कर दिया। इस संदर्भ में, "पित्त मिला हुआ दाखमधु" या "मुर्र मिला हुआ दाखमधु" का तात्पर्य एक ऐसे दाखमधु से है जिसमें एक निश्चेतक (anesthetic) मिला होता है—एक ऐसा पदार्थ जिसका उद्देश्य इंद्रियों को सुन्न करना और इस प्रकार शारीरिक पीड़ा को कम करना होता है—और ठीक इसी कारण

से यीशु ने पित्त या मुर्र मिले हुए दाखमधु को पीने से मना कर दिया। फिर भी, यीशु के क्रूस से ऊँची आवाज़ में पुकारने के बाद—“एली, एली, लामा सबक्तनी?”—वहाँ खड़े लोगों में से “एक व्यक्ति” तुरंत एक “स्पंज” (स्पंज जैसी वस्तु) लेने दौड़ा, उसे “खट्टे दाखमधु” (सिरके) में भिगोया, और उसे एक सरकंडे (reed) से जोड़ दिया (मत्ती 27:48; मरकुस 15:36)—[या, “स्पंज को हिसप (hyssop) की एक डंडी से बांध दिया” (यूहन्ना 19:29, समकालीन बाइबिल)]—और जब यीशु क्रूस पर लटके हुए थे, तब उसने उसे यीशु के मुँह के पास रखा; उस पल, यीशु ने खट्टी दाखमधु स्वीकार की और पी ली (यूहन्ना 19:29–30, Contemporary Bible)। इस सवाल के बारे में कि क्या “खट्टी दाखमधु” वही है—या उससे अलग है—जो “पित्त मिली दाखमधु” या “मुर्र मिली दाखमधु” है, ज़्यादातर विद्वानों का तर्क है कि वे एक ही हैं, जबकि कुछ विद्वानों का मानना है कि वे अलग-अलग हैं। मेरा अपना विचार यह है कि “खट्टी दाखमधु” वास्तव में “पित्त मिली दाखमधु” या “मुर्र मिली दाखमधु” से अलग है। इसके तीन कारण हैं: (1) “खट्टी दाखमधु,” “पित्त मिली दाखमधु,” और “मुर्र मिली दाखमधु” के लिए इस्तेमाल किए गए मूल यूनानी शब्द अलग-अलग हैं। (2) “पित्त मिली दाखमधु” या “मुर्र मिली दाखमधु” में दर्द कम करने वाले गुण होते हैं, जबकि “खट्टी दाखमधु” बस सिरका मिली हुई दाखमधु होती है। (3) यीशु ने “पित्त मिली दाखमधु” या “मुर्र मिली दाखमधु”—जिसमें दर्द कम करने वाले गुण थे (मत्ती 27:34; मरकुस 15:23)—को स्वीकार करने से मना कर दिया, फिर भी उन्होंने “खट्टी दाखमधु” स्वीकार कर ली (यूहन्ना 19:30)। मेरा मानना है कि यीशु ने “पित्त मिली दाखमधु” या “मुर्र मिली दाखमधु” को इसलिए मना किया क्योंकि वे जानते थे कि दर्द कम करने वाले गुणों से उनका दर्द का एहसास कम हो जाएगा; इसके विपरीत, उन्होंने “खट्टी दाखमधु”—जो सिरके के साथ मिली हुई थी—को स्वीकार किया, क्योंकि वे जानते थे कि इससे उनकी पीड़ा और बढ़ जाएगी। इस तर्क का आधार यह है कि जब यीशु ने गेथसेमानी के बगीचे में प्रार्थना की, तो उनकी प्रार्थना का उत्तर—पिता परमेश्वर की इच्छा के अनुसार—“दुख के प्याले” को स्वीकार करने के रूप में मिला (लूका 22:42)। [नोट: यीशु के ‘अंतिम भोज’ (Last Supper) के विवरण में, उन्होंने “प्याला उठाया, धन्यवाद दिया, और उसे उन्हें [शिष्यों को] देते हुए कहा, ‘तुम सब इसमें से पियो। यह वाचा का मेरा लहू है, जो बहुतों के पापों की क्षमा के लिए बहाया जाता है’” (मत्ती 26:27–28; मरकुस 14:23–24)।] मेरा मानना है कि क्रूस पर परमपिता परमेश्वर द्वारा त्याग दिए जाने की घोर पीड़ा सहने के बाद—यह पुकारते हुए, “एली, एली, लामा सबक्तनी?” (मत्ती 27:46; मरकुस 15:34)—यीशु ने “खट्टी दाखमधु” (सिरका) (यूहन्ना 19:30) को अपनी प्यास बुझाने के लिए उतना स्वीकार नहीं किया (पद 28: “मुझे प्यास लगी है”), जितना कि स्वयं पर और अधिक पीड़ा लाने के लिए। दूसरे शब्दों में, मेरा तर्क है कि हमें जीवन देने के लिए—जो कभी अपने अपराधों और पापों में मरे हुए थे (इफिसियों 2:1)—और स्वेच्छा से अपना जीवन बलिदान करने के लिए (1 यूहन्ना 4:9; यूहन्ना 3:16), यीशु ने “खट्टी दाखमधु” (सिरका) को स्वीकार किया, जो पीड़ा को और तीव्र कर देती है; इसके विपरीत उन्होंने “पित्त मिली दाखमधु” या “मुर्र (myrrh) मिली दाखमधु” को स्वीकार नहीं किया, जिनमें ऐसे गुण होते हैं जो पीड़ा की अनुभूति को कम कर देते (यूहन्ना 19:28)। कृपया भजन 311, “तुम्हारे लिए मैं मरा” (For You I Died) के बोल देखें: (पद 1) “तुम्हारे लिए मैं मरा, मेरा शरीर तोड़ा गया, मेरा लहू बहाया गया; मैंने तुम्हारे पापों का प्रायश्चित्त किया और तुम्हें जीवन का मार्ग दिया। यद्यपि मैंने तुम्हारे लिए

अपना शरीर दिया, पर *तुम* क्या देते हो? यद्यपि मैंने तुम्हारे लिए अपना शरीर दिया, पर *तुम* क्या देते हो?" (पद 2) "अपने पिता के सिंहासन और महिमा को पीछे छोड़कर, मैं इस संसार में नीचे आया—जो रात के समान अंधकारमय था—ताकि सभी लोगों को बचा सकूँ; मैंने अपने शरीर का बलिदान दिया, फिर भी *तुम* क्या करते हो? मैंने अपने शरीर का बलिदान दिया, फिर भी *तुम* क्या करते हो?" (पद 3) "पाप में डूबी हुई आत्माओं को बचाने के लिए—जो हमेशा की मौत के लिए तय थीं—मैंने अपना खून बहाया। हालाँकि मैंने तुम्हारे पापों का प्रायश्चित किया, पर *तुम* क्या करते हो? हालाँकि मैंने तुम्हारे पापों का प्रायश्चित किया, पर *तुम* क्या करते हो?" (पद 4) "असीम क्षमा और सच्चे प्यार के साथ, मैं इस दुनिया में आया और खुद को मुफ्त में दे दिया। हालाँकि यह तोहफ़ा अनमोल है, पर *तुम* क्या देते हो? हालाँकि यह तोहफ़ा अनमोल है, पर *तुम* क्या देते हो?" परमेश्वर का इकलौता बेटा, यीशु मसीह, हमारे लिए—हम इंसानों के लिए जो हमेशा की मौत के लिए तय थे—इस दुनिया में आया, ताकि हमारे पापों का प्रायश्चित कर सके, हमें मुफ्त में उद्धार दे सके, और हमें जीवन का मार्ग दिखा सके; उसने सलीब पर अपने शरीर का बलिदान दिया और मरते समय अपना खून बहाया। यही प्यार करने वाला यीशु अब तुमसे और मुझसे बात कर रहा है, और पूछ रहा है: "हालाँकि मैंने तुम्हारे लिए अपना शरीर दिया, पर *तुम* क्या देते हो?" "हालाँकि मैंने अपने शरीर का बलिदान दिया, पर *तुम* क्या करते हो?" "हालाँकि मैंने तुम्हारे पापों का प्रायश्चित किया, पर *तुम* क्या करते हो?" और "हालाँकि यह तोहफ़ा अनमोल है, पर *तुम* क्या देते हो?"

क़ूस से कहे गए सात शब्द (6)

[यूहन्ना 19:28-30]

यह पाँचवाँ कथन है जो यीशु ने क़ूस से कहा: “मुझे प्यास लगी है” (यूहन्ना 19:28)। क़ूस पर, परमेश्वर की हर बात में आज्ञा मानने के बाद—जैसा कि उन्होंने वादा किया था—और यह “जानते हुए कि अब सब कुछ पूरा हो चुका है” (पद 28), यीशु ने कहा, “मुझे प्यास लगी है,” ताकि “पवित्रशास्त्र” (Scripture)—विशेष रूप से भजन संहिता 69:21—की पूर्ति हो सके (यूहन्ना 19:28)। उसी क्षण, वहाँ मौजूद लोगों में से “एक व्यक्ति” तुरंत दौड़ा, एक “स्पंज” (स्पंज जैसी वस्तु) लिया, उसे “खट्टी दाखमधु” (sour wine) में भिगोया, और उसे एक सरकंडे (reed) से बाँध दिया (मत्ती 27:48; मरकुस 15:36)—[या, “स्पंज को हिसप (hyssop) की एक टहनी से बाँध दिया” (यूहन्ना 19:29, *मॉडर्न मैन बाइबल*)]—और उसे यीशु के मुँह तक पहुँचाया, जो क़ूस पर कीलों से जड़े हुए थे; उस समय, यीशु ने वह खट्टी दाखमधु ग्रहण की (यूहन्ना 19:29-30, *मॉडर्न मैन बाइबल*)। वह “खट्टी दाखमधु” जो यीशु ने यहाँ ग्रहण की, वास्तव में, सिरका (vinegar) थी। यह तथ्य कि यीशु—जिन्हें पहले से ही प्यास लगी थी—ने सिरका ग्रहण किया, इसका अर्थ था कि उनकी प्यास और भी बढ़ गई होगी, उन्हें और भी अधिक कष्ट सहना पड़ा होगा, और वे मृत्यु के और भी करीब पहुँच गए होंगे। विद्वान जॉन स्टॉट ने यह टिप्पणी की कि यीशु द्वारा इस खट्टी दाखमधु को ग्रहण करने के बाद, उन्होंने घोषणा की, “यह पूरा हुआ,” और फिर उनकी मृत्यु हो गई—कुछ ही सेकंड (एक मिनट से भी कम समय) के भीतर उनका प्राण निकल गया (स्टॉट)। यह इस बात का संकेत है कि वह खट्टी दाखमधु वास्तव में कितनी तीव्र और हानिकारक थी।

यह छठा कथन है जो यीशु ने क़ूस से कहा: “यह पूरा हुआ” (यूहन्ना 19:30)। यह अंश यूहन्ना 19:30 से लिया गया है: “खट्टी दाखमधु ग्रहण करने के बाद, यीशु ने कहा, ‘यह पूरा हुआ,’ और अपना सिर झुकाकर, उन्होंने अपने प्राण त्याग दिए।” यहाँ, यद्यपि यीशु का कथन “यह पूरा हुआ” कोरियाई बाइबल में दो शब्दों के रूप में दिखाई देता है, लेकिन मूल यूनानी पाठ (Greek text) में यह केवल एक ही शब्द है। एक संक्षिप्त, एकल शब्द होने के बावजूद, यह अपने भीतर अत्यंत गहन और समृद्ध अर्थ समेटे हुए है। विद्वान आर्थर पिंग ने अपनी किताब *The Seven Sayings of the Cross* में यहाँ तक दावा किया है कि यीशु के इस एक ही कथन—“यह पूरा हो गया”—में “परमेश्वर का पूरा सुसमाचार समाया हुआ है।” (उन्होंने आगे यह भी कहा, “इसके

अलावा, इस शब्द में ही विश्वासी के भरोसे की असली नींव छिपी है; इसमें न केवल हर तरह की खुशी मिलती है, बल्कि परमेश्वर का पूरा दिलासा भी इसी में समाया हुआ है।") उन्होंने यीशु की इस घोषणा—"यह पूरा हो गया"—की व्याख्या करते हुए इसके सात अलग-अलग पहलुओं की पहचान की; इनमें से पहला पहलू यह है कि मसीहा (यानी मसीह) के बारे में लिखी गई हर भविष्यवाणी—खास तौर पर वे घटनाएँ जिन्हें यीशु मसीह को अपनी मृत्यु से पहले पूरा करना था—पूरी तरह और एकदम सही-सही पूरी हो चुकी थीं। ऐसी ही एक पूरी हुई भविष्यवाणी उत्पत्ति 3:15 में मिलती है—जिसे अक्सर *Protoevangelium* (यानी मूल सुसमाचार) कहा जाता है: "मैं तेरे और स्त्री के बीच, और तेरे वंश और उसके वंश के बीच बैर उत्पन्न करूँगा; वह तेरे सिर को कुचलेगा, और तू उसकी एड़ी को डसेगा।" इस संदर्भ में, "स्त्री का वंश" मसीहा—यानी यीशु मसीह—को दर्शाता है। दूसरे शब्दों में, यीशु मसीह के बारे में यह भविष्यवाणी की गई थी कि वह पवित्र आत्मा द्वारा (मत्ती 1:20) कुँवारी मरियम—यानी वह "स्त्री" (लूका 1:34)—के गर्भ में आएंगे, और इस दुनिया में जन्म लेंगे (पद 16)। [नोट: (गलातियों 4:4) "पर जब समय पूरा हुआ, तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा, जो स्त्री से जन्मा, और व्यवस्था के अधीन उत्पन्न हुआ, ताकि व्यवस्था के अधीन वालों को मोल लेकर छुड़ा ले, और हम लेपालक पुत्र होने का अधिकार पाएं।"] जहाँ आदम और हव्वा के समय से लेकर अब तक हर इंसान का जन्म एक पिता और एक माँ के मिलन से हुआ है, वहीं यीशु मसीह पवित्र आत्मा द्वारा कुँवारी मरियम के गर्भ में आए और इस दुनिया में जन्मे। यह वह भविष्यवाणी वाला वचन है जो यह घोषणा करता है कि यीशु मसीह—यानी "स्त्री का वंश"—"तेरे सिर" (यानी शैतान के सिर) पर चोट करेंगे, जबकि शैतान यीशु मसीह की एड़ी पर चोट करेगा। यहीं से यीशु मसीह से जुड़ी भविष्यवाणियों की शुरुआत होती है। यहाँ, यह भविष्यवाणी कि शैतान यीशु मसीह की एड़ी पर चोट करेगा, उस पीड़ा के बारे में पहले से बताती है जिसे यीशु को क्रूस पर सहना पड़ा। इसके अलावा, वह भविष्यवाणी जिसमें कहा गया था कि यीशु मसीह शैतान के सिर पर वार करेंगे, यह बताती है कि यीशु मसीह शैतान और उसकी सेना (उसके अधिकार) को अपने पैरों तले रौंद देंगे—और इस तरह क्रूस के द्वारा विजय प्राप्त करेंगे (कुलुस्सियों 2:15)—और उस पुराने साँप (जो कि शैतान और इब्लीस है) को पकड़ लेंगे, उसे एक हज़ार साल के लिए बाँध देंगे, उसे अथाह कुंड में डाल देंगे, और उसे वहाँ बंद कर देंगे ताकि वह तब तक राष्ट्रों को और न बहका सके जब तक कि वह एक हज़ार साल का समय समाप्त न हो जाए (प्रकाशितवाक्य 20:2-3); अंततः, बिल्कुल आखिर में, शैतान को अथाह कुंड से निकालकर गंधक से जलती हुई आग की झील में डाल दिया जाएगा, जहाँ उसे हमेशा-हमेशा के लिए, दिन-रात यातना दी जाएगी—न कि केवल एक हज़ार साल के लिए (पद 10)। हालाँकि शैतान ने यीशु मसीह को क्रूस पर कष्ट पहुँचाया—इस हद तक कि यीशु ने हर पीड़ा सहन की और केवल यह घोषणा करने के बाद ही प्राण त्यागे कि, "यह पूरा हुआ" (यूहन्ना 19:30)—फिर भी यीशु तीसरे दिन फिर से जीवित हो उठे, चालीस दिन बाद स्वर्गारोहण कर गए, और अब एक चमकते हुए, ऊँचे सिंहासन पर विराजमान हैं।

यीशु मसीह ने क्रूस के द्वारा विजय प्राप्त की। कुलुस्सियों 2:15 (*द बाइबल फॉर मॉडर्न मैन* से) कहता है: "और मसीह ने शैतान के अधिकार को पैरों तले रौंद दिया, क्रूस के द्वारा विजय प्राप्त की, और इस तरह इस विजय को सबके सामने खुले तौर पर प्रदर्शित किया।" अपनी स्वयं की मृत्यु के द्वारा, यीशु मसीह ने शैतान को—जिसके पास मृत्यु पर अधिकार था—नष्ट कर दिया, और उन सभी लोगों को मुक्त किया जो अपने पूरे जीवन भर मृत्यु के भय के कारण दासता में जकड़े हुए थे (इब्रानियों 2:14-15)। इसके अलावा, प्रभु हमारा—यानी उन लोगों का—सहारा बनते हैं और हमारी सहायता करते हैं जो अब्राहम की आत्मिक संतान हैं (पद 16)। तो फिर, बाइबल—विशेष रूप से उत्पत्ति 3:15—किसके बारे में कहती है कि उसने यीशु मसीह को क्रूस पर शैतान के सिर को कुचलने और विजय प्राप्त करने में समर्थ बनाया? वह कोई और नहीं, बल्कि परमेश्वर पिता ही हैं, जिन्होंने घोषणा की थी, "मैं इसे करूँगा।" परमेश्वर पिता ने अपने पुत्र, यीशु को क्रूस के लिए सौंप दिया; और यीशु ने, पिता की आज्ञा का पालन करते हुए, क्रूस पर पीड़ा सहन की और केवल यह घोषणा करने के बाद ही प्राण त्यागे कि, "यह पूरा हुआ।" इसके अलावा, परमेश्वर पवित्र आत्मा—जो सनातन हैं—मसीह के लहू का (निष्कलंक यीशु का, जिसे उन्होंने पिता को भेंट किया था) उपयोग करके हमारे विवेक को मृत कार्यों से शुद्ध करते हैं, जिससे हम जीवित परमेश्वर की सेवा करने में समर्थ हो पाते हैं (इब्रानियों 9:14)। इस प्रकार, त्रिएक परमेश्वर—जिनमें परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र (यीशु), और परमेश्वर पवित्र आत्मा शामिल हैं—ने हमारे उद्धार को पूरा किया और हमें नया जीवन प्रदान किया। इसलिए, अब हमें मृत्यु का कोई भय नहीं है। इसका कारण यह है कि यीशु मसीह—वह निष्पाप पुरुष जिसने, ठीक हमारी ही तरह, हाड़-मांस का शरीर धारण किया था—ने अपनी मृत्यु के द्वारा शैतान को नष्ट कर दिया, जिसके पास मृत्यु पर अधिकार था; और हमें मुक्त किया, जो अपने पूरे जीवन भर मृत्यु के भय के कारण दासता में जकड़े हुए थे (इब्रानियों 2:14-15)। इस प्रकार, हम विश्वास में परमेश्वर की स्तुति करने में समर्थ होते हैं, और भजन 27, "द शाइनिंग, लोफ्टी थ्रोन" (The Shining, Lofty Throne) के चौथे और पाँचवें पद गाते हैं: (पद 4) जो जीवन अब मेरे पास है, वह केवल प्रभु की कृपा से है; क्योंकि उन्होंने मृत्यु के साम्राज्य पर विजय प्राप्त कर ली है, और अब आनंद उमड़ पड़ता है—हाँ, आनंद उमड़ पड़ता है! (पद 5) जब यह दीन-हीन शरीर ऊपर प्रभु के सिंहासन तक पहुँचेगा, और मैं उनके तेज को आमने-सामने देखूँगा, तब मेरा आनंद उमड़ पड़ेगा—हाँ, मेरा आनंद उमड़ पड़ेगा! आमीन। मेरी यह प्रार्थना है कि जब हम इस आशा के मध्य अपनी तीर्थयात्रा पर आगे बढ़ते हैं—यह विश्वास करते हुए कि यीशु, जिन्होंने "यह पूरा हुआ" (यूहन्ना 19:30) घोषित किया था, ने क्रूस के द्वारा विजय प्राप्त की (कुलुस्सियों 2:15)—तो हम सभी दृढ़ बने रहें: प्रभु के क्रूस से तब तक प्रेम करते रहें जब तक हम अपनी अंतिम विजय प्राप्त न कर लें, और उस ऊबड़-खाबड़ क्रूस को तब तक थामे रहें जब तक हमें अपना तेजस्वी मुकुट प्राप्त न हो जाए (भजन 150, "ऑन ए हिल फार अवे" के टेक से)।

सलीब से कहे गए सात वचन (7)

[लूका 23:44-46]

यह सातवाँ वचन है जो यीशु ने सलीब से कहा: “हे पिता, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूँ” (लूका 23:46)।

आर्थर पिक नाम के एक विद्वान ने यीशु के इस सातवें वचन को “संतुष्टि का वचन” कहा। उन्होंने कहा, “यह संतुष्टि का एक कार्य था, विश्वास का एक कार्य था, भरोसे का एक कार्य था, और प्रेम का एक कार्य था।”

आर्थर पिक ने इस “संतुष्टि के वचन” की व्याख्या करते हुए इसे सात बिंदुओं में बाँटा: (1) यहाँ, हम उद्धारकर्ता को एक बार फिर पिता के साथ संगति में बहाल होते हुए देखते हैं। (2) यहाँ, हम एक जान-बूझकर किए गए विरोधाभास को देखते हैं। (3) यहाँ, हम परमेश्वर के प्रति मसीह के पूर्ण समर्पण के गवाह बनते हैं। (4) यहाँ, हम उद्धारकर्ता की पूर्ण और बेजोड़ विशिष्टता को महसूस करते हैं। (5) यहाँ, हम एक अनंत और पूर्ण आश्रय पाते हैं। (6) यहाँ, हम महसूस करते हैं कि परमेश्वर के साथ संगति कितनी धन्य है। (7) यहाँ, हम हृदय के लिए सच्चा विश्राम-स्थल पाते हैं। आज, मैं इन सात बिंदुओं में से पहले बिंदु पर विचार करना चाहूँगा: “यहाँ, हम उद्धारकर्ता को एक बार फिर पिता के साथ संगति में बहाल होते हुए देखते हैं।”

यीशु मसीह परमेश्वर का एकलौता पुत्र है। परमेश्वर पिता और उसका एकलौता पुत्र, यीशु मसीह, सभी चीज़ों की सृष्टि से पहले, अनंत लोक में भी एक-दूसरे के साथ संगति में थे। जैसा कि यूहन्ना 17:5 में लिखा है: “और अब, हे पिता, तू मुझे अपने साथ उसी महिमा से महिमामन्वित कर, जो जगत के बनने से पहले मेरी तेरे साथ थी।” जब हम इस प्रार्थना की जाँच करते हैं—जो यीशु ने, महायाजक के रूप में कार्य करते हुए, सलीब पर अपनी मृत्यु से ठीक पहले परमेश्वर को अर्पित की थी—तो हम देखते हैं कि उसने वास्तव में जगत की नींव पड़ने से भी पहले, अनंत लोक में परमेश्वर के साथ महिमा और संगति का आनंद लिया था। इसके अलावा, जब सलीब उसके सामने खड़ी थी, तब भी परमेश्वर के साथ उसकी संगति बिना किसी रुकावट के जारी रही। यह बात यूहन्ना 18:11 में लिखी है: “यीशु ने पतरस से कहा, ‘अपनी तलवार म्यान में रख ले। क्या मैं वह प्याला न पीऊँ जो पिता ने मुझे दिया है?’” ये शब्द यीशु ने तब कहे थे जब उन्होंने

गेथसेमानी बाग में अपनी प्रार्थना पूरी कर ली थी और उन लोगों से मिलने बाहर आए थे जो उन्हें गिरफ्तार करने आए थे—खास तौर पर उस पल, जब पतरस ने अपनी तलवार निकाली और गिरफ्तार करने वाली भीड़ में से एक आदमी, मलखुस का कान काट डाला (पद 10)। जिस “प्याले” का जिक्र यीशु ने यहाँ किया है, वह “दुख का प्याला” है। यह पिता के क्रोध और न्याय का प्याला है। फिर भी, यीशु ने ऐलान किया कि वह इसे पीएँगे। इस तरह, यीशु पिता के साथ अपना मेल-जोल बनाए रहे। इसके अलावा, क्रूस पर तीन—या शायद छह—घंटे तक लटके रहने के बाद भी, उन्होंने इस मेल-जोल (रिश्ते) को बनाए रखा। फिर, जब अंधेरे का दौर आखिरकार छँट गया, तो यीशु ने पहली बार ज़ोरदार आवाज़ में पुकारा: “एलोई, एलोई, लमा सबक्तनी?” (जिसका मतलब है: “हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?”) (मरकुस 15:33–34)। परमेश्वर ने यीशु को छोड़ दिया था। ठीक इसी पल यीशु का परमेश्वर के साथ रिश्ता टूट गया। परमेश्वर ने यीशु को क्यों छोड़ा? इसकी वजह है पाप। क्योंकि परमेश्वर धर्मी, पवित्र और शुद्ध है, इसलिए वह पाप को बर्दाश्त नहीं कर सकता। परमेश्वर पाप को सज़ा देता है और उसे मिटा देता है। जैसा कि हबक्कूक 1:13 में लिखा है: “तेरी आँखें ऐसी शुद्ध हैं कि तू बुराई को देख नहीं सकता, और दुष्टता पर तेरी नज़र नहीं पड़ सकती...” इस तरह, परमेश्वर वह है जो बुराई को देखना भी बर्दाश्त नहीं कर सकता, और न ही वह दुष्टता को सहन कर सकता है। परमेश्वर वह है जो पाप को माफ़ नहीं कर सकता; फिर भी, यीशु वह है जो पाप-रहित है। इसके बावजूद, मेरे पापों—हमारे पापों—का बोझ अपने कंधों पर उठाते हुए, यीशु, जो पाप-रहित थे, एक “पाप-रहित पापी” के तौर पर क्रूस पर चढ़े। यशायाह 53:4–6 का संदेश यह है: “निश्चय ही उसने हमारे दुखों को उठा लिया और हमारे शोकों को सह लिया; फिर भी हमने उसे परमेश्वर का मारा हुआ, पीटा हुआ और सताया हुआ समझा। परन्तु वह हमारे अपराधों के कारण घायल हुआ, वह हमारे अधर्मों के कारण कुचला गया; हमारी शान्ति के लिए ताड़ना उसी पर पड़ी, और उसके कोड़े खाने से हम चंगे हो गए। हम सब भेड़ों की तरह भटक गए थे; हम में से हर एक अपने-अपने मार्ग पर चला गया; और यहोवा ने हम सब का अधर्म उसी पर लाद दिया।” यद्यपि वह निष्पाप था, फिर भी उसने हमारे सारे अधर्मों का बोझ अपने कंधों पर उठा लिया और हमारी जगह क्रूस पर मर गया। यीशु को हमारी जगह त्याग दिया गया। उसने ऐसा इसलिए किया ताकि हम परमेश्वर के साथ फिर से मेल-मिलाप कर सकें। रोमियों 5:10 का संदेश यह है: “क्योंकि जब हम शत्रु थे, तब यदि परमेश्वर के पुत्र की मृत्यु के द्वारा हमारा उसके साथ मेल हो गया, तो मेल हो जाने पर उसके जीवन के द्वारा हम निश्चय ही उद्धार पाएँगे।” इस प्रकार उसने हमारा मेल-मिलाप करवाया; परन्तु यह कैसे पूरा हुआ? लूका 23:46 का संदेश यह है: “और जब यीशु ने ऊँचे शब्द से पुकारकर कहा, ‘हे पिता, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूँ।’ यह कहकर उसने प्राण त्याग दिए।” इस अंश को देखने पर हम पाते हैं कि यीशु ने ऊँचे शब्द से यह नहीं पुकारा, “हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?” (एक ऐसी स्थिति जो परमेश्वर के साथ टूटे हुए रिश्ते को दर्शाती है); इसके विपरीत, उसने ऊँचे शब्द से यह पुकारा, “हे पिता, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में

सौंपता हूँ।” यह इस बात को सिद्ध करता है कि परमेश्वर पिता के साथ उसका रिश्ता फिर से बहाल हो गया था।

इस प्रकार, निष्पाप यीशु ने अपने कार्य को केवल क्रूस पर दण्ड सहकर और हमारी जगह मरकर ही समाप्त नहीं किया; तीन दिन बाद, वह फिर से जीवित हो उठा। और यीशु ने सबसे पहली बात जो हमें सिखाई, वह यह थी कि परमेश्वर हमारा पिता है। यह बात यूहन्ना 20:17 में मिलती है: “यीशु ने कहा, ‘मुझे मत छू, क्योंकि मैं अभी तक पिता के पास ऊपर नहीं गया हूँ। इसके बजाय, मेरे भाइयों के पास जाओ और उनसे कहो, “मैं अपने पिता और तुम्हारे पिता के पास, अपने परमेश्वर और तुम्हारे परमेश्वर के पास ऊपर जा रहा हूँ।”’” यहाँ, हम देखते हैं कि यीशु मरियम से कह रहे हैं, “मेरे भाइयों के पास जाओ,” और “मेरे पिता”—यानी, परमेश्वर को यीशु मसीह के पिता के रूप में—संबोधित कर रहे हैं, जिससे उनके बीच पिता-पुत्र का रिश्ता स्थापित होता है—लेकिन फिर वे आगे जोड़ते हैं, “और तुम्हारे पिता,” जिसका अर्थ है कि परमेश्वर हमारे भी पिता हैं। परिणामस्वरूप, हम परमेश्वर की संतान हैं। तो फिर, हम किस तरह की संतान हैं? रोमियों 8:15 कहता है: “क्योंकि तुम्हें दासता की आत्मा नहीं मिली कि फिर डर के मारे रहो, परन्तु तुम्हें लेपालकपन की आत्मा मिली है, जिससे हम ‘अब्बा! हे पिता!’ कहकर पुकारते हैं।” हम परमेश्वर की ऐसी संतान बन गए हैं जो उन्हें “अब्बा! हे पिता!” कहकर पुकार सकती है। अब ऐसा रिश्ता स्थापित हो चुका है। रोमियों 8:17 कहता है: “और यदि हम संतान हैं, तो वारिस भी हैं—परमेश्वर के वारिस और मसीह के संग-वारिस; यदि सचमुच हम उसके दुखों में सहभागी हों, ताकि हम उसकी महिमा में भी सहभागी हों।” परमेश्वर की संतान होने के नाते, हम “वारिस—परमेश्वर के वारिस और मसीह के संग-वारिस” बन गए हैं। इसलिए, मसीह के संग-वारिस होने के नाते, हमें भी उसके साथ दुख उठाना होगा। यीशु मसीह का अनुसरण करने में दुख भी शामिल है। फिर भी, वह दुख उस महिमा की तुलना में कहीं नहीं ठहरता जो हमें अभी मिलनी बाकी है [(पद 18): “क्योंकि मैं समझता हूँ कि इस वर्तमान समय के दुख उस महिमा के योग्य नहीं हैं जो हम में प्रकट होने वाली है”]।

यीशु, जो क्रूस पर रहते हुए ज़्यादातर चुप रहे थे, दो अवसरों पर ज़ोर से चिल्लाए। एक बार, उन्होंने पुकारा, “हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?” (मत्ती 27:46); और दूसरे अवसर पर, उन्होंने पुकारा, “हे पिता, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूँ” (लूका 23:46)। यीशु की इन दो ज़ोरदार पुकारों के द्वारा, हम वारिस बन गए हैं—ऐसे लोग जो परमेश्वर पिता को “पिता” कहकर पुकार सकते हैं और उनकी हर चीज़ के वारिस बन सकते हैं। इस प्रकार, हमारा अनुभव इस धरती पर सहे गए दुखों के साथ समाप्त नहीं होता; बल्कि, इसके बाद एक बेजोड़ महिमा आती है। इसलिए, मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम सभी विजय का जीवन जिएँ—आशा से भरा जीवन—और अपनी कठिन परीक्षाओं के बीच भी अपनी नज़र उस महिमा पर टिकाए रखें।

यीशु क्रूस पर मरते हैं

[यूहन्ना 19:30; मरकुस 15:42-46]

पिछले रविवार को, हमने 'पाम संडे' (खजूर रविवार) मनाया। इस दिन को 'पाम संडे' इसलिए कहा जाता है क्योंकि यह बाइबल के उस वृत्तांत पर आधारित है जिसमें लोग खजूर की डालियाँ हाथ में लिए यीशु का स्वागत करते हैं। एक बड़े त्योहार से कुछ ही समय पहले, यीशु ने यरूशलेम में अपनी विजय-यात्रा के साथ प्रवेश किया। वह त्योहार 'फसह' (Passover) था। फसह को 'बिना खमीर वाली रोटी का पर्व' भी कहा जाता है। पचास दिन बाद वह त्योहार आता है जिसे 'पेंटेकोस्ट' के नाम से जाना जाता है—इसे 'सप्ताहों का पर्व' या 'फसल का पर्व' भी कहते हैं। इसके बाद 'तम्बूओं का पर्व' (Feast of Tabernacles) आता है (यूहन्ना 7:2)। पुराने नियम में, इस 'तम्बूओं के पर्व' को 'फसल बटोरने का पर्व' (Feast of Ingathering) कहा जाता था (निर्गमन 23:16; 34:22)। इन तीन प्रमुख त्योहारों के दौरान, इस्राएल के लोग—चाहे वे कहीं भी हों—इन त्योहारों को मनाने के लिए यरूशलेम की यात्रा करते थे। जहाँ एक ओर यरूशलेम के भीतर रहने वाले स्थायी निवासियों की संख्या शायद अपेक्षाकृत कम रही होगी, वहीं इन त्योहारों के समय, यह शहर बाहर से आने वाले आगंतुकों से भर जाता था—कभी-कभी यह संख्या बीस लाख लोगों तक पहुँच जाती थी—जो सभी मिलकर उत्सव मनाने के लिए एकत्रित होते थे। इस प्रकार, जब फसह के त्योहार के दौरान यीशु ने यरूशलेम में प्रवेश किया, तो बड़ी संख्या में भीड़ उनके स्वागत के लिए बाहर आई; जब वे उनके साथ शहर में प्रवेश कर रहे थे, तो उन्होंने खजूर की डालियाँ लहराई और स्तुति गीत गाते हुए ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाया, "होसन्ना!" (मत्ती 21:9, 15; मरकुस 11:9-10; यूहन्ना 12:13)। 'पाम संडे' के दिन यही घटना घटी थी; आज—'पैशन वीक' (पवित्र सप्ताह) के इस शुक्रवार को—हम अपना ध्यान इस बात पर केंद्रित करते हैं कि यीशु ने इस विशेष दिन पर क्या-कुछ पूरा किया।

उस शुक्रवार की घटनाएँ—कि यीशु ने क्या किया और क्या सहा—चारों सुसमाचारों (Gospels) में वर्णित हैं; हालाँकि, आज हम अपना ध्यान मुख्य रूप से मरकुस रचित सुसमाचार के 15वें अध्याय में पाए जाने वाले वृत्तांत पर केंद्रित करेंगे। आइए हम मरकुस 15:1 पढ़ें: "भोर होते ही, प्रधान याजकों ने प्राचीनों, व्यवस्था के शिक्षकों और पूरी महासभा (Sanhedrin) के साथ मिलकर एक निर्णय लिया। उन्होंने यीशु को बाँधा, उन्हें वहाँ से ले गए और पीलातुस के हवाले कर दिया।" यहाँ, "भोर" शब्द संभवतः सुबह के लगभग 6:00 बजे के

समय को इंगित करता है। उस समय—तत्काल कार्रवाई की भावना से प्रेरित होकर—मुख्य पुजारियों ने "तुरंत" बुजुर्गों और शास्त्रियों के साथ विचार-विमर्श किया—यानी, सन्हेद्रिन के साथ, जो सर्वोच्च परिषद थी और जिसके पास सबसे अधिक शक्ति थी—ताकि यीशु के मामले पर विचार किया जा सके। फिर, यीशु को बांधकर, वे उन्हें ले गए और रोमन गवर्नर, पीलातुस के हवाले कर दिया। इसका उल्लेख मरकुस 15:2 में मिलता है: "पीलातुस ने उनसे पूछा, 'क्या तुम यहूदियों के राजा हो?' और उन्होंने उत्तर दिया, 'जैसा तुम कहते हो, वैसा ही है।'" पीलातुस ने यीशु से पूछताछ करते हुए पूछा, "क्या तुम यहूदियों के राजा हो?" इस पूछताछ का कारण यह था कि जब यहूदियों के मुख्य पुजारी यीशु पर अपने आरोप लेकर आए थे, तो उन्होंने दावा किया था कि यीशु ने स्वयं को राजा घोषित किया है। यीशु का उत्तर था, "जैसा तुम कहते हो, वैसा ही है।" यीशु ने इस तरह उत्तर इसलिए दिया क्योंकि वे वास्तव में, राजाओं के राजा हैं। मरकुस 15:3 कहता है: "मुख्य पुजारियों ने उन पर कई बातों का आरोप लगाया।" इस प्रकार, मुख्य पुजारियों ने उन पर ढेरों आरोप लगाए; उन्होंने किसी भी तरह से, यीशु पर मुकदमा चलाने की कोशिश की, और उनके राजा होने के दावे को विभिन्न अन्य आरोपों से जोड़ दिया। मरकुस 15:4-5 में लिखा है: "पीलातुस ने उनसे फिर पूछा, 'क्या तुम्हारे पास कोई उत्तर नहीं है? देखो, वे तुम पर कितने आरोप लगा रहे हैं!' लेकिन यीशु ने आगे कोई उत्तर नहीं दिया, जिससे पीलातुस चकित रह गया।" पीलातुस ने यीशु से एक बार फिर प्रश्न किया, "तुम अपनी सफाई में एक भी शब्द क्यों नहीं कह रहे हो, जबकि लोग तुम पर इतने सारे आरोप लगा रहे हैं?" (पद 4; *मॉडर्न पीपल्स बाइबिल*); फिर भी, यीशु मौन रहे (पद 5)। यहाँ एक बात जिस पर हमें ध्यानपूर्वक विचार करना चाहिए, वह एक प्रश्न खड़ा करती है: पाम संडे (खजूर रविवार) के दिन, इतनी विशाल भीड़ ने खजूर की डालियाँ लहराते हुए यीशु का यरूशलेम में स्वागत किया था; तो फिर, मरकुस अध्याय 15 में, वही लोग उन पर आरोप क्यों लगा रहे हैं और यहाँ तक कि उन्हें मृत्युदंड देने की मांग क्यों कर रहे हैं? इसका कारण इन यहूदी लोगों की मसीहा के बारे में अधूरी समझ में निहित है। यद्यपि पुराने नियम की भविष्यवाणियों में परमेश्वर के पुत्र—मसीहा (या क्राइस्ट)—के आगमन की भविष्यवाणी की गई थी, फिर भी इन यहूदियों को यह अपेक्षा थी कि उनके आगमन पर, वे उनके सांसारिक राजा बन जाएँगे, उन्हें रोमन शासन से मुक्त कराएँगे, शांति स्थापित करेंगे, और उनकी भौतिक समृद्धि सुनिश्चित करेंगे। लेकिन, यीशु—जो सच्चे राजा थे—सिर्फ उनकी उम्मीदें पूरी करने के लिए नहीं आए थे, यानी उन्हें रोम से आज़ाद कराने, शांति लाने, या उनकी भौतिक भलाई पक्का करने के लिए नहीं। बल्कि, राजाओं के राजा के तौर पर, वे हमें शैतान के राज से बचाने आए थे, ताकि हम परमेश्वर के राज में दाखिल हो सकें और वहाँ हमेशा-हमेशा के लिए रह सकें। इसलिए, क्योंकि इन लोगों ने एक ऐसे मसीहा की उम्मीद की थी जो उन्हें रोम के जुल्म से आज़ाद कराएगा—और यकीनन ऐसे मसीहा की नहीं जिसे रोम का गवर्नर गिरफ़्तार करके उस पर मुकदमा चलाएगा—वे यीशु के खिलाफ़ हो गए और ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगे कि उन्हें सूली पर चढ़ा दिया जाए। यह बात मरकुस 15:13-14 में लिखी है: "उन्होंने चिल्लाकर जवाब दिया, 'उसे सूली पर चढ़ा दो!' 'क्यों?' पीलातुस ने पूछा। 'उसने क्या जुर्म किया है?' लेकिन वे और भी ज़ोर से चिल्लाए, 'उसे सूली पर चढ़ा दो!'" नतीजतन, भीड़ को खुश करने की कोशिश में, पीलातुस ने यीशु को कोड़े

लगवाए और उन्हें सूली पर चढ़ाने के लिए सौंप दिया (पद 15)। फिर रोम के सैनिकों ने यीशु का मज़ाक उड़ाया और उन्हें बेइज़्ज़त किया, और उसके बाद उन्हें सूली पर चढ़ाने के लिए ले गए (पद 16–20)।

यीशु क्रूस पर मरते हैं

[यूहन्ना 19:30; मरकुस 15:42-46]

पिछले रविवार को, हमने 'पाम संडे' (खजूर रविवार) मनाया। इस दिन को 'पाम संडे' इसलिए कहा जाता है क्योंकि यह बाइबल के उस वृत्तांत पर आधारित है जिसमें लोग खजूर की डालियाँ हाथ में लिए यीशु का स्वागत करते हैं। एक बड़े त्योहार से कुछ ही समय पहले, यीशु ने यरूशलेम में अपनी विजय-यात्रा के साथ प्रवेश किया। वह त्योहार 'फसह' (Passover) था। फसह को 'बिना खमीर वाली रोटी का पर्व' भी कहा जाता है। पचास दिन बाद वह त्योहार आता है जिसे 'पेंटेकोस्ट' के नाम से जाना जाता है—इसे 'सप्ताहों का पर्व' या 'फसल का पर्व' भी कहते हैं। इसके बाद 'तम्बूओं का पर्व' (Feast of Tabernacles) आता है (यूहन्ना 7:2)। पुराने नियम में, इस 'तम्बूओं के पर्व' को 'फसल बटोरने का पर्व' (Feast of Ingathering) कहा जाता था (निर्गमन 23:16; 34:22)। इन तीन प्रमुख त्योहारों के दौरान, इस्राएल के लोग—चाहे वे कहीं भी हों—इन त्योहारों को मनाने के लिए यरूशलेम की यात्रा करते थे। जहाँ एक ओर यरूशलेम के भीतर रहने वाले स्थायी निवासियों की संख्या शायद अपेक्षाकृत कम रही होगी, वहीं इन त्योहारों के समय, यह शहर बाहर से आने वाले आगंतुकों से भर जाता था—कभी-कभी यह संख्या बीस लाख लोगों तक पहुँच जाती थी—जो सभी मिलकर उत्सव मनाने के लिए एकत्रित होते थे। इस प्रकार, जब फसह के त्योहार के दौरान यीशु ने यरूशलेम में प्रवेश किया, तो बड़ी संख्या में भीड़ उनके स्वागत के लिए बाहर आई; जब वे उनके साथ शहर में प्रवेश कर रहे थे, तो उन्होंने खजूर की डालियाँ लहराईं और स्तुति गीत गाते हुए ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाया, "होसन्ना!" (मत्ती 21:9, 15; मरकुस 11:9-10; यूहन्ना 12:13)। 'पाम संडे' के दिन यही घटना घटी थी; आज—'पैशन वीक' (पवित्र सप्ताह) के इस शुक्रवार को—हम अपना ध्यान इस बात पर केंद्रित करते हैं कि यीशु ने इस विशेष दिन पर क्या-कुछ पूरा किया।

उस शुक्रवार की घटनाएँ—कि यीशु ने क्या किया और क्या सहा—चारों सुसमाचारों (Gospels) में वर्णित हैं; हालाँकि, आज हम अपना ध्यान मुख्य रूप से मरकुस रचित सुसमाचार के 15वें अध्याय में पाए जाने वाले वृत्तांत पर केंद्रित करेंगे। आइए हम मरकुस 15:1 पढ़ें: "भोर होते ही, प्रधान याजकों ने प्राचीनों, व्यवस्था के शिक्षकों और पूरी महासभा (Sanhedrin) के साथ मिलकर एक निर्णय लिया। उन्होंने यीशु को बाँधा, उन्हें वहाँ से ले गए और पीलातुस के हवाले कर दिया।" यहाँ, "भोर" शब्द संभवतः सुबह के लगभग 6:00 बजे के

समय को इंगित करता है। उस समय—तत्काल कार्रवाई की भावना से प्रेरित होकर—मुख्य पुजारियों ने "तुरंत" बुजुर्गों और शास्त्रियों के साथ विचार-विमर्श किया—यानी, सन्हेद्रिन के साथ, जो सर्वोच्च परिषद थी और जिसके पास सबसे अधिक शक्ति थी—ताकि यीशु के मामले पर विचार किया जा सके। फिर, यीशु को बांधकर, वे उन्हें ले गए और रोमन गवर्नर, पीलातुस के हवाले कर दिया। इसका उल्लेख मरकुस 15:2 में मिलता है: "पीलातुस ने उनसे पूछा, 'क्या तुम यहूदियों के राजा हो?' और उन्होंने उत्तर दिया, 'जैसा तुम कहते हो, वैसा ही है।'" पीलातुस ने यीशु से पूछताछ करते हुए पूछा, "क्या तुम यहूदियों के राजा हो?" इस पूछताछ का कारण यह था कि जब यहूदियों के मुख्य पुजारी यीशु पर अपने आरोप लेकर आए थे, तो उन्होंने दावा किया था कि यीशु ने स्वयं को राजा घोषित किया है। यीशु का उत्तर था, "जैसा तुम कहते हो, वैसा ही है।" यीशु ने इस तरह उत्तर इसलिए दिया क्योंकि वे वास्तव में, राजाओं के राजा हैं। मरकुस 15:3 कहता है: "मुख्य पुजारियों ने उन पर कई बातों का आरोप लगाया।" इस प्रकार, मुख्य पुजारियों ने उन पर ढेरों आरोप लगाए; उन्होंने किसी भी तरह से, यीशु पर मुकदमा चलाने की कोशिश की, और उनके राजा होने के दावे को विभिन्न अन्य आरोपों से जोड़ दिया। मरकुस 15:4-5 में लिखा है: "पीलातुस ने उनसे फिर पूछा, 'क्या तुम्हारे पास कोई उत्तर नहीं है? देखो, वे तुम पर कितने आरोप लगा रहे हैं!' लेकिन यीशु ने आगे कोई उत्तर नहीं दिया, जिससे पीलातुस चकित रह गया।" पीलातुस ने यीशु से एक बार फिर प्रश्न किया, "तुम अपनी सफाई में एक भी शब्द क्यों नहीं कह रहे हो, जबकि लोग तुम पर इतने सारे आरोप लगा रहे हैं?" (पद 4; *मॉडर्न पीपल्स बाइबिल*); फिर भी, यीशु मौन रहे (पद 5)। यहाँ एक बात जिस पर हमें ध्यानपूर्वक विचार करना चाहिए, वह एक प्रश्न खड़ा करती है: पाम संडे (खजूर रविवार) के दिन, इतनी विशाल भीड़ ने खजूर की डालियाँ लहराते हुए यीशु का यरूशलेम में स्वागत किया था; तो फिर, मरकुस अध्याय 15 में, वही लोग उन पर आरोप क्यों लगा रहे हैं और यहाँ तक कि उन्हें मृत्युदंड देने की मांग क्यों कर रहे हैं? इसका कारण इन यहूदी लोगों की मसीहा के बारे में अधूरी समझ में निहित है। यद्यपि पुराने नियम की भविष्यवाणियों में परमेश्वर के पुत्र—मसीहा (या क्राइस्ट)—के आगमन की भविष्यवाणी की गई थी, फिर भी इन यहूदियों को यह अपेक्षा थी कि उनके आगमन पर, वे उनके सांसारिक राजा बन जाएँगे, उन्हें रोमन शासन से मुक्त कराएँगे, शांति स्थापित करेंगे, और उनकी भौतिक समृद्धि सुनिश्चित करेंगे। लेकिन, यीशु—जो सच्चे राजा थे—सिर्फ उनकी उम्मीदें पूरी करने के लिए नहीं आए थे, यानी उन्हें रोम से आज़ाद कराने, शांति लाने, या उनकी भौतिक भलाई पक्का करने के लिए नहीं। बल्कि, राजाओं के राजा के तौर पर, वे हमें शैतान के राज से बचाने आए थे, ताकि हम परमेश्वर के राज में दाखिल हो सकें और वहाँ हमेशा-हमेशा के लिए रह सकें। इसलिए, क्योंकि इन लोगों ने एक ऐसे मसीहा की उम्मीद की थी जो उन्हें रोम के जुल्म से आज़ाद कराएगा—और यकीनन ऐसे मसीहा की नहीं जिसे रोम का गवर्नर गिरफ़्तार करके उस पर मुकदमा चलाएगा—वे यीशु के खिलाफ़ हो गए और ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगे कि उन्हें सूली पर चढ़ा दिया जाए। यह बात मरकुस 15:13-14 में लिखी है: "उन्होंने चिल्लाकर जवाब दिया, 'उसे सूली पर चढ़ा दो!' 'क्यों?' पीलातुस ने पूछा। 'उसने क्या जुर्म किया है?' लेकिन वे और भी ज़ोर से चिल्लाए, 'उसे सूली पर चढ़ा दो!'" नतीजतन, भीड़ को खुश करने की कोशिश में, पीलातुस ने यीशु को कोड़े

लगवाए और उन्हें सूली पर चढ़ाने के लिए सौंप दिया (पद 15)। फिर रोम के सैनिकों ने यीशु का मज़ाक उड़ाया और उन्हें बेइज़्ज़त किया, और उसके बाद उन्हें सूली पर चढ़ाने के लिए ले गए (पद 16–20)।

मरकुस 15:22–25 का अंश इस प्रकार है: “वे यीशु को उस जगह ले गए जिसे गोलगोथा कहते हैं (जिसका अर्थ है ‘खोपड़ी की जगह’)। उन्होंने उसे गंधरस मिली हुई दाखमधु पीने को दी, पर उसने उसे नहीं लिया। और उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ा दिया। उसके कपड़े आपस में बाँटते हुए, उन्होंने चिट्ठियाँ डालीं ताकि यह तय हो सके कि किसे क्या मिलेगा। जब उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाया, तब तीसरा पहर था।” रोमन सैनिक यीशु को गोलगोथा—यानी खोपड़ी की जगह—ले गए और वहीं उसे क्रूस पर चढ़ा दिया। यह घटना “तीसरे पहर” घटी; हमारे आज के समय के हिसाब से, इसका मतलब है कि यीशु को शुक्रवार को सुबह 9:00 बजे क्रूस पर चढ़ाया गया था। मरकुस 15:33–34 में कहा गया है: “छठे पहर से लेकर नौवें पहर तक पूरे देश में अंधेरा छा गया। और नौवें पहर यीशु ने ऊँची आवाज़ में पुकारा, ‘एलोई, एलोई, लमा सबक्तनी?’ (जिसका अर्थ है ‘हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?’)।” यीशु को सुबह 9:00 बजे क्रूस पर चढ़ाया गया था, और “छठे पहर”—यानी दोपहर 12:00 बजे—तक उसने अपनी पीड़ा केवल चिलचिलाती धूप में ही सही। फिर, दोपहर 12:00 बजे के बाद, पूरे देश में अंधेरा छा गया। नौवें पहर—दोपहर 3:00 बजे—यीशु, जो उस पल तक चुप रहा था, ऊँची आवाज़ में पुकारा: “एलोई, एलोई, लमा सबक्तनी?” (अर्थ: “हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?”)। इस प्रकार, यीशु को परमेश्वर पिता ने त्याग दिया था। ऊँची आवाज़ में पुकारने के बाद, यीशु ने अपने प्राण त्याग दिए (पद 37)। लूका 23:46 की ओर देखें, तो हमें यीशु के ऊँची आवाज़ में पुकारने का एक और विवरण मिलता है: “यीशु ने ऊँची आवाज़ में पुकारा, ‘हे पिता, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूँ।’ यह कहने के बाद, उसने अपने प्राण त्याग दिए।” मरकुस 15:38 में कहा गया है: “मंदिर का पर्दा ऊपर से नीचे तक फटकर दो टुकड़े हो गया।” जब यीशु ने ऊँची आवाज़ में पुकारकर कहा, “हे पिता, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूँ” (मरकुस 15:37; लूका 23:46), और अपनी अंतिम साँस ली, तो मंदिर का पर्दा ऊपर से नीचे तक दो टुकड़ों में फट गया (मरकुस 15:38)। मंदिर के पवित्र स्थान के भीतर दो “पर्दे” थे। पवित्र स्थान के अंदर, ‘पवित्र स्थान’ (Holy Place) और ‘महापवित्र स्थान’ (Most Holy Place) थे; पवित्र स्थान से महापवित्र स्थान की ओर जाने वाले प्रवेश द्वार पर एक पर्दा लटका हुआ था। इसी पर्दे के रास्ते कोई व्यक्ति पवित्र स्थान से महापवित्र स्थान में प्रवेश कर सकता था। दूसरा पर्दा वह था जो पवित्र स्थान को महापवित्र स्थान से अलग करता था। यह विशेष “पर्दा” सबसे महीन धागों से बुना गया था। इसे नीले, बैंगनी और गहरे लाल रंग के धागों के साथ-साथ महीन बुने हुए लिनन का उपयोग करके तैयार किया गया था। परिणामस्वरूप, यह एक इंसान के हाथ की चौड़ाई जितना मोटा था (लगभग 2 सेमी)। कोई भी इंसान इस पर्दे को फाड़ नहीं सकता था। इस पर्दे के सामने की तरफ तीन करूबों (स्वर्गदूतों) की कढ़ाई की गई थी। इस चित्र का महत्व यह था कि, क्योंकि स्वर्गदूत पहरा दे रहे थे, इसलिए कोई भी व्यक्ति अपनी मर्ज़ी से और बिना अनुमति के महापवित्र स्थान में प्रवेश नहीं कर सकता था। इसका कारण यह था कि महापवित्र स्थान ईश्वर की उपस्थिति के प्रतीकात्मक निवास स्थान के रूप में कार्य करता था। इस प्रकार, महापवित्र स्थान एक पर्दे से ढका हुआ था क्योंकि यह वही स्थान था जहाँ पवित्र ईश्वर निवास करते थे; जो कोई भी बिना अनुमति के प्रवेश करने का दुस्साहस करता, उसे निश्चित मृत्यु का सामना करना पड़ता। इसलिए, अनधिकृत प्रवेश को रोकने

के लिए महापवित्र स्थान के सामने स्वर्गदूत पहरा देते थे। हालाँकि, साल में एक बार—और केवल ‘प्रायश्चित के दिन’ (Day of Atonement) पर—केवल महायाजक को ही महापवित्र स्थान में प्रवेश करने की अनुमति थी, लेकिन वह भी तब, जब उसने अपनी और इस्राएल के लोगों की ओर से निर्धारित शुद्धिकरण की रीतियों को पूरी तरह से संपन्न कर लिया हो। यह वही पर्दा था जो उस क्षण ऊपर से नीचे तक दो टुकड़ों में फट गया, जब यीशु ने क्रूस पर अपनी अंतिम साँस ली। इससे एक प्रश्न उठता है: यह देखते हुए कि जिस स्थान पर यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया और उनकी मृत्यु हुई, वह गोलगोथा की पहाड़ी थी, तो किसी को यह कैसे पता चल सकता था कि शहर की दीवारों के भीतर स्थित पवित्र स्थान के अंदर का पर्दा फट गया था? वह दोपहर के तीन बजे का समय था—ठीक वही समय जब याजक बलिदान चढ़ाने के लिए बाहर आते थे। इसीलिए, Acts 3:1-8 में, पतरस बताते हैं: “एक दिन दोपहर के तीन बजे—जो प्रार्थना का समय होता है” (v. 1), जब वे मंदिर की ओर जा रहे थे, तो उन्हें मंदिर के द्वार पर बैठा एक लंगड़ा आदमी मिला। नासरत के यीशु मसीह के नाम पर, पतरस ने उसे चलने का आदेश दिया; उसका दाहिना हाथ पकड़कर उसे ऊपर उठाते हुए, उन्होंने उस लंगड़े आदमी को तुरंत अपने पैरों पर खड़े होकर चलने लायक बना दिया। इस प्रकार, क्योंकि उस समय—दोपहर के तीन बजे—मंदिर में याजक मौजूद थे, इसलिए वे यह देख पाए कि पर्दा फट गया था। इससे अगला सवाल उठता है: पर्दा किसने फाड़ा? यह परमेश्वर ही थे—अपने वचन और अपनी आज्ञा के द्वारा—जिन्होंने उस पर्दे को फटने का कारण बनाया (बाइबिल के टीकाकारों के अनुसार)। तो, अंतिम सवाल यह है: उस पर्दे के फटने का क्या अर्थ है? इसका उत्तर Hebrews 10:19-20 में मिलता है: “इसलिए, भाइयों और बहनों, क्योंकि हमें यीशु के लहू के द्वारा ‘परम पवित्र स्थान’ में प्रवेश करने का भरोसा है—एक नए और जीवित मार्ग से जो हमारे लिए पर्दे के द्वारा खोला गया है, यानी, उसका शरीर।” Hebrews का लेखक घोषणा करता है कि यह पर्दा यीशु मसीह के भौतिक शरीर का प्रतिनिधित्व करता है। और यीशु मसीह के भौतिक शरीर को क्रूस पर चढ़ाया गया और उसकी मृत्यु हो गई। इसीलिए पवित्र स्थान का पर्दा फट गया। जिस तरह मंदिर के पर्दे के फटने से लोगों के लिए ‘परम पवित्र स्थान’ में आने-जाने का मार्ग खुल गया, उसी तरह—क्रूस पर यीशु की मृत्यु के द्वारा—हमें भी ‘परम पवित्र स्थान’ तक पहुँचने का अधिकार मिल गया है जहाँ परमेश्वर निवास करते हैं, और बदले में, परमेश्वर भी हमारे पास आकर हमसे मिलने में समर्थ हुए हैं। हम इसलिए नष्ट नहीं होते—भले ही अब पवित्र परमेश्वर हमारे बीच रहने आ गए हैं—क्योंकि हम उनके बच्चे बन गए हैं। इसलिए, यीशु के लहू द्वारा सशक्त होकर, हमने ‘परम पवित्र स्थान’ में प्रवेश करने और पवित्र परमेश्वर की उपस्थिति के निकट जाने का साहस प्राप्त कर लिया है। जब हम इस बात पर विचार करते हैं कि हमने पिछले सप्ताह कैसे जीवन बिताया है, तो हमारा अंतःकरण अपराध-बोध से भारी हो सकता है, हमारा जीवन अत्यंत शर्मनाक लग सकता है, और हम परमेश्वर के निकट जाने के भी अयोग्य महसूस कर सकते हैं; फिर भी, यीशु मसीह के लहू की शक्ति के द्वारा, हम भरोसे के साथ उनके निकट जाने में समर्थ होते हैं। इब्रानियों 4:16 का संदेश यह है: “इसलिए, आइए हम साहस के साथ अनुग्रह के सिंहासन के पास जाएँ, ताकि हम दया पाएँ और ज़रूरत के समय सहायता के लिए अनुग्रह प्राप्त करें।” अंततः, यह स्वर्ग के राज्य में परमेश्वर के सिंहासन के पास हमारे भविष्य के पहुँचने की बात करता है, जहाँ वह निवास करते हैं। हालाँकि, यह न केवल उस भविष्य की वास्तविकता की बात करता है, बल्कि अभी इसी समय परमेश्वर के निकट आने की हमारी वर्तमान क्षमता की भी बात करता है। आज, प्रभु के दिन, हम इस पवित्र स्थान में परमेश्वर की आराधना करने के लिए एकत्रित होते हैं;

फिर भी, इससे भी अधिक मौलिक रूप से, उस आराधना को अर्पित करने के लिए हमें सीधे उसकी उपस्थिति में जाना चाहिए। ऐसा करने के लिए, हम यीशु के लहू पर भरोसा करते हैं, जिससे हमारी आत्माएँ साहस के साथ परमेश्वर के निकट जा पाती हैं और व्यक्तिगत रूप से उससे मिल पाती हैं। उस अनुग्रह को प्राप्त करने के लिए जो हमारी ज़रूरत के समय हमारी सहायता करता है, हम किसी भी क्षण प्रार्थना में परमेश्वर के पास जाने के लिए स्वतंत्र हैं। इसका कारण यह है कि, यीशु की बलिदान वाली मृत्यु और क्रूस पर उसके लहू बहाए जाने के द्वारा, मंदिर का पर्दा दो टुकड़ों में फट गया था। क्योंकि हमारी प्रार्थनाओं में परमेश्वर से बात करने के लिए उसकी उपस्थिति के निकट जाना शामिल है, इसलिए वह कृपापूर्वक उनका उत्तर देता है।

यह अंश मार्क 15:42-45 से लिया गया है: “यह तैयारी का दिन था (यानी, सब्ब से ठीक एक दिन पहले का दिन)। जैसे ही शाम ढलने लगी, अरिमतिया के यूसुफ—जो परिषद के एक प्रमुख सदस्य थे और स्वयं भी परमेश्वर के राज्य की प्रतीक्षा कर रहे थे—साहसपूर्वक पीलातुस के पास गए और यीशु का शव माँगा। पीलातुस यह सुनकर हैरान रह गया कि यीशु की मृत्यु तो पहले ही हो चुकी थी। उसने सूबेदार को बुलवाया और उससे पूछा कि क्या यीशु की मृत्यु सचमुच हो चुकी है। जब सूबेदार से उसे यह पता चला कि बात सच है, तो उसने यीशु का शव यूसुफ को सौंप दिया।” यहाँ, “तैयारी का दिन” उस दिन को संदर्भित करता है जो फसह पर्व की तैयारियों के लिए अलग रखा जाता था। सब्ब से ठीक पहले का दिन होने के नाते, यह विशेष रूप से शुक्रवार को दर्शाता है। अरिमतिया के यूसुफ ‘सन्हेद्रिन’—यानी यहूदी परिषद—के सदस्य थे, और उनका सामाजिक रुतबा तथा अधिकार काफी ऊँचा था। पीलातुस ने अनेक लोगों को सूली पर चढ़ते और मरते देखा था; इसलिए वह जानता था कि सूली पर चढ़ाए गए व्यक्ति की मृत्यु आमतौर पर केवल छह घंटों के भीतर नहीं होती थी, बल्कि वे अक्सर दो या तीन दिनों तक जीवित रहते थे और उसके बाद ही दम तोड़ते थे। हालाँकि, यीशु की मृत्यु केवल छह घंटों के भीतर ही हो गई थी; इसलिए, जब अरिमतिया के यूसुफ ने यीशु का शव माँगा, तो पीलातुस—अपने अनुभव के आधार पर—इस बात पर आश्चर्य किए बिना न रह सका कि यीशु की मृत्यु इतनी जल्दी कैसे हो गई (पद 44)। परिणामस्वरूप, पीलातुस ने सूबेदार को बुलवाया ताकि वह यह पता लगा सके कि क्या यीशु की मृत्यु को सचमुच कुछ समय बीत चुका है (पद 44)। सूबेदार से इस बात की पुष्टि करने के बाद, पीलातुस ने यीशु का शव यूसुफ को सौंप दिया (पद 45)। फिर भी, जिस क्षण यीशु की मृत्यु हुई, ठीक उसी समय उनके साथ सूली पर चढ़ाए गए दो अपराधी अभी भी जीवित थे। इसका कारण यह था कि सूली पर चढ़ाए गए लोग आमतौर पर कम से कम दो दिनों तक जीवित रहते थे। परिणामस्वरूप, सैनिक वहाँ गए और यीशु के साथ सूली पर चढ़ाए गए उन दोनों व्यक्तियों की टाँगें तोड़ दीं (यूहन्ना 19:32); उन्हें मार डालने के बाद, उन्होंने उनके शवों को वहाँ से हटा दिया। हालाँकि, जब उन्होंने देखा कि यीशु की मृत्यु तो पहले ही हो चुकी है, तो उन्होंने उनकी टाँगें नहीं तोड़ीं; इसके बजाय, सैनिकों में से एक ने यीशु की मृत्यु की पुष्टि करने के लिए एक भाले से उनके पार्श्व (पसली) में वार किया, और तुरंत ही उसमें से रक्त और जल बह निकला (पद 33-34)। इस प्रकार, यीशु का शव उन्हें सौंप दिया गया। इसके अलावा, निकोदेमुस—जो पहले रात में यीशु से मिलने आया था—मुर्द और अगर (एलोज़) का लगभग 33 किलोग्राम वज़नी मिश्रण लेकर

आया। जोसेफ और निकोदेमुस ने मिलकर यीशु का शरीर लिया, यहूदी दफ़नाने की रस्मों के अनुसार उस पर मसाले लगाए, उसे लिनन के कपड़ों में लपेटा, और जोसेफ की अपनी कब्र में उसे दफ़ना दिया (पद 39-40; *द कंटेम्पररी बाइबल*)। इस तरह, उस शुक्रवार की घटनाएँ इस बात के साथ समाप्त हुईं कि यीशु को आखिरकार अमीर जोसेफ की नई कब्र में दफ़ना दिया गया। फिर, रविवार को, यीशु ने मृत्यु की शक्ति पर विजय प्राप्त की और फिर से जीवित हो उठे।

अंततः, यीशु से संबंधित हर बात ठीक वैसे ही घटित हुई जैसी भविष्यवाणी की गई थी। दूसरे शब्दों में, यीशु ने हर भविष्यवाणी को पूरा किया। यीशु के बारे में सबसे पहली भविष्यवाणी उत्पत्ति 3:15 में मिलती है: “मैं तेरे और स्त्री के बीच, और तेरे वंश और उसके वंश के बीच बैर उत्पन्न करूँगा; वह तेरे सिर को कुचलेगा, और तू उसकी एड़ी को डसेगा।” यहाँ, “स्त्री का वंश” यीशु मसीह को संदर्भित करता है, जबकि “सर्प” शैतान को संदर्भित करता है। संक्षेप में, यह एक ऐसी भविष्यवाणी है जो यह बताती है कि यीशु मसीह शैतान को कुचल देंगे। इस भविष्यवाणी से शुरू होकर, पवित्र शास्त्रों ने यीशु की मृत्यु के बारे में अनेक भविष्यवाणियाँ कीं। और उन भविष्यवाणियों में से हर एक ठीक वैसे ही पूरी हुई जैसी पहले से बताई गई थी। एक उदाहरण के तौर पर, यशायाह 53:9 पर विचार करें: “उसने कोई हिंसा नहीं की थी, और न ही उसके मुँह में कोई छल था; फिर भी उन्होंने उसकी कब्र दुष्टों के साथ—और उसकी मृत्यु पर अमीरों के साथ बनाई।” यहाँ, “अमीर आदमी” अरिमतिया के जोसेफ को संदर्भित करता है। भविष्यवाणी के अनुसार, यीशु ने परमेश्वर की इच्छा का पूरी तरह से पालन किया। हमें भी पूरी तरह से परमेश्वर की इच्छा के अनुसार जीने का प्रयास करना चाहिए—यदि परमेश्वर की इच्छा हो तो अनुशासन स्वीकार करना, या यदि परमेश्वर की इच्छा हो तो कठिनाई सहना, और इसी तरह—क्योंकि ऐसा करने से परमेश्वर सचमुच प्रसन्न होंगे। इसलिए, जब हम यह समझते हैं कि कोई मामला परमेश्वर की इच्छा और अभिलाषाओं के अनुरूप है या नहीं, और जब हम इस प्रार्थना को—“तेरी इच्छा पृथ्वी पर भी पूरी हो, जैसे स्वर्ग में पूरी होती है”—अपने जीवन का मार्गदर्शक मानक बनाते हैं, तब चाहे हम जीवित रहें या मर जाएँ, हमारा अस्तित्व परमेश्वर के लिए महिमा, आशीष और प्रसन्नता का स्रोत बन जाता है। चूँकि यीशु—जो ‘मार्ग, सत्य और जीवन’ हैं—ने हमारे खातिर, ठीक वैसी ही भविष्यवाणी के अनुसार, समस्त कष्ट सहें और क्रूस पर अपने प्राण त्यागे; और इस प्रकार हमारे लिए परमेश्वर तक पहुँचने का मार्ग पूरी तरह खोल दिया; इसलिए हमें कृतज्ञता और स्तुति से भरे हृदय के साथ उस मार्ग का अनुसरण करना चाहिए। जब हम ऐसा करेंगे, तो हम परमेश्वर का दर्शन करेंगे और उनके आशीषों के भागी बनेंगे।

पुनरुत्थित यीशु (1)

[यूहन्ना 20:1-10]

यीशु के पुनरुत्थान की घटना का वर्णन चारों सुसमाचारों (मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना) में मिलता है। आज, मैं पुनरुत्थित यीशु के विषय में एक संदेश साझा करना चाहूँगा, जिसमें मेरा मुख्य ध्यान यूहन्ना 20:1-10 के अंश पर रहेगा; अगले सप्ताह, हमारी बुधवार की आराधना के दौरान, मैं मत्ती 28 पर आधारित एक संदेश साझा करने की योजना बना रहा हूँ।

आज का हमारा पाठ यूहन्ना 20:1 से लिया गया है: “सप्ताह के पहले दिन, भोर के समय, जब अभी अँधेरा ही था, मरियम मगदलीनी कब्र पर आई और उसने देखा कि कब्र से पत्थर हटा दिया गया है।” यहाँ, “सप्ताह का पहला दिन” रविवार—अर्थात् प्रभु का दिन—को दर्शाता है, क्योंकि उस समय सब्ब का दिन शनिवार को पड़ता था। बाइबल में यह दर्ज है कि “मरियम मगदलीनी” भोर के समय, जब अभी अँधेरा ही था, यीशु की कब्र पर आई; तथापि, यदि हम मत्ती, मरकुस और लूका के सुसमाचारों को देखें, तो हमें पता चलता है कि मरियम मगदलीनी के साथ कम से कम चार अन्य स्त्रियाँ भी थीं [“मरियम मगदलीनी और दूसरी मरियम” (मत्ती 28:1); “मरियम मगदलीनी, याकूब की माँ मरियम, और सलोमी” (मरकुस 16:1); “ये स्त्रियाँ” (लूका 24:1)—विशेष रूप से, “वे स्त्रियाँ जो यीशु के साथ गलील से आई थीं” (23:55)]। वह “पत्थर” (यूहन्ना 20:1)—जिसका उपयोग यीशु की कब्र को सुरक्षित रूप से बंद करने और उस पर मुहर लगाने के लिए किया गया था (मत्ती 27:66)—एक विशाल चट्टान थी, जो कब्र के प्रवेश-द्वार को बंद करने वाली एक दरवाज़े जैसी बाधा का काम करती थी। वह पत्थर आकार में इतना विशाल था कि चार स्त्रियों के लिए उसे स्वयं हटा पाना बिल्कुल असंभव होता। फिर, प्रभु का एक स्वर्गदूत स्वर्ग से नीचे उतरकर क्यों आया और उसने उस पत्थर को क्यों लुढ़काकर हटा दिया? (मत्ती 28:2)। इसका कारण कब्र के खाली होने को प्रकट करना—अर्थात् उसकी गवाही देना—था। दूसरे शब्दों में, खाली कब्र इस बात की गवाही देती है कि यीशु पुनरुत्थित हो गए हैं, ठीक वैसे ही जैसा उन्होंने पहले ही बता दिया था। आज का हमारा पाठ यूहन्ना 20:2 से लिया गया है: “इसलिए वह दौड़कर शमौन पतरस और दूसरे चले के पास गई—जिससे यीशु प्रेम करते थे—और उनसे कहा, ‘वे प्रभु को कब्र से निकाल ले गए हैं, और हमें नहीं मालूम कि उन्होंने उन्हें कहाँ रखा है।’” यीशु की खाली कब्र देखकर, मरियम

मगदलीनी दौड़कर प्रेरित पतरस—और उस दूसरे चेले के पास जिससे यीशु प्रेम करते थे, यानी प्रेरित यूहन्ना के पास—गई, ताकि उन्हें बता सके कि प्रभु अब कब्र में नहीं हैं। यह बात मरियम मगदलीनी के विश्वास की कमी को दर्शाती है। कहने का तात्पर्य यह है कि, यदि मरियम मगदलीनी ने खाली कब्र देखकर सचमुच यह विश्वास कर लिया होता कि यीशु वैसे ही जी उठे हैं जैसा उन्होंने पहले ही बताया था, तो वह पतरस और यूहन्ना के पास यीशु के पुनरुत्थान की गवाही देने के लिए दौड़कर जाती; इसके बजाय, उसने कहा, “वे प्रभु को कब्र से निकाल ले गए हैं, और हमें नहीं मालूम कि उन्होंने उन्हें कहाँ रखा है” (पद 2)। दूसरे शब्दों में, क्योंकि उसे अभी तक यह विश्वास नहीं था कि यीशु जी उठे हैं, इसलिए उसने पतरस और यूहन्ना से कहा कि उसे नहीं मालूम कि प्रभु का शरीर (उनके मृत अवशेष) कहाँ रखा गया है। यीशु की खाली कब्र स्पष्ट रूप से जी उठे यीशु की गवाही देती है। यीशु वह महिमामय प्रभु हैं, जिनके पास—भले ही कब्र के प्रवेश द्वार पर कोई विशाल पत्थर ही क्यों न रखा हो—कब्र से जी उठने और बाहर निकलने की शक्ति है। प्रभु, अपनी महिमा में जी उठने के बाद, कब्र से बाहर आने में पूरी तरह सक्षम हैं, चाहे उनके रास्ते में कितना भी बड़ा पत्थर क्यों न खड़ा हो।

आज का हमारा पाठ यूहन्ना 20:3 में आगे बढ़ता है: “इसलिए पतरस और वह दूसरा चेला कब्र की ओर चल पड़े।” पतरस और यूहन्ना के यीशु की कब्र की ओर जाने का कारण यह था कि उन्हें भी अभी तक जी उठे यीशु पर विश्वास नहीं था। पूरे तीन वर्षों तक यीशु का अनुसरण करने के बावजूद—जिस दौरान उन्होंने तीन अलग-अलग अवसरों पर स्पष्ट रूप से अपने पुनरुत्थान की भविष्यवाणी की थी—पतरस और यूहन्ना में अभी भी उनके शब्दों पर पूरी तरह विश्वास करने की आस्था की कमी थी; यही कारण था कि वे यीशु की कब्र की ओर दौड़ पड़े (पद 4)। यीशु के इस वादे पर केवल भरोसा करने के बजाय—कि अपनी मृत्यु के तीन दिन बाद वह फिर से जी उठेंगे—और उस भरोसे के साथ उनकी खाली कब्र की ओर जाने के बजाय, उन्हें तो इसके विपरीत, जी उठे यीशु की गवाही देने के लिए दूसरों के पास जाना चाहिए था। आज का धर्मग्रंथ का अंश यूहन्ना 20:4-8 से लिया गया है: “वे दोनों एक साथ दौड़ रहे थे, लेकिन दूसरा चेला पतरस से आगे निकल गया और कब्र पर पहले पहुँचा। और झुककर अंदर देखने पर, उसने वहाँ लिनेन के कपड़े पड़े देखे, लेकिन वह अंदर नहीं गया। फिर शमौन पतरस उसके पीछे-पीछे आया, और कब्र के अंदर गया। उसने वहाँ लिनेन के कपड़े पड़े देखे, और वह कपड़ा जो यीशु के सिर पर था, वह लिनेन के कपड़ों के साथ नहीं पड़ा था, बल्कि एक अलग जगह पर तह करके रखा हुआ था। तब दूसरा चेला, जो कब्र पर पहले पहुँचा था, वह भी अंदर गया, और उसने देखा और विश्वास किया।” प्रेरित यूहन्ना, प्रेरित पतरस से आगे निकलकर, यीशु की कब्र पर सबसे पहले पहुँचा; वह अंदर देखने के लिए झुका और उसने वहाँ लिनेन के कपड़े पड़े देखे, फिर भी वह उस खाली कब्र में प्रवेश नहीं किया (पद 4-5)। फिर शमौन पतरस, जो पीछे-पीछे आ रहा था, पहुँचा और कब्र में प्रवेश किया; वहाँ, उसने देखा कि वह कपड़ा जिसने यीशु के सिर को ढका हुआ था, वह लिनेन के कपड़ों के साथ नहीं पड़ा था, बल्कि एक अलग जगह पर अलग से रखा हुआ था, और अभी भी उसी आकार में था जिस आकार में उसे लपेटा गया था (पद 6-7)। जब किसी कपड़े को सिर के चारों ओर लपेटा जाता है, तो वह

स्वाभाविक रूप से एक गोलाकार रूप ले लेता है, क्योंकि इंसान का सिर गोल होता है। वह कपड़ा जिसने पुनर्जीवित यीशु के सिर को ढका हुआ था, वह उसी गोलाकार रूप में बना रहा। जब पतरस ने इसकी बारीकी से जाँच कर ली और बाहर कदम रखा, तब अंत में प्रेरित यूहन्ना भी कब्र में प्रवेश किया—और तभी उसने देखा और विश्वास किया (पद 8)।

आज का धर्मग्रंथ का अंश यूहन्ना 20:9–10 से लिया गया है: “(क्योंकि वे अभी तक धर्मग्रंथ को नहीं समझे थे, कि उसे मृतकों में से फिर से जीवित होना है।) तब वे दोनों चले अपने-अपने घरों को लौट गए।” प्रेरित यूहन्ना का विश्वास देखने और मानने पर आधारित था (पद 8); यह यीशु पर आधारित विश्वास नहीं था—उस पर, जो “धर्मग्रंथों के अनुसार... हमारे पापों के लिए मर गया... दफनाया गया... और धर्मग्रंथों के अनुसार तीसरे दिन फिर से जीवित हो गया” (1 कुरिन्थियों 15:3–4)। प्रेरित यूहन्ना की तरह, प्रेरित पतरस भी अभी तक धर्मग्रंथ को नहीं समझे थे, जिसमें यीशु के मृतकों में से फिर से जीवित होने की अनिवार्यता के बारे में बताया गया था (यूहन्ना 20:9)। इस तथ्य के बावजूद कि धर्मग्रंथों में यीशु के पुनरुत्थान के संबंध में स्पष्ट रूप से कई अंश मौजूद हैं, वे इस सच्चाई को समझने में असफल रहे कि यीशु को *अवश्य* फिर से जीवित होना है। परिणामस्वरूप, प्रेरित पतरस और यूहन्ना अपने-अपने घरों को लौट गए (पद 10)। ऐसा विश्वास—जो केवल देखने पर आधारित हो—दूसरों के सामने पुनर्जीवित यीशु की घोषणा करने में असमर्थ होता है; इसके बजाय, वह बस अपने ही घर में सिमटकर रह जाता है।

लूका 24:7–9 में लिखा है: “यह कहते हुए, ‘मनुष्य के पुत्र को पापियों के हाथों में सौंपा जाना, क्रूस पर चढ़ाया जाना, और तीसरे दिन फिर से जीवित होना अवश्य है।’” और उन्हें उसके वचन याद आ गए। तब वे कब्र से लौटकर आए और ये सारी बातें उन ग्यारहों को और बाकी सभी को बताईं।” हमारा विश्वास प्रेरित यूहन्ना के विश्वास जैसा नहीं होना चाहिए—ऐसा विश्वास जो केवल देखने पर आधारित हो—बल्कि ऐसा विश्वास होना चाहिए जो “यीशु के वचनों को याद रखता हो”: कि “मनुष्य के पुत्र (यीशु मसीह) को पापियों के हाथों में सौंपा जाना, क्रूस पर चढ़ाया जाना, और तीसरे दिन फिर से जीवित होना अवश्य है।” हमें यीशु के पुनरुत्थान पर विश्वास करना चाहिए और आगे बढ़कर, पुनर्जीवित यीशु की गवाही दूसरों के सामने देनी चाहिए। एक दिलचस्प बात यह है कि मुख्य याजकों और फरीसियों ने—वही लोग जिन्होंने यीशु को क्रूस पर चढ़वाया और मरवा डाला था—जब यीशु अभी जीवित थे... उन्हें “याद आया” कि यीशु ने कहा था कि वह तीन दिन बाद फिर से जीवित हो जाएँगे; इसलिए, वे रोमन गवर्नर, पीलातुस के पास गए और उससे विनती की कि वह पहरेदारों को यह आदेश दे कि वे तीसरे दिन तक यीशु की कब्र पर कड़ी नज़र रखें। परिणामस्वरूप, पीलातुस की अनुमति मिलने के बाद, मुख्य याजक और फरीसी—पहरेदारों के साथ—गए और पथर पर मुहर लगाकर तथा उस पर कड़ी निगरानी रखकर यीशु की कब्र को सुरक्षित कर दिया (मत्ती 27:62–66)। इस तथ्य को देखते हुए, ऐसा प्रतीत होता है कि मुख्य याजकों और फरीसियों का यीशु

के पुनरुत्थान पर विश्वास, प्रेरित पतरस या यूहन्ना की तुलना में कहीं अधिक दृढ़ था। हमारा विश्वास ऐसा विश्वास है जो देखी हुई बातों के आधार पर किया जाता है। हालाँकि, यीशु ने घोषणा की, "धन्य हैं वे जिन्होंने देखा नहीं, फिर भी विश्वास किया" [(समकालीन अंग्रेज़ी संस्करण) "जो बिना देखे विश्वास करते हैं, वे सचमुच धन्य लोग हैं"]। इसका वर्णन यूहन्ना 20:27-29 में इस प्रकार किया गया है: "तब उसने थोमा से कहा, 'अपनी उंगली यहाँ लगा और मेरे हाथों को देख; और अपना हाथ बढ़ाकर मेरे पंजर में डाल। अविश्वास मत कर, परन्तु विश्वास कर।' थोमा ने उत्तर दिया और उससे कहा, 'हे मेरे प्रभु, हे मेरे परमेश्वर!' यीशु ने उससे कहा, 'क्या तूने मुझे देखा है, इसलिए विश्वास किया है? धन्य हैं वे जिन्होंने देखा नहीं, फिर भी विश्वास किया है।'"

1 कुरिन्थियों 15:3-4 का अंश इस प्रकार है: "क्योंकि मैंने तुम्हें सबसे पहले वही बात बताई जो मैंने स्वयं ग्रहण की थी: कि मसीह हमारे पापों के लिए शास्त्रों के अनुसार मर गया, कि वह दफनाया गया, और कि वह शास्त्रों के अनुसार तीसरे दिन फिर से जीवित हो गया।" यीशु "शास्त्रों के अनुसार" मरा और तीन दिन बाद "शास्त्रों के अनुसार" फिर से जीवित हो गया। इसलिए, हमें पवित्र शास्त्रों के अनुसार ही विश्वास करना चाहिए। केवल देखी हुई चीज़ों के आधार पर विश्वास करना—जैसा कि प्रेरित यूहन्ना ने किया था—पर्याप्त नहीं है। वह तो बस घर लौट गया। आजकल, हम मसीही लोग अक्सर अपने विश्वास को केवल उन चीज़ों पर आधारित करने की कोशिश करते हैं जिन्हें हमने देखा है। आज कुछ ऐसे लोग भी हैं जो दावा करते हैं कि वे स्वर्ग या नरक जाकर लौटे हैं... लोग अक्सर दूसरों की बातों को सुनते हैं और उन पर भरोसा करते हैं; हालाँकि, ऐसा विश्वास आसानी से डगमगा जाता है। फिर भी, यदि हम पवित्र शास्त्रों के अनुसार विश्वास करते हैं, तो हम मज़बूती से और बिना डगमगाए खड़े रह सकते हैं, और इस प्रकार एक स्थिर और दृढ़ विश्वास का जीवन बना सकते हैं। हमारे कलीसिया को फिलाडेल्फिया के कलीसिया (प्रकाशितवाक्य 3:7-13) जैसा बनने का प्रयास करना चाहिए। "थोड़ी सी शक्ति" होने पर भी, हमें एक ऐसा कलीसिया बनना चाहिए जो विजयी हो—और प्रभु से प्रशंसा पाए—ऐसा करने के लिए हमें उनके धीरज भरे वचन को थामे रखना होगा और उनके नाम का कभी भी इनकार नहीं करना होगा, भले ही हमें शैतान के पक्ष के लोगों द्वारा सताया जाए, या हम पर विपत्तियाँ और कठिनाइयाँ क्यों न आएँ। हमें कभी भी लाओदीकिया के कलीसिया जैसा नहीं बनना चाहिए—जो यह दावा करता था, "मैं धनी हूँ; मैंने धन कमा लिया है और मुझे किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं है"—क्योंकि ऐसा करने पर हमें प्रभु की डांट और अनुशासन का सामना करना पड़ेगा, क्योंकि हमारा आध्यात्मिक जीवन न तो ठंडा है और न ही गर्म, बल्कि गुनगुना है (पद 14-19)। प्रभु पवित्र शास्त्रों के अनुसार ही फिर से जीवित हुए; वास्तव में, उनका वचन इसी तथ्य की गवाही देता है। इसलिए, हमें प्रभु के पुनरुत्थान के बाइबल-संबंधी विवरण को पूर्ण विश्वास के साथ स्वीकार करना चाहिए और यीशु मसीह के सुसमाचार प्रचारक बनना चाहिए—और सभी लोगों को यह घोषणा करनी चाहिए कि वह मरे और फिर से जीवित हुए, ठीक वैसे ही जैसा कि पवित्र शास्त्रों में पहले से बताया गया था।

पुनरुत्थित यीशु (2)

[मत्ती 28:1-15]

हमारी पिछली बुधवार की आराधना सेवा के दौरान, हमने "पुनरुत्थित यीशु (1)" शीर्षक से अनुग्रह का एक संदेश साझा किया था, जिसमें हमने यूहन्ना 20:1-10 में पाए जाने वाले अंश पर ध्यान केंद्रित किया था। ऐसा प्रतीत होता है कि एक भी व्यक्ति ने यह विश्वास नहीं किया था कि यीशु मसीह मृतकों में से जी उठे हैं। मरियम मगदलीनी यीशु की कब्र पर इसलिए नहीं आई थी कि उसे विश्वास था कि वह जी उठे हैं। न ही प्रेरित पतरस और यूहन्ना खाली कब्र पर इसलिए आए थे कि उन्हें यीशु के पुनरुत्थान पर विश्वास था। उन्हें यीशु के पुनरुत्थान पर विश्वास, शास्त्र के इन वचनों को याद करने से नहीं हुआ—"कि उसे [यीशु को] मृतकों में से फिर जी उठना है" (पद 9); बल्कि, उन्हें विश्वास तभी हुआ जब उन्होंने खाली कब्र के भीतर पड़े कफ़न और सिर ढकने वाले तौलिए को देखा (पद 6-7)। किसी भी एक व्यक्ति ने केवल शास्त्र के वचन के आधार पर यीशु के पुनरुत्थान पर विश्वास नहीं किया (पद 9)।

आज, मैं "पुनरुत्थित यीशु (2)" शीर्षक से अनुग्रह का एक संदेश साझा करना चाहूंगा, जिसमें हम मत्ती 28:1-15 में पाए जाने वाले अंश पर ध्यान केंद्रित करेंगे।

आज का हमारा मूल पाठ मत्ती 28:1 से लिया गया है: "सब्त के बाद, जब सप्ताह का पहला दिन भोर होने को था, तो मरियम मगदलीनी और दूसरी मरियम कब्र को देखने गईं।" जब "सब्त" (शनिवार) पूरी तरह बीत चुका था, और "सप्ताह के पहले दिन" (रविवार—प्रभु का दिन) की "भोर" के समय—[जिसे एक पुराने अनुवाद में "दिन निकलने के समय" (Gaeyeok Hangeul) के रूप में वर्णित किया गया है, जो हमारी आधुनिक गणना के अनुसार, संभवतः सुबह 5:00 बजे के आसपास—सूर्योदय से पहले—का समय रहा होगा]—"मरियम मगदलीनी और दूसरी मरियम" (अर्थात्, याकूब की माता मरियम) यीशु की कब्र पर गईं। चूंकि उन्हें अभी तक यीशु के पुनरुत्थान पर विश्वास नहीं था, इसलिए वे यीशु के शरीर पर गन्धरस (myrrh) लगाने के इरादे से वहाँ गईं। आज का धर्मग्रंथ का अंश मत्ती 28:2-3 से लिया गया है: "अचानक एक ज़ोरदार भूकंप आया, क्योंकि प्रभु का एक दूत स्वर्ग से नीचे उतरा, उसने आकर पत्थर को पीछे हटा दिया और उस पर बैठ गया। उसका रूप बिजली जैसा था, और उसके कपड़े बर्फ़ जैसे सफ़ेद थे।" यहाँ, "ज़ोरदार भूकंप"—और उसके बाद स्वर्ग से "प्रभु के दूत" का नीचे उतरना (जिसका रूप बिजली जैसा

चमक रहा था और जिसके कपड़े बर्फ़ जैसे सफ़ेद थे) ताकि वह यीशु की कब्र को रोकने वाले पत्थर को हटा सके और उस पर बैठ सके—यह कुछ ऐसा नहीं था जिसे मरियम मगदलीनी और याकूब की माँ मरियम ने अपनी आँखों से देखा हो। ये दोनों स्त्रियाँ यीशु की कब्र पर *इन घटनाओं के घटित होने के बाद* पहुँची थीं। आज का अंश मत्ती 28:4-5 में आगे बढ़ता है: “पहरेदार उससे इतने ज़्यादा डर गए कि वे काँपने लगे और मरे हुए लोगों जैसे हो गए। दूत ने उन स्त्रियों से कहा, ‘डरो मत, क्योंकि मैं जानता हूँ कि तुम यीशु को ढूँढ़ रही हो, जिसे क्रूस पर चढ़ाया गया था।’” यहाँ, “पहरेदार” शब्द का संदर्भ उन संतरियों से है (27:65-66); दूत से डरकर, वे काँपने लगे और मरे हुए लोगों जैसे हो गए (28:4)। एक दिलचस्प बात जो ध्यान देने योग्य है, वह यह है: जिस तरह “ज़ोरदार भूकंप” के कारण धरती ज़ोर से हिली (पद 2), उसी तरह यीशु की कब्र की रखवाली करने वाले पहरेदार दूत से इतने ज़्यादा डर गए कि उनके दिल भी—ठीक काँपती हुई धरती की तरह—डर के मारे ज़ोर से काँपने लगे। टीकाकार और पादरी हेंड्रिक्सन के अनुसार, धरती के हिलने का वर्णन करने वाला शब्द और लोगों के काँपने का वर्णन करने वाला शब्द, दोनों की भाषाई जड़ एक ही है। हमें इस तरह के काँपने का एक मिलता-जुलता उदाहरण दानियेल 5:5-6 में मिलता है। वह घटना ठीक तब घटी थी जब राजा बेलशस्सर ने देखा कि इंसान की उंगलियाँ प्रकट हुईं और महल के दीये के सामने वाली पलस्तर लगी दीवार पर कुछ लिखने लगीं; उंगलियों को लिखते हुए देखकर, राजा का चेहरा बदल गया, उसके घुटने आपस में टकराने लगे, और वह इतने ज़्यादा आतंक से भर गया कि उसे लगा जैसे उसके पैर उसके नीचे से खिसक रहे हों। प्रेरित यूहन्ना ने भी कुछ ऐसा ही अनुभव किया था। प्रकाशितवाक्य 1:17 में लिखा है: “जब मैंने उसे देखा, तो मैं उसके पैरों पर मरे हुए की तरह गिर पड़ा। तब उसने अपना दाहिना हाथ मुझ पर रखा और कहा: ‘डरो मत। मैं ही पहला और आखिरी हूँ।’” प्रभु ने अपना दाहिना हाथ प्रेरित यूहन्ना पर रखा—जो परमेश्वर के पुत्र, यीशु मसीह के पैरों पर साष्टांग पड़ा था, मानो वह मर गया हो—और उससे कहा, “डरो मत...” इसी तरह, जिन पहरेदारों ने यीशु के पुनरुत्थान को रोकने की कोशिश की थी, वे भी जब स्वर्गदूत के काम को देखा, तो मरे हुए की तरह ज़मीन पर गिर पड़े (मत्ती 28:4)। ठीक इसी पल मरियम मगदलीनी और याकूब की माँ मरियम, यीशु की कब्र पर पहुँचीं (पद 1)। स्वर्गदूत ने उन दोनों स्त्रियों से कहा, “डरो मत, क्योंकि मैं जानता हूँ कि तुम यीशु को ढूँढ़ रही हो, जिसे क्रूस पर चढ़ाया गया था” (पद 5)।

आज का धर्मग्रंथ का अंश मत्ती 28:6-7 से लिया गया है: “वह यहाँ नहीं है; क्योंकि वह जी उठा है, जैसा उसने कहा था। आओ, वह जगह देखो जहाँ प्रभु लेटा था। और जल्दी जाओ और उसके चेलों को बताओ कि वह मरे हुएओं में से जी उठा है, और सचमुच वह तुमसे पहले गलील जा रहा है। वहाँ तुम उसे देखोगे। देखो, मैंने तुम्हें बता दिया है।” जैसा कि स्वर्गदूत ने घोषणा की थी, यीशु अब कब्र में नहीं था; वह फिर से जी उठा था, ठीक वैसे ही जैसा उसने पहले बताया था (पद 6)। स्वर्गदूत ने मरियम मगदलीनी और याकूब की माँ मरियम को निर्देश दिया कि वे “आएँ और वह जगह देखें जहाँ वह [यीशु] लेटा था।” उन शब्दों पर अमल करते हुए, जब उन्होंने उस जगह को देखा जहाँ यीशु लेटा था, तो उसका शरीर कहीं भी नहीं मिला।

परिणामस्वरूप, स्वर्गदूत का संदेश सुनकर, वे दोनों स्त्रियाँ—जो डर और अपार खुशी दोनों से भरी थीं—जल्दी से कब्र से निकलीं और यीशु के चेलों को खबर देने के लिए दौड़ पड़ीं (पद 8)। हमारा पाठ मत्ती 28:9-10 के साथ जारी रहता है: “और जब वे उसके चेलों को बताने जा रही थीं, तो देखो, यीशु उनसे मिला और कहा, ‘आनंद करो!’ तब वे पास आईं और उसके पैर पकड़कर उसकी आराधना की। तब यीशु ने उनसे कहा, ‘डरो मत। जाओ, मेरे भाइयों से कहो कि वे गलील जाएँ, और वहाँ वे मुझे देखेंगे।’” जब मरियम मगदलीनी और याकूब की माँ मरियम, यीशु के पुनरुत्थान की खबर साझा करने के लिए चेलों की ओर दौड़ रही थीं, तो स्वयं जी उठा यीशु उनके सामने प्रकट हुआ, उसने अपना पुनर्जीवित शरीर दिखाया, और कहा, “डरो मत...” (पद 10)। एक दिलचस्प बात यह है कि ठीक वैसे ही जैसे स्वर्गदूत ने उन दोनों स्त्रियों से कहा था, “डरो मत” (पद 5), यीशु ने भी उनसे ठीक वही शब्द कहे: “डरो मत” (पद 10)। आज का धर्मग्रंथ का अंश मत्ती 28:11-15 से लिया गया है: “जब वे स्त्रियाँ रास्ते में थीं, तो कुछ पहरेदार शहर में गए और मुख्य याजकों को वह सब कुछ बताया जो हुआ था। जब मुख्य याजकों ने प्राचीनों के साथ मिलकर एक योजना बनाई, तो उन्होंने सैनिकों को बहुत सारा पैसा दिया, और उनसे कहा, ‘तुम्हें यह कहना है, “उसके चेले रात में आए और जब हम सो रहे थे, तब उसे चुरा ले गए।” यदि यह बात राज्यपाल तक पहुँचती है, तो हम उसे संतुष्ट कर देंगे और यह सुनिश्चित करेंगे कि तुम्हें इसके लिए ज़िम्मेदार न ठहराया जाए।’ इसलिए सैनिकों ने पैसा ले लिया और जैसा उन्हें निर्देश दिया गया था, वैसा ही किया। और यह कहानी आज तक यहूदियों के बीच बड़े पैमाने पर फैली हुई है।” जब मरियम मगदलीनी और याकूब की माँ मरियम, यीशु के चेलों को उनके पुनरुत्थान के बारे में बताने के लिए जल्दी-जल्दी जा रही थीं, तो कुछ पहरेदार—जिनमें से सभी भागकर तितर-बितर नहीं हुए थे—शहर में गए और मुख्य याजकों को “वह सब कुछ बताया जो हुआ था” (पद 11)। यहाँ, “वह सब कुछ जो हुआ था” का तात्पर्य यीशु के पुनरुत्थान से है, इस तथ्य से है कि वे अब यीशु की कब्र की रखवाली करने में असमर्थ थे, और स्वर्गदूत के प्रकट होने से है। परिणामस्वरूप, मुख्य याजकों ने प्राचीनों के साथ मिलकर एक योजना बनाई; उन्होंने पहरेदारों को बहुत सारा पैसा दिया (पद 12) और उन्हें एक अफवाह फैलाने का निर्देश दिया—जो रोमन राज्यपाल, पीलातुस के लिए थी—जिसमें यह दावा किया गया था कि जब पहरेदार सो रहे थे, तब यीशु के चेले आए और यीशु का शरीर चुरा ले गए (पद 13)। उस समय, मुख्य याजकों ने पहरेदारों की उस चिंता को भांपते हुए कि कब्र की सुरक्षा करने में असफल रहने के कारण रोमन राज्यपाल उन्हें दंडित कर सकता है, उनके पक्ष में हस्तक्षेप करने और मामले को सुलझाने का वादा किया (पद 14)। परिणामस्वरूप, रोमन पहरेदारों ने पैसा स्वीकार कर लिया और ठीक वैसा ही किया जैसा उन्हें निर्देश दिया गया था—यह दावा करते हुए कि यीशु के चेले रात में आए और उनका शरीर चुरा ले गए—और यह कहानी आज तक यहूदियों के बीच बड़े पैमाने पर फैलती रही है (पद 15)। यहाँ तक कि उन धर्मशास्त्रियों के बीच भी जो यीशु के पुनरुत्थान को नहीं मानते, कुछ ऐसे हैं जो यह दावा करते हैं कि उनके चेलों ने ही उनका शरीर चुराया था।

क्या हम सचमुच यह विश्वास करते हैं कि यीशु मरे हुआओं में से जी उठे? हमें अपना जीवन विश्वास को मज़बूती से थामे हुए जीना चाहिए—यह मानते हुए और इस बात पर पूरी तरह से यकीन करते हुए कि यीशु का पुनरुत्थान हुआ है—और यह भी कि हम भी जी उठेंगे। आज के धर्मग्रंथ के अंश, मत्ती 27:7 में, मरियम मगदलीनी और याकूब की माँ मरियम को निर्देश दिया गया है कि वे जल्दी से यीशु के शिष्यों के पास जाएँ और उन्हें बताएँ कि यीशु जी उठे हैं। जहाँ कोरियाई बाइबल में कहा गया है कि वे "मरे हुआओं में से" जी उठे, वहीं चीनी बाइबल में कहा गया है कि वे "मृत्यु में से" जी उठे। यहाँ, हालाँकि यीशु के "मरे हुआओं में से" जी उठने और "मृत्यु में से" जी उठने की अवधारणाएँ एक जैसी लग सकती हैं, लेकिन वास्तव में इन दोनों के बीच एक सूक्ष्म अंतर है। यह अंतर इस तथ्य में निहित है कि जिस अनुवाद में कहा गया है कि यीशु "मृत्यु में से" जी उठे, वह केवल यीशु के अपने पुनरुत्थान की गवाही देता है; इसके विपरीत, जिस अनुवाद में कहा गया है कि यीशु "मरे हुआओं में से" जी उठे, वह न केवल यीशु के पुनरुत्थान की बात करता है, बल्कि उन लोगों के पुनरुत्थान की भी बात करता है जो उनमें (यीशु में) मर चुके हैं। इस बात की पुष्टि 1 कुरिन्थियों 15:20 में की गई है: "परन्तु अब मसीह मरे हुआओं में से जी उठे हैं, और जो सो गए हैं, उनके लिए 'पहला फल' बन गए हैं।" यह वचन घोषणा करता है कि जो लोग मसीह में सो गए हैं (अर्थात् मृत लोग), वे भी जी उठेंगे। यीशु मसीह के द्वारा—जो सोए हुआओं के लिए 'पहला फल' बने—हम भी, जो 'पहला फल' हैं, यीशु मसीह के पदचिह्नों पर चलेंगे, और जो लोग प्रभु में मरे हैं, वे फिर से जी उठेंगे। यह अंश 1 थिस्सलोनिकियों 4:13-17 से लिया गया है: "भाइयों और बहनों, हम नहीं चाहते कि आप उन लोगों के बारे में अनजान रहें जो मृत्यु की नींद सो गए हैं, ताकि आप बाकी इंसानों की तरह शोक न करें, जिनके पास कोई आशा नहीं है। क्योंकि हम विश्वास करते हैं कि यीशु मरे और फिर से जीवित हो उठे, और इसलिए हम विश्वास करते हैं कि परमेश्वर उन लोगों को भी यीशु के साथ ले आएगा जो उसमें सो गए हैं। प्रभु के वचन के अनुसार, हम आपको बताते हैं कि हम जो अभी जीवित हैं और प्रभु के आगमन तक बचे रहेंगे, वे निश्चित रूप से उन लोगों से पहले नहीं जाएँगे जो सो गए हैं। क्योंकि प्रभु स्वयं स्वर्ग से नीचे उतरेंगे—एक ज़ोरदार आज्ञा के साथ, महादूत की आवाज़ के साथ, और परमेश्वर की तुरही की पुकार के साथ—और मसीह में मरे हुए लोग सबसे पहले जीवित होंगे। उसके बाद, हम जो अभी जीवित हैं और बचे रहेंगे, उन्हें उनके साथ बादलों में ऊपर उठा लिया जाएगा, ताकि हम हवा में प्रभु से मिल सकें। और इस प्रकार हम हमेशा के लिए प्रभु के साथ रहेंगे।" जब परमेश्वर यीशु मसीह के साथ महिमा में लौटेंगे, तो जो लोग मसीह में मरे हैं, वे पुनर्जीवित होंगे और हमेशा के लिए प्रभु के साथ रहेंगे। इसलिए, हमें इस बात पर दृढ़ विश्वास रखना चाहिए कि जिस तरह यीशु पुनर्जीवित हुए, वैसे ही हम भी पुनर्जीवित होंगे; और हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि हम, जो पुनरुत्थान की आशा रखते हैं, हमेशा प्रभु के साथ रहेंगे। इस प्रकार, यदि यह प्रभु की भली, मनभावन और सिद्ध इच्छा है कि किसी प्रिय भाई को घर बुला लिया जाए ताकि वह प्रभु में सो सके, तो—प्रभु के वचन के अनुसार—हमें उसके गुज़र जाने से डरना नहीं चाहिए, बल्कि पुनरुत्थान के विश्वास के साथ उसे विदाई देनी चाहिए, और साथ ही पुनरुत्थान की आशा के माध्यम से स्वर्ग में फिर से मिलने और हमेशा के लिए एक साथ रहने की उत्सुकता से प्रतीक्षा करनी चाहिए।

पुनरुत्थित यीशु (3)

[लूका 24:1-12]

हम पहले ही "पुनरुत्थित यीशु" विषय पर दो बार मनन कर चुके हैं [जिसमें "पुनरुत्थित यीशु (1)" के लिए यूहन्ना 20:1-10 पर, और "पुनरुत्थित यीशु (2)" के लिए मत्ती 28:1-15 पर ध्यान केंद्रित किया गया था]। आज, "पुनरुत्थित यीशु (3)" शीर्षक के अंतर्गत, हम इस तीसरे संदेश पर मनन करते हुए, लूका 24:1-12 में पाए जाने वाले अंश पर ध्यान केंद्रित करते हुए, हम पर बरसाई गई कृपा को प्राप्त करने का प्रयास करते हैं।

आज के पाठ—लूका 24:1-2—को देखते हुए, पवित्रशास्त्र कहता है: "सप्ताह के पहले दिन, बहुत सवेरे, ये स्त्रियाँ अपने तैयार किए हुए सुगंधित मसाले लेकर कब्र पर गईं। उन्होंने पाया कि कब्र के द्वार से पत्थर हटा हुआ है।" यहाँ, "सप्ताह का पहला दिन" रविवार को संदर्भित करता है—वह दिन जो सब्त (जो शनिवार को पड़ता है) के बाद आता है—अर्थात्, प्रभु का दिन। इसके अलावा, यहाँ जिन "स्त्रियों" का उल्लेख किया गया है, उनकी पहचान "मरियम मगदलीनी, योअन्ना, याकूब की माता मरियम, और उनके साथ की अन्य स्त्रियाँ" के रूप में की गई है (पद 10)। जब ये स्त्रियाँ रविवार को भोर में, अपने तैयार किए हुए सुगंधित मसाले लेकर यीशु की कब्र पर गईं, तो उन्होंने देखा कि कब्र के द्वार से पत्थर हटा हुआ है। मत्ती 28:2 को देखने पर हमें और अधिक विस्तृत समझ प्राप्त होती है: "अचानक एक ज़ोरदार भूकंप आया, क्योंकि प्रभु का एक स्वर्गदूत स्वर्ग से नीचे उतरा, उसने पत्थर को लुढ़काकर हटा दिया, और उस पर बैठ गया।" क्योंकि प्रभु का एक स्वर्गदूत स्वर्ग से नीचे उतरा और उस पत्थर को हटा दिया जिसने यीशु की कब्र को बंद कर रखा था (पद 28), इसलिए "इन स्त्रियों" ने देखा कि "कब्र के द्वार से पत्थर हटा हुआ है" (लूका 24:1-2)। तो फिर, स्वर्गदूत कब्र से इस पत्थर को हटाने के लिए स्वर्ग से नीचे क्यों उतरा? इसका कारण पुनरुत्थित यीशु को कब्र से बाहर निकलने में सक्षम बनाना नहीं था। पुनरुत्थित होकर और एक महिमामय देह धारण करके, यीशु कब्र से बाहर निकलने में पूरी तरह से सक्षम थे, भले ही कोई पत्थर उसके प्रवेश द्वार को अवरुद्ध कर रहा होता। उदाहरण के तौर पर, रविवार की शाम को—जो सब्त के अगले दिन था—पुनर्जीवित यीशु अचानक अपने शिष्यों के सामने प्रकट हुए, जब वे यहूदी नेताओं के डर से दरवाज़े कसकर बंद करके एक जगह जमा थे; उनके बीच खड़े होकर उन्होंने घोषणा की, "तुम्हें शांति मिले"

(यूहन्ना 20:19)। स्वर्ग से एक स्वर्गदूत के उतरकर यीशु की कब्र को रोकने वाले पत्थर को हटाने का कारण यह गवाही देना था कि यीशु सचमुच जी उठे थे—यानी, कि वे फिर से जीवित हो गए थे।

यूहन्ना अध्याय 11 में, हमें यीशु द्वारा लाज़र—जिसे वे बहुत प्रेम करते थे—को फिर से जीवित करने का वृत्तांत मिलता है। यहाँ एक बात जो हमें स्पष्ट करनी चाहिए, वह यह है कि लाज़र का फिर से जीवित होना "पुनरुत्थान" (resurrection) नहीं, बल्कि एक "पुनर्जीवन" (revival) था। इस अंतर का कारण यह है कि जिस शरीर में वह फिर से जीवित हुआ, वह कोई महिमामय शरीर नहीं था। जब यीशु लाज़र की कब्र पर गए—जो एक गुफा थी और पत्थर से बंद थी—और आज्ञा दी, "पत्थर को हटा दो" (यूहन्ना 11:38-40), तो उन्होंने ऐसा इसलिए किया क्योंकि मृत लाज़र को कब्र-गुफा से बाहर निकलने के लिए पत्थर का हटाना ज़रूरी था, ताकि यीशु द्वारा उसे फिर से जीवित किए जाने पर वह बाहर आ सके। स्वर्ग की ओर देखते हुए, यीशु ने परमेश्वर पिता से प्रार्थना की और कहा, "मैं जानता हूँ कि तू मेरी हमेशा सुनता है; लेकिन मैंने यह बात आस-पास खड़ी भीड़ के लिए कही है, ताकि वे विश्वास करें कि तूने ही मुझे भेजा है।" फिर, उन्होंने ऊँची आवाज़ में पुकारा, "लाज़र, बाहर आ जा!" (पद 41-42)। उस आज्ञा पर, मृत लाज़र कब्र से बाहर निकला, उसके हाथ और पैर अभी भी कफ़न के कपड़ों से बंधे हुए थे (पद 44)। हालाँकि, यीशु का मामला लाज़र के मामले से बिल्कुल अलग है। स्वर्ग से एक स्वर्गदूत के उतरकर कब्र को रोकने वाले पत्थर को हटाने का कारण यह नहीं था कि पुनर्जीवित यीशु कब्र से बाहर निकल सकें, बल्कि इसका उद्देश्य यीशु के पुनरुत्थान की गवाही देना था।

जहाँ तक "इन स्त्रियों" (लूका 24:1, 10) की बात है—क्योंकि स्वर्ग से एक स्वर्गदूत उतरकर कब्र से पत्थर हटा चुका था (मत्ती 28:2)—उन्होंने देखा कि पत्थर हटा हुआ था और वे यीशु की कब्र के अंदर चली गईं (लूका 24:2-3)। यीशु की कब्र में घुसने पर, "इन औरतों" ने अंदर देखा; लेकिन, जब उन्हें पता चला कि यीशु का शरीर कहीं भी दिखाई नहीं दे रहा है, तो वे "परेशान" हो गईं (पद 4)। वे यीशु की कब्र पर अपने तैयार किए हुए मसाले (पद 1) लेकर गई थीं, ताकि उनके शरीर पर उन्हें लगा सकें; इसलिए, जब उन्हें उनका शरीर वहाँ नहीं मिला, तो स्वाभाविक रूप से वे परेशान हो गईं। इस संदर्भ में, जिस शब्द का अनुवाद "परेशान" के रूप में किया गया है—जब मूल यूनानी भाषा में उसकी जाँच की जाती है—तो उसका असली मतलब "हैरान" या "अचंभित" होना निकलता है। नतीजतन, *The Bible for Modern Man* इस वाक्यांश "जब वे इस बात को लेकर परेशान थीं" (पद 4) का अनुवाद इस तरह करता है: "जब वे हैरान थीं, और उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि क्या हुआ है।" इन औरतों के यीशु की कब्र में घुसने पर और यह पता चलने पर कि उनका शरीर वहाँ नहीं है, उनके हैरान होने की वजह यह थी कि उन्होंने अपनी आँखों से देखा था कि यीशु के शरीर को अरिमतिया के यूसुफ की कब्र में दफनाया गया था। इसका ज़िक्र लूका 23:55 में मिलता है: "जो औरतें यीशु के साथ गलील से आई थीं, वे उनके पीछे-पीछे गईं और उन्होंने कब्र को देखा, और यह भी देखा कि उनके शरीर को उसमें कैसे रखा गया था।" इसी वजह से वे घर लौटकर मसाले और इत्र तैयार करने लगीं (पद 56; *The Bible for Modern Man*)। फिर, हफ़्ते के

पहले दिन की सुबह—यानी सब्त के अगले दिन—वे अपने तैयार किए हुए मसाले लेकर यीशु की कब्र पर पहुँचीं (24:1)। जब उन्होंने देखा कि कब्र के दरवाज़े से पत्थर हटा दिया गया है, तो वे अंदर चली गईं; लेकिन, जब उन्हें प्रभु यीशु का शरीर वहाँ नहीं मिला (पद 2-3), तो वे हैरान रह गईं, और उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि क्या हुआ है (पद 4; *Modern People's Bible*)। जब वे वहाँ हैरानी में खड़ी थीं, तभी "दो आदमी"—यानी दो स्वर्गदूत—चमकीले कपड़े पहने हुए अचानक उनके पास आकर खड़े हो गए (पद 4)। डर के मारे, उन औरतों ने अपना चेहरा ज़मीन की ओर झुका लिया (पद 5)। पूरी बाइबल में, हमें ऐसे कई उदाहरण मिलते हैं जहाँ लोग किसी स्वर्गदूत को देखकर डर से काँप उठते हैं। ऐसा ही एक व्यक्ति ज़करियाह था, जो यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का पिता था। जब उनकी बारी सेवा करने की आई—उनके पुरोहितों के समूह के क्रम के अनुसार—तो वे परमेश्वर के सामने अपने कर्तव्य निभाने के लिए मंदिर में गए और धूप जला रहे थे। उसी समय, प्रभु का एक दूत उन्हें दिखाई दिया, जो धूप की वेदी के दाईं ओर खड़ा था। दूत को देखकर ज़करियाह चौंक गए और डर से कांपने लगे (1:8-12; *मॉडर्न पीपल्स बाइबल*)। चूंकि ज़करियाह—जो एक महायाजक थे—भी दूत को देखकर इतने डर गए थे, इसलिए यह पूरी तरह से समझ में आता है कि जिन महिलाओं को यीशु की कब्र पर दो दूत मिले थे, वे भी ज़रूर डर गई होंगी (24:4-5)। तब दूतों ने उनसे कहा: "तुम जीवित को मरे हुआओं के बीच क्यों दूँढ रही हो? वह यहाँ नहीं है; वह जी उठा है! याद करो कि जब वह अभी गलील में ही था, तब उसने तुमसे क्या कहा था" (पद 5-6)। यहाँ, दूतों का "याद रखने" का आदेश उन शब्दों को याद करने के लिए था जो यीशु ने अपने जीवित रहते हुए कहे थे। तो, आखिर वे कौन से शब्द थे जो यीशु ने अपने जीवित रहते हुए कहे थे? ये अंश मत्ती 16:21, 17:23, और 20:19 में मिलते हैं: "उस समय से यीशु मसीह ने अपने शिष्यों को समझाना शुरू किया कि उसे यरूशलेम जाना होगा और पुरोहितों, महायाजकों और व्यवस्था के शिक्षकों के हाथों बहुत कुछ सहना होगा, और यह कि उसे मार डाला जाएगा और तीसरे दिन वह फिर से जीवित हो उठेगा" (मत्ती 16:21); "...मार डाला जाएगा और तीसरे दिन फिर से जीवित हो उठेगा..." (17:23); और "...अन्यजातियों के हाथों सौंप दिया जाएगा ताकि उसका मज़ाक उड़ाया जाए, उसे कोड़े मारे जाएं और उसे क्रूस पर चढ़ाया जाए। तीसरे दिन वह फिर से जीवित हो उठेगा" (20:19)। इस प्रकार, तीन अलग-अलग मौकों पर, यीशु ने पहले ही बता दिया था कि उसे दुख सहना पड़ेगा, उसे क्रूस पर चढ़ाया जाएगा और मार डाला जाएगा, और फिर तीन दिन बाद वह फिर से जीवित हो उठेगा। यीशु के इन्हीं शब्दों को दूतों ने उन महिलाओं को याद रखने के लिए कहा था (लूका 24:6)।

यीशु ने मेरे और हमारे पापों का बोझ उठाया, उन्हें सलीब पर कीलों से जड़ दिया गया और वे हमारी जगह मर गए। यीशु सलीब पर इसलिए मरे ताकि हमें पाप की सज़ा और नरक की सज़ा से बचाया जा सके, और तीसरे दिन वे फिर से जीवित हो उठे। यही सुसमाचारों का सुसमाचार है। दूसरे शब्दों में, यीशु की मृत्यु और उनका पुनरुत्थान ही सुसमाचार का मूल है। सुसमाचार "उनके पुत्र" के बारे में है, यानी यीशु मसीह के बारे में, जो परमेश्वर के पुत्र हैं (रोमियों 1:2)। यीशु को हमारे पापों के कारण मृत्युदंड दिया गया और वे फिर से जीवित हुए ताकि हम धर्मी ठहराए जा सकें (4:25)। हमें पाप से बचाने का एकमात्र तरीका यीशु मसीह

की सलीब पर हुई मृत्यु ही है। हमें धर्मी बनाने का एकमात्र तरीका (धर्मी ठहराए जाने का मार्ग) यीशु मसीह का पुनरुत्थान है। जो स्त्रियाँ यीशु की कब्र पर आईं (लूका 24:1, 10), उन्हें यीशु के तीन वचन याद आए (मत्ती 16:21; 17:23; 20:19), ठीक वैसे ही जैसे स्वर्गदूतों ने कहा था, "याद करो कि जब वे गलील में थे, तब उन्होंने तुमसे क्या कहा था" (पद 6) [(लूका 24:8) "उन्हें यीशु के वचन याद आए"]। दूसरे शब्दों में, उन्हें सलीब पर यीशु की मृत्यु और उनके पुनरुत्थान से जुड़े वचन याद आए। कहने का तात्पर्य यह है कि उन्हें यीशु का सुसमाचार याद आया। हमें भी यीशु का सुसमाचार याद रखना चाहिए। हमें यीशु की मृत्यु और उनके पुनरुत्थान को याद रखना चाहिए। यानी, हमें यह याद रखना चाहिए कि यीशु हमें पाप से बचाने के लिए सलीब पर मरे और हमें धर्मी ठहराने के लिए फिर से जीवित हुए।

उन्हें बातें याद आईं, वे कब्र से लौटकर आईं और उन्होंने ये सारी बातें ग्यारह प्रेरितों और बाकी सभी लोगों को बताईं (लूका 24:9)। हालाँकि, जिन प्रेरितों ने उनकी बातें सुनीं, उन्होंने उन पर विश्वास नहीं किया; उन्हें लगा कि ये सब बकवास है (पद 11, मॉडर्न इंग्लिश वर्शन)। फिर भी, पतरस उठकर यीशु की कब्र की ओर दौड़े, नीचे झुके और अंदर झाँका। उन्होंने वहाँ केवल महीन कपड़े (कफ़न) देखे। पतरस हैरान रह गए और अपने घर लौट आए (पद 12, मॉडर्न इंग्लिश वर्शन)। यूहन्ना अध्याय 20 में इसका और भी विस्तृत विवरण दिया गया है। बाइबल बताती है कि साइमन पीटर यीशु की कब्र में गए और उन्होंने वहाँ महीन लिनेन और वह कपड़ा देखा जिससे यीशु का सिर लपेटा गया था; और प्रेरित यूहन्ना, जो उनसे पहले कब्र पर पहुँचे थे, वे भी अंदर गए, उन्होंने भी देखा और विश्वास किया (यूहन्ना 20:3-8)। इस प्रकार, यद्यपि प्रेरित पीटर और यूहन्ना ने कब्र के अंदर यीशु के सिर पर लिपटे महीन लिनेन और कपड़े को देखकर विश्वास किया [लेकिन उन्होंने यीशु के जीवित रहते हुए कहे गए शब्दों को याद करके विश्वास नहीं किया]। हम यह बात यूहन्ना 20:9 को देखकर जान सकते हैं: "वे अभी तक पवित्रशास्त्र को नहीं समझे थे कि उसे मरे हुआ में से जी उठना है।" जो स्त्रियाँ यीशु की कब्र पर आईं, उन्होंने यीशु के जीवित रहते हुए कहे गए तीन शब्दों को याद करके उनके पुनरुत्थान पर विश्वास किया (मत्ती 16:21; 17:23; 20:19), ठीक वैसे ही जैसा स्वर्गदूतों ने कहा था। प्रेरित पीटर और यूहन्ना की तरह सबूत देखकर यीशु के पुनरुत्थान पर विश्वास करने के बजाय, हमें भी इन स्त्रियों की तरह, उनके शब्दों (सुसमाचार) को याद करके उनके पुनरुत्थान पर विश्वास करना चाहिए। हमें थॉमस जैसा नहीं बनना चाहिए, जिसने कहा था, "जब तक मैं उसके हाथों में कीलों के निशान न देख लूँ और कीलों के निशानों में अपनी उंगली न डाल लूँ और उसके पहलू में अपना हाथ न डाल लूँ तब तक मैं विश्वास नहीं करूँगा" (यूहन्ना 20:25)। इसके बजाय, हमें उन लोगों जैसा बनना चाहिए जो बिना देखे ही विश्वास करते हैं, ठीक वैसे ही जैसा यीशु ने कहा था। यूहन्ना 20:29 के शब्द ये हैं: "यीशु ने उनसे कहा, 'क्या तुमने मुझे देखा है, इसलिए विश्वास किया है? धन्य हैं वे जिन्होंने नहीं देखा और फिर भी विश्वास किया है।'" और इन स्त्रियों की तरह, हमें भी यीशु मसीह के क्रूस पर बलिदान और कब्र से उनके पुनरुत्थान के सुसमाचार का प्रचार करना चाहिए, और ऐसा करते समय हमारे भीतर यीशु के पुनरुत्थान का गहरा भाव होना चाहिए।

निष्कर्ष

हमें यीशु को और भी गहराई से जानने की ज़रूरत है। हमें इस सच्चाई को समझना होगा कि यीशु मसीह का ज्ञान सबसे ज़्यादा कीमती है (फिलिप्पियों 3:8)। यीशु ही वह हैं जो देहधारी हुए—यानी 'वचन' जो देह बन गया (यूहन्ना 1:14)। यीशु, जो कि वह "वचन" हैं, स्वयं-अस्तित्ववान हैं (निर्गमन 3:14); वह परमेश्वर पिता के साथ थे, और यह वचन स्वयं परमेश्वर ही है (यूहन्ना 1:1)। परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र (यीशु), और परमेश्वर पवित्र आत्मा—ये तीनों एक ही हैं (त्रिएक परमेश्वर)। परमेश्वर पुत्र, यीशु मसीह में वे सभी ईश्वरीय गुण (विशेषताएँ) मौजूद हैं जो केवल परमेश्वर के ही होते हैं, और वह ऐसे कार्य करते हैं जिन्हें केवल परमेश्वर ही पूरा कर सकते हैं। बाइबल यह घोषणा करती है कि परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र, और परमेश्वर पवित्र आत्मा—ये सभी परमेश्वर हैं; ये सभी एक-दूसरे के बराबर हैं; और परमेश्वर केवल एक ही है। दूसरे शब्दों में, बाइबल यह सिखाती है कि परमेश्वर—जिसमें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा शामिल हैं—तीन अलग-अलग 'व्यक्तियों' के रूप में अस्तित्व में हैं, फिर भी वह एक ही एकीकृत परमेश्वर बने रहते हैं। यीशु—वह परमेश्वर जो "वचन" है, जो बिना किसी आदि के पूर्ण परमेश्वर है, और जो एक पूर्ण व सनातन मनुष्य है—पवित्र आत्मा के द्वारा गर्भ में आए, और कुँवारी मरियम (जो एक स्त्री की वंशज थीं) के द्वारा "देह" (एक मनुष्य) बन गए। इसका उद्देश्य यह था कि वह हमारे बीच निवास करें, परमेश्वर और हमारे बीच 'मध्यस्थ' (बिचौलिये) का काम करें, और हमारे पापों के लिए 'प्रायश्चित' (बलिदान) बनें। इसलिए, यीशु—वह 'वचन' जो देह बन गया—ने इस पृथ्वी पर अपने समय के दौरान एक 'शुरुआत' (जन्म) और एक 'अंत' (मृत्यु)—दोनों का अनुभव किया। इसका उद्देश्य हमें—जिनका इस सांसारिक दायरे में एक आदि और अंत होता है, और जो आध्यात्मिक रूप से मृत थे व जिनकी नियति 'अनंत मृत्यु' थी—इस योग्य बनाना था कि हम भी 'अनंत प्राणी' बन सकें, और स्वर्ग के उस 'अनंत राज्य' में सदा-सर्वदा जीवित रह सकें—एक ऐसा राज्य जिसका न कोई आदि है और न ही कोई अंत। इसलिए, हमें इस सच्चाई पर अपने विश्वास को दृढ़ता से थामे रखना चाहिए कि वह 'वचन' ही देह बन गया। हमें एक 'विजयी जीवन' जीना चाहिए—परमेश्वर की सामर्थ्य के द्वारा आध्यात्मिक युद्ध में लड़ते हुए और जीत हासिल करते हुए—और यह सब हमारे प्रभु यीशु मसीह में हमारे विश्वास पर आधारित होना चाहिए; वह जो पूर्ण रूप से परमेश्वर हैं, पूर्ण रूप से मनुष्य हैं, और 'सनातन मनुष्य' हैं। इसके अलावा, हमें यीशु का अनुकरण करना चाहिए और एक 'सेवा-भाव वाला जीवन' जीना चाहिए। जैसे-जैसे हम सेवा का यह जीवन जीते हैं, हमें इसे उसी भावना से जीना चाहिए जिस भावना से यीशु ने जिया था—यानी अपनी जान भी न्योछावर करने को तैयार रहना।

संक्षेप में कहें तो, हमें अपनी मृत्यु तक सेवा करनी चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे यीशु ने की थी (फिलिप्पियों 2:8)।

मत्ती 20:28 में कहा गया है: “मनुष्य का पुत्र सेवा करवाने नहीं, बल्कि सेवा करने और बहुतों के लिए अपनी जान फिरोती के तौर पर देने आया।” व्यापक अर्थ में, यह अंश यीशु मसीह के दुखों के बारे में बताता है। यीशु मसीह ने मनुष्य का रूप धारण किया और इस धरती पर अपने तैंतीस साल के जीवन के दौरान दुखों को सहा। एक शब्द में कहें तो, यीशु के तैंतीस साल का जीवन दुखों से भरा जीवन था। यीशु के दुख केवल तैंतीस साल की उम्र में क्रूस पर उनकी मृत्यु तक ही सीमित नहीं थे; उन्होंने अपने बचपन में भी दुखों को सहा। विशेष रूप से, यीशु ने अपने शुरुआती सालों में एक शरणार्थी के रूप में जीवन का अनुभव किया (मत्ती 2:13–18)। यीशु—जो परमेश्वर द्वारा तय किए गए समय पर मरने के लिए इस धरती पर आए थे (गलातियों 4:4)—मिस्र भाग गए, क्योंकि परमेश्वर द्वारा उनकी मृत्यु के लिए तय किया गया विशिष्ट समय अभी तक नहीं आया था। धरती पर अपने तैंतीस साल के जीवन के दौरान, यीशु अक्सर एकांत में चले जाते थे और छिप जाते थे; इसका कारण यह था कि परमेश्वर द्वारा उनकी मृत्यु के लिए तय किया गया समय अभी तक नहीं आया था। अंततः, यीशु की मृत्यु उसी समय हुई जो परमेश्वर ने तय किया था (रोमियों 5:6); उस क्षण से पहले, उन्होंने भविष्यवाणी की थी कि उनकी मृत्यु यरूशलेम में होगी—जो परमेश्वर द्वारा तय किया गया विशिष्ट स्थान था (मत्ती 16:21)। यीशु ने न केवल यह कहा कि यरूशलेम उनकी मृत्यु का स्थान होगा, बल्कि उन्होंने यह भी घोषणा की कि उन्हें “तीसरे दिन फिर से जीवित होना है” (पद 21)। दूसरे शब्दों में, उन्होंने भविष्यवाणी की कि अपनी मृत्यु के तीन दिन बाद वे फिर से जीवित हो उठेंगे। इसके बाद, इस भविष्यवाणी को पूरा करने की प्रक्रिया में, यीशु यरूशलेम गए, दुखों को सहा, और गेथसेमानी के बगीचे में प्रार्थना की (लूका 22:39–46): “अब्बा, हे पिता, तेरे लिए सब कुछ संभव है। इस प्याले को मुझसे दूर कर दे; फिर भी, मेरी इच्छा नहीं, बल्कि तेरी इच्छा पूरी हो” (मरकुस 14:36)। यीशु ने और भी ज़्यादा लगन से प्रार्थना की, अपनी इस संघर्षपूर्ण घड़ी में वे बहुत ज़्यादा पीड़ा से गुज़र रहे थे (लूका 22:44)। और वे तब तक प्रार्थना करते रहे जब तक कि परमेश्वर पिता ने उनकी प्रार्थना का उत्तर नहीं दे दिया (मत्ती 26:42, 44)। अपनी प्रार्थना का उत्तर पाने के बाद, यीशु निडर होकर उस दुष्ट भीड़ का सामना करने के लिए आगे बढ़े, जो उन्हें और उनके ग्यारह शिष्यों को पकड़ने आई थी (मत्ती 26:46)। प्रभु की अद्भुत शक्ति (अधिकार) प्रकट हुई (यूहन्ना 18:4–6)। इस प्रकार, गेथसेमनी में अपनी प्रार्थना करने के बाद—जब उन्हें गिरफ्तार करने के लिए एक बड़ी भीड़ आई, तब भाग निकलने की क्षमता होने के बावजूद—यीशु ने भागना नहीं चुना और खुद को गिरफ्तार होने दिया। फिर उन्हें रोमन गवर्नर, पीलातुस के सामने मुकदमे के लिए ले जाया गया (यूहन्ना 18:28–19:16)। हालाँकि गवर्नर पीलातुस यह जानते थे कि यीशु निर्दोष हैं (यूहन्ना 18:38; 19:4, 6) और उन्होंने उन्हें रिहा करने के चार प्रयास भी किए, लेकिन उनके ये प्रयास व्यर्थ साबित हुए (19:12; लूका 23:23); अंततः, उन्होंने यह फैसला सुनाया कि यीशु को क्रूस पर चढ़ाया जाए। परिणामस्वरूप, मुख्य याजकों ने दो अन्य अपराधियों—दो कुख्यात डाकुओं (मत्ती 27:38, 44; मरकुस 15:27)—को यीशु के साथ गोलगोथा ले जाने की व्यवस्था की। उनका मकसद भीड़ को यह सूक्ष्म संकेत

देना था कि यीशु उन दो क्रूर डाकुओं से किसी भी तरह अलग नहीं हैं। फिर यीशु को इन दो डाकुओं के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया; उस समय, वहाँ से गुज़रने वाले लोग—जिनमें मुख्य याजक, शास्त्री और बुजुर्ग भी शामिल थे—उनका मज़ाक उड़ा रहे थे और उन पर ताने कस रहे थे। क्रूस पर लटके हुए यीशु ने इस तरह के तिरस्कार, मज़ाक और अपमान को क्यों सहा? यह हमारे पापों के कारण था। यीशु ने उस तिरस्कार, मज़ाक और अपमान का पूरा बोझ अपने ऊपर ले लिया, जिसके असली हकदार तो हम थे। क्रूस से, यीशु ने सात बातें कहीं: (1) “हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये नहीं जानते कि ये क्या कर रहे हैं” (लूका 23:34); (2) “मैं तुझसे सच कहता हूँ, आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा” (23:43); (3) “हे स्त्री, देख, यह तेरा पुत्र है” (यूहन्ना 19:26); (4) “एलोई, एलोई, लेमा सबख्यानी?” (जिसका अर्थ है, “हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?”) (मत्ती 27:46); (5) “मुझे प्यास लगी है” (यूहन्ना 19:28); (6) “पूरा हुआ” (पद 30); और (7) “हे पिता, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूँ” (लूका 23:46)। ये सात वचन कहने के बाद, यीशु क्रूस पर मर गए। इस प्रकार, पवित्रशास्त्र के अनुसार—हमारे पापों के लिए मरकर और दफनाए जाकर—यीशु तीसरे दिन फिर से जीवित हो उठे (1 कुरिन्थियों 15:3-4)। “क्योंकि जब हम विश्वास करते हैं कि यीशु मर गए और फिर जीवित हो उठे, तो वैसे ही, यीशु के द्वारा, परमेश्वर उन लोगों को भी अपने साथ ले आएगा जो सो गए हैं। क्योंकि हम प्रभु के वचन के द्वारा तुम्हें यह बताते हैं: हम जो अभी जीवित हैं, जो प्रभु के आगमन तक बचे रहेंगे, वे निश्चित रूप से उन लोगों से पहले नहीं जाएँगे जो सो गए हैं। क्योंकि प्रभु स्वयं ऊँचे शब्द के साथ, प्रधान स्वर्गदूत की वाणी के साथ और परमेश्वर की तुरही की आवाज़ के साथ स्वर्ग से नीचे आएगा, और जो मसीह में मरे हैं, वे पहले जीवित होंगे। उसके बाद, हम जो अभी जीवित हैं और बचे हुए हैं, उन्हें उनके साथ बादलों में उठा लिया जाएगा ताकि हवा में प्रभु से मिल सकें। और इस प्रकार हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे” (1 थिस्सलोनिकियों 4:13-17)। इस प्रकार, यीशु—जो परमेश्वर के ठहराए हुए समय पर इस पृथ्वी पर आए (गलातियों 4:4) और परमेश्वर के ठहराए हुए समय पर मर गए (रोमियों 5:6)—परमेश्वर के ठहराए हुए समय पर इस पृथ्वी पर वापस आएँगे (1 तीमुथियुस 6:14-15)। यीशु, जो परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के लिए इस पृथ्वी पर आए थे, उन्होंने वास्तव में परमेश्वर के ठहराए हुए समय पर परमेश्वर की इच्छा पूरी की। हमें भी यीशु के उदाहरण का पालन करना चाहिए और परमेश्वर के ठहराए हुए समय पर परमेश्वर की इच्छा पूरी करनी चाहिए।